पंमित श्री केसरविमल विरचित

सूक्तावली याने सूक्तमुक्तावली

जापान्तर तथा अंतरगर्जित कथाओ सहित,



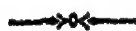
जन समुदायने वांचवा जणवा माटे

तैयार करावी प्रगट कर्त्ता

श्रावक जीमसी माणेकनी वती

शा. जाणजी माया.

ठेकाणुं मांडवी साक गल्ली घर नं. २१५-२३



मुंबाइ

कोलभाटलेन घर नं. २३ निर्णयसागर मुद्रालय

Prin[illegible] by B R Ghanekar, at the N S Press, 23, Kolbhat Lane, Bombay, and
Pu[illegible]hed by Bhanji Maya, for Shravak Bhimsi Manek, Mandvi, Saka Lane,
No. 225-231, Bombay.

प्रस्तावना.



श्री सर्वज्ञ भाषित धर्ममां जीवनी पांच गति कही छे. तेमां मनुष्य, देवता, तिर्यंच अने नारकी, ए चार गति संसारमां भ्रमणरूप छे; अने पांचमी मोक्षगति ए ठरी ठाम बेसवाने अनंतानंत सुखनुं धाम छे. ए पांचमी मोक्ष गतिए जवा माटे चार गतिमांनी फक्त एक मनुष्यगतिज नीसरणीरूप छे. अर्थात् मनुष्यगति सिवाय बीजी त्रण देवता, तीर्यंच अने नारकीनी गतिमांथी मोक्षमां जवातुं नथी; मात्र मनुष्यज मोक्ष मेलवी शके छे. देवतानी गतिमां अपरंपार सुख साहेबी छे तथापि देवता पण मनुष्यगतिमां आववा इच्छे छे, केमके ज्यांथी मोक्षसुख मली शके छे. माटे चार गतिमां उत्तम मनुष्यगति पाम्या पछी पाछुं भव भ्रमण न थाय अने परम पद एटले मोक्षसुख मले ए सारू मनुष्यनुं शुं करतव्य छे ते अवश्य जाणवुं उचित छे. अने ते जाणीने ते प्रमाणे वर्त्तन करवाथी मनुष्यभवनी सफलता थाय छे. तेटला माटे सर्वज्ञ जिनवचनानुसार बाल जीवोना उपकारार्थे श्री तपागच्छाधिपती श्री विजयप्रभसूरीना पाटे उदयाचल पर्वतनेविषे प्रगट थता सूर्य समान श्री विजयरत्नसूरीना राज्यनेविषे थयेला श्री कनकविमल नामना सुगुरूना लघु शिष्य केसरविमल नामाभिध पंडिते आ सूक्तावली याने सूक्तमुक्तावली एटले मनुष्यना कंठनेविषे रहेली मोतीनी माला समान शोभायमान सारी युक्तिवालो आ ग्रंथ मनुष्यमात्रनी शोभाने अधिक करवा माटे विक्रम संवत् १७५४नी सालमां रच्योछे.

मनुष्यभवनी सार्थकतानुं करतव्य धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष, ए चार भागमां समायेलुं छे. ए चारे भागनुं यथाविधि स्वरूप आ ग्रंथमां लोकभाषाए करी पद्यबंध दर्शाववामां आव्युं छे. तेना मुख्य विभाग १ तत्वज्ञान एटले शुद्ध देव, शुद्ध गुरु, अने

शुद्ध धर्म; २ मनुष्यजव पामवानी दुष्करता; ३ सज्ञानपणानो गुण; ४ न्यायमार्ग; ५ प्रतिज्ञा लीधी ते मुकवी नही; ६ क्षमानो संबंध; ७ चित्तनो संबंध; ८ कुलनो संबंध; ए विवेकनो संबंध; १० विनय गुण; ११ विद्यानो उपकार; १२ उद्यम; १३ दान; १४ क्रोध न करवो; १५ दया पालवी; १६ संतोष राखवो; १७ विषय छांरुवा; १८ प्रमाद छांडवो; १ए साधु तथा श्रावकनी ओलखाणनो अधिकार दृष्टांत साथे ए चार वर्गमां बताव्यो छे. मनुष्यजव पामीने प्रथम शुद्धदेव अने शुद्धगुरुनी ओलखाण करी शुद्धधर्म जाणवो अने तेनुं सेवन करवुं अर्थात् केवली जाषित जैनधर्माराधन करवो; बीजुं न्यायपूर्वक अर्थ एटले धन संपदा उपार्जन करवी; त्रीजुं तेवा न्यायोपार्जित धननो व्यय धर्मनां रूडां काममां करवो; अने चोथुं क्षमागुण आदरी अनित्यादि जावना जावीने कर्मनी निर्जरा करी मोक्षपद पामवुं. एनुं शुद्ध स्वरूप आ ग्रंथमां विवेचन अने दाखला दलील साथे दर्शावेलुं छे.

उपर बतावेला ओगणीस अधिकारना वली विशेष स्पष्ट समजाववा माटे पृथक् पृथक् विषय पाडी तेनुं विवेचन करी तेने दृढ करवा माटे विशेषे करी तेवा गुणवालानां दृष्टांत पण दर्शाव्यां छे. जेमांना—

प्रथम धर्म वर्गमां—१ देवतत्त्व, २ गुरुतत्त्व, ३ धर्मतत्त्व, ४ ज्ञानतत्त्व, ५ मनुष्यजन्म, ६ मनुष्यजवनी दुर्लजता तथा तेनां दश दृष्टांत, ७ सज्ञान, ८ गुण, ए न्याय, १० न्यायधर्म, ११ प्रतिज्ञा, १२ उपशम, १३ त्रिकरण शुद्धि, १४ कुल, १५ विवेक, १६ विनय, १७ विद्या, १८ उपकार, १ए उद्यम, २० दान, २१ शील, २२ तप, २३ जावना, २४ क्रोध, २५ मान, २६ माया, २७ लोज, २८ दया, २ए सत्य, ३० चोरी, ३१ कुशील, ३२ परिग्रह, ३३ संतोष, ३४ विषय, ३५ इंद्रिय, ३६ प्रमाद, ३७ साधुधर्म

३० श्रावकधर्म विषेनुं स्वरूप समजाववामां आवेलुं छे अने ते दरेक विषयने दृढ करवा माटे तेवा तेवा गुणवाला तथा तेथी, विपरीत गुणवाला थयेलानां उदाहरण पण बताव्यां छे.

बीजा अर्थवर्गमां–१ अर्थवर्गना प्रकार, २ अर्थ एटले संपदा विषे, ३ हितचिंतन, ४ लक्ष्मी, ५ कृपण, ६ याचना ७ निर्धन, ८ राजसेवा, ए खलता, १० विश्वास, ११ मैत्री, १२ कुव्यसन–(एक द्युत, बीजुं मांस जक्षण, त्रीजुं चोरी, चोथुं मद्य, पांचमुं वेश्यागमन, छहुं खेटक, सातमुं परस्त्रीसंग), १३ किर्त्ति, १४ प्रधान, १५ कला, १६ मूर्खता, १७ लज्जा, १८ लक्ष्मिरहित विषे दृष्टांतो साथे दर्शावेलुं छे.

त्रीजा कामवर्गमां–१ कामथी ग्रसाएला, २ काम, ३ कंदर्पना उन्माद, ४ गुणदोषोद्भावन, ५ पुरुषगुण, ६ पुरुषदोष, ७ स्त्रीना गुण, ८ स्त्रीना दोष, ए सुलक्षणी स्त्री, १० संयोग, ११ वियोग, १२ माता, १३ पिता, १४ पुत्र, १५ सुपुत्रनुं यथोचित स्वरूप समजावी दृष्टांतवडे दृढ करी आपेलुं छे.

चोथा मोक्षवर्गमां–१ मोक्षार्थ, २ कर्म, ३ क्षमा, ४ संयम, ५ द्वादश जावना–(एक अनित्य, बीजी अशरण, त्रीजी संसार, चोथी एकत्व, पांचमी अन्यत्व, छठी अशूची, सातमी आश्रव, आठमी संवर, नवमी निर्जरा, दशमी लोक, अगीआरमी बोधी, अने बारमी धर्म जावना), ६ राग, ७ द्वेष, ८ संतोष, ए विवेक, १० निर्वेद, अने ११ आत्मबोध विषे घणुंज जाणवायोग्य विवेचन दृष्टांतसह करेलुं छे.

त्यारपछी धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष, ए चारे वर्गनुं स्वरूप टुंकामां समजावी धर्मना दश जेद; तथा अर्थ उपार्जनविधि; अने काम एटले विषय गणवामां आवे छे तेने अलगो करी कामनो जावार्थ धर्मनां रूडां काम-कार्यो करवामां सारी रीते

समजाव्या छे; अने छेवट मोक्ष मेलववानी रीति अने तेवा परम पद पामनारने धन्यवाद आपेलो छे.

हवे आ ग्रंथ भाषामां छे तो तेनुं वली भाषान्तर शुं? एम सहज कोइ प्रश्न उठावे तो तेनुं समाधान ए छे जे, थोडा अने विशेष भावार्थवाला शब्दोनी पदरचनानो घणो गहन अर्थ तेना अपरिचित जन समुदायना समजवामां भाग्येज आवी शके तेवो छे. वली लोकभाषामां घणी जातनी भाषाना शब्दो भेलसेल थयेला छे, तथा मुलके मुलक अने गामे गाममां केटलाक जूदा जूदा शब्दो वपराय छे अने तेनां रुपांतर जूदां जूदां थयेलां जोवामां आवे छे तेथी, तेमज आ ग्रंथमां जे पद्य-रचना करवामां आवेली छे ते मध्ये दरेक बाबतना सिद्धांत माटे जे जे दृष्टांत देखाडवामां आवेलां छे तेनां फक्त नाम मात्रज बतावेलां छे, तेथी मूलपद्यनो भावार्थ लखी तेमां जणावेला दाखलावाला पुरुषादिना प्रबंधादि अन्य ग्रंथो तथा वृद्धमुखपरंपराथी जाणवामां आव्या मुजब आ मूल साथे भाषान्तरना ग्रंथमां विवेचन पूर्वक स्पष्टीकरण साथे दाखल करवामां आवेला छे. जे वांचीने मनन करवाथी दरेक विषयनी दृढता बेशक थवामां यत्किंचित् शक नथी.

विशेष जाणवा योग अने क्वचित सांभलवामां आवेली कथाओ घणा विस्तारपूर्वक दाखल करी छे, अने केटलाक वखतो वखत जाणवामां आवेला पुरुषादिना प्रबंध विषयना सिद्धांत योग दाखल कर्या छे; के जे वांचवाथी विषयनुं स्वरूप तात्कालिक समजी शकाय तेवुं छे. अने तेवां कृत्य करनारने तेथी जे लाभ हानी थइ छे ते तुरत ध्यानमां आवतां पोतानुं वर्त्तन लाभदायक कृत करवा तरफ दोराय तेवुं छे. अने तेम थवाथी मनुष्यभव पाम्यानुं सुफल मलवाने विलंब न लागे ए निःसंदेह वात छे.

आ ग्रंथना धर्मवर्गमां नमि अने विनमी, केसीकुमार गणधर अने प्रदेशी राजा, विक्रम, अने शालिवाहनादिना मली ४०; तथा अर्थवर्गमां उत्तम कुमारनुं घणुं मनरंजन चरित्र, केवन्ना शेठ, सहस्रमल साधु, पुण्यसार कुमार, अने कालिकसूरीउ कसाइ विगेराना मली ३४, तथा कामवर्गमां नंदीखेणमुनि, जीलडी उपर मोह पामी विषयनी प्रार्थना करनार महादेव, रथनेमी, अवगुणने ढांकनार श्रीकृष्ण, सुदर्शन शेठ अने अजया राणी विगेरेना मली १३, अने मोक्षवर्गमां खंधकाचार्य तथा तेमना पांचसें शिष्य, दृढप्रहारी, कूरगडु साधु, मेतार्य मुनि, जरत चक्रवर्त्ति, अनाथी मुनि अने श्रेणिक राजा, नमी राजा, सनतकुमार चक्रवर्ति, वज्रस्वामी, संप्रति राजा विगेरेना मली १७ प्रबंधो यथास्वरूप दाखल करवामां आवेला छे. एकंदर १०२ प्रबंधनो आ ग्रंथमां समावेश करवामां आव्यो छे.

आ ग्रंथ मनुष्यमात्रने अवश्य वांचवा, जणवा, तथा मनन करवा योग होवा छतां फक्त तेनुं मूलज छपाएलुं हतुं तेथी तेना वांचनार जणनारने तेनो जावार्थ पूरेपूरो नहीं समजावाने लीधे तथा तेमां आपेलां दृष्टांतिक पुरुषादिना प्रबंधो नहीं जाणवामां आववाथी तेनी खरी खूबीथी वीन माहितगार रहेवुं पमतुं हतुं; ते खोट पूरी पामवा माटे घणा वाचकवर्ग तरफथी अमोने जलामण थवाने लीधे तेनुं जाषान्तर अनुजवी अने वृद्धोवय शान्ति सुधाकर प्रेसना मालीक मी. सांकलचंद महासुखराम पासे तैयार करावी सज्जनवर्गनी शोजामां वृद्धि करवा माटे प्रगट करवाने अमे शक्तिवान थया छीये. आशा छे के आ ग्रंथनो लाज सर्व श्री संघ स्त्री पुरुष लेइ अमोने कृतार्थ करशे.

प्रसिद्ध कर्त्ता.

विषयानुक्रमणिका.

॥ श्रीजिनायनमः ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रीसूक्तमुक्तावली ज्ञाषान्तर प्रारज्यते ॥



॥ तत्र ॥

॥ प्रथम श्रीजिनेंद्रमूर्त्तिने प्रणाम करवारूप मंगलाचरण ॥

॥ मालिनी छंद ॥

सकलसुकृतवल्लीवृंदजीमूतमालां निजमनसि निधाय श्रीजिनेंद्रस्य मूर्त्तिं ॥ ललितवचनलीलालोकज्ञाषा-निबंधैरिह कतिपयपद्यैः सूक्तमालां तनोमि ॥ १ ॥

अर्थः—सकल नाम समग्र सुकृतरुपिणी वेलनो वृंद अर्थात् समूह ते रूप मोतीनी माला एवी श्रीजिननी मूर्त्तिने मनमां धरीने रुडा वचननी चतुराईवडे लोकज्ञाषायें करी ए मुक्तावली पद्यबंध करुंछुं.

॥ अथ क्रमसंग्रह काव्यं ॥ शार्दूलविक्रीडित छंदः ॥

॥ तत्त्वज्ञान १ मनुष्य २ सज्जनगुणा ३ न्याय ४ प्र-तिज्ञा ५ क्षमा ६, चित्ताद्यं ७ च कुलं ८ विवेक ९ विनयो १० विद्योपकारो ११ द्यमाः १२ ॥ दान १३ क्रोध १४ दया १५ दितोष १६ विषयाः १७ ताज्यप्रमाद १८ स्तथा, साधुश्रावकधर्मवर्गविषये ज्ञेयाप्रसंगाह्यमी १९ ॥ २ ॥

॥ आ ग्रंथमां आवेला अधिकारना बोलोनो अनुक्रम ॥

अर्थः— १ तत्त्वज्ञान एटले शुद्धदेव, शुद्धगुरु अने शुद्धधर्म; २ डुष्कर मनुष्य ज्ञव पामवो; ३ सज्जनपणानो गुण; ४ न्यायमार्ग; ५ प्रतिज्ञा लीधी ते न मुकवी; ६ क्षमानो संबंध; ७ चित्तनो संबंध;

७ कुलनो संबंध; ए विवेकनो संबंध; १० विनयनो गुण; ११ विद्यानो उपकार; १२ उद्यम; १३ दान; १४ क्रोध; १५ दया; १६ संतोष; १७ विषय छांडवा; १८ प्रमाद छांडवा; १९ तथा वली साधु अने श्रावकना वर्गने प्रसंगथी जाणवा. ए प्रकारे आ ग्रंथमां ओगणीस अधिकारनुं विस्तारपूर्वक स्वरूप कहेवामां आवशे.

॥ अथ धर्मवर्ग प्रारंभः ॥

॥ देवतत्त्व विषे ॥ मालिनी छंदः ॥

सकल करमवारी मोक्षमार्गाधिकारी ॥ त्रिभुवनउपगारी केवलज्ञानधारी ॥ भविजन नित सेवो देव ए भक्तिभावे ॥ इहिज जिन भजंतां सर्व संपत्ति आवे ॥ ३ ॥

अर्थः– अरिहंत प्रभु अष्ट कर्मनो अंत करवे करीने मोक्षमार्गना अधिकारी छे, त्रिभुवनने उपकारना करणहार अने केवलज्ञानना धरणहार छे, एवा प्रभुने हे भव्य जीवो ! तमे नित्य भक्तिभावे करीने सेवो, एवा जिनेश्वरने भजंतां एटले ए जिनेश्वर भगवाननी सेवना–स्तवनादि करवाथी प्राणी सर्व संपत्ति पामे, अर्थात् आलोकनेविषे पुत्रपौत्रादि धनधान्यादि नव निधि पामे अने परलोकनेविषे देवपणुं तथा मोक्ष पामे. ३

जीनवरपदसेवा सर्वसंपत्तिदाई ॥ निशिदिन सुखदाई कल्पवल्ली सहाई ॥ नमि विनमि लहीजे सर्व विद्या वडाई ॥ ऋषभ जिनह सेवा साधतां तेह पाई ॥ ४ ॥

अर्थः– जिनेश्वर भगवानना चरणकमलनी सेवा सर्व संपत्ति एटले सघली संपदाने आपवावाली छे, जेम कल्पवेल रात्रे अने दिवसे वधे छे तेम तीर्थंकर प्रभुनी सेवा थकी आलोक तेमज परलोकनेविषे सर्व प्रकारनी सुख संपदा पामीये. जेवी रीते श्रीऋ-

षज्नदेव जिनेश्वर ज्ञगवाननी सेवा करवाथी नमि अने विनमी सर्व विद्यानी मोटाई पाम्या तेम पामीये. अत्रे आ दृष्टांतने दृढ करवा माटे नमि अने विनमीनी कथा कहेछेः—

॥ देवतत्व उपर नमि अने विनमिनो प्रबंध ॥

प्रथम तीर्थंकर श्रीआदीश्वरजीना नमि अने विनमि नामना बे पालक पुत्र हता. ज्यारे श्रीआदीश्वरजीए दीक्षा लेवाने समये पोताना सो पुत्रने पृथक् पृथक् राज्य वहेंची आप्युं त्यारे आ बे ज्ञाई नमि अने विनमी परदेश गया हता. ऋषज्ञदेवजीए चारित्र ग्रहण कर्या पछी केटलोक वखत वित्याबाद परदेश गयेला आ बंने ज्ञाई घेर आव्या. प्रज्ञुने घर आगल न जोवाथी तेमणे पुछ्युं त्यारे लोकोना कहेवाथी तेमना जाणवामां आव्युं के, प्रज्ञुए तो दीक्षा लीधी अने सघला पुत्रोने राज्य पण वहेंची आप्यां. ते वखते आ बंने ज्ञाईए पुछ्युं के, अमारुं राज्य किहां? लोकोए कह्युं के, ज्ञगवंत तो हवे निःपरिग्रहीत थया थका पृथवितलने विषे विचरे छे, अने सो पुत्रने राज्य वहेंची आप्युं ते वखते तमारो ज्ञाग जूदो पाडी आपेलो अमारा जाणवामां नथी. तेमज हवे तो प्रज्ञुने " न करेमी नकारवेमी" छे तेथी ते तो तमने आपशे नहीं, माटे तमे हवे तो म्होटा ज्ञाई ज्ञरत प्रत्ये जईने कहो, तेमनी पासे मांगो. आ प्रमाणे लोकोए कह्युं त्यारे ते बंने ज्ञाई कहेवा लाग्या के, " जाचुं एटले, मागुं तो पिताजी पासे, ते विना अवर पासे न मागवुं, प्रज्ञु आपशे तोज लेवुं." आम धारी ते बंने ज्ञाई प्रज्ञुजी ज्यां विचरता हता त्यां तेमनी पासे गया. प्रज्ञुने जोई विनयसहित तेमनी पासे राज्य माग्युं, परंतु प्रज्ञु तो मोनपणे रहेला छे तेथी तेओ तो कांई पण बोल्या नहीं अने अन्यत्र विहार करी गया. नमि अने विनमि पण प्रज्ञुनी साथेज गया. पछी प्रज्ञु ज्यां ज्यां विहार करे त्यां त्यां

मार्गमांथी ते बंने जाईउ कांटा कांकरा प्रमुख वीणीने वेगला कहाडी नाखवा लाग्या, तथा पृथ्वी पुंजीने जलनो बंटकाव करी फूलनां पगर जरवा लाग्या. वली प्रजुनी बंने बाजु चामर विंजे, रस्तामां कोई पण प्रकारनी प्रजुने विहार करतां अमचण न पडे एवीरीते जूमि शोधता आगल चालता हता तथा जक्तिसहित सविनय प्रजुपासे राज्य माटे याचना करता हता. आ प्रमाणे निरंतर प्रजुनी जक्ति करतां केटलोक काल व्यतित थया पछी एकदा प्रस्तावे प्रजुने वांदवा माटे धरणेंड आव्या. आ बे बांधवने प्रजुनी सेवा करतां देखीने धरणेंडे तेओने पुछ्युं के, "तमे शा कारण माटे जक्ति करो छो ?" तेवारे बंने बांधवो बोल्या जे-"राज्य वास्ते." धरणेंडे जणाव्युं के, "हवे निरागी पासे शुं मांगो छो?" नमिए कह्युं के, "एहज आपशे." आवो तेउनो निश्चय जाणी अने तेउनो प्रजुप्रत्येनो जक्तिजाव जोई प्रसन्न थई धरणेंडे तेउने अमतालीस हजार विद्याउं आपी, तथा वैताढ्य पर्वततुं राज्य आपी दक्षिण श्रेणीने विषे उगणपचास अने उत्तरश्रेणीनेविषे उगणसाठ नगर वासी आप्यां. धरणेंडे आ बंने जाईउने उपर जणाव्या प्रमाणे अमतालीस हजार विद्या आपवाथी ते बन्ने जाईउ विद्याधरपणुं पाम्या, अने तेमना वंशजो विद्याधर कहेवाया. प्रजुजक्तिनुं आ प्रत्यक्ष फल नमि अने विनमिने मल्युं. माटे प्रजुनी सेवा सर्व संपत्तिने निःसंदेह आपवावाली छे.

॥ अथ गुरुतत्त्वविषे ॥

॥ स्वपरसमयजाणे धर्मवाणी वखाणे॥ परम गुरुकह्याथी
तत्त्व निःशंक माणे ॥ जविककज विकाशे जानुज्यूं तेज
जासे॥ इहज गुरु जजो जे शुद्धमार्ग प्रकाशे ॥ ५ ॥

अर्थः– स्वसमय एटले जे जिनेश्वरनां सिद्धांतनां जाण छे, अने पर समय एटले जे मिथ्यात्वना ग्रंथना जाण छे, जे धर्मनी वाणीना वखाण करनार छे, परमगुरु एटले जे उत्तम गुरु तेमना कह्याथी जे तत्त्वने आत्मा निःशंकपणे जाणे, जे ज्ञविक रुपीया कज कहेतां कमल तेने विकस्वर करनारा छे, अने ज्ञानु ज्यूं तेज ज्ञासे कहेतां सूर्यनीपेठे जे ज्ञानना प्रकाशक छे, अने वली जे शुद्ध मार्गना वतावनारा छे, एवाज गुरुने ज्ञजो एटले स्तवो–मानो. गुरुतत्व दृढ करवामाटे गुरुथी कोण कोण जीव तर्या छे ते कहे छेः–

॥ सुगुरुवचनसंगे निस्तरेजीवरंगे ॥ निरमल नीर थाए जेम गंगाप्रसंगे* ॥ सुणिय सुगुरु केशी वाणि राय प्रदेशी ॥ लहि सुरज्ञव वासी जे हसे मोक्षवासी ॥६॥

अर्थः– जेम मेलां पाणी होय अने ते ज पाणी गंगानां जलमां ज्ञल्यां थकां पवित्र अर्थात् शुद्ध थाय तेम सद्गुरु वचनने संगे करी जीव सुखेसमाधे निस्तार कहेतां पार पामे छे. जेम केसिकुमार गणधरनी वाणी सांज्ञलीने प्रदेशीराजा प्रतिबोध पामी देवतानी गती पाम्या अने मोक्ष पण पधारशे. तेम बीजा पण प्रतिबोध पामे. ते उपर विवरीने दृष्टांत कहेछे. ॥

॥ गुरुतत्व उपर केसिकुमार गणधर अने प्रदेशीराजानो प्रबंध ॥

ज्ञरतक्षेत्रने विषे केकै नामे देशमां श्वेतांबिका नामनी नगरीमां प्रदेशीराजा राज्य करतो हतो. ए नास्तिक मतवादी, अत्यंत अधर्मी पापनां कामो करवानेविषे रातो मातो, ज्ञक्षाज्ञक्षने पण नहीं

---

*बीजी प्रतमां आ ग्रंथना मूलमां आ चरण नीचे मुजव छे. “ निरमल नर थाए जेम गंगा प्रसंगे” (तेनो अर्थ–) जेम गंगाना जलवरे स्नान करवाथी मनुष्यनी देह स्वच्छ थायछे अर्थात् शरीर उपर लागेला मेलादि धोवाई जवाथी शरीर शुद्ध थाय छे तेम सद्गुरुना संगे करी आत्मा निर्मल थाय छे.

जाणनारो, अने जेना बन्ने हाथ सदाय (हमेशां) लोहीयें करी खरडेला रहे छे, एवो नर्कें जवाने तत्पर थई रहेलो हतो. वली ए नास्तिकमतवादीना मगजमां रात्रि दिवस एवुं घोलाया करतुं हतुं के, "जीव तो छे ज नहीं, एतो पंचभूते करी पिंड बंधाएलो छे. पृथवी १, अप (पाणी) २, तेउ ३, वायु ४ अने आकास ५, ए पांच भूतनो बांधेलो आ पिंड छे. ए पांचने नासवे करी सर्वे पुद्गल वेराय छे." आवी तेनी मान्यता होवाथी तेविषे खात्री करवाने तेणे घणी वार चोरने पकड्या अने जूदी जूदी रीते तेनो तपास करी जोयो. ते एवी रीते केः—एक चोरने जीवतो तोली जोयो, पछी तेने मारीने तोल्यो, परंतु बन्ने वखत तेनुं वजन बराबर थयुं; एक चोरने मारी तेना शरीरना खंडोखंड करी, ते प्रत्येक खंडमां जीवने खोल्यो पण ते चोरनी कायामां कोईपण स्थले जीव दीठो नही; एक चोरने पकडीने लोढानी कोठीमां घाल्यो अने ते कोठीना मों उपर लोढानुं ढांकणुं देई ते उपर सीसु ढाली एवुं तो बंध कर्युं के तेमां कोईपण प्रकारे वा (पवन) सरखो पण संचार करी शके नहीं, केटलेक दिवसे आ करेला प्रयोगनी तपास करवा माटे कोठीनुं मों उघडावी तेमां जोयुं तो चोर मरी गयेलो मालम पड्यो, एनो जीव तो गयो, परंतु ते क्यां थईने गयो तेनी तपासमाटे कोठीने चारे बाजु उपर नीचे घणी बारीकीथी जोई, तथापि तेमां कोई जगाये छिद्र (काणुं) न दीठुं, अने विशेषमां ए चोरना मृतकदेहमां उत्पन्न थयेला जीवता कृमिया (कीडा) तेना जोवामां आव्या. चोरनो जीव गयो अने तेना मृत कलेवरमां कीडा आव्या, तेम छतां सोयना अग्रभाग जेटलुं पण कोई स्थले छिद्र पडेलुं मालम पड्युं नही तेथी वली तेणे पोताना मनसाथे विशेष खात्री करी के 'जीव' छे ज नहीं. एतो पंच भूतने नासे करी नास

दीसे छे अने पंच ज्ञूतने मीलाणे करी मीलाण (जीव) दीसे छे. जीव नथी तेथी पुन्य अने पाप पण नथी, एवो ते नास्तिक थयेलो होवाने लीधे सर्व लोकोने एम कहेतो हतो के अवतार (पंचज्ञूतथी उत्पन्न थयेलो जीव) पाम्या छो तो खाउ पीयो, पहेरो ओढो, मोज शोख करो, जे कांई सुख ज्ञोगव्युं ते आपणुं छे; जे लोको मरजी मुजब मोज शोखादि करवानी मना करे छे ते तो फक्त बालकनी बीवडामणी सरखुं छे. आवो अयोग्य-खोटो उपदेश करनारा अधर्मी प्रदेशी राजाने आ प्रमाणे वर्त्ततां केटलोक काल व्यतित थया पछी एक वखत तेणे पोताना चित्रसारथी नामना प्रधानने कांईक दरबारना कार्य प्रसंगे कोसंबी नामे नगरमां मोकल्यो.

श्री पार्श्वनाथ ज्ञगवानना शिष्य—महापुरुष चार (मति, श्रुत, अवधी, मनःपर्यव) ज्ञानना धरणहार केसीकुमार गणधर आ वखते कोसंबी नगरीमां बीराजेला हता. ज्ञविक जीवने धर्मनी देशना देवामां अहोनिश तत्पर एवा ए केसीकुमार गणधर महाराज पर्षदा आगल धर्म प्रकाशता हता ते वखत प्रदेशी राजानो प्रधान चित्रसारथी सांज्ञलवा आव्यो. गणधर महाराजनी देशना सांज्ञलतांज हलुओकर्मी होवाथी चित्रसारथी प्रतिबोध पाम्यो. पछी तेणे पर्षदामांथी उठ्या बाद बे हाथ जोडी विनय सहित गुरुमहाराजने विनती कीधी के, “ हे स्वामी ! श्वेतांबिका नगरीए पधारजो, आपना आगमनथी धर्मना उद्यमनो घणो लाज्ञ थशे.” गणधर महाराजे तेने जणाव्युं के—“तमारो राजा तो दुष्ट छे.” चित्रसारथीए कह्युं के— “ आपसाहेबना पधारवाथी कल्याण थशे.” गुरुए जणाव्युं के—“अवसरे जणाशे.” आ प्रमाणे गुरुमहाराज साथे प्रश्नोत्तर थया पछी चित्रसारथी तेमने वंदनादि करी त्यांथी चाली नीकल्यो. कोसंबीनगरीमां

दरबारना जे कार्य माटे आव्यो हतो ते कामकाज करीने ते (चित्रसारथी) पोतानी श्वेतांबिकानगरीमां आव्यो अने प्रदेशी-राजाने प्रणाम करी पोताने घेर गयो.

त्यारपछी तेणे वनपालकने पोताने घेर एकांतमां बोलावीने कह्युं के, उद्यानमां ज्यारे कोई महापुरुष (महात्मा-मुनी) आवे त्यारे ए वात राजाने जणावतां पहेलां अर्थात् राजा न जाणे तेम तुं मने प्रथम जणावजे. राजाने ए वातनी खबर पडवा देईश नहीं. वनपालक, प्रधाननुं वचन मस्तके चढावी अर्थात् मान्य करी पोताने स्थानके गयो. एकदा प्रस्तावे ग्रामानुग्राम विहार करता करता केसीकुमार गणधर महाराज श्वेतांबीका नगरीना मनोरम्य नामना उद्यानमां समोसर्या (आव्या). वनपालके मंत्रीनी आज्ञानुसार आ वात तेने जणावी. राजाने आ वातनी खबर पडवा दीधी नहीं, परंतु म्होटा पुरुषनुं आगमन नगरनेविषे लोकोथी अजाण्युं रह्युं नहीं. घणा भविक जनो गुरुमहाराजने वांदी तेमना दर्शननो लाभ पण लई आव्या. चित्रसारथीए राजापासे आवी तेमने गुरुमहाराज पधार्यासंबंधी कांईपण न जणावतां, तेमने रयवाडी जवानो घणो शोख हतो तेथी तेमनेज रुचिकर रयवाडी जवानी विनती करी. आ सांभळी राजा खुसी थयो अने तरतज सावधान थई रयवाडी जवा निकळ्यो. चित्रसारथी पण तेमनी साथे गयो. गुरुमहाराज ज्यां आगळ देशना देता हता त्यां आगळ पाधरोज ते (चित्रसारथी) राजाने लईने आव्यो, जेथी तेणे गुरुमहाराजने दीठा. गुरु महाराजने जोतांज राजाए मश्करी करवा मांडी अने चित्रसारथी प्रत्ये कहेवा लाग्या के, "अरे चित्र ! ए मुंड शुं लवलव करी लोकोने धुती पाखंडमां नाखेछे ?" ए कोण छे? चित्रे कह्युंके, "महाराज ! हुं नथी जाणतो जे ए कोण छे, जो आपनी ईछा ते जाणवानी

होय तो आपणे त्यां जईये, एटले जे हशे ते मालम पडशे. चित्रनुं कहेवुं ठीक लागवाथी ते मान्य करी राजा चित्रने साथे लेई गुरुमहाराजपासे आव्या. तथापि अहंपदपणे अनम्र थका त्यां आवी बेठा. आ वखते गुरुमहाराजे विशेषता प्रकारे करी राजाने बोलवानो प्रसंगज आवी लागे एम धारी जीवनीज व्याख्या करवा मांडी. जीवनी वात सांभलीने तरतज राजा बोली उठ्यो के, हे स्वामी ! तमे महारा भोला लोकोने जूठे जूठ चलावीने शुं भोलवो छो ? वली तमे 'जीव' कहो छो, पण जीव तो क्यांईए देखातो नथी. पोकारी पोकारीने जीव जीव कह्यां करो छो जेथी भोला लोको भ्रमणामां पडे छे. ते बतावी शकता नथी तेमज ते जोवामां आवतो नथी तो शामाटे भुलावो खवरावो छो ? जीव तो छे ज नहीं. गुरुए कह्युं के–' ते (जीव) नजरे नावे, एवुं मानतां थकां तो घणुंज विघटशे.' राजाए कह्युंके – 'घणुं शुं विघटशे ?' गुरुए जणाव्युं के– " तमे तमारुंज विचारो जे, तमारा पोतानी वांसे (पाछल) शुं छे ? ते तमोने मालम पडे छे किंवा नथी परन्तुं ? राजाए कह्युं के, 'वांसो' तो छे. गुरुए कह्युं के, आपणने आगली (चक्षु सामेनी) सर्व वस्तुनी खबर पडे छे, पण साक्षात् चक्षुए करी वांसानी खबर नथी पडती, तेनुं शी रीते ? एटले के, वांसो चक्षुवडे देखी शकातो नथी, तेम छतां तमे पाछल 'वांसो' छे,एम शाकारणथी कहो छो ? तमे 'जीव' नथी देखातो तेथी ते (जीव) मानता नथी, तो वांसो छे एवुं केम मानो छो? तमारे तो तमने फावतुं आवे ते ज मानवुं, एवुं दीसे छे. बेमांथी एके प्रकारे एटले हा के ना कहेवाने तमने परवरतुं आवशे नहीं. माटे 'जीव' छे ए सत्य करी मानवुं. आ प्रकारे कहेली गुरुनी वात उपर राजाने कांईक प्रतिती थई, परंतु पूरेपूरो संदेह नहीं जवाथी तेणे जणाव्युं के–" जी-

वने जोवा माटे में केटलाक चोरने हण्या, छेदन भेदन कर्या, पण जीव किहांयें न दीठो." गुरुए कह्युं के, तुं जो, अरणीना काष्टमां अग्नि छे के नहीं ? तेमां अग्नि छे. परंतु केटलीक रूपी वस्तुनो स्वभाव तत्काल नहीं देखावानो होवाथी तेमां अग्नि छे एवुं तुरत मालम पडतुं नथी, पण जो तेने (अरणीना काष्टने) लोढाना सरिया प्रमुख साथे घसे तो अग्नि प्रगट थाय छे. रूपी पदार्थमां आम छे, तो जीव, के जे अरूपी छे, ते केवी रीते दृष्टीए पडे? वली जो, सांभल अने विचार कर, के 'दुधमां घी,' 'तिलमां तेल,' अने 'फूलमां सुगंध,' छे के नही ? छे, छतां केम दृष्टीगोचर नथी आवतां. ए संबंधे तारे विचारवुं जोईए के उपर बतावी ए विगेरे केटलीक रूपी वस्तुओ देखाती नथी, तेनुं कारण तो तेनो मूल स्वभावज तेवो छे तेथी ते देखाती नथी, पण बीजा प्रयोग वडे ते देखी शकाय छे. परंतु जीव तो मूलेज अरूपी छे तो ते केम देखी शकाय ? देखी शकाय ज नहीं, ए तारे निःसंदेह जाणवुं. त्यारपछी. राजा कहेवा लाग्यो के एक वखत में चोरने कोठीमां घाली तेनुं ढांकणुं बंध करी सीसुढाली तेमां जरा पण पवनमात्रनो संचार न थाय तेवो बंदोबस्त कर्यो हतो, तथापि ते चोरनो जीव गयो अने वली विशेषमां बीजा केटलाक कीडा तेमां आवेला मालम पड्या. चोरनो जीव क्यां थईने गयो अने कीडाना जीवो क्यां थईने आव्या, ते विषे घणी बारीकीथी तजवीज करी परंतु ए कोठीमां कोई पण जगोए सोयना अग्रभाग जेटलुं पण छिद्र पडेलुं जोवामां आव्युं नही. खात्रीपूर्वक कही शकुं छुं के तेमां बीलकुल काणुं पडेलुं नहोतुं, तेथी हुं तो एमज मानुं छुं के 'जीव' छे ज नहीं, ए तो पंचभूत थकी उपजे छे अने लय पामे छे. आ बाबतना समाधानमां गुरुमहाराजे तेने जणाव्युं के, रूपी वस्तुनां

कोणीं नथी पडतां, तो जीव, के जे अरूपी छे तेनां तो काणां परेज केम ? न ज पडे. राजा बोल्यो के, जो एम छे तो एवुं कोई प्रत्यक्ष प्रमाण आप बतावी शकशो? गुरुमहाराजे कह्युं के, हे राजन्! सांजळः-

जमीननी अंदर करेला गुप्तघरमां एटले जोंयरामां कोईक मनुष्य रह्यो छतो ते जोंयरानां कमाड, जाली आदि छिद्र विगेरे तमाम बंध करीने तेमां ढोल, नगारां, जेरी, जुंगल, सरणाई, मादल विगेरे विविध प्रकारनां वाजित्र वजाडे तो तेनो घोष जमीन उपर रहेला मनुष्यो सांजळे छे, के नही ? तेमज अमुक अमुक वाजित्रनो आ शब्द छे एम पण स्पष्ट समजी शकाय छे, के नही ? राजाए जणाव्युं के, ए तो सांजळी शकाय छे अने समजी पण शकाय छे. गुरुए जणाव्युं के, ते स्थानके छिद्र मात्र नहोतुं, छतां पण तेमां थयेला घोषनो शब्द संजळायो अने समजायो, ए उपरथी खात्री करी लेवी के, वाजित्रो तो रूपी, ते तेनो शब्द संजळावामां छिद्र न पड्युं तेकरान देवता मनुष्यव्यापी छे ते जीआ जणाव्यां तेटलां कारण प्रसंगे देवता मनुदेखाडवाथी रा अन्यथा आवे नहीं.

निःसंदेहपणे तो ए सत्य कह्युं, एम जणावी वली पण राजा

त्यारपछी राहेवा लाग्यो के, हजु मारा मनमां एक संदेह छे मारी खात्री थ). ते ए के:-मारो पिता पापे छ, एम जे कह्यं ते ए मारा मानवामां आवेतु नथी. ए वातनो मने संदेह छे, पाप अने पुन्य छेज नहीं. गुरुमहाराजे तेना उत्तरमां जणाव्युं के, पाप अने पुन्य ए बन्ने छे, तेनां फल प्रत्यक्ष देखाय छे. जो तुं पुन्य पापनुं फल नथी, एम कहीश तो एक सुखी अने एक दुःखी; एक हाथी उपर बेसीने जाय छे, एक पगपालो जाय छे; एक सुखपालमां बेसीने जाय छे, एक तेने उपाडीने चाले

बे; एक ठाकुर थईने हुकम फरमावे बे, एक तेना तावामां रही नोकरी बजावेबे; एक राजा महाराजा थईने स्वारी कहाडी एकने आगल दोडावेबे; ए बधुं शाथी थाय बे ? पुन्यवान शेठ थाय बे अने अपुनीयो चाकर थाय बे. आथी तहारी खात्री थशे के पुन्य अने पाप बे ज. प्रत्यक्ष प्रमाण ए तेनां फल बे. आ हकीकत सांजली तथा तेवां बीजां पण केटलांक दृष्टांत गुरुए कह्यां ते सदही राजाए 'पुन्य अने पाप' बे ए वात मान्य करी; तथापि तेणे कह्युं के, जबे, ए वात खरी बे पण तेमां मने एक वातनो विचार (संदेह) आवे बे; ते ए के–महारी वडीआई हती ते तो तमारो धर्म घणोज मानती हती अने ते प्रमाणे वर्त्तति हती, तमाराज धर्मनी रागी हती, तेथी तमारा मते (अभिप्राय प्रमाणे) तो ते देवतापणुं पामी हशे. ते वडीआईनो महारा उपर घणोज राग हतो अने ते मने घणुंज चाहाती हती, हरेक ... महारुं श्रेय करवा ते मथती हती. ए मरीने देवता थई काय ज नहीं, ए तार ...आवी नहीं एनुं शुं कारण ? तेवारे गुरु लाग्यो के एक वखत में चोरने कोठीमां घाली ; वात कहु बुं ते करी सीसुढाली तेमां जरा पण पवनमात्रनो संचारांध आवे बे, ते दोबस्त कर्यो हतो, तथापि ते चोरनो जीव गयोपंच जोयण सशेषमां बीजा केटलाक कीडा तेमां आवेला मालम्देवातेणआवंती जीव क्यां थईने गयो अने कीडाना जीवो क्यां थमनुष्यलोकनो ॥२॥ अथ–'चारसें तथा ... गंध जाय बे तेथी देवता आलोकमां आवता नथी.' वली देवता कांई आपणा ओसीयाला नथी जे अहीं आवे. ते विषे एक दृष्टांत तने कहु बुं ते सांजली तेनो प्रत्युत्तर आप. हे राजन्! तुं अवल रीते नाह्यो होय अने रुमां उजलां वस्त्र पहेरी देवसेवाने अर्थे जतो होय एवा अवसरने विषे तमारोज रात दीवसनो सेवक कदापी कोई चंडाल पोताने माथे उचिष्ट वस्तु उपाडीने ज-

तो होय तेणे तमने देखीने कह्युं होय के, हे राजाधिराज! हुं तमारी गंडी वस्तुनुं नक्षण करनारो छुं माटे महारा मुखनी एक अगोचर वात छे ते तमे अहीं आवीने सांभलता जाओ. ते वखते तमे त्यां (तेनी पासे) जाओ किंवा न जाओ ? अथवा तेनी वात सांभलो अगर न सांभलो ? राजाए उत्तर आपतां कह्युं के, स्वामी ! तेनी पासे जाऊं नही, ऊभो पण न रहुं अने वात पण न सांभलुं. आवुं तेनुं बोलवुं सांभली गुरुए जणाव्युं के, जेम तमे तेनी वात सांभलवा न जाओ तेम ए देवता पण एमज जाणीने अहीं मनुष्यलोकमां आवता नथी. कदापि कोईक देवता अहीं आवे छे ते तो वचनना बांध्या थका आवे छे, अने बीजां पण केटलांक कारणवसात् आवे छे ते उपर कहेली गाथाः– पंचसु जिनकल्लाणेसुचेव ॥ महरिसीतवाणुंभावाओ ॥ जम्मंतरनेहणय ॥ आगछंतिसुराईयं ॥ १ ॥ अर्थ– 'जिननां पांच कल्याणकने विषे देवता आवे, तथा माहाऋषीना तपने प्रभावे देवता आवे, जन्मांतरने हेते स्नेहेकरीने देवता मनुष्यलोकमां आवे.' आ जणाव्यां तेटलां कारण प्रसंगे देवता मनुष्यलोकमां आवे, अन्यथा आवे नहीं.

स्वामी ! आपे ए सत्य कह्युं, एम जणावी वली पण राजा गुरुमहाराजने कहेवा लाग्यो के, हजु मारा मनमां एक संदेह छे ते फेडो (मटावो). ते ए केः–मारो पिता घणोज अधर्मी महापापनो करनारो हतो, त्यारे ते तो तमारे मते मरीने नर्कें गयो हशे. ते पण मने कहेवा आव्यो नहीं तेनुं शुं कारण? तेवारे गुरुए कीधुं के–जे नर्कनेविषे जई नारकीपणे उपजे छे, तेने परमाधामी देवता महा महा पराभव करे छे, केमके ए नारकी परमाधामीने वश छे. ए परमाधामी नारकीजीवने केवी केवी वेदनी उपजावे छे ते हुं तने जणावुं छुं ते ध्यान देई सांभल. साते नरकपृथ्वीनेविषे शीता-

दिक दश प्रकारनी क्षेत्रवेदना छे. अन्योअन्य मांहोमांहे प्रहरण विना उपजावेली वेदना ते पण साते नरके छे, मांहोमांहे प्रहरणनी कीधेली वेदना पण पांच नरक सुधी छे, हेठली अने पहेली त्रण नरके परमाधामीनी कीधी वेदना पण छे, ते वेदना कई कई छे ते सांजलः– शीत वेदना १, उष्ण वेदना २, क्षुधा वेदना ३, तृषा वेदना ४, खरज वेदना ५, परवशपणुं ६, ताव ७, दाघ ज्वर ८, जय ९, अने शोक १०. ए दश प्रकारनी वेदना नारकीना जीव वेदे छे. तेमज वली बीजी पण केटलीक वेदना तेउने जोगववी पडे छे. ते वेदनीने लीधे नारकीना जीव अहीं आवी शकता नथी. वली परमाधामीना वशमां पडेला छे तेथी ते पोते स्वतंत्र नहीं होवाने लीधे पण आवी शकता नथी. वली तने एक दृष्टांत कहु बुं ते सांजल अने तेनो उत्तर आप. क्वचित तमारी स्त्री सूरिकांता साथे कोई प्राणी विषयसुख जोगवतो होय अने तमे तेने देखीने पकडो, पछी तेने शुं करो? राजा कहे, स्वामी! तेनी कायाना खंडोखंड करी चारे दिशे बलिदान देउं. तेवारे गुरुए कह्युं जे–ए विषयीपुरुष तमने आजीजी करी विनवे के, हे राजाजी! तमे मने मुको तो हुं महारा कुटुंबने मली आवुं; तो तमे तेने मुकशो के नहीं? राजा कहे जे–महाराज! हुं तेने न मुकुं. गुरु कहे, शामाटे? राजा कहे के– महा अपराध कर्यो माटे न मुकुं, न जावा देउं. गुरु कहे के, जेम ए माणस मलवाने ना जई शके तेम ते (नारकीना जीवो) पण अहीं न आवी शके. जेम तमारी रीत छे तेम परमाधामीनी पण एहज रीत जाणजो. ए नारकीना जीवने जवा देताज नथी. एवां घणां दृष्टांत रायपसेणी सूत्र मध्यें घणा विस्तारथी वर्णवेलां छे, अहीं तो संक्षेप मात्र जणाव्यां छे.

उपर जणाव्या प्रमाणे केसीकुमार गणधर महाराजे प्रदेशी राजा-

ने प्रतिबोध पमाडवाथी तेनो संशय दूर थयो अने जैनधर्म उपर तेने संपूर्ण श्रद्धा थई. तेणे श्रावकनां बार व्रत उचर्यां. त्यारपछी राजाए राज्यद्रव्यना चार नाग कर्या. एक नाग नंकारनो १, बीजो नाग अंतेउरनो २, त्रीजो नाग दान पुन्यनो ३, अने चोथो नाग लश्करनो ४. आ प्रकारे धर्म पामी निश्चय करीने राजा जे चित्रसारथीनी साथे रयवाडी जवा निकळ्यो हतो ते पडतुं मुकी गुरुमहाराजनी पासेथी पाधरो घेर आव्यो. संसार उपर तेना परिणाम घणा लूखा थया. पोसा, पडिक्कमणां, सामायिकादि व्रत पच्चखाण करवामां सावधानपणे रहेवा लाग्यो. गणधर महाराज अन्यत्र स्थानके विहार करी गया.

हवे राजा विषय उपरथी पण मुर्छा उतारी संसारमां रह्या छतां विरक्तपणे वर्तवा लाग्यो. पहेलां पोतानी सूरिकांता स्त्री उपर तेने घणो प्यार हतो ते पण मटी गयो. सूरिकांताए पोताना प्रितमनो प्यार तेणीना उपर नथी अने हवे ते तेणीनी विषयवासना पण पूर्ण करवानो नथी एम ज्यारे चोकस जाण्युं त्यारे ते (सूरिकांता) अन्य पुरुष साथे लुब्ध थई. एम जाणीने जे, हवे ए नर्तार महारे शा कामनो छे. एतो सामी मने आडखील करनारो थई पडवाथी स्वेछाए महाराथी वर्त्ती शकाशे नहीं, माटे ए नजरथी वेगलो क्यारे थाय ? एवो लाग तपासवा लागी. एक वखत राजाए छठ (बे उपवास) कर्यो हतो, तेना पारणाना दीवसे ए सूरीकांता राणीए नोजनमां विष नेलव्युं, अने ए विषमिश्रितनोजन राजाने खवराव्युं. राजाना जाणवामां ते आव्युं पण संतोष परिणामे आत्मिक धर्म ओळखी रत्नत्रय धारी संवेग परिणामनी धारामां ते समाधिमां सूई रह्यो. ते वखते सर्व सामंत उमरावादि कुशलता पूछवा माटे आव्या, तेथी राणीए विचार्युं जे, रखे कोईना मुख आगल

राजा विषनी वार्ता कहे! जो ए वात करशे तो महारो पडदो फुटी जतां हुं खराब थईश अने ए बची जवानो संज्ञव छे. एम विचारीने राणी तरत राजाना बीछाना पासे गई अने स्त्रीचरित्र करती केशपासमुत्कल मुख उपर करी राजाना उपर पडतुं मूकी तेने गले अंगुठो दबावी दीधो. राजा मरण पाम्यो. राणी लोकोने पोतानी खोटी पण दीलगीरी बतावघा छाला विलाप करी पोकार करती बाहार नीकली. राजा काल करी समाधिमरणना प्रज्ञावथी पहेला देवलोके सूर्याज्ञविमानने विषे सूरियाज्ञ नामे देव थया. चार पल्योपमनुं आयुष पूर्ण करी त्यांथी चवीने महाविदेह क्षेत्रमां मनुष्यज्ञव पामी गुरुनो जोग लही चारित्र लेईने कर्म खपावी मोक्ष जशे, अनंता सुखने पामशे. ते माटे ए प्रदेशी राजानो संबंध जुओ. जो सद्गुरु मल्या तो धर्म पाम्या अने तेथी देवतानी ऋद्धि पाम्या अने मोक्षसुख पण प्राप्त करशे.

॥ अथ धर्मतत्व विषे ॥

॥ जलनिधि जलवेला चंद्रथी जेम वाधे ॥ सकल विज्ञवलीला धर्मथी तेम साधे ॥ मनुअजनमकेरो सार ते धर्म जाणी ॥ ज्ञजिज्ञजि ज्ञवि ज्ञावे धर्म ते सौख्य खाणी ॥७॥

अर्थः— जेम चंद्रमाना जोरथी समुद्रनी वेल वधे, तेम धर्मना जोरथी संसारिक संपदा वधे, मनुष्यजन्मने विषे धर्म ते सार जाणीने, हे ज्ञव्य प्राणी तुं ज्ञावे एटले आदर सहित सुखनी खाण जेवो जे धर्म तेने ज्ञज ज्ञज एटले आराध आराध. ॥७॥

ईह धरम पसाये विक्रमे सत्य साध्यो ॥ ईहं धरम पसाये शालिनो साक वाध्यो ॥ जस नर गज वाजी मृत्तिकाना जिकेइ ॥ रणसमय थया ते जीव साचा तिकेइ ॥८॥

अर्थः— एहज धर्मना पसायथी वीरविक्रमादित्ये पोताने स-त्वेकरी ते प्राक्रमवडे बधुं राज्य मेलव्युं अने वीर संवत्सर का-ढीने पोतानो संवत्सर स्थाप्यो, वली धर्मना प्रभाव थकी शा-लीवाहनने शक थयो, सघले जसवाद थयो, वली एहज धर्मना प्रभावथी हाथी पामे, अश्व पामे, रणमध्ये जयवाद पामी दि-ग्विजय करी घरने विषे जित—फतेह करी आवे ए सर्वे धर्मनुं फल जाणवुं ॥ ८ ॥

॥ अथ धर्म तत्त्व उपर विक्रम राजानी कथा ॥

मालवा देशमां उजेणी नामे नगरीने विषे गंधर्वसेन नामनो राजा राज्य करतो हतो. तेने रुपे रंभा समान मुक्तावली नामनी राणी हती. तेनी कुक्षीने विषे बे पुत्ररत्न प्राप्त थया हता. मोटानुं नाम भर्तृहरी अने न्हानानुं नाम विक्रम राखवामां आव्युं हतुं. अनुक्रमे ते बन्ने पुत्र यौवनावस्था पाम्या. त्यारपछी गंधर्वसेन रा-जाए पोतानी वृद्धावस्था जाणीने भर्तृहरीने पोताने पाटे स्थाप्यो, तेथी विक्रमकुमार रीसाईने परदेश चाल्यो गयो. भर्तृहरी राज्य पालतो थको विचरे छे ते वखते ते नगरमां एक दरिद्री ब्राह्मण रहेतो हतो. तेने ब्राह्मणीए कह्युं के, धन विना घरवास केम चा-लशे? माटे तमे धन उपार्जो. पछी ते ब्राह्मणे हरसिद्धि देवीने आराधी. देवीए प्रगट थईने तेने पुछ्युं के तें मने शा माटे आ-राधी छे? ब्राह्मणे तेने कीधुं के मने अजरामर फल आपो. ब्राह्मणनी मांगणी मुजब देवीए तेने अजरामर फल आप्युं. ते लेई ब्राह्मणे विचार्यु के, जो आ फल भर्तृहरी राजाने आपुं तो ते मारा उपर तुष्टमान थई मने घणुं धन आपशे, जेथी करी म्हारो घरसंसार सुखरूप चालशे. पछी तेणे ते अजरामर फल भर्तृहरी राजाने आप्युं. ते फल देखीने राजा आश्चर्य पाम्यो अने तेनुं स्वरुप तेणे पुछ्युं. ब्राह्मणे फल पाम्यानुं स्वरुप राजाने

जणाव्युं. ते सांभली हर्ष पामीने राजाए ब्राह्मणने घणुं धन आप्युं. राजाए ते फल पोतानी प्यारी पटराणीने हर्ष उपजाववानाहेतुथी आप्युं. राणी ए फल लेईने विचारवा लागी के, ए उत्तम फल मारा पांडव (राखेला) ने आपुं के जेथी तेनो मारा उपर विशेष प्रेम थाय. आम धारी राणीए ते फल पांडवने आप्युं. पांडवे ते फल लेईने विचार्युं के, ए फल मारी वेश्याने आपुं तो ठीक, के मारा उपर वधारे स्नेहभाव राखे. पछी पांडवे पोतानी शृंगारमंजरी नामनी गणिकाने ते फल आप्युं. शृंगारमंजरी विचारवा लागी के जो आ फल हुं राजाने आपुं तो ते मारो घणो उपकार मानशे. आ प्रकारे आलोचना करी शृंगारमंजरी ते फलने एक थालमां मुकी पोताना परिवारने साथे लेई राजसभामां आवी, अने अजरामर फल राजाने भेट मुक्युं. राजाए ते फलने ओलख्युं तेथी ऊंडा विचारना वमलमां पडी गयो अने आतो कांई विरुद्ध वात दीसे छे एम धारीने तेणे गणिकाने पुछ्युं के ए फल तुं क्यांथी लावी ? गणिकाए साची वात न जणावतां जूठी वात गोठवीने राजाने समजाववा मांड्यो, पण राजा, के जे आ फलनी वातथी पूर्ण माहितगार हतो तेणे तेनुं कहेवुं तदन खोटुं छे एम जणावी तेने फरी फरी पुछ्युं, तो पण तेणे खरी हकीकत कही नहीं. छेवटे तेणीने ताजणे मारवा मांडी त्यारे ते कहे के साची वात जणावुं छुं, मने मारशो मां. पछी तेणीए जणाव्युं के, तमारा घरमां पांडव नामे सेवक छे तेणे मने आप्युं छे. राजाए पांडवने बोलावी पुछ्युं के ए फल तुं क्यांथी लाव्यो? तेणे पाछो उत्तर न दीधो. तेने पण कुडो (खोटो) जाणीने तांजणेकरी कुटवा मांड्यो तो पण ते साचुं न बोल्यो. राजा प्रकारांतरथी आ वात मनमां समजीने राणीनुं चरित्र जाणी वस्त्रमां ते फलने ढांकीने राणी पासे गयो अने पु-

ह्युं के, में तने जे अजरामर फल आप्युं हतुं ते तें नक्षण कर्युं? राणीए जणाव्युं के ते में नक्षण कर्युं छे. राजा मनमां विचारवा लाग्यो के, आ स्त्री पण एज स्वनावनी छे अर्थात् सारी चालनी नथी. माटे ए असार एवो संसार छे एम चिंतवीने वैराग्य पामी राजाए दीक्षा ग्रहण करी.

विक्रम परदेश चाल्यो गयो हतो ते फरतो फरतो उजेणी नगरीनी बाहार क्षीप्रा नदीने कांठे आवीने रह्यो हतो. ते वखते त्यां आगल एक लाख पोठीनो साथ उतर्यो हतो. विक्रम कुमार ए पोठनी अंदर चोरी करवाने पेठो. ए पोठनो स्वामी पोताना एक मित्रनी साथे ए अवसरे सारिपासे रमतो हतो. तेवामां क्षीप्रा नदीमां पूर आव्युं. ते समये त्यां आगल फरती एक सीयालणी बोली. ते सांनलीने मित्रे शेठने पुछ्युं के सीयालणी शुं बोली? शेठे सीयालणीना शब्दोनो हेतु समजीने मित्र प्रत्ये कह्युं जे– ए (सीयालणी) एम कहे छे के, आ क्षीप्रा नदीना पूरमां एक स्त्रीनुं शब तणातुं आवे छे, तेना अंग उपर घणां आनूषणो छे, तेम तेनी पासे धन पण छे. जो कोई साहसीक पुरुष होय तो ते नदीमांथी ए शबने काढी लावी तेनी पासेनुं धनादि लेई तेना कलेवरनुं मने नक्षण आपो. आ वात पोठनी अंदर चोरी करवा आवेला विक्रमकुमारे गुप्तपणे रहेलो होवाथी सांनली, तेथी ते तरत क्षीप्रा नदीना पूरमां उतरी पड्यो अने तरतां तरतां जई स्त्रीना शबने खेंची लावी तेनी पासेना आनूषणादि लेईने सीयालणीना कहेवा मुजब कलेवर तेने नक्ष करवाने आप्युं. पछी गनोमानो अगाऊ ज्यां पोठनो स्वामी अने तेनो मित्र सारिपासे रमता हता त्यां आवी गुप्तपणे ऊनो रह्यो. त्यारपछी वली तेज सीयालणी बोली. मित्रे शेठने ते संबंधी पुछ्युं, त्यारे तेणे कह्युं के–हे मित्र! ए एम कहे छे के, जे

मनुष्ये मने भक्षण दीधुं ते पुरुष उजेणीनुं राज्य करशे. विक्रमें आ हकीकत पण सांभली. एटलामां तो वली फरी त्रीजी वार सीयालणी बोली. आ वखते शेठे गुप्तपणे विक्रम ऊभो रह्योहतो ते प्रत्ये (तेने) दीठो. देखतांज तेने अंगोअंगे भेटी पड्यो. विक्रमे प्रगट थइ शेठना मुखथी त्यां आगल सीयालणी जे जे बोली हती ते सर्वे बीना सांभलीने हर्ष पामी शेठने कह्युं के, वेथी तुं मारो मंत्री.

त्यारपछी ते मंत्रि अने राजा (विक्रम) नगर भणी जवा लाग्या. ते वखते तेमने सर्व उत्तम सुकन थया. सुकन वधावी नगरमां प्रवेश कर्यो तेज तखते कोई एक राज्यपुरुष एक कुंभारने वारानी चीठी आपी तेना पुत्रने लई जतो हतो ते जोवामां आव्युं. कुंभार, तथा तेनी स्त्री पोताना पुत्रने लेइ जतो जोई आक्रंद करतां हतां. ते देखीने विक्रम बोल्यो के, तमे केम रुदन करो छो? त्यारे तेमणे जणाव्युं के, अमे वृद्धावस्था पाम्या छीये, ए एक बेटा उपर अमारी सर्व आशा छे, ते अमारा दीकराने आ राज्यपुरुष लेई जाय छे तेथी अमे रुदन करीये छोये. ते वखते विक्रमे कह्युं के, तमे रुदन म करो. हुं तमारा पुत्रने स्थानके जईश. पण मने तमे जणावशो के, ए राज्यपुरुषे शी बाबतना वारानी चीठी तमने आपी अने ते तमारा पुत्रने क्यां लई जवानो छे? तमे बेफीकर रहो, ज्हाय तेवा विकट स्थले जवानुं हशे तो पण त्यां हुं तमारा पुत्रने बदले जईश. विक्रमनां आवां साहसीक वचन सांभली कुंभारने धीरज आवी अने तेणे वारानी चीठी शामाटे आवी तेनुं कारण नीचे मुजब जणाव्युं.

" आ नगरना भर्तृहरी राजा एक अजरामर फलनां संबंधमां बनेली हकीगतथी वैराग्य पामी दीक्षा लई गया पछी अहींनुं राज्य सुनु पडवाने लीधे ' आगीयावीर ' सर्व प्रजाने हे-

रान करवा लाग्यो. तेथी तेने दररोज एक माणसनो ज्ञक्ष आपवानुं राज्यवर्गी पुरुषोए प्रजानी संमती मेलवी मुकरर करेलुं छे. ते प्रमाणे दररोज वारा फरती आखा नगरमांथी घर दीठ एक पुरुष तेना ज्ञक्ष माटे आपवो पडे छे. आज ज्ञक्ष माटे पुरुष आपवानो मारो वारो आव्याथी ते संबंधी मारा उपर वारानी चिठी आवी छे अने मारा पुत्रनो ज्ञक्ष आपवा सारु आ राज्यपुरुष तेने लई जवा लाग्यो छे. चीठी आववानुं अने मारा पुत्रने लई जवानुं जे कारण छे ते में आपनी पासे निवेदन कर्युं छे. हवे आपने जेम योग्य लागे तेम करो. "

विक्रमे ए कुंज्ञारना छोकराने राज्यपुरुष पासेथी तेना पिताने पाछो सोंपाव्यो, अने लागलो त्यांथी मंत्रीने साथे लेई दरबारमां जई पोते सिंघासन उपर बेठो. तेने उलखी सर्व लोक हर्ष पाम्या अने सर्व राजकुलि आवी तेने नम्या. पछी राजाए विचार्युं के, में कुंज्ञारने तेनो पुत्र सोंपाव्यो, परंतु रात्रे वीरने बली आपवी जोईये माटे तेनो कोईक उपाय करवो उचित छे. विचारतां विचारतां तेणे बुद्धि सुजी आवतां तुरतज कंदोईने तेडावीने कह्युं के, तमे आज सर्व जातनी उत्तम प्रकारनी सुखडी करी आपो. कंदोईए राजाना हुकम मुजब सुखडी तैयार करी आपी. राजाए ते सुखडी तथा विविध जातनी रसवती नीपजावरावीने तेना उरडा ज्ञरी दीधा. घणां पान सोपारी, चूआ चंदनादि सर्व खादिम् स्वादिम् अने मुखवासादिनी वस्तुउ उरडाथी खीचो खीच ज्ञरी देइ तेमां घणा दीवा कराव्या तथा सुगंधमय धुप धुपाव्या. दिवस अस्त थतां सर्व लोक पोत पोताने स्थानके गया. आगीयावीरनी बीकने लीधे कोई पण माणस राजमंदिरमां रहेतुं नहोतुं. आज रात्रे राजा एकलो राजमंदिरमां रह्यो. पलंग उपर शीरख पाथरी काष्ठनो पुर (पुरुषाकार)करीने तेना उपर वस्त्र ढांकी विक्रम

त्यां आगल दीवानी पुंठे हाथमां खड्ग लेई ऊभो रह्यो. मध्य रात्रिने समये आगीयोवीर मुखे फूकारा मुकतो, हाथमां डमरु वजावतो, पगे घूंघरा घमकावतो, रातां नेत्र करी धरती कंपावतो, मद्य मांसनो आहार करनारो आव्यो. आवतांज तेणे काष्ट प्रत्ये हथीआरे करीने हण्यो. काष्टना बे खंड थया पण माणस न दीठो त्यारे ते चारे दीशाये जोवा लाग्यो. ते वखते राजा दीवानी पाछलथी नीकली आवी वैताल (वीर) ने नम्यो. वैताले तेने पुछ्युं के आ बधुं कोने माटे मुक्युं छे? राजाए जणाव्युं के, तमारे अर्थे. ए सर्व वस्तुनो भोग लेईने रोग टालो. वैताल सर्वनो भोग लेई तृप्त थयो अने संतोष पामी राजानुं धैर्य जोई तेना उपर तुष्टमान थई बोल्यो के, हे राजन्! तुजने में ए राज्य आप्युं अने तुं मने आ प्रमाणे हमेशां बली आपजे. एम कही त्यांथी अदृश थयो (चाल्यो गयो). त्यारपछी राजा निश्चिंत थई सैय्या उपर सुई रह्यो. प्रभात थतां राजाए सैय्या थकी उठीने बहु दान दीधुं. प्रजालोक तेने घणो आसिर्वाद देवा लाग्या. सुखे समाधे राज्य करवा लाग्यो, परंतु वैतालने दररोज रात्रिए बली आपवो पडतो होवाथी ते तेने घणुं खटकतुं हतुं. ते न आपवो पडे एवी कोईक युक्ति खोली काढवामां तेनुं चित् लागी रह्युं हतुं. एक वखत वीर आव्यो त्यारे राजाए तेने पोतानुं आयुष्य केटलुं छे ए विषे पुछ्युं? वीरे कह्युं के तहारुं सो वर्षनुं आयुष्य छे. त्यारे विक्रमे कीधुं के आंकमां शून्य पड्यो माटे तेमां एक अधिक करो अथवा एक हीन करो. वीर कहे के, एमांथी अधिक के उछुं कोइथी न थाय. आ वात सांभलीने ते वखते वीक्रम मौन धारण करी गयो. बीजे दीवसे तेणे मन साथे विचार कीधो के, आयुष्यमां वध घट थई शकती नथी तो ए (वीर) मने शुं करनार छे? धीरजनां फल मीठां छे, धैर्य धर-

वाथी सर्व सिद्ध थशे, माटे एने बली आपवो नहीं, जोऊं के ते शुं करे छे? बीजे दीवसे मध्य रात्रे वीर आव्यो. त्यां तेणे बली न दीठुं एटले ते राजा उपर कोपायमान थयो. राजाए तेने कह्युं के जो तमे बलवान हो तो आवो आपणे बे युद्ध करीये. त्यारे वैताल हसीने बोल्यो के, हे राजा! तुं महा साहसीक सर्व सुभटमांहे वडो छे, माटे हुं तारा उपर तुष्टमान थयो छुं, तारी ईछामां आवे ते वर मारी पासे मांग. राजाए मांगणी करी के, "अहनिशी तमारे मारी संभाल राखवी, समर्था असमर्थ मारी पासे आवज्यो." वीरे ते प्रमाणे राजाने वर (कोल) दीधो. आथी राजा कोई पण प्रकारनो भय धरतो नहीं अने स्वेछाये राज्य करतां प्रजाने पोतानी प्रजातूल्य मानतो हतो.

ए उजेणी नगरीमां एक घांची रहेतो हतो तेनी पासेथी राजाए पंचडंड साध्या. सुधर्मा ईंद्र विक्रमना गुणे करी वसीभूत थयो थको तेना उपर घणी प्रीती राखतो हतो. तेणे राजाने बेसवा माटे एक सिंहासन मोकल्युं हतुं तेना उपर घांची समीपथी मेलवेला पंचडंडनुं छत्र कर्युं हतुं. ए सिंहासन उपर बेसवाथी राजा घणो शोभतो हतो. वली एणे त्रणसो नानापुरस साध्या. ते सत्वने पसाये करी जगनुं सर्व रण (रुण) तेणे काप्युं. ए रीते सुखे राज्य पालतो हतो.

एकदा समयने विषे ते उजेणी नगरीमां माहाकालना देराने विषे कुमुदचंद्र नामना आचार्य महाराज विक्रमने प्रतीबोधवाने अर्थे आवी उतर्या. ते महादेव (महाकाल)नी पींडी उपर पग मुकीने सुता. पूजारो आव्यो त्यारे ते आ विपरीत जोई बोल्यो के, अरे! तुं महादेवनी अवज्ञा केम करे छे? आचार्ये तेने कांई पण उत्तर न दीधो. पछी पूजाराए आ वृत्तांत विक्रम पासे जई निवेदन कर्यो. विक्रमे आवेशमां आवी जई हुकम कर्यो के,

ए पाखंडीने मारी काढो. ते सांभली राजाना सेवके आवीने तेने पगे पकडी खेंचवा मांड्यो, एटले पग वध्यो—लांबो थयो, हाथ खेंचता ते पण वधवा मांड्यो, मार मारतां ते अंतेउरमां वागवा लाग्यो. पछी ते सेवके राजा पासे आवीने कह्युं के, एने (आचार्यने) उपद्रव करतां तो विघ्न थाय छे. सर्व बनेली वीनाथी तेणे राजानें वाकेफ कर्यो तेथी राजा पोते देहेरामां आव्यो अने विनय सहित आचार्यने कहेवा लाग्यो के, हे देव ! आशातना केम करो छो? आचार्ये जणाव्युं के, हुं देवनी आशातना करतो नथी, देव तो अमारा एमांज छे. राजा कहे के, ए देव तो अमारा छे तमारा क्यांथी? अर्थात् तमारा नथी. जो तमारा होय तो प्रगट करो. ते वखते आचार्ये कल्याणमंदिर स्तोत्र करी आह्वान करीने जल छांट्युं एटले पींडी फोडी मांहीथी अवंति पार्श्वनाथ प्रगट थया. ते वखते विक्रमे आश्चर्य पामी गुरु सिद्धसेनाचार्यने नमन कर्युं. पछी शुद्ध देव गुरु धर्मने उलखीने तेणे सम्यक्त सहित श्रावकनां बार व्रत उचर्यां. एणे अरिहंतना धर्मने पसाये करीने पोताना सत्व थकी सुवर्ण पुरुषना साहाय्यथी जगतमांहे सर्वनां रण कापीने ते वखते चालतो वीरनो शक काढीने पोतानो शक प्रवर्त्ताव्यो. भगवंत वीर मोक्ष गया पछी चारसें सीतेर वर्षे वीरविक्रमनो संवत्सर प्रवर्त्यो. पछी विक्रमे पोतानी आज्ञा त्रण खंडमां वर्त्तावी. अरिहंतनी भक्ति करतां पोतानुं सो वर्षनुं आयुष्य पूर्ण करीने देवलोक प्रत्ये गयो. विक्रमनी विस्तार कथा जाणवाना जीज्ञासुए ते विक्रम चरित्रथी जाणी लेवी. अहीं तो प्रयोजन मात्र कही छे.

॥ धर्म तत्त्व उपर शालिवाहननी कथा ॥

दक्षिण महाराष्ट्रमां प्रतिष्ठान नामना नगरमां शालिवाहन नामे राजा राज्य करतो हतो. एक वखत ते नगरनी भागोले

वहेती क्षिप्रा नदीने किनारे फरवा गयेला शालिवाहन राजाए जलतरंगथी अथडातुं एक मच्छ नदीना आरापर आवीने हसतुं दीठुं. राजा मच्छने हसतुं देखी क्षोभ पाम्यो. कारण के, मच्छ कदी हसे नहीं परंतु तेनी स्वाभाविक प्रकृतिमां आ विकृति थई, ते मोटो उत्पात कहेवाय. आ प्रमाणे शोक करतो राजा नगरमां आव्यो अने सघला विद्वानोने बोलावी तेनुं कारण पुछ्युं, परंतु कोई तेना मननुं समाधान करी शक्यो नहीं. छेवटे ज्ञानसागर नामना जैन मुनीने मच्छ केम हस्युं ? एम पुछवाथी तेउए ज्ञानना अतिशय प्रभावथी तेना पूर्व जन्मनुं चरित्र जाणीने जणाव्युं केः—हे राजन् ! पूर्व जन्ममां तुं आ ज नगरमां निर्वंश एवो लाकडानो भारो वेचनार कठीआरो हतो. हमेशां काष्ठ वेची तेना जे पैसा उत्पन्न थाय तेनो साथु लावी क्षिप्रा नदीमां पडेली शिलापर ते साथुउ मुकी तेमां नदीनुं पाणी भेलवी तेना पिंड बनावी तुं भोजन करतो हतो. एक दिवस कोई जैन मुनि एक मासना उपवासने पारणे गोचरीए जता तें दीठा. श्रद्धा उत्पन्न थवाथी तें मुनीने बोलावी साथवानो पिंड वोहोराव्यो. सुपात्रने दान आपवाथी तेना प्रभाववडे त्यांथी देह मुक्त थतां आ जन्ममां तुं शालिवाहन राजा थयो छुं. मुनी कालधर्म पामी देवता थया छे. ते देव, पूर्वे काष्ठ वहन करनार जीवनी आ जन्ममां राजानी पदवीने पोंहोंचेली तारी स्थिति जोई प्रेमे करी मछना शरीरमां प्रवेश करी हस्या छे, माटे तारे ए संबंधी कांई शोच करवा जेवुं नथी. ऊहापोह करतां शालिवाहनने जाति स्मरणज्ञानथी पोताना पूर्व जन्मनु वृत्तांत अनुभववामां आवतां मुनीनुं कहेलुं बरोबर सत्य भास्युं. जैन धर्म उपर तेनी घणी श्रद्धा थई. ते दिवसथी दान धर्मने विशेषपणे आराधन करवा लाग्यो. धर्मनां कार्य करवामां

सदा तत्पर रहेतो. दक्षिण हिंदुस्तानमां दान गुणने लीधे एनो शक चालु थयो छे. अद्यापी टीपणानी अंदर शालिवाहननो ज शक चाले छे. विक्रम राजानी साथे तेने युद्ध थयुं हतुं ते संबंधी वृत्तांत नीचे मुजब छे.

सुप्रतिष्ठान नगरमां एक कुंभारने त्यां त्रण यात्रालुए प्रवास करतां आवी उतारो कर्यो हतो, तेमां बे भाई अने एक तेमनी तरतनी विधवा थएली बहेन हती. ए उर्वशीने पण हरावे एवी खूबसुरत हती. ते गोदावरीनदीना पूर्व किनारे नागह्रदनी समीप लगभग संध्यासमये पाणी भरवा आवी. प्रदोषसमय थवाथी गोदावरीपरनी मनुष्यनी भीड तदन वेराई गई हती. तेणीना सिवाय त्यां बीजु कोई नहोतुं. गागर विंछली निर्मल जलनी अपेक्षाए नागह्रदमां ठंडां पाणीमां प्रवेश करवाने पललवाना भयथी तेणीए पगनुं वस्त्र उंचुं लीधुं, ते समये विधवा होवाथी तेणे कांई अलंकार पहेरेला नहोता तथापि तेनी अलौकिक सौंदर्यताने लीधे जेम सूर्योदय थवाथी आरसना पाहाडउपरथी गलेलो बरफ खसी पडवाथी दीपी उठे तेम स्वछ तेनी बेउ जंघाउ चलकी उठी. ढींचण बरोबर जलमां प्रवेश करी वांकी वली हाथवती जल भरवाने गागर अंदर नमावी, ते वखते वसंतना वायुथी तेना माथानुं वस्त्र खसी गयुं. माथाना केसनी सुंदर लटरो बन्ने खभाना भाग उपर थई वांकनी वली खीलेलां स्तन शिखरोपर जेम पहाडनां शिखर फोडी नागणीउ बाहार नीकले तेम फुकी रहेली जोई, अपूर्व नागकन्या मने वरवा आवे छे, ते भरोंसाथी चकित थएलो नागराज अकस्मात् ह्रदमांथी बहार आव्यो. जेम वीजली थवाथी नेत्र मींचाइ जाय तेम ते विधवानुं मुखकमल जोवाथी वारे वारे ते नागराजनां नेत्र तेजथी पुराई जतां हतां. बल करी ते पोताना नेत्रने फाडी जो-

वा लाग्यो. जलमां भजेलो छे, सायंकालनो ठंडो पवन पुष्पाने अथडाई तेना शरीर उपर मंद मंद पडे छे, तथापि उंचिंतो नागराजना शरीरमांथी एवो कामाग्नि उत्पन्न थयो के जेने जीरववाने पोतानुं मन दृढ छोडीने तुर्त कुच करी गयुं. विधवागमननो दोष जाण्या छतां स्वरूपमां मोहित थएलो नागराज सामान्य पुरुषनी पेठे ते (विधवा)नी प्रत्ये विनयथी प्रार्थना करवा लाग्यो के, हतभाग्यवालो हुं आज तारा प्रसादने पात्र थवा इच्छा करुं छुं. मने आशा छे के, तुं मारुं कदी नहीं थएलुं आतीथ्य अंगीकार करीश? एम कही अंगस्पर्शथी पोताना कामाग्निनी वेदना घटाडवाना हेतुथी तेणीगम धस्यो. निर्विकार विधवाए तेनुं अघटित साहस जोइ, मानुषी छतां तेनी दुष्ट वाञ्छानो घणो तिरस्कार कर्यो. परंतु छेवटे देवनी सत्ता धरावनार ते नागराजना असाधारण बलात्कारथी नेत्र मींची ते अघटिताचरण सहन करी रही. नागराजे पोतानुं अमोघ ऐश्वर्य होवाथी विधवाने कह्युं के, "तुं फीकर करीश नहीं, ज्यारे ज्यारे तने दुःख उत्पन्न थाय त्यारे त्यारे तुं मने संभारीश तो हुं तने ए असह्य दुःखमांथी दूर करीश." आ प्रमाणे प्रतिज्ञा कही नागराज त्यांथी गयो. जल भरीने शोकयुक्त विधवा कुंभारना मंदिरप्रत्ये पोताना उतारामां आवी. अमोघ ऐश्वर्यनुं तेज आरोपण थवाथी वैधव्यधर्मनो नाश थयो, एम पोतानी बेहेननी चिकित्साथी गर्भनुं स्वरूप तेना बन्ने भाईओना समजवामां आव्युं, तेथी तेनो तिरस्कार करी क्लेशयुक्त बेउ भाई तेने कुंभारना घरमां मुकी चाल्या गया. प्रारब्धउपर भरोंसो राखी सगर्भा विधवा कुंभारना घरमां रही तेनी सेवा करवा लागी. पूर्ण मासे तेने पुत्रनो प्रसव थयो. देवरूप नागराजना प्रभावथी ते बालक महा तेजस्वी अने प्रतापी उत्पन्न थयो. कुंभारने घेर उछर्यो

माटे लोको तेने कुंभारनो पुत्र छे, एम कहेवा लाग्या. ते कुंभारनां घरमां रही, तेना रोजगारमां घणो निपुण थयो. माटीना घोडा, हाथी, मनुष्य विगेरे तरेहवार जातनां रमकडां बनाववा लाग्यो. तेनुं नाम 'शातवाहन' पड्युं.

ते वखते उजेणी नगरीमां विक्रमार्क राजा राज्य करतो हतो. ते पोतानी वृद्धावस्थामां एक वखत विचार करवा लाग्यो के, म्हारुं राज्य हरण करे एवो म्हारा पछी कोई पुरुष उत्पन्न थशे? आवी चिंतामां पडवाथी तेणे होंशीयार ज्योतिर्विद ब्राह्मणोने बोलावी पुछ्युं. महाराजो, म्हारी पाछल आ चक्रवर्त्ति राज्यने खुंची ले एवो कोई पुरुष पृथ्विमां छे शुं? विद्वानो मांहोमांहि विचार करवा लाग्या. एक वृद्ध अने ज्योतिर्विद्यामां घणो कुशल ब्राह्मण निर्भयताथी उतावलो घांटो काढी विक्रम प्रत्ये बोल्यो—"राजाधिराज! प्रतिष्ठान नामना नगरमां कुंभारने घेर तेवो पुत्र छे, ते उजेणीनी गादीनो भोक्ता थाय एवो संभव छे." आ वातने बधा विद्वाने टेको आप्यो. विक्रमने घणी चिंता थई. पछी एकदम सैन्य तैयार करी पोते दक्षिणमहाराष्ट्रप्रत्ये प्रतिष्ठान नगरमां गयो. अने कुंभारनुं घर घेरी लेई तेने बलात्कारथी मारवानो उद्योग कर्यो. पोताना पुत्रनुं मृत्यु थशे, एवा भयथी विधवाए नागराजनुं वचन संभारी तेनुं स्मरण कर्युं. तत्काल प्रकट थइ ते नागे एक अमृतनो कुंभ अने मोटी शक्ति ते कुमार(शातवाहन)ने आपी. तेनी मददथी तेणे अगाउ जे पोताने हाथे माटीवडे बनावेला हाथी, घोडा, उंट, खच्चर, मनुष्य विगेरे हतां तेने अमृत छांटी सजीवन करी तेनुं सैन्य बनाव्युं, अने शक्तिनी सहायताथी ते सैन्य लई विक्रमनी सामे थयो. युद्धमां विक्रमनुं घणुं सैन्य मार्युं गयुं अने ते नाठो. तेनी पुंठे पडी हंगवतो हठावतो तापी नदीना उत्तरकिनारा

सुधी तेने लाव्यो. विक्रमे विचार्युं जे, महारुं घणुं सैन्य मरायुं छे, तेथी युद्ध करवामां वखते हार थाय तो छेली अवस्थामां मेलवेली नामनाने ऊांख लागे, माटे संधि करवो ते ठीक छे. आम विचारी तेणे सलाह करी ठराव्युं के, तापीना उत्तरना ज्ञागमां विक्रमनुं राज्य प्रवर्त्ते अने दक्षिण ज्ञागमां शालिवाहननुं राज्य प्रवर्त्ते. आ प्रमाणे कोल क़रार करी विक्रम उजेणी गयो अने शातवाहने प्रतिष्ठान नगरमां आवी पोतानी गादी स्थापी. त्यारथी ते शालिवाहनना नामथी जगतमां प्रसिद्ध थयो.

राज्यवैज्ञव ज्ञोगवतां ते चंद्रलेखा नामनी राज्यकन्याने परण्यो हतो. ते महा स्वरूपवान पद्मिनी हती. मायासुर नामनो दैत्य, तामसी देवीनुं आराधन करी, तेने प्रसन्न करी जगतनां समस्त सुख फक्त तेने एकलानेज प्राप्त थाय एवी आशाए ते वाममार्गी हतो तेथी तेवा ग्रन्थोना अज्ञिप्रायप्रमाणे मंत्रसिद्धिनी अपेक्षाए पद्मिनी चंद्रलेखाने हरण करी लई गयो हतो. शूद्रक नामना कोटवाले तेनो पत्तो मेलवी मायासुरने मारी चंद्रलेखाने राजमंदिरे आणी हती. वली नागार्जुन नामना पादलिप्ताचार्यना शिष्ये कोटीवेधी रस उत्पन्न करवामाटे शुद्ध पारानुं, महा प्रतापवाली श्रीपार्श्वनाथजी महाराजनी प्रतिमानी दृष्टिसमीप खलमां मर्दन करवा माटे ए पद्मिनी चंद्रलेखानुं केटलाक दिवस सुधी रात्रे हरण करी लावी तेनी पासे (पारानुं) मर्दन कराव्युं हतुं. एक दिवस रात्रे स्त्रीने शय्यामां नहीं जोवाथी शालिवाहनने तेनाप्रत्ये शक आववाने कारणे, नागार्जुने सख्त ताकीद करेली हती तथापि चंद्रलेखाने ते वात कहेवानी फरज पडी हती अने तेथी राजा तथा तेना बे पुत्रो साथे चंद्रलेखाने, शेढी नदीनी समीप पारानुं मर्दन कराववा नागार्जुने मुकाम राख्यो हतो त्यां आववुं पड्युं हतुं. घणी आजीजी करीने ना-

गार्जुनने शांत करी पोताना बे पुत्रोने तेनी सेवामां मुकी राजा राखी पोताना नगरमां आव्या. कोटीवेधी रसना बे कुपा तैयार थया हता ते राजकुमारोथी बुपा राखवामाटे संतारुवाने नागार्जुन रात्रे गया. त्यां कुमारोए तेनी पाछल गुप्त रीते जईने तेने ठार कर्यो. संताडेला बे कुपा लेई राजकुमारो स्वदेश तरफ चाल्या, पण कोटीवेधीरसनो उपजोग करवाने तेउ पात्र नथी, एम तेना अधिष्ठायक देवताए जाणी, बन्ने राजकुमारोना जीव देहथी विखुटा करी सिद्ध करेला रसना कुपा लई चालता थया. नागार्जुने शेढीनदीने कांठे प्रतापि पार्श्वनाथजीनी जे प्रतिमा कान्तिपुरमांथी अद्धर उपाडी लावी कोटीवेधी रस सिद्ध करवा तेनी दृष्टिसमीप पारानुं स्तंजन कराव्युं हतुं ते जगा आज स्तंजनपूर (खंजात) नामथी ओलखाय छे. ए खंजातमां नवांगिवृत्ति करनार श्री अजयदेव सूरीमहाराजे ए महा प्रतापी श्रीपार्श्वनाथ जगवाननी प्रतिमानुं स्थापन करेलुंछे. ते प्रतिमा स्तंजना पार्श्वनाथना नामथी ओलखाय छे.

पादलिप्ताचार्य, नागार्जुन विगेरे केटलाक महा विद्यावान अने जेमनां चरित्रो घणा जाणवा योग छे, एवा पुरुषो शालिवाहनना समयमां थएला छे, परंतु ग्रंथगौरवताना जये तेमज आ विषय संबंधमां अहीं तेनुं विशेष प्रयोजन नहीं होवाथी ते दाखल करवामां आव्यां नथी. जिज्ञासुए प्रबंधचिंतामणी विगेरे ग्रंथोथी ते जाणी लेवुं.

आ कथामां सार ए ग्रहण करवानो छे के, धर्मउपर दृढता लावी पूर्वजवमां मुनीने दान देवाथी शालिवाहन, विक्रम जेवा महान राजाने पण हंफावे तेवो राजा थयो अने दक्षिणमां शक प्रवर्त्ताव्यो, जे अद्यापिपर्यंत चाले छे. माटे धर्ममां दृढता राखी वर्तवुं के जेथी आ जव अने परजव बन्ने सुधरे.

॥ अथ ज्ञान तत्व विषे ॥

॥ तन धन ठकुराई सर्व ए जीवने छे ॥ पण ई-
क डुहिलूं ज्ञान संसारमां छे ॥ ज्ञवजलनिधि तारे
सर्व जे डुःख वारे ॥ निजपरहित हेते ज्ञान ते कां
न धारे ॥ ए ॥

अर्थः– सुंदर काया पामीये, धन पामीये, ठकुराई पामीये, ए सर्व पामवुं ते तो सोहिलुं छे पण एक दोहिलुं तो आ संसारमां जीवने ज्ञान पामवुं ए ज छे, संसाररूपी समुद्रमांथी ते तारनार छे अने सर्व डुःखनो नाश करनार छे, पोतानुं अने परनुं हित करनार जे ज्ञान छे तेने तुं केम धारण करतो नथी ? जे ज्ञाने करी ज्ञानीये त्रण ज्ञुवनना ज्ञाव प्रकाश्या छे माटे ज्ञान सर्वथी श्रेष्ठ छे तेथी ज्ञानने आराधवुं. ॥ ए ॥

॥ यवरुषि ईक गाथा बोधथी ज्ञय निवार्यो ॥ ईक
पदथि चिलातीपुत्र संसार वार्यो ॥ श्रुतथि अज्ञ-
य हाथे रोहिणयो चोर नावे ॥ श्रुतजाणत सुज्ञानी
मासतुसादि थावे ॥ १० ॥

अर्थः– जव नामा रुषीनो एक गाथाना बोधवडे ज्ञय नाश पाम्यो, एक पदथकी चिलातीपुत्रे संसार परिज्ञ्रमण करवो वार्यो अर्थात् संसारनो फेरो टाळ्यो, श्रुतथी (ज्ञानवडे) अज्ञय कुमारने हाथे रोहणीयो चोर पार पाम्यो अर्थात् हाथमां आव्यो नहीं, अने श्रुतज्ञान जाणवाथी मासतुसादि सारा ज्ञानी थया–पार पाम्या.

॥ ज्ञानती एक गाथाना बोध उपर जवराजरुषीनी कथा ॥

वसंतपुर नामे नगरमां जव नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने गर्धज्ञील नामे एक पुत्र अने अनुंलीका नामनी एक पु-

त्री हती. दीर्घपृष्ठ नामे तेनो मंत्रि हतो. संसारथी विरक्त थई जव राजाए वृद्धावस्थाये चारित्र ग्रहण कर्युं. ते जणेला नहोता, तेथी बीजा साधुर्उने जणता देखी तेमने जणवानी घणी इछा थई परंतु कांई आवड्युं नहीं तेथी सोच करवा लाग्या. गुरुए कह्युं के, महानुजाव! सोचना करे शुं थाय? तमे चारित्रव्रत सावधान थई पालो, तपसंजमनेविषे तत्पर रहो. पछी ते तेमज करवा लाग्या. एक वखत ते जवराजरुषीश्वरने एवी इछा थई के, संसारीर्उने वंदावा माटे जाउं. एम विचारी गुरु पासे आज्ञा मांगी. तेवारे गुरुए कह्युं के जवा इछो छो पण संसारीर्उने शो उपदेश देशो? जवराजरुषी बोल्या के उपदेश देवानी तो मारामां शक्ति नथी, म्हारुं मन तो मलवानुं थयुं छे. ते वारे गुरुए जवानी आज्ञा आपी. पछी जवराजरुषी त्यांथी चाली निकल्या. मार्गमां आवतां पोताना मनमां विचार करवा लाग्या के, जाउं हुं तो खरो! पण पुत्र प्रमुख वांदवा आवशे ते वखते कहेशे जे, स्वामी, अमप्रत्ये कांईक उपदेश द्यो. एवी विचारणाए साधु चाल्या जाय छे एवामां फल्युं फुल्युं जवनुं एक क्षेत्र आव्युं. ते क्षेत्रमध्ये तेनो धणी चारे बाजु फरतो चोकी करतो हतो. ते वखते त्यां आगल एक गर्दन (गधेडो) ते जव जक्षण करवामाटे फरतो हतो ते पेला क्षेत्रधणीना जोवामां आव्यो. गर्दजने जव खावा आवतो जोई ते एक गाथा गर्दजप्रत्ये बोल्यो. (गाथा फांगटीयो) उहावसीपोहावसी ॥ ममंचेनिरखसी ॥ जाणीयो मेंतुह अजिप्पाउ ॥ जवंप्पेउसी गऊहा ॥ १ ॥ अर्थ– "हे गधेडा तुं आघो पाछो फरे छे, हुं तुजने जोउं छुं, में तहारो अजिप्राय जाण्यो, तुं ए जवमां पेसवानुं करे छे." आ प्रमाणे क्षेत्रवालाए ए फांगटीयो गधेडाने घणी वखत कह्यो ते जवरुषीए सांजल्यो. तेने वारंवार याद करवाथी

तेमने मोढे चढी गयुं. ते सिवाय बीजुं कांई तेमने आवडतुं न-होतुं. त्यारपछी मार्गे चालतां पण तेओ तेज गाथा संभारता सं-भारता अने मनमां धारण करता करता विहारभूमि ओलंगी केटलेक दीवसे धारेला मुकामे वसंतपुरनगरनी भागोले आव्या. त्यां आगल केटलाक बालको एकठा थई मोई दंडे रमता हता. साधु ते स्थले उभा रह्या एटलामां एक बालके उछालीने मोइ नाखी, ते केटलेक दूर एक वाव्य हती तेमां पडी. पछी ते बा-लको मोई खोलवा लाग्या पण ते क्यांई जडी नही. ते वखते एक बालके फांगटियुं कह्युं– (गाथा) ओव गई तो गई ॥ जोई जंती न दीसई ॥ तुमे न दीठी अमे न दीठी ॥ अगडे बूहा अणुं लक्खिया ॥ १ ॥ अर्थ– " ए मोई ओ गई ए गई, जोई पण दिसती नथी, अमे पण न दीठी तुमे पण न दीठी, कुआमां अ-थवा खाव्यमां पडी माटे बीजी ल्यो." एक बालकनुं बोलवुं आ प्रमाणे सांभली बीजी मोई लेईने बालको रमवा लाग्या. साधुए ध्यानपूर्वक बालके कहेलुं फांगटियुं सांभलवाथी ते याद करतां करतां तेमने मोंढे चढी गयुं अर्थात् आवड्युं. आ रीते जवरा-जरुषीश्वरने बे फांगटीयां आवड्यां.

वसंतपुरमां जवराजाए दीक्षा लीधा पछी तेमनो पुत्र गर्द-भील राज्य करतो हतो. तेनी बहेन एटले जवराजनी पुत्री जे अनुंलिका हती ते यौवनावस्थाए आवतां महारूपवंत होवाथी तेने जोई तेमनो प्रधान दीर्घपीठ तेना उपर मोहित थयो हतो. तेणे लाग मलवाथी तेणीने अपहरीने पोताना घरमध्ये भोंयरामां राखी हती. गर्दभील राजाए पोतानी बहेननुं हरण थयेलुं जा-णी तेनी घणी घणी शोध करावी परंतु तेनी भाल कोई पण स्थलेथी मली आवी नहीं, तेथी ते घणो चिंताग्रस्त थएलो हतो. जवराजरुषीश्वर आवा अवसरे नगरमां पधार्या अने कुं-

भारनी शालामां उतर्या. ए कुंभारे नवां वासण तैयार करेलां ह-तां तेने उंदर करकोलता हता तेथी ते उंदरने समजाववा माटे कुंभार एक गाथा बोल्यो. (गाथा) अइसुकुमालय कोमलय भद्द लया ॥ तुमें राए हींरुए सीलणया ॥ अम्म पसाउ नथी भयं ॥ दीहपीठाउ तुम भयं ॥१॥ अर्थ-"हे उंदर तमे अति सुकुमाल कोमल बो, वली भोला बो, तमने रात्रे चालवानो शीलाचरण बे, आमारो तमने कशो जय नथी, पण तमने दीहपीठ एटले सर्पनो जय बे." आ फांगटियो पण साधुए शीखी लीधो. आ-वेली त्रणे गाथाउ साधु वारंवार गणी वाले बे, अर्थात् जुली न जवाय माटे मुखपाठ करी जाय बे. दीर्घपीठ प्रधाने जवरा-जरुषीश्वरनुं नगरमध्ये आगमन सांजल्युं, तेथी तेना मनमां जय उत्पन्न थयो के, जो ए साधु ज्ञानी हशे तो महारुं जे गुह्य चरित्र बे ते प्रगट करी देशे, माटे हुं ज आगलथी कपट के-लवी राजानुं मन फेरवी नाखुं के ते साधु पासे जवानुं दील ज न करे, बलके तेने उन्ना पण न रहेवा दे. पोताना मनमां आ प्र-माणे घाट गोठवी प्रधान तुरत राजा पासे गयो. विनय सहित प्रणाम करी तेणे राजाने कीधुं के-हे महाराजाधिराज ! तमारा पिता (साधु) अहीं आव्या बे. राजाए कह्युं के-जले आव्या, तेमने जइने वांदीशुं, मननी वात पुबीशुं. एवुं सांजली प्रधान मनमां चिंतववा लाग्यो जे, खरेखात ए जशे अने पुबशे त्यारे साधु महारी सर्व करणी प्रकाशसे, माटे ए साधुने आ तेना पुत्र पासे हणावुं तो वचमांथी खडबड मटे.. एम विचारी प्रधान राजा प्रत्ये कहेवा लाग्यो के, हे राजन्! हे स्वामिन्! ए पतितने वांदे शुं ? अने पुबे शुं ? ! ए वातनी तमने खबर नथी, एनी तो मने मालम बे. ब महीना आगमच एनां चरित्रनी मने ख-बर पडी बे. ए कपटपणे तमारुं राज्य लेवा आव्या बे. राजा

कहे सुखे छे. जो एमनी एमज मरजी हशे तो आ राज्य ए-
मनुं ज हतुं अने हाल पण तेमनी लेवानी इच्छा होय तो ते
मालीक छे. प्रधाने आ वखते राजाने आवां अवलां घणां ऊंधां
देईने राजानुं मन फेरवी नाख्युं तेथी ते पोताना पिता (सा-
धु) ने मारवाने तत्पर थयो. प्रधान पोतानी प्रपंचजालमां फा-
व्यो तेथी ते मनमां फुलावा लाग्यो. त्यारपछी राजा कालो कां-
बला ओढी हाथमां खड्ग लेई कालीरात्रे कालुं काम करवाने (पो-
ताना पिताने मारवाने) निकल्यो. आवतां आवतां मनमां विचारवा
लाग्यो जे,जो ज्ञानवंत साधु हशे ने मारा मननी वात कहेशे, तो
म्हारे मारीने शुं काम छे ? अर्थात् मारा मननो अभिप्राय जाणी
जशे तेथी धारेलुं काम पार पडशे नहीं अने उलटो फजेत थ-
ईश माटे तेथी सर्युं. गुप्तपणे रही तेमनी चर्चा जोउं तो समज-
वामां आवे. एम धारी ते एकांत स्थले कोई न देखी शके तेम
उभो रह्यो. ते वखते साधु जे पूर्वे क्षेत्रवालानी गाथा सांभली
हती ते संभारीने बोल्या (गोखवा लाग्या). ते सांभली राजा
पोताना मनमां समज्यो के, ' मने आवतो थको जाण्यो ' माटे
ए ज्ञानवंत जणाय छे एमां तो संदेह जेवुं नथी; पण हवे ए म-
हारी बहेनसंबंधी वीना मारा मननो अभिप्राय जाणीने कहे तो
पूर्ण खात्री थाय. राजा आ प्रमाणे विचारमां हतो एटलामां
साधु, बालके कहेली मोई संबंधीनी गाथा गोखवा लाग्या. ते
सांभली राजा एम समज्यो के ज्ञानी तो खरा! केमके, आ गा-
थाना भावार्थथी एम जणाय छे के ' म्हारी बहेन नगरने विषे
भोंयरामां छे. ' पण ' कोने घेर छे ' एटलुं हवे जणावे तो घणुं
सारुं. आ वखते साधु त्रीजी गाथा जे तेमणे कुंभारने मोंढेथी
सांभली हती ते याद करी बोल्या. तेनो भावार्थ राजा एवो स-
मज्यो के, " अम थकी तुजने कशो भय नथी तने दीर्घपीठनो

जय छे." आवा गूढार्थ वाली गाथा ज्यारे राजाए सांभली त्यारे ते पोताना मनसाथे विचारवा लाग्यो के, म्हारो दीर्घपीठ नामनो प्रधान छे तेनो मने जय दीसे छे. गुरुनी वाणीनो बुद्धिवान राजाए पोतानी मेलेज धारणा धारी निश्चय कर्यो. कुंभारनी गाथामां 'दीहपीठ' शब्द छे तेनो अर्थ कुंभारे कहेला दृष्टांतमां तेना भावने अनुसरतो 'सर्प' थाय छे, पण राजा पोतानी धारणाना भाव प्रमाणे 'दीर्घपीठ प्रधान' समज्यो, तेथी तत्काल प्रगट थई गुरुने पगे लाग्यो. गुरु कहे के तमे कोण? राजाए कीधुं के, हे स्वामी! हुं तमारो कुपुत्र! गुरुए कह्युं के, कुपुत्र शामाटे? राजाए पोतानो सघलो वृत्तांत मांडीने कह्यो. गुरु ते सांभली मौन रह्या. त्यारे राजाए कह्युं के, स्वामी! धन्य तमारा ज्ञानने, के जेथी म्हारा मनमां जे संदेह हतो ते दूर थयो. पछी गुरुमहाराजने खमावीने राजा पोताने आवासे गयो. प्रभाते राजाए प्रधानना घरनी जडती लेवरावी एटले भोंयरामांथी तेनी बहेन मली आवी. आवा प्रधानना अपकृत्यथी राजाए तेनुं घर लुंटावी दीधुं, तेनी सघली मील्कत जप्त करी दरबारखाते दाखल करी अने तेने ठार मारवानो हुकम कर्यो. गुरुमहाराजे आ वात जाणी तेने हणतां बचावी जीवतो छोडावी मुकाव्यो. साधुए त्यांथी विहार कर्यो. मार्गमां वारंवार बनेला बनावनुं चिंतवन करता करता केटलाक दिवसे गुरु पासे आवी तेमने वांद्या. गुरुए कह्युं,-कां देवाणुपीया! संसारीआओने वंदावी आव्या? साधुए कह्युं-स्वामी तुम पसाय थकी. गुरु कहे के, शो उपदेश दीधो? साधुए कह्युं के, त्रण फांगटियां संभलाव्यां, के जे हुं म्हारा मन थकी गणतो (संभारतो) हतो अने जेनो परमार्थ पण हुं समजतो नहोतो, ते कह्यां. गुरुए कह्युं के, महानुभाव! जो एवां फांगटीयांथी उपकार थयो तो तत्त्वज्ञानथी केम उपकार

न थाय ? थायज. कह्युं छे जे– (गाथा) अटंमटंईसीखीजजा ॥ अटंमटंननिरर्थकं ॥ अटंमटं प्रसादेन ॥ जीवीयं जव रीखीयं ॥ अर्थ– " कांई कांई पण शिखवुं, ते ते वस्तु सीखी निरर्थक (नकामी) न थाय, फांगटियाना प्रसादथकी, ए जवरुषी जीवता रह्या " ॥ ते माटे हे महानुजाव! एवां फांगटियाथी तमे उगर्या अने परने पण उपकार थयो तो विशेष जाणवाथी आत्माने घणोज गुण निपजे एमां यत्किंचित् शक नथी. साधु शिष्ये (जवरुषीये) कह्युं के, आपनुं वचन प्रमाण छे साहेब! त्यारपछी जवराजरुषी चारित्र पाली, आयु क्षय थये कालधर्म पामी वैमानवासीपणुं(देवलोक)पाम्या. आ जवरुषीनी कथा उपरथी ए सार ग्रहण करवानो छे के, फांगटियां, के जेमां तत्त्वज्ञान समायलुं नथी तेवां काम आव्यां, तो जे प्राणीने विशेष ज्ञान होय तेनी खुबीनी वातज शी करवी ? ते तो आ जवने विषे पण सुखी अने परजवने विषे पण सुखी जाणवो.

॥ ज्ञानना एक चरणथी थता लाज उपर चिलातीपुत्रनो दृष्टांत ॥

चिलातीपुत्र पाछले जवे एक ब्राह्मणनो विद्वान, महा अहंकारी अने जातिमदवालो पुत्र हतो. तेणे एवी प्रतिज्ञा लीधी हती के वाद करवामां जे कोई मने जीते तेनो हुं चेलो थाउं. केटलेक काले कोईक साधुना चेलाए तेने वादमां हराव्यो तेथी तेणे तेमनी पासे दीक्षा लीधी. ते जातिनो ब्राह्मण होवाने लीधे तेनाथी मल परिसह सहेवाय नहीं एटले डुगंछा करे, मनमां विचार करे के आ धर्मने विषे नाहावुं नही, धोवुं पण नहीं. ए शुं? एम करतां चारित्र पाली अंते पापप्रमुख आलोई काल करी देवता थयो. देवपणुं जोगवी त्यांथी चवीने कांईक पाछला जवनुं डुगंछापणानुं कर्म बाकी रह्युं हतुं तेथी राजगृह नगरे धनावह शेठना घरमां चिलाती नामे दासी रहेती हती तेनी कुखे पुत्रपणे

उत्पन्न थयो. तेनुं नाम चिलाती पुत्र पाडवामां आव्युं. चिलाती-पुत्रना पाछला ब्राह्मणना जवमां तेनी जे स्त्री हती तेणे पोताना पतिने वश करवा माटे अनेक उपाय कर्या हता. छेवट ते मर्ण पाम्यो एम तेना जाणवामां आव्युं त्यारे तेणीए वैराग्य पामीने दीक्षा लीधी हती. दीक्षा पाली मरीने देवता थई त्यांथी चवीने चिलातीना शेठ धनावहनी स्त्रीनी कुखे आवी अवतरी. चिला दासीनो चिलातीपुत्र ए वालिकाने तेडतो तथा रमाडतो हतो. अनुक्रमे पूर्वजवना संबंधने लीधे ते कन्याउपर तेने घणो राग थयो अने मोटी थतां तेनी साथे कुचेष्टा करवा लाग्यो. ते वात शेठशेठाणीए जाणी तेथी तेने (चिलातीपुत्रने) घरमांथी काढी मुक्यो. त्यांथी नीकलीने ते चोरनी पालमां आव्यो अने चोरो साथे मली जई चोरीनो धंधो करवा लाग्यो. केटलोक काल वीत्या पछी तेने महा साहसिक तथा धैर्यवान जाणीने धाडपाडुउए पोतानो नायक बनाव्यो.

एकदा प्रस्तावे नायक वनेलो चिलातीपुत्र चोरनी धाडने कहेवा लाग्यो के, " राजगृह नगरमां धनावह शेठ घणो धनाढ्य छे, तेने सुसुमा नामे एक कन्या छे. तेने त्यां धाडु पाडी चोरी करवाथी घणो माल मलशे. जे माल मात्र मले ते बधो तमारो अने सुसुमा कन्याने उपाडी लाववी छे ते महारी." आ प्रमाणे वर्तवा तमे कबुल हो, तो हुं तमने तेने त्यां धाडु पाडवानी तदबीर बतावुं. धाडपाडु चोरोए ए वात कबुल करवाथी तेमने लईने नायक चिलातीपुत्रे धनावह शेठने घेर आवी घणो माल काढ्यो अने तेनां गांठडा बांधी चोरो ते उपाडीने अने नायक सुसुमा कन्याने उठावीने नाठे. त्यां घणो सोर बकोर थवाथी कोटवाल आव्यो. चोरो नासी गयेला मालम पडवाथी ते तथा शेठ अने शेठना चार पुत्रो पण सवार

थई तेमने पकमवा माटे दोड्या. नासतां नासतां नजीकमां वाहार आवती चोरोना दीठामां आवी तेथी मालनी गांसडीउं रस्तामां फेंकी देई चोरो जेनाथी जेम नसाय तेम जीव लईने नाठा. चिलातीपुत्र मार्ग मुकी उवट मार्गे नाठो. दूर्गपाल (कोटवाल) रस्तामांथी माल मळ्यो ते कबज करी त्यांथी पाठो वळ्यो, परंतु शेठ तथा तेमना चारे पुत्रोए तेमनी केम मुकी नही अने पुरपाट घोडा दोमावी मुक्या. चिलातीपुत्रे जाएयुं जे, शेठे सुसुमा कन्यामाटे केड करी अने म्हारे तो ए जीवनप्राण छे माटे मुकतां पण पूरवतुं नथी अने थोमीवारमां तेउ मने पकमी पाडशे. एम विचारी खड्ग काढी सुसुमानुं शीर छेदी हाथमां पकमी लेई तेनुं धड पडतुं मुकीने नाठो. कुमरीने मुई देखीने शेठ तथा तेमना पुत्रो पाठा वळ्या. चिलातीपुत्र सुसुमानुं मस्तक लेईने जतो हतो त्यां रस्तामां एक कामनी नीचे एक साधुने काउसग्गमां रहेला तेणे जोया. आ वखते तेना एक हाथमां लोहीथी टपकतुं कन्यानुं मस्तक अने बीजा हाथमां नग्न तरवार हती. आवा आचरणे प्रवर्त्यो हतो छतां साधुने देखवाथी परीणामनी धारा बदलावाने लीधे तेणे साधुने कह्युं के, अहोमुनी! मुजने धर्म बताव ? साधु, आ कोई उत्तम योग्य जीव जणाय छे माटे तेना आत्माना उपकारार्थे धर्मोपदेश देउं तो तेनो उद्धार थशे एम विचारी बोल्या के, "उपशम, विवेक ने संवर." आटलो उपदेश देई साधु आकासे उतपत्या अर्थात् अकाश मार्गे चाल्या गया. आवुं देखी ए घणो चमत्कार पाम्यो अने मनमां विचारवा लाग्यो के, आ तो महा महा विद्यापात्र देखाय छे, केम के बीजा जीव पृथवीतळे चाले छे अने एतो ऊर्ध्व मार्गे चाल्या. पण ए मने शुं कही गया ते मारे विचारवुं जोईये? एम आत्माने विषे धारणा धारतां धार-

तां 'उपशम' एटले 'क्रोधने समाववो' एम तेना समजवामां आव्युं, त्यारे मन साथे पस्तावो करवा लाग्यो के, जो मारामां ए क्रोध न होत तो आ स्त्री हत्यानुं पातिक न थात. माटे हवे महारे क्रोधने तजवो घटमान (योग्य) छे. उपशमना गुणनो ए अर्थ जाणवो. वली बीजुं जे विवेक ते पण मुजमां नथी अने विवेक विनाना जे जीव छे ते तो पशु समान जाणवा, माटे हुं पण पशु समान थयो. ए मुजने घटे नहीं. ए कारण माटे धर्म पुछवानुं ए निमीत्तज छे. हवे संवर ते शुं ? एम विचारतां तेना समजवामां आव्युं के "आश्रवद्वारनो रोध करवो" तेने संवर कहीये. माटे ज्यांसुधी महारामां संवरपणुं नथी त्यांसुधी सर्व वृथा छे. आ प्रमाणे विचार करी हाथमां झालेलुं सुसुमा कन्यानुं मस्तक तथा लोहीवडे खरडायेलुं खड्ग मों आगल मुकी हृदयमां धारणा धारी के, "ज्यारे ए पापकर्म विसरशे त्यारे काउसग्ग पारवो." एम मन साथे निश्चय करी जे जगोए मुनी काउसग्गे रह्या हता तेज पगलां उपर पग मुकीने काउसग्ग कर्यो. साधुए बतावेला एक पदमांना त्रणे शब्दनो परमार्थ धारीने चिलातीपुत्र काउसग्ग ध्याने रह्या. ते वखत तेमनुं शरीर लोहीथी खरडाएलुं हतुं तेनी गंधने योगे करी घीमेल कीडीउए आवी तेमनी काया चालणी समान करी. ते संबंधी जणावेली गाथा ॥ देहो पीली लियाई ॥ चिलाई पुत्तस्स चालणी वकओ ॥ तणुंओ विमण खओसे ॥ नचलीआ तेण ताण वरिं ॥ १ ॥ अर्थ-" चिलातीपुत्रनुं देह (शरीर) कीडीउए चालणी समान कीधुं, तोहे पण लगार विह्वल थया नहीं (मन डामाडोल न थयुं), अने ध्यानथकी पण न चल्यो." काउसग्गमांज आयु क्षय थतां काल करी देवगति पाम्यो. आ चिलातीपुत्रना दृष्टांतथी सार ए लेवानो छे के,

थोडुं पण तत्वज्ञान पामवाथी शुद्ध श्रद्धा थतां ते प्रमाणे वर्तवानी धारणा थाय छे, अने तेम वर्तवामां आवतां देवतानी गती मलेछे अने मोक्ष पण नजीक छे अर्थात् मोक्ष पण मले छे. माटे ज्ञान जाणवानो उद्यम करी जेम वधारे तत्वज्ञान थाय तेम करी आत्माने तारवो.

॥ ज्ञानउपर रोहिणीया चोरनी कथा ॥

आ ज्ञरतक्षेत्रने विषे राजगृही नगरमां श्रेणीक राजा राज्य करता हता. तेमने पोतानोज पुत्र महा बुद्धिनिधान अज्ञयकुमार नामे मंत्रि हतो. ए नगरमां कुलपरंपराथी चोरी करनार एक कोलीने रोहिणीयो नामे पुत्र हतो. तेनो जन्म थतां तेना मावित्रे नीमीत्तियाने पुछ्युं जे आ पुत्र केवो थशे? तेणे कह्युं के, ए पुत्र साधुधर्म पालनारो संसारनो त्यागी थशे. एवुं सांज्ञलीने तेना मातापिताए विचार कर्यो के, एवो पुत्र आपणे शा कामनो? आपणे तो आपणा चोरकुलना आचार-मार्गप्रमाणे वर्ती चोरी करी गोत्रपोषण करे ते सुपुत्र जाणवो. आवुं विचारीने तेउए न्हानी वयमांथी एने एवुं शिक्षण आप्युं केः—"जो कोइ पण ठेकाणे साधु जोवामां आवे तो त्यांथी वेगला नाशी जवुं, त्यां उज्ञा रहेवुं नही, कारण के ए (साधु) लोकोनां बालकोने ज्ञरमावीने लेइ जाय छे, माटे हे पुत्र! एमनी संगे उज्ञो न रहीश." रोहिणीये मावित्रनी शिखामण अंगीकार करी ते प्रमाणे वर्तवा मांड्युं अने नगरमां फरवा लाग्यो.

एकदा समयने विषे श्रीमहावीरस्वामी चौद हजार मुनी अने छत्रीस हजार साधवीउना परिवारे परवर्या थका राजगृह नगरे समोसर्या. ते वखते चार निकायना देवताए जमीनथी अढी गाउ उंचुं समोवसरण निपजाव्युं. ते मध्ये क्रोडो देवताउ विगेरे आवीने धर्मोपदेश सांज्ञलवा बेठा छे. बारे पर्षदा आगल प्र-

प्रभुजी धर्म देशना प्रकाशता "देवतानो अधिकार" वर्णवता हता. ते गाथा ॥"अणमिसनयणा मणकज्जसाहणा ॥ पुप्फ दामअमिलणा ॥ चउरंगूलेणनोमी ॥ नछिवंतिसूराजिणाविंति ॥ १ ॥" अर्थ-"(जे ए देवता केवा छे ?) नेत्र मीचाय नही, मन चिंतव्यां कामने करनार, फूलनी माला करमाय नही, अने पृथ्वीथकी चार अंगुल उंचा रहे, भूमीये अडे पण नही, मनुष्यथकी पण अधिका." आ प्रमाणे भगवंत देशना देता हता ते समये कोइ स्थलेथी चोरी करी आवतां रोहिणीयो समोवसरणनेतलें निकल्यो. त्यां तेणे साधुने दीठा. ते वखते तेने पोतानां मावित्रे आपेली शिखामणनां वचन याद आव्यां तेथी ते बन्ने कानमां आंगलीयो घाली दोडवा लाग्यो. नासतां नासतां आगल जतां भावी योगे तेना पगमां कांटो भांग्यो तेथी दोडी न शकावाने लीधे हेठो बेसी पगमांथी कांटो काढवा माटे कानमांथी आंगलीकाढी. तेज वखते उपर जणाव्या प्रमाणेनी देवताना अधिकारनी प्रभु देशना देता हता ते वाणी तेना कानमां पडी अर्थात् प्रभुनी वाणी तेना सांभलवामां आवी. गाथा सांभलतांज ते तेना हृदयमां वसी अर्थात् तेने आवडी गइ. कारण के उत्तम पुरुषमां बत्रीस लक्षण होय छे अने चोरमां तेथी चार वधारे एटले छत्रीस लक्षण होय ! माटे ए छत्रीसो होवाथी तेने ए गाथा आवडतां वार लागी नहीं. ए गाथा विसारी देवा एणे मनसाथे घणो प्रयत्न कर्यो परंतु जेम जेम विसारवा मांडी तेम तेम ते (गाथा) खरी थती गइ. अर्थात् मनमां ठसी गइ. त्यांथी ते पोताने घेर आव्यो अने मावित्रने मल्यो.

दीवसे दीवसे ते मावित्रनी संगते पाको चोर थयो. दहाडे सारां वस्त्र पहेरी चौटामां जाय, दरबारमां जाय, सारा सारा लोकोथी मेलाप राखे अने 'रोहिसा' नामथी ओलखावा लाग्यो.

श्रेणीक राजा सुधां पण तेने सारो माणस जाणता अने आ नामथी उलखता हता. रात्रे नगरमां मोटी मोटी चोरीउं करतो हतो. तेणे एटली बधी चोरीउं करी के, तमाम नगरनां लोक त्राह त्राह करतां तेनाथी वाज आवी गयां. घणी घणी तपास राखतां अने शोध करतां पण ज्यारे ते पकडायो नही अने चोरीउं तो चालु रही त्यारे छेवटे महाजने मली दरबारमां जई राजाने विनती करी कह्युं के, चोरनो निग्रह करो, के अमने वसवानी बीजी जगा आपो, अगर आ अमारी कुंचीउं आप स्वाधीनमां ल्यो अने अमने आज्ञा करो तेम करीए. राजाए चोरने पकरूवा माटे बीडुं फेरव्युं. परंतु कोई सामंते तेमज उमरावे तेना सामुं पण न जोयुं अर्थात् कोईनी पण चोरने पकडी आपवानी हिम्मत चाली नहीं. आखरे अजयकुमारे बीडुं उठ्युं, पण सात दिवसनी अवधी करी. प्रजाजन पोतपोताने घेर जई कामे वलग्या.

अजयकुमार महा विचक्षण, चार बुद्धि तथा चौद विद्यागुणजाण, बोहोतेर कलामां प्रवीण अने साहसिक तेमज महा धैर्यवान् धर्मिष्ट छे. ए बुद्धिनिधानना जेवी बुद्धि मलवाने अद्यापि पण सर्व मनुष्यो मागणी करे छे. हवे अजयकुमार त्रवटे (त्रण रस्ता ज्यां मलता हता त्यां), चोवटे (चार रस्ता ज्यां मलता हता त्यां), तथा तस्करने जराई रहेवा योग्य सर्व स्थले फरीफरीने जोवा लाग्या. चोर पकडवाने अजयकुमारे बीडुं उठ्युं छे ए वातनी रोहिणीयाने खबर पडतां तेणे अजयकुमारउपर एक कागल लखी जणाव्युं के:-" तमे चतुर्बुद्धि निधान छो तो हुं पंचबुद्धिनिधान छुं माटे तमारो छेतर्यो नहीं छेतराउं, मारी बुद्धि पण तमे जुउ. सातमे दहाडे तमारी पासे मुजरे आवुं तो मुजरो छे, अने तमारे हाथ न आवुं तो हुं चोर खरो. " हावो आवेलो कागल सेवके आप्यो ते वांची अजयकुमार चमत्कार

(आश्चर्य) पाम्या अने कहेवा लाग्या के, ए महारा माथानो खरो, जे महारो अभिप्राय एणे जाण्यो. माटे एनी बुद्धिने पण धन्य छे. छ दिवस सुधी अभयकुमारे बहु बहु तपास करी पण चोरनो पत्तो लाग्यो नहीं. सातमे दिवसे अभयकुमारे विचार्युं जे चोरे कागल लखी मोकल्यो छे तेथी ते महारी पासे आव्या विना नहीं रहे. एम धारी पोसो करवाना उपकरण लेईने पोसह करवानी शालामां आव्या अने त्यां जइ पाथरी पोसह उच्चारी सीझायध्यान करवा बेठा. बेसतां पहेलां सेवकने कही मुक्युं हतुं के जो कोई पण माणस महारुं नाम देतो आवे तो तेने महारी पासे आववा देज्यो. रोहिणीयो पण सातमा दिवसनी राह जोई रह्यो हतो. ते दहाडे तेणे उत्तम वस्त्रो परिधान कर्यां अने अभयकुमारनी पासे जवा नीकल्यो. दरवारमां सघले स्थले तपास कर्यो पण अभयकुमारने न दीठा तेथी मनमां खेद करवा लाग्यो के, आज ते मने नहीं मले तो में करेली प्रतिज्ञानो भंग थशे, माटे हरेक प्रकारे तेमने खोली काढी मलवुं तो खरुंज ! पछी तेणे सेवकने पुछ्युं के, प्रधान क्यां छे ? सेवके जणाव्युं के, ए तो पोषधशालामां छे, आत्मधर्म साधे छे. रोहिणीयो पोषधशालाए आवीने मुजरो करी जुहार आदि कहेवा योग्य विनय साचवी अभयकुमारनी पासे बेठो. अभयकुमार मन साथे चिंतववा लाग्या के आ चोर होवो जोईए, कारण के पोताना वचननी प्रतिज्ञा पालवा आव्यो होय एम जणाय छे, ते सिवाय एने अहीं मारी पासे आववानुं विशेष प्रयोजन जणातुं नथी.अगाउ ए घणी वखत दरवारमां आवतो हतो तेथी तेने शाह तरीके ओलखता हता माटे कांइ पण मुद्दा वगर तेने चोर कही बाली पडवाथी ए कांई चोर सिद्ध थई शके नहीं, ! तेमज तेनी पेढीयो चिंतववा लाग्या परंतु ते पण बंध बेसती न जणाई का-

रण के ए चोर न पगो छे अर्थात् ते हमेशां एवा कोलमां फरतो हतो के तेने कोई चोर कली शके नहीं, तो पण आ अवसरे आववाथी अभयकुमारना मनमां तो खात्री थई पण आ वखते कही शकाय तेवुं नहोतुं. पछी रोहिणीयो थोडी वार थई एटले जुहार करीने उठ्यो त्यारे कुमारे तेने कह्युं के, प्रभाते आपणे घेर देवसेवा करवा माटे आवजो. चोरे घणी खुसाली बतावतां उत्तर आप्यो के, वारु स्वामी. प्रभाते पोसह पारी अभयकुमार पोताने घेर आव्या.

चोरने आमंत्रण करेलुं छे तेथी ते आवशे माटे तेने मुखेथी ज ते चोर छे एम कबुल कराववानी युक्ति अभयकुमारे तुरतज करी. वखत थतां कबुल कर्या प्रमाणे रोहिणीयो आव्यो. कुमारे दहींना बे वाडका भरावी तेमांना एकमां चंद्रहास मदिरा नखावी मुकी हती. रीतसर जुहारादि करीने कुमारे रोहिणीयाने पोतानी पासे जमवा बेसाड्यो. चंद्रहास मदिरा नाखेलो दहींनो वाडको रोहिणीयाने आप्यो अने पोते चोखा दहींनो वाडको लीधो. जमी रह्या पछी थोडीक वारे मदिर चढवाथी रोहिणीयो विकल थयो एटले देवतासंबंधीयुं पोताने सुवानुं जे ठेकाणुं हतुं त्यां घणी स्वरूपान देवांगना जेवी चार कन्याउंने दिव्य वस्त्र पहेरावी चामर विंजणा सहित उभी राखी हती त्यां उपाडी लावीने सुवाड्यो. घणो वखत थयो त्यारे मदिरानी छाक (नीशो) उतरवाथी रोहिणीयो सावध थयो अने आंख उघाडीने जोयुं तो मुक्ताफलना चंद्रुवा अमूल्य रत्नादिए जडेला तेना जोवामां आव्या. ते वखते संकेत करी राख्यामुजब त्यां चामरादि लेई उभी रहेली चारे कन्याउ समकाले बोलवा लागी के, "जय जय नंदा, जय जय भद्रा, हे स्वामी ! तमे एवी शी पुन्याई करी के देवता थया ?" अभयकुमार पण त्यां आगल

गुप्तपणे रहेला हता ते पण कान मांमीने कन्याए करेला प्र-श्ननो उत्तर सांजलवा आतुर थइ रह्या हता, केमके तेमनी धारणा एवी हती के, मदिरानी गाक उतरतां देवलोक संबंधी सुख जोइ अने देवांगना (वेषधारी कन्याउ)नां वचन सांजली ते पोतानां जे चरित्र हशे ते वकी उठशे अर्थात् ज्ञममां पमतां जे साचुं हशे ते तेना मुखमांथी नीकलीजशे. हवे रोहिणीयो सुतेलुं जुवन तथा देवांगनाना बोलो सांजली पोते देवता थयो एम मनमां विचार लावी बोलवा जाय ठे, एटलामां तेने प्रजु-जीए कहेली गाथा सांजरी आवी तेथी ते विषे निर्णय करवा लाग्यो, त्यारे तेने जणायुं के, जगवंते तो देवता जमीनथी चार आंगल उंचा अधर रहे एम कहेलुं हतुं अने आ स्त्रीउए तो पावमीउ पहेरेली जमीनने अडती देखाय ठे, देवता मन चिं-तव्युं काम करे तेमांनुं पण कांइ थइ शके एम जणातुं नथी, देवताए कंठने विषे धारण करेली फूलनी माला करमाय नहीं अने आ तो करमाय ठे, वली देवतानां नेत्र मींचाय नहीं मेखो-न्मेख रहे अने आ तो मींचाय ठे, माटे रखेने मुजने ठेतरी प-कडवानो आ उपाय तो नथी कर्यो? मने तो एमज लागे ठे, कारण के प्रजुजीए तो ए चार लक्षण देवतानां कह्यां हतां अने तेमांनुं तो एके मालम पमतुं नथी. एम निर्धार करी पोताना मनमां चिंतववा लाग्यो के, अजयकुमार धारे ठे के एने ठगीने वात कढावुं पण हुं तेनो प्रपंच पामी गयो छुं, ए बत्रीसो ठे तो हुं बत्रीसो छुं, माटे एने गोथां खवरावुं तोज हुं खरो! आम नि-श्चय करीने ते बोल्यो के, "में घणां दान कर्यां, घणां पुन्य कर्यां, शीयल पाल्यां, संघ काढ्या, साहमी वत्सल कर्या, घणा पोसा पडिकमणां जिनपूजा उछव महोत्सव घणा कर्या, ए धर्मना प्रजावथकी, ते पुन्यना प्रजावथकी, हुं अहीं देवता थयो छुं."

अजयकुमारे तेनां आवां वचन सांजळ्यां तेथी मन साथे निश्चय कर्यो के मारां चरित्र (मारी करेली युक्ति) ते समजी गयो अने हाथ पण न आव्यो अर्थात् एने चोर कही शकुं एवुं बोलवानुं कांइ पण साधन मळी आव्युं नही.

छेवट अजयकुमार रोहिणीयाने उत्तरासण करी पगे लाग्या. त्यारे रोहिणीयाए कह्युं के—स्वामी! तुमप्रत्ये कोनी बीक छे के मने पगे लागो छो? प्रधाने कह्युं के— राजानी बीक छे. रोहिणीयो कहेवा लाग्यो के, स्वामी! तमेज ज्यारे बीहीशो त्यारे मारी शी वलेह? ते वखते प्रधाने वचन आप्युं. पछी तेने तेडीने प्रधान राजा पासे आव्या. राजा बोल्यो के, ए रोहिसाने केम लाव्या छो? अजयकुमारे कह्युं के—महाराजाधिराज! तमे हुकम कर्यो हतो तेने हुं तेडी आव्यो छुं, ए तमारा मुजराने अर्थे आव्या छे माटे एमनो मुजरो ल्यो अने मुजरो आपो तथा साबासी द्यो; केमके तमारी नगरी अने तमारा सरीखा सिंह समान राजा छतां तमारा मुखमांथी जक्षण लइ जाय छे अने ते ज पोते वळी तमारे चरणे हालीचालीने आव्या छे, आप पराक्रमे करी पण आपणे पराक्रमे नहीं, ते माटे मुजरा योग्य छे. राजाए कह्युं जे साबास छे तुजने! ते वखते रोहिणीयो उठीने प्रणाम करी बोल्यो के, हे महाराजाधिराज! हुं तो तमारो खिजमतगार छुं, खानाजात छुं, माटे जे हुकम करो ते मस्तके चढाववा हाजर छुं. राजाए कह्युं के, तमने तो अमे शाह जाणता हता पण तमे तो मोटा पराक्रमवंत दीसो छो! एम हसीने राजाए कह्युं जे, जाउ अजयकुमार! तमे तमारे मांहोमांहे समजो. पछी ते बन्ने (अजयकुमार अने रोहिणीयो) त्यांथी उठी एकांते बेठा. त्यां रोहिणीयाए पोतानो मूलथी मांडीने सर्व पराक्रमनो वृत्तांत कह्यो. त्यारे प्रधाने पुछ्युं के, तमे देवतानां लक्षण

केम जाण्यां ? उत्तरमां रोहिणीयाए कांटो अने कानना संयोगे जगवाननी देशना संबंधी अगाउ बनी हती ते बीना अथ इति जणावी अने विशेषमां कह्युं के, जगवाने कहेली गाथानो परमार्थ समजवामां आवेलो होवाथी तमने मलवानी मने उत्कंठा थइ तेथी तमने पत्र लख्यो अने हुं तमने मळ्यो, जेथी हुं हवे म्हारे कसी वातनी उणीम रही नथी एम मानुं छुं. क्यां प्रजुनी वाणीनो जोग अने क्यां तमारो जोग, एटले सोनु अने सुगंध ए बेनो जोग मळ्यो तो शा माटे खोटी थावुं. वली स्वामी ! तमे पण मने पकडवानुं कारण मेलव्युं पण तमारी पुन्याइये ठेतरायो नहीं. एवे समये जगवाननी वाणी दोहिली पण काम आवी. अजयकुमारे पुछ्युं के–हे जाइ ! ए गाथा तुं जावे करीने शिख्यो के कुजावे करीने शिख्यो ? रोहिणीये कह्युं के–स्वामी ! में नासतां नासतां काने सांजळ्युं. ते सांजलवानो तेमज याद राखवानो मारो जाव नहोतो पण कारणयोगे जावी प्रबलताने लीधे ते मने आवडी गइ. अजयकुमारे कह्युं के, आ प्रमाणे सांजलेली गाथा काम आवी तो जावसहित शिखे ते तो न्याहाल थाय. रोहिणीयो कहे के, एमां शुं कहेवुं ? अर्थात् एमज थाय.

'उत्तमनी संगते सुबुद्धि आवे अने कुबुद्धि जाय' ए कहेवतने अनुसरीने रोहिणीयो चोर हतो तेम छतां अजयकुमारनी संगत थवाथी तेनी कुबुद्धि नाश पामी अने सुबुद्धि उपजतां तेणे अजयकुमारने कह्युं के, में चोरी करीने जे जे द्रव्य मेलवेलुं छे ते ते नगरमध्ये जेनुं जेनुं होय तेने तेने ठलखावीने स्वाधीन करी द्यो, के जेथी ते लोकोना जीवने आनंद थाय. त्यारपछी अजयकुमारे सर्व वृत्तांत पोताना पिता (राजा)ने जणाव्यो. श्रेणीक राजाए नगरमां ढंढेरो फेरव्यो के "जे कांइ जेनी वस्तु गइ होय

તે પોતપોતાની ઓળખીને લેઇ જાઓ." આ ઢંઢેરો સાંભળી નગરજનો ઘણા રાજી થયા અને સર્વે પોતપોતાનો માલ ઓળખીને લેઇ ગયા. નગરમાં જે ચોરનો ઉપદ્રવ હતો તે શાંત થયો. અભયકુમારની સંગતને લીધે તે શુદ્ધ શ્રાવક થયો અને બાર વ્રત ઉચરી ઉત્તમ ધર્મનાં કામ કરી આયુ પૂર્ણ થયે કાલ કરી સ્વર્ગનાં સુખ પામ્યો.

આ કથા ઉપરથી સાર એ ગ્રહણ કરવાનો છે કે, ભાવ રહિત પણે પણ પ્રભુની વાણીની ફક્ત એકજ ગાથા કુલહીન કોલી જેવી હલકી વર્ણના અને હમેશાં ચોરીનો ધંધો કરનારાએ સાંભળી હતી તો માત્ર એટલાજ જ્ઞાનથી રોહિણીયો ચોરીમાં પકડાતાં બચ્યો અને ઉત્તમ પુરુષની સોબત થઇ, શ્રાવક થયો અને સ્વર્ગે ગયો, તો શુદ્ધ ભાવથી જ્ઞાન પ્રાપ્ત કર્યું હોય તો તેના લાભની તો વાતજ શી કરવી? તેથી તો આ લોકમાં સુખ સંપદા મળવા ઉપરાંત પરલોકમાં સ્વર્ગ અને મોક્ષનું સુખ મળે. માટે જ્ઞાન ભણવાનો ઉદ્યમ કરવો અને તેમાં જણાવ્યા પ્રમાણે વર્त्तન કરવું.

॥ જ્ઞાન ઉપર માસ અને તુસ નામના બે ભાઇની કથા ॥

માસ અને તુસ નામના બે ભાઇ હતા. તેઓએ વૃદ્ધાવસ્થાયે દીક્ષા ગ્રહણ કરી. પરંતુ તેઓને ભણતાં આવડ્યું નહીં અર્થાત્ ભણવાની મહેનત લેવા છતાં શિખી શક્યા નહીં તેથી મનમાં ખેદ કરવા લાગ્યા, જે આપણને એકે પદ ભણતાં નથી આવડતું તો આપણને જ્ઞાન વિના શો ગુણ થશે? અને લોકમાં પણ કોણ આદર કરશે? આ પ્રમાણે સોચ કરતા ચિંતાતુર બેઠેલા એ બન્ને સાધુને ગુરુમહારાજે દીઠા. તે વખતે ગુરુએ તેઓને પુછ્યું કે, તમે શી ચિંતા કરો છો? બન્ને સાધુએ જે પરમારથ હતો તે કહ્યો અર્થાત્ ભણતાં એક પદ પણ મુખપાઠ થતું નથી, એ ખરી હકીકત ગુરુમહારાજને તેઓએ નિવેદન કરી. ગુરુએ કહ્યું કે, એ વાતનો

तमारे खेद करवो नहीं. जणवानो उद्यम करवा छतां न आवड्युं तेमां तमे शुं करो! तमारो कांई दोष नही, सोच करे कांई आवडवानुं नथी, उद्यम जारी राखवो. तमारी बुद्धि विशेष जणवामां पहोंची शकती नथी तो हुं तमने थोडुं बतावुं तेटलुंज जणो, एटलुं जणवाथी पण तमारुं कल्याण थशे. "मा रुस अने मा तुस." ए पद शिखो अने तेनो रहस्य घटमां दृढावो. आ न्हानुं सरखुं बे शब्दनुं पद पण तेउने जणतां गोखतां थकां पण कोई जवांतरनां ज्ञान विराध्याना कारणथी आवड्युं नहीं, तोपण तेमणे ते वारंवार गोखवानुं शरु राख्युं. ज्यां ज्यां तेउ जता त्यां त्यां रस्ता सुधामां पण ए पद गोखता गोखता जता हता, तेथी मार्गमां चालतां छोकरां सुधानां मोंढे ए शब्दो थई गया, परंतु ते साधुउने बरोबर आवड्या नहीं. वखतो वखत पनुं एज बोलता हता तेथी लोकोमां तेमनुं ए नाम पडी गयुं. बालको तेमने जतां आवतां वारंवार ए नामथी (ए शब्दो बोली) पोकारी पोकारी मश्करी करवा लाग्या. एम ए पद सांजलतां सांजलतां अने गोखतां गोखतां बन्ने साधुने ते आवड्युं. त्यारपछी बन्ने साधु नगरमां गोचरीए फरता हता ते वखते गृहस्थनां बालको तेमने देखीने केडे पडे, उ जाय! उ जाय! मास तुसीआ साधु!! एम कही, केटलाक बालको उघो ताणे, कोईक मुहुपति ताणे, कोईक कपडो ताणे, कोईक कांबली ताणे, कोईक दांडो ताणे. आ प्रमाणे बालको तेमने पजवता हता परंतु कोईना उपर लेश मात्र खेद नहीं लावतां गुरुए बतावेलुं पद याद लावी तेउ समता परिणाम रसे वर्त्ततां क्रोधने उल्हवी शुक्ल ध्यान ध्यातां थकां क्षपक श्रेणी प्रत्ये मांडीने केवल ज्ञान पाम्या अने मोक्ष सिधाव्या.

आ कथाथी एटलो सार लेवानो छे के, फक्त "मा रुस मा

तुस " एटले राग द्वेष न कर. मात्र एटलाज शब्दनुं पद शिख-वाथी मास अने तुस साधु अक्षय सुख पाम्या, तो विशेष ज्ञान भण्या होय तो ते केम पार न पामे? पार पामेज. माटे ज्ञान भ-णवानो त्रिकरण योगे उद्यम करवो तथा ए प्रमाणे वर्त्तन करवुं, जेथी आलोकमां अने परलोकमां सुख संपति मलवा उपरांत अक्षय मोक्ष सुखनी प्राप्ति पण दुर्लभ नथी. १०

॥ अथ मनुष्यजन्म विषे ॥

॥ भवजलधी भमंतां कोई वेला विशेषे ॥ मणुअज-
नम लाधो झल्लहो रत्न लेखे ॥ सफल कर सुधर्मा
जन्म ते धर्मयोगे ॥ परभवसुख जेथी मोक्षलक्ष्मी
प्रभोगे ॥ ११ ॥

अर्थः– भवरुपीया समुद्रमां फरतां फरतां कोईक समयने योगें रत्न समान दुर्लभ आ मनुष्य जन्म मळ्यो, ते जन्म (म-नुष्य जंन्म) जे सुधर्मी प्राणी छे ते धर्मने योगे करीने सफल करे, धर्मथकी आ भवे सुख अने परभवे मोक्षने पामे एटले धर्मने पसाये करीने मोक्ष रुप लक्ष्मीनो भोक्ता थाय. ११

मनुजजनम पामी आलसे जे गमे छे ॥ शशिनृप-
तिपरे ते शोचनाथी भमेछे ॥ झलद दश कथा ज्यूं
मानुखोजन्म ए छे ॥ जिनधरम विशेषे जोडतां सा-
र्थ ते छे ॥ १२ ॥

अर्थः–मनुष्यजन्म पाम्या छतां जे प्राणी आलसे कहेतां प्रमाद वडे तेने गुमावी देछे ते प्राणी शशिप्रभ राजानी पेठे सोचनाथी भमे छे एटले पश्चाताप पामीने संसाराटवीमां रखडे छे, वली ए मनुष्यजन्म दश दृष्टांते करीने प्राणीने पामवो दोहिलो (दु-

ष्कर) छे, पण अरिहंतनो प्ररुपेलो धर्म (जैनधर्म) विशेषे जोडतां एटले जाणीने ते प्रमाणे वर्त्तन करतां ते सार्थ कहेतां सथवारा रुप छे (जव अटवी उलंगवाने सार्थवाह तुल्य जैन धर्म छे). १२

॥ शशिप्रज राजानी कथा ॥

॥ सावत्थि नगरीमां सुरप्रज नामे राजा राज्य करतो हतो, अने शशिप्रज नामनो तेनो जाई युवराज पदे हतो. एकदा समये ते नगरीना उद्यानमां धर्मघोष सूरी पधार्या. वनपालके ज्ञानी गुरुमहाराज पधार्यानी वधामणी राजाने आप्याथी तेने घणुं द्रव्य आपी सुरप्रज अने शशिप्रज बे बांधवो राज ऋद्धि सहित मोटा आडंबरथी गुरु समीप आव्या. वंदनादि करी योग्य स्थानके बेसी धर्मदेशना सांजलतां सुरप्रज राजा प्रतिबोध पाम्यो. त्यांथी घेर आवी तेणे पोताना जाई शशिप्रजने कह्युं के, हवे तो म्हारे राज्यनो खप नथी. शशिप्रज ते सांजली कहेवा लाग्यो के, शा माटे ? राजाए कह्युं के, ए राज्यने अंते नर्क पामीये, माटे सर्वथा मारे राज्यनो खप नथी, हुं तो जवनिस्तारणी दीक्षा ग्रहण करीश. शशिप्रजे ते वखते जणाव्युं के, अरे जाई ! मनुष्यजव पामीने एळे कां खुवो छो ? ए सर्व बालक बीवरामणी करी मुकी छे. माटे म्हारुं कहेवुं मानीने राज्यसुख जोगवो. उतावला थईने तमे संसार तो मुकशो पण पछी पश्चाताप करवो पडशे. वली तमे कहेशो जे, जाईए मने कांईये कह्युं नहीं, जो तमारी एमज ईछा होय तो हाल तमो संसारिक सुख जोगवी पछी धर्म आदरज्यो. सुरप्रजे जणाव्युं के, अरे जाई ! ए तुं शु बोल्यो ? कह्युं छे के, "धर्मस्यत्वरितागति" एटले धर्म तत्काल करवो. माटे ए राज्य तमे ग्रहण करो, हुं तो हालज चारित्र लेईश. पछी बलात्कारे शशिप्रजने राज्य सोंपीने सुरप्रज राजाए गुरु पासे जइ दीक्षा लीधी. संयम सतर प्रकारे आरा-

थतां तप जप करी, अंते अणशण आदरी समाधियें करी काल-धर्म पामी सुरप्रभमुनी पांचमे देवलोके देवतापणे उपज्या.

शशिप्रभ राजा थयो. धर्म उपर तेनी श्रद्धा नहोती. ते राज्य-सुख भोगववामां काल क्रमण करतां साते वसन सेवी अंते मरीने त्रीजी नर्के नारकीपणे उपज्यो. सुरप्रभराजा जे संयम पाली देवलोकमां गया हता तेमणे ज्ञाने करीने जोयुं के महारुं कहेण मान्युं नहीं अने धर्म विरुद्ध वर्त्तन करवाथी छेवटे मरण पामी महारो बांधव नर्के गयो. मोहवशे करी ते देवता नरकावासमां आव्यो अने पोताना भाईने काढवा मांड्यो. घणी वार तेने उठाव्यो पण ते पारानी माफक वेराई जवाथी अतिशय दुःख पाम्यो. सुख करवा जतां तेथी उलटुं विशेष दुःख थतुं देखीने देवता तेने कहेवा लाग्यो के, भूंडा ! में तने घणुं घणुं कह्युं हतुं पण तें महारुं कहेवुं गणकार्युं नहीं तेनां आ प्रत्यक्ष फल भोगवे छे. हवे तुं शुं करीश ? नारकी कहे के, हवे हुं शुं करुं? धर्मभ्रष्ट थवाथी मेलवेलुं तेना विपाकनुं फल भोगवेज छुटको छे. पछी सुरप्रभ देवता परमाधामीने भलामण देईने पाछो देवलोकमां गयो. शशिप्रभ घणो पश्चाताप पाम्यो.

आ कथामां सार ए ग्रहण करवानो छे जे– सुरप्रभराजा धर्म पामवाथी देवतानी ऋद्धि पाम्यो अने शशिप्रभ राजा धर्मथी विमुख रहेवाने लीधे नर्कावासनां दुःख भोगवतो थयो. माटे हे भव्य जीवो तमे पण धर्म करी देवगति अने छेवटे मोक्षसुख मेलववाने उद्यमवंत थाउ. मनुष्यजन्म पामी धर्म विना तेने एले गुमावी देई नरकादिनां दुःख पडतां पश्चात्ताप करवो ते मूर्ख मनुष्यनुं काम छे.

हवे मनुष्य नव दश दृष्टांते दोहिलो बे ते संबंधे कहेलो श्लोक.

॥ चुल्लग (१) पासग (२) धन्ने (३), जुये (४) रयणे (५) सुमीणे (६) चक्के (७) ॥ चम्म (८) जुगे (९) परमाणु (१०) ए, दश दिठंता मणुअलंने ॥१॥

अर्थ– चुलानो दृष्टांत १, पासानो दृष्टांत २, धान्यनो दृष्टांत ३, जुवटानो दृष्टांत ४, रत्ननो दृष्टांत ५, स्वप्ननो दृष्टांत ६, चक्रनो दृष्टांत ७, चर्मनो दृष्टांत ८, धुंसरानो दृष्टांत ९, परमाणुनो दृष्टांत १०, ए दश दृष्टांते मनुष्य नव पामवो डुर्लन बे ॥ (आ दश दृष्टांतनो विस्तार बीजा ग्रंथोमां घणो बे परंतु ग्रंथ गौरवताना कारणे अहींआं किंचित् मात्र दर्शाव्यो बे)

मनुष्यनवनी डुर्लनता उपर पहेलो चुलानो दृष्टांत.

कंपीलपुर नगरमां ब्रह्म राजा राज्य करतो हतो. तेने चूलणी नामे रंना समान महा स्वरुपवान राणी हती. तेनी कुक्षीने विषे चौद स्वप्न सुचित ब्रह्मदत्त नामनो चक्रवर्त्ति पुत्र पेदा थयो हतो. ब्रह्मदत्त कुमारनी बाल्यावस्थामां तेना पिता ब्रह्मराजा परलोक सिधाव्या पढी ब्रह्मराजाना चार मित्र राजाउए वाराफरती कंपीलपुरमां रही ब्रह्मदत्त कुमार योग्य उमरनो थाय त्यांसुधी राज्यनी सार संनाल करवानुं कबुल करी, प्रथम दीर्घ राजाने राज्य सोंपी त्रण मित्रो पोताने नगरे गया. दीर्घराजा राज्य वहीवट चलाववा लाग्यो. केटलोक वखत वित्या बाद अंतेउर सुधी जाव आव करतां चूलणी राणी खुबसुरत तेमज लघु वयनी होवाथी दीर्घराजानी दृष्टीए पडतां ते तेना उपर मोहित थयो. प्रथम तेउनो नेत्र मेलाप थयो. त्यारपढी वचनालाप थयो अने बेवट कायानो संबंध पण थयो. खीर नीर परे तेउने परस्पर प्रीतिनी गांठ एवी तो बंधाई गई के एक क्षण मात्र एक

बीजानो विरह खमी शकतां नहीं. पाप हरूकायुं छे, चोरी चार महीना अने छीनालु छेवट छ महीना क्वचित ढांक्युं रहे, पण अंते उघाडुं पड्या विना रहेतुं नथी, तेमज आ दीर्घराजा अने चूलणी राणीना अयोग्य आचरणनी वात सघले विस्तरी. त्रण मित्र राजाउए पण आ वात सांभली तेथी घणा दीलगीर थया. परंतु दीर्घराजानो पग ए राज्यमां जामी गयेलो अने कुमार बालक होवाथी नीरुपाये ए दुष्टने त्यांथी खसेडी शक्या नही. दीर्घराजा निशंकपणे चूलणीराणीनी साथे आडो व्यवहार चलावतो राज्यनो स्वतंत्र मालीक होय तेम धणी धोरी थई सुख भोगववा लाग्यो. वरधनु नामे ए राज्यनो असली गरढो प्रधान हतो तेणे पण दीर्घना दुष्टकर्मनी वात जाणी तेथी तेणे पोताना धनु नामना पुत्रने ए हकीकतथी वाकेफ करी कह्युं के, तहारा दीलोजान दोस्त ब्रह्मदत्त कुमारने दीर्घनी कुचेष्टानी सघली बीनाथी माहितगार करजे. धनुए पितानी आज्ञा प्रमाणे ब्रह्मदत्तने सघलो भेद कह्यो तेथी ते रोषातुर थयो. एकदा प्रस्तावे एक हंसीने वायस साथे जोई ते बन्नेने दरबार कचेरीमां लई जई ब्रह्मदत्त कुमारे कह्युं के, जुउ ! आ उत्तम हंसी मध्यम वायस साथे संभोग करावे छे तेनुं फल. एम कही दीर्घराजाना देखतां वायसने हण्यो, अने जणाव्युं के महारा राज्यमां एवो जे अन्याय (अयुक्तकार्य) करशे तेने हुं वायसनी पेठे हणीश. आवा शब्दो सांभली दीर्घ बीहीन्यो अने ते हकीकत तेणे चूलणीने जणावी. चूलणी क्रोधायमान थई मनमां विचार करवा लागी के, ए पुत्र आपणे कामनो नहीं. दीर्घे कह्युं के, हवे आपणे एटलेथी सर्युं, केमके तहारा पुत्रे आपणी वात जाणी, माटे कोईक दीवस ते तने अगर मने, के आपण बन्नेने हणशे. चूलणीए कह्युं के, स्वामी ! ए बालकनी वात मनमां न लावीये ? एना

कद्यां सामुं न जोईये? शामाटे जे कदापि ए पक्षीनुं चरित्र दे-खीने एणे एवुं कह्युं हशे? बालचेष्टा थकी बांधेजारे बोलवाथी तमे शा माटे बीहो बो? एनो शो आशरो बे? अने एनो शो ञार बे? एम करतां कदापि एवुं हशे तो आपणे एनो कोई ज-पाय करीशुं! एवां राणीनां वचन सांजलीने पाठो वली दीर्घ कुकर्म सेववाने सावधान थयो. त्यारपढी वली एकदा प्रस्तावे कोई कोयलने काग पासे पूर्वेनी परे कार्य करावती देखी तेने पण प्रथमनी पेठे कचेरीमां लावी दीर्घना सन्मुख पूर्वे कह्युं हतुं तेमज वचनोच्चार करी कागने मार्यो. ब्रह्मदत्तनुं आ बीजी वख-तनुं कहेवुं अने कागनुं हणवुं जोई दीर्घ अतिशय गजराटमां पड्यो. आ वात पण तेणे चूलणीराणीने जणावी अने कह्युं के, हवे तो ए सुखथी सर्युं! तह्यारो अने मह्यारो संबंध हवे आटलेथीज पूरो थयो! राणी कहेवा लागी के, स्वामी! हुं तमने जवा देनार नथी. दीर्घे जणाव्युं के, तह्यारा पुत्रने तुं हणे तो हुं रहुं, नहीं तो कोई उपाये हुं रहेनार नथी. विषयनी वाही राणीए पोताना पुत्ररत्नने हणवानुं कबुल करी दीर्घने राजी कर्यो अने हमेशनी माफक दीर्घनी साथे विषयसुख जोगववा लागी.

पुत्रने मारवानी योजनामां चूलणीए कणयरदत्त राजानी कु-मरी साथे ब्रह्मदत्त कुमारनो विवाह संबंध कर्यो, अने लाखनुं घर बनावराव्युं. कुमारने जणाव्युं के, आपणा कुलनो एवो आ-चार बे जे प्रथम पाणीग्रहण करीने लाखना घरमा सुवुं. राज-कुमारे ते वात कबुल करी. वरधनु प्रधाने ते वात सांजली विचार्युं जे, हुं गरढो थयो अने मह्यारा मोंहोंमा आगल राज्यनी केटलीक पेढीओ थई गई, परंतु कोई पण वखत लाखनुं घर जाण्युं के सांजल्युं पण नथी. आ तो कांईक कौतकनी वात! आमां राणीनुं कांईक का-वित्रुं खरुं! डाह्या प्रधाने आवो निर्धार करी कणयर राजाने गुप्त रीते

हेवरावी मोकल्युं के लग्न कर्या पछी तमारी पुत्रीने ब्रह्मदत्त कुमारनी साथे मोकलशो नहीं. कदापि मोकल्या विना चाले तेम न होय तो पुत्रीनो स्वांग पहेरावी कोईक दासीने मोकलज्यो. भुले चूके तमारी पुत्रीने मोकलशो नहीं. कणयर राजाए मंत्रिनुं कहेण मान्य करी तेमज करवा निश्चय कर्यो. वली वरधनु प्रधाने पोताना पुत्र धनुने कह्युं के, राणीए लाखनुं घर बनावरावी राजकुमारने प्रथम पाणीग्रहण करीने तेमां सुवानुं सुचवन कर्युं छे, एमां मने तो राणीनो पूरेपूरो प्रपंच मालम पडे छे. माटे तेनाथी सावध रहेवानी अति आवश्यकता छे. तुं ब्रह्मदत्तनो संग न मुकीश, रात्र अने दहाडो तेनी पासेनो पासे रहेजे. परणीने आवे अने घरमां सुई रहे त्यारे त्यां पण तुं तेनी पासेज रहेजे. कदापि ते तने तहारे घेर जवानुं कहे, तो तुं कहेजे जे, स्वामी! हुं तो तमारो सेवक छुं, अहोनिश आपनी हजूरमां रहेवुं ए ज महारो धर्म छे, विगेरे समयने अनुसरतुं कही तुं तेनी पासेनो पासे रहेजे, पण तुं एनुं पासुं न मुकीश. त्यारपछी प्रधाने दीर्घराजा पासे आवी, तीर्थयात्रा जवानी आज्ञा मागी. राजाए विचार्युं जे, ए बाहार जशे तो कांईक उपाधि करशे माटे तेने जवानी ना पाडी अने कह्युं के, तमे अहीं रहीने दान पुन्य करो. प्रधान गंगाने तटे दानशाला मंडावी त्यां मुकाम करी रह्यो. त्यांथी लाक्षागृह सुधी गुप्तपणे प्रधाने सुरंग खोदावी अने पोताना पुत्र धनुने जणाव्युं के, ब्रह्मदत्त ए घरमां सुवा जाय ते वखते में तने सूचना करी छे ते प्रमाणे तारे एनी पासे रहेवुं अने त्यां आगल जो कांई प्रतिकुल उपसर्ग थाय तो अमुक जगोए ब्रह्मदत्त पासे लात मरावजे एटले सुरंगनु मुख मालम पडशे, त्यांथी तमो बन्ने नीकलीने दानशाला पासे आवी त्यां तैयार राखेला अश्वोउपर स्वार थई

चाल्या जज्यो. ब्रह्मदत्तनी वहु थई आवेली स्त्रीने बाहार काढवा माटे खोटी थई तमारो वखत गुमावशो नहीं.

पाणीग्रहण करी ब्रह्मदत्त स्त्रीसहित पोताना नगरमां आव्यो. चूलणी राणीए तेने लाक्षागृहमां सूवा मोकल्यो. प्रधानपुत्र धनु तेनी साथे शयनगृहमां गयो. ब्रह्मदत्ते तेने घेर जवा माटे घणो आग्रह कर्यो; त्यारे तेणे कह्युं के, हुं तमारो खीजमतगार सेवक छुं माटे तमारा पांगेठ हेठे सुई रहीश, पण आपने वीला मुकी क्षण मात्र पण दूर नहीं जाउं. आ प्रमाणे कही धनु तेनी पासे त्यांज रह्यो. कणयर राजाए, प्रधाननी सूचना मुजब पोतानी पुत्रीने बदले तेनो स्वांग पहेरावी दासीने मोकली हती, ते स्त्री सूवा माटे आवासमां आवी. ब्रह्मदत्त अने धनु वार्तालाप करवा लाग्या अने स्त्री निद्रावश थई. मध्य रात्रि थया पछी चूलणी सर्व लोकने निद्राधीन थयेला जोई अवसर साधी एकली लाखना मंदिरे आवी अने पोताने हाथे अग्नि मुक्यो.जरा सलग्युं एटले त्यांथी नासती नासती पोकार करवा लागी के, अरे! धाओ रे धाओ!! महारो ब्रह्मदत्त पुत्र लाखना मंदिरमां सुवा गयो हतो, ए घर तो सलगतुं देखाय छे! मारा पुत्रनुं शुं थयुं? महारो रत्न सरिखो पुत्र अग्निमां बले छे तेने तमे काढो, एम लोकोप्रत्ये कहेवा लागी. लाक्षागृह बलवा मांड्युं, अग्नि चारे बाजु फेलायो अने भडका क्षणवारमां दावानलनी माफक एटला तो वधी गया के त्यां आगल जवानी कोईनी पण हाम चाली नहीं. ए मंदिरमां अग्नि सलगतां तुरत धुणी गोटावाथी तथा भडभड भडका थता जावो. थी ब्रह्मदत्त एकदम पोताना मित्र धनुने कहेवा लाग्यो के, आ शो अकस्मात्? धनुए कह्युं के, महाराज! ए वात महारा समजवामां छे. ब्रह्मदत्त कहे,—हवे शुं करवुं? धनुए

કહ્યું–સ્વામી ! ચિંતા મ કરો. આ ઠેકાણે આપ ડાબા પગની લાત મારો. એ સ્થાનકે સુરંગ છે, તે મધ્યે આપણે જવાનો માર્ગ છે. બ્રહ્મદત્તે લાત મારીને સુરંગનું દ્વાર ખુલ્લું કર્યું અને જતી વખતે સ્ત્રીને લઈ લેવા માટે ધનુને કહ્યું. ત્યારે તેણે જણાવ્યું કે, તમે સલામત છો, તો વલી સ્ત્રીયો ઘણી મલશે. વખત ગુમાવવ યોગ્ય આ અવસર નથી. પછી તુરત ત્યાંથી બન્ને જણ સુરંગ માર્ગે નીકલી, તેના દ્વાર સમીપ આવી ધનુના પિતાએ બે અશ્વરત્ન તૈયાર કરી ઉભા રાખ્યા હતા તેના ઉપર ચઢીને નાઠા. પાછું વાલીને જોયા વગર પૂરપાટ જેમ નસાય તેમ નાસતાં જ્યારે સો યોજન ગયા ત્યારે બન્ને ઘોડા ફાટી પડ્યા. પછી પગ પાલાયે ચાલ્યા. એમ દીર્ઘરાજાના ભયથી નાસતાં નાસતાં કેટલોક વખત વિ- ત્યાબાદ બન્ને જણ વિખૂટા પડ્યા. અહીં ઘણો સંબંધ છે અર્થાત્ સો વર્ષ સુધી તેઓ ફર્યા છે અને ઘણી ઘણી મુશીબતો તેમને વેઠવી પડીછે તથા ઘણી કન્યાઓ સાથે પાણીગ્રહણ કરી સુખ ભો- ગવ્યું છે પરંતુ ગ્રંથગૌરવતા તથા આ ચુલાના દૃષ્ટાંતના સંબં- ધમાં એ હકીકતનું પ્રયોજન નહીં હોવાથી અહીં એ લાંબી હકી- કત દાખલ કરી નથી. જાણવાના જીજ્ઞાસુઓએ બ્રહ્મદત્ત ચરિ- ત્રથી તે વાત જાણી લેવી. બન્ને મિત્રો જૂદા પડ્યા પછી બ્રહ્મદત્ત એકલો નાસતાં નાસતાં અરુતાલીસ ગાઉની અટવી પાસે આવ્યો. તે ઓલંઘવી મહા વિષમ છે. તે સ્થાનકે એકલાથી જઈ શકાતું નહોતું તેથી કોઈ સાર્થની વાટ જોઈ રહ્યો હતો તેવામાં એક બ્રાહ્મ- ણ મલ્યો, તેની સાથે બ્રહ્મદત્ત અટવી ઓલંગતો ચાલ્યો. ચાલતાં જ્યારે બપોર–ખરા મધ્યાન્હ થયા એટલે બ્રાહ્મણે પોતાની પાસે સાથુઓ હતો તે પલાલીને એકલાએ ખાધો. બ્રહ્મદત્તને લગાર માત્ર ન આપ્યો, બ્રહ્મદત્તે પણ ન માગ્યો. એમ કરતાં ત્રણ દિ- વસે અટવી ઉલંઘી. પછી બ્રાહ્મણે કહ્યું, રે બાલક ! હવે તું ત-

हारी मेळे आ दिशे जा, वस्ती आवशे एटले तुं सुखी थईश. एम कही ब्राह्मण जवा लाग्यो एटले ब्रह्मदत्ते कह्युं के, तमारो गुण नहीं विसरे तेवो छे, माटे तमे, ज्यारे ब्रह्मदत्त चक्रवर्त्ति थयानुं सांभळो. त्यारे तुरत मारी पासे आवजो! म्हारो कोल छे! जो क्षत्रीपुत्र छुं तो तमारी ईछा पूरीश. आवां वचन सांभळी ब्राह्मणे विचार्युं जे, एवा कंगाल घणाए फरे छे! पण ठीक! सीधो जवाब देवामां कांई जतुं नथी. पछी ब्रह्मदत्त प्रत्ये कह्युं के, वारु माहराज! तमारी ईछा अस्तु हो. एम आसीर्वाद देई ब्राह्मण चालतो थयो. ब्रह्मदत्त पण त्यांथी ब्राह्मणे बतावेला मार्गे चाली नीकळ्यो. त्यारपछी गाम, नगर, पुर, पाटण विगेरे स्थळोए फरतां फरतां सो वर्ष वीती गयां, तेमां राजाउ तथा विद्याधरादिनी एक लाख बाणु हजार कन्याउ परण्यो; अने छ खंड पृथ्वीनुं राज्य संपादन करी चक्रवर्त्ति पद पाम्यो. छन्नु क्रोड गाम, बोहोत्तेर हजार मोटां नगर, अडतालीस हजार पाटण, केटलांएक खेडां, केटलाएक करबट, मंडप, द्रोण प्रमुख नवनिधान, चौदे रत्न मेळवी, छन्नु क्रोड पायदल, चोरासी लाख हाथी, चोरासी लाख घोडा, चोरासी लाख रथ, तथा एक लाख बाणु हजार स्त्रीउना परिवारे परवर्यो थको पचीश हजार देवता जेनी सेवामां रहे छे एवो ब्रह्मदत्त चक्रवर्त्ति कंपीलपुर नगरे आव्यो. दीर्घराजाने लांबी उंघमांहे नाख्यो अर्थात् कालधर्म पमाड्यो. चूलणीए जयने लीधे नासी जई दिक्षा लीधी अने शुद्ध संयम पाली कर्म खपावी तेज भवने विषे मोक्षपद पामी.

ब्रह्मदत्त चक्रवर्त्ति सुखरूप राज्य वैभव भोगवे छे. धनु, प्रधानपदवी भोगवतो राज्य वहीवट चलावे छे. तेउनी आण मात्र कोई लोपतुं नथी. हवे जे ब्राह्मण साथे ब्रह्मदत्ते अडतालीश

गाउनी अटवी उलंगी जेने वचन आप्युं हतुं, तेणे ब्रह्मदत्त चक्रवर्त्ति थयानुं जाण्युं; तेथी ते कंपीलपुरमां आव्यो अने पोतानुं नाम नीशान बतावी चक्रवर्त्तिने मल्यो. चक्रवर्त्तिए तेने उलख्यो. पछी कह्युं के, अरे भट्ट महाराज! हुं तमारा उपर तुष्टो छुं, माटे तमारे जे इच्छा होय ते मागो-मागो. ब्राह्मणे कह्युं के, महाराजाधिराज! हुं म्हारी स्त्रीने पुछी आवी इच्छानुसार मागीश. चक्रवर्त्तिए तेने पुछी आववानी आज्ञा आपतां ते पोताने मुकामे आव्यो अने हर्षभेर ब्राह्मणीने कहेवा लाग्यो के, अहो माहा रांडनी! तुं कांइ जाणे छे? आखी पृथ्वीनो स्वामी, आपणा उपर तुष्टमान थयो छे. तेणे कह्युं छे जे, मोंहे मांगे ते आपुं, तेथी हुं तने पुछवा सारुं आव्यो छुं, माटे तुं कहे ते तेमनी पासे जइने मागुं. ब्राह्मणनुं बोलवुं सांभली ब्राह्मणीए मनमां वीचार्युं जे, एने घणुं धन मलशे तो मान (अहंकार) मां आवी नवी स्त्रीनुं पाणीग्रहण करशे, तो हुं दुःखी थइश. माटे साध्यमां रहे अने आपणुं काम थाय एवुं मागवुं उचित छे. एम धारीने ब्राह्मणीए पोताना स्वामीने कह्युं के, आपणाथी राज्यभार उपाडी शकाय नहीं, तेमज घणुं धन होय तो तेने संभालवानी चिंता रात्रि दिवस करवी पडे, माटे तेवी कोइ चिंता करवी न पडे अने आपणे सुख चैनमां रहीये, एवुं तो म्हारी नजरमां ए मागवानुं आवे छे के, " चक्रवर्त्तिना राज्यमां सघले घरोघर हमेशां आपणने इच्छाभोजन करावे अने उपर एक सोनइयो दररोज दक्षणा आपे, एवुं मागो. ब्राह्मणे कह्युं के, ए मने गम्युं, तहारी मती घणी सारी पहोंची. पछी ब्राह्मणे चक्रवर्त्ति पासे जइने ते ज प्रमाणे माग्युं. चक्रवर्त्तिए जरा ठपको देतां कह्युं के, अरे भुंडा! हुं तुष्टमान थयो छतां तुं हजी भीख मागे छे. माटे हजु पण विचार करी बीजुं कांइ राज्य पाट धन दोलतादि माग, के जेथी

तुं संपूर्ण सुखी थाय. ब्राह्मण बोल्यो के, महाराज! अमने तमे एटलुं आपावो, अमारे बीजुं कांई जोईतुं नथी. चक्रवर्त्तिए तेना माग्या मुजब "सघला पोताना राज्य (छए खंड) मां वाराफरती दररोज एमने ईछानुसार भोजन जमाडे अने उपर एक सोना महोर दक्षणा आपे," एवो परवानो करी आप्यो. ब्राह्मण ए प्रमाणे दररोज जमवा लाग्यो, पण ज्यां एक वखत जम्यो त्यां बीजी वखत जमवानो वारो आव्यो नहीं; केमके चक्रवर्त्तिनी एक लाख बाणु हजार स्त्रीउना तेटलाज जूदा जूदा चूला छे, पछी बोहोतेर हजार नगर, अरुतालीस हजार पाटण, वली बीजा खेडां, कर्बट, मंरुप, द्रोण विगेरेना अनेक चूला छे. एटले ठेकाणे वारे वारे जमतां कदापि पार न आवे, तो फरीने बीजी वार चक्रवर्त्तिने चूले जमवानो वारो तो क्यांथीज आवे? न ज आवे. तेमज मनुष्यभव पामी आलसे करी खुए तो फरीने ते भव पामवो डुर्लभ जाणवो. वली ते काले उत्कृष्ट सातसें वर्षनुं आउखानुं प्रमाण हतुं तेना बे लाख बावन हजार दीवस थया तेथी पण स्पष्ट समजाय छे के जे घेर जम्यो ते घेर फरीथी जमवानो वारो आवे ज नहीं, तेम छतां कदापि कोई देवताने जोगे तेनी साहाज्ये करी ब्राह्मण घणा रुप करे तेथी ते पण कदाच (देवानुयोगे) पामे अर्थात् फरीथी जमवानो वारो आवे! परंतु मनुष्यभव पामी धर्म साधन कर्या विना एटले अवतार गुमाव्यो तो फरी मनुष्य भव पामवो अतिं डुर्लभ छे. माटे धर्म सेवन करी मनुष्यभव सफल करवो. ब्राह्मण मेलवेला परवाना प्रमाणे जम्यो ए चूले फरी जमवानो वारो आवे नहीं एम मनुष्यभव गुमावी दीधो ते फरी मलवो डुष्कर छे.

॥ मनुष्यभवनी डुर्लभता उपर बीजो पासानो दृष्टांत ॥

आ भरतक्षेत्रने विषे गोल्लक देशमां चणीक नामे गाम

हतुं. तेमां एक चणीक नामे ब्राह्मण रहेतो हतो. तेने चणे-श्वरी नामनी ज्ञार्या हती. ए बन्ने स्त्रीजर्तार जैनधर्मी हतां. चणेश्वरीने पेटे दांत सहित पुत्र पेदा थवाथी तेना दांत घसी नाख्या. एक वखत तेने घेर साधु आव्या. तेमनी पासे पोताने दांत सहित पुत्रनो प्रसव थया संबंधीनो वृत्तांत चणेश्वरीए कह्यो. ते वात सांजली साधुए जणाव्युं के, ए राज्य पामशे. पठी मातापिताए कह्युं के, स्वामी! अमे तेना दांत घसी नाख्याठे! साधुए जणाव्युं के, बिंबांतरित राज्य ज्ञोगवशे अ-र्थात् कोईक ओतु बेसारीने राज्य करशे (प्रधान थशे). सा-धुनां आवां वचन सांजली बन्ने मातापिता हर्ष पाम्यां. बा-लकनुं नाम चाणाक्य पाड्युं. ए सर्व शास्त्र जणी कला विकलानो जाण थयो. महा जैनधर्मी थयो. मावित्रे तेने परणाव्यो. ए-कदा चाणाक्यनी ज्ञार्या तेना जाईने घेर विवाह होवाथी तेने पियेर गई अने ते स्त्रीनी वहेन चाणाक्यनी साली पण ए अव-सर उपर त्यां गई हती. ए श्रीमान् अने ज्ञाग्यवान् हती, तेथी चाणाक्यनी स्त्री करतां तेनो आदर सत्कार तेणीना जाई जो-जाईए विशेष कर्यो. सासरवासो पण न्यूनाधिक कर्यो. बन्ने सगी वहेनो हती पण सामान्यपणाने लीधे चाणाक्यनी स्त्रीने जेवुं तेवुं मान दीधुं तथाप्रकारनो आदर न दीधो. विवाहनी समाप्ती थया पठी ते पोताने घेर आवी. जर्ता आगल जाईना अप-माननी वार्ता कही. ते सांजली पोतानी स्त्रीना मनोरथ पूर्ण करवा सारु चाणाक्य लक्ष्मी उपार्जन करवा माटे देशांतर जवा नीकल्यो. मार्गमां जतां जतां ते पोताना मनमां एवो विचार करवा लाग्यो के, लक्ष्मी लेई आवुं अने स्त्रीनी होंस पूरी पाडुं तोज जीव्युं प्रमाण ठे. एटलामां एक ब्राह्मण मल्यो, तेने पुठ्युं के तमे क्यांथी आवो ठो? ब्राह्मणे कह्युं जे, हुं पाड-

लीपुर नगरमां नंदराजा वर्षो वर्ष दक्षणा आपे छे ते लेवा माटे गयो हतो. पण ते राजा अंतेउर गयो छे तेथी हुं पाछो म्हारे घेर जाउं छुं. आ वात सांभली चाणाक्य पाडलीपुरमां आव्यो अने नंदराजानुं सिंहासन खाली देखी-ते उपर चढी बेठो. ते वखते नंदराजानी दासीए आवीने तेने कह्युं के, ए सिंहासन मुकीने बीजे सिंहासने बेसो. चाणाक्ये कह्युं के, बतावो. दासीए तेनी पासे बीजुं सिंहासन हतुं ते बताव्युं, एटले चाणाक्ये तेना उपर पोतानुं कमंडल मुक्युं. दासीए त्रीजुं सिंहासन बताव्युं, चाणाक्ये ते उपर पवित्री मुकी. एटले चोथुं बताव्युं, ते उपर दंड मुक्यो. एम जे जे सिंहासन देखाड्यां ते ते चाणाक्यने कबज करतो देखी दासीने क्रोध चढ्यो तेथी तेणीए तेने उठाडी मुक्यो. उठतां थकां ते बोल्यो जे, हुं चाणाक्य तो त्यारेज खरो-के ज्यारे तहारा नंदराजानुं राज्य लेउं! दासीए कह्युं जे, जा रे जा भरडा! तुज सरिखा तो अहींआ घणाए भरडा आवे छे.

त्यारपछी पूर्वे साधुए कह्युं हतुं जे, चाणाक्य राज्यनो कारभारी थशे. ए वचन मनमां धारी त्यांथी ते (चाणाक्य) कोई राज्य करवाने योग पुरुषने खोली काढवा माटे चाली नीकल्यो. मयुरपाल नामे राजाना गाममां आवीने तापसनो वेष धारण करी ते भीक्षा मागवा लाग्यो. मयुरपाल राजानी राणीने गर्भना प्रभावथी सोल कला संपूर्ण चंद्र पीवानो मोहलो उत्पन्न थयो हतो, परंतु ते कोई रीते पूर्ण करी नहीं शकवाथी राणी दीवसे दीवसे डुबली थती हती. राजाए डुबली थवानुं कारण राणीने पुछवाथी तेणीए मोहला संबंधी जे खरी हकीकत हती ते जणावी अने विशेष कह्युं के, ए डोहलो पुराय तो हुं जीवुं. ते सांभली मयूरपाल विचारना वमलमां

पड्यो, के हवे शुं करवुं? ते वखते चाणाक्य कापडीने वेषे जिक्षाने अर्थे तेना बारणा आगल आवीने उन्नो रह्यो हतो. तेने देखी मयूरपाल पगे लाग्यो. चाणाक्ये पुछ्युं—आवडुं तमने चिंतानुं कारण शुं बे ? राजाए डोहला संबंधी सघली हकीकत कही. ते सांजलीने चाणाक्य बोल्यो—जो डोहलो पुराय नहीं, तो बे जीवनी हाणी थाय. राजाए कह्युं—स्वामी! ते तो खरुं, पण ए बे जीव उगरे तेवो कांई उपाय बे ? चाणाक्ये कह्युं—उपाय तो बे, पण म्हारे शुं ? राजाए कह्युं—हे स्वामी!-जे तमे कहो ते हुं सांजलुं. चाणाक्ये कह्युं—जो गर्जनो बालक तुं मुजने आपे तो हुं ए बालक तथा तेनी माता, ए बन्नेने जीवाडुं. मयूरपाले मुआथी तो जीवता सारा, एम विचार करी चाणाक्यना कहेवा प्रमाणे तेने बालक आपवानुं कबुल कर्युं. चाणाक्ये पंचनी साखे ते बाबतनुं लखत करावी लीधुं. हवे राणीनो डोहलो पूर्ण करवा माटे चाणाक्ये तृणनुं एक कुटीर (फुंपडुं) कराव्युं. तेना उपर गुप्तठीड मुकाव्युं, अने नीचे कुटीरमां एक रुपाना थालमां डुध जरावी मुक्युं. पूर्णीमानो सोल कला संपूर्ण चंद्रमा उग्यो त्यारे ते कुटीरमां राणीने सुवाडी. राणी निद्रावश थई त्यारपबी कुटीर उपर गुप्त मुकेलुं बीड उघाडी ते वाटे आवता चंद्रना प्रतिबिंबने स्थले दूध जरेलो रुपानो थाल हतो ते मुक्यो. पबी मयूरपाले राणीने जगाडीने कह्युं जे—तमारा ज्ञाग्यने योगे चंद्रमा आव्यो बे माटे तमे पीयो. एम कही थाल पासे तेणीने बोलावी बेसाडी. राणीए पोताना डोहला अनुसार चंद्रमा जोयो तेथी ते पीवा लागी. ते जेम जेम पीए बे तेम तेम कुटीर उपर माणस बेसाड्यो हतो ते चाणाक्ये करेली सुचना प्रमाणे थोडुं थोडुं बिड ढांकतो हतो. डुध पूरु थवानी साथे बिड संपूर्ण ढंकायुं अने चंद्रनुं प्रतिबिंब नाबुद

थयुं; तेथी राणीनी संपूर्ण खात्री थई के हुं चंद्रमा पीगई. ए प्रमाणे बुद्धिबले करी चाणाक्ये मयूरपाल राजानी राणीनो ऊोहलो पूर्ण कर्यो. अनुक्रमे गर्भ वधतां पूरेमासे बालकनो जन्म थयो. माता पिताए ते बालकनुं नाम मोहलाने अनुसारें, 'चंद्रगुप्त' राख्युं. चाणाक्य, राणीनो डोहलो पूर्ण कर्या पछी ते गामथी नीकली पृथवी पर्यटन करतो गामे गाम जोतो फरेछे. परदेशमां ते सोनासिद्धि सीख्यो. पछी मयूरपाल राजा पासे तेने गाम पाछो आव्यो. त्यां घणा बालकोने एकठा करी चंद्रगुप्तबालकने क्रीडा करतो दीठो. पोते चंद्रगुप्त राजा थयोछे, एकने प्रधान कर्यो छे, एकने कोटवाल बनाव्यो छे, कोईने नगर आपेछे, कोईने गाम बक्षीस करेछे, कोईनो न्याय चुकावे छे. ए प्रकारे राज्यनी रमत करता बालकोने देखी चाणाक्ये कोईकने पुछ्युं जे– ए कोनो बालक छे? लोकोए कह्युं जे–कोईक तापसे डोहलो पूर्योछे माटे तापसनो ए पुत्र छे. एवुं सांभली ते घणो खुशी थयो. ए वखते त्यां आगल गायनुं धण (समुदाय–टोलुं) आवतुं हतुं. ते जोइ चाणाक्ये चंद्रगुप्तने कह्युं जे–महाराज! ए सर्वने तमे गाम पुर नगरादि आपोछो, तो हुं पण तमारो ब्राह्मण छुं, माटे मने पण कांईक आपो. चंद्रगुप्ते कह्युं जे– तमने ए गायनुं धण आप्युं. चाणाक्ये कह्युं के–महाराज! ए गायोनुं धण कोनुं? चंद्रगुप्ते जणाव्युं जे–वीर भोग्या वसुंधरा. एवुं सांभलीने चाणाक्ये चंद्रगुप्तने कह्युं के–तुं महारी साथे चाल, हुं तने राज्य अपावुं. एम कहीने ते चंद्रगुप्तने पोतानी साथे लईने त्यांथी चाली नीकल्यो.

चंद्रगुप्तने बालराजा ठरावी धातुरवादे धन उपार्जन करीने लश्कर राखी चाणाक्य पाटलीपुरे आव्यो. नंदराजा तेनी सामे आव्यो. लडाई थतां नंदे कुट्यो, लश्करमां भंगाण पड्युं एटले चाणाक्य

चंद्रगुप्तने लेईने नाठो. नंदराजाना स्वार तेनी पठवाडे हणवाने माटे आव्या पण बुद्धिबले करी चाणाक्ये तेमने ठार कर्या. चंद्रगुप्तने गुप्त स्थानके राखी चाणाक्य फरी तापसनो वेष लेई भीख मागवा गयो. (आ वखते आवो वेश धारण करी तेनो जवानो मतलब ए हतो के पोते नंदराजाथी हार खाई नाठो हतो, ते संबंधे नगर चर्चा शुं चाले छे तेनी खबर पडे तेमज हवे केवा प्रकारनी गोठवणथी नंदराजा उपर चढाई लेई जवाथी फावी शकाय तेनी तजवीज करवा माटे एवा वेषे गयो हतो.) फरतां फरतां एक डोसीना घर आगल गयो. त्यां डोसीनां बे त्रण छोकरां खावा बेठां हतां, तेउने डोसीए खावा सारु उन्ही उन्ही घेंस पीरसी. बालके वचमां हाथ घाल्यो एटले ते दाझ्यो तेथी रोवा लाग्यो. ते वखत डोसीए कह्युं जे– चाणाक्यनी परे मूर्ख कां तुं थाय छे ? वेषधारी चाणाक्ये डोसीने पुछ्युं जे–हे माता! ते चाणाक्य मूर्ख केम थयो? डोसीए कह्युं के– पहेला ज पाडलीपुरे आवी आथड्यो तो तेणे मार खाधो अने पाछो नाठो. ए छोकरां पण एम करे छे तेथी दाझे छे. घेंस पीरसी त्यारे एम न जाण्युं जे कोरे कोरेथी लेई खाउं. उतावलो थई वचमां शुं करवा हाथ घाल्यो ? एम करे तो बले ज तो! जो कोरेथी खात तो शाने दाझत! चाणाक्ये पण तेमज कर्युं. आगल पाछलनां न्हानां गामो विगेरे ठार कर्या सिवाय एकदम पाटनगर उपर चढी आववाथी चारे बाजुनो मार पड्यो. घेंस खावी अने राज्य लेवुं, ए बेनी एक ज रीत छे. डोसीनां आवां वचन सांभली त्यांथी चाणाक्ये पर्वत राजा पासे जई तेने पोतानी संपमां मेलवी लीधो. पर्वतराजा तथा चंद्रगुप्तने लेईने घणां लश्कर साथे चाणाक्ये पाडलीपुरनी आसपासनो घणो मुलक जीती लीधो. त्यारपछी पाडलीपुरे आवी नंदराजा साथे

युद्ध कर्युं; तेमां जय मेळवी नंदनुं राज्य लीधुं अने नंदने काढ्यो. धर्म द्वार आप्यो अर्थात् तेने (नंदने) चाल्यो ज-वानी परवानगी आपी. चंद्रगुप्त अने पर्वतराजा ए बेनुं साथे नगरमां पेसवुं अने नंदनुं नीकळवुं, ए वखते नंदराजानी पुत्रीने जोई चंद्रगुप्त व्यामोह पाम्यो. ते कन्याने नंदे रथथी उतारी मुकी एटले ते (कन्या) चंद्रगुप्तना रथमांहे पेठी. न-गरमां आवी बन्ने सिंहासन उपर बेसी राज्य भोगववा लाग्या. त्यारपछी राजमहेलमां बेठेली एक कन्या तेमना जोवामां आवी. चाणाक्ये तेने चिकित्साथी विषकन्या जाणी. ते कन्या पर्वत-राजाने परणावी. तेना हाथना फरसथी पर्वतराजाने झेर चड्युं. चंद्रगुप्ते चाणाक्यने कह्युं जे—पिताजी! उसड करो, मित्र मरे छे! चाणाक्ये कह्युं जे— बोल मां, भात्रठ जाय छे ते जावादे! त्यार-पछी पर्वत मर्ण पाम्यो. निकंटक राज्य थयुं. हवे चंद्रगुप्त सुखे समाधे राज्य भोगवे छे. पछी चाणाक्ये बुद्धिबळे सर्व लोकने विकळ करी घरनुं सरवखपणुं कर्युं. त्यार तेणे पछी देवताने स-मरी (आराधी) पासा मंगाव्या. (आ देवताई पासामां एवो चमत्कार हतो के ते चाणाक्यनी मरजी मुजब ज दाव आपता हता.) त्यारपछी चाणाक्ये रत्ननो थाळ भरी नगरजनो वच्चे मुकीने जणाव्युं के— जे जीते ते आ रत्ननो भरेलो थाळ लेई जाय अने हारे ते एक रत्न मुकी जाय. लोकोए आवी वात सांभळी विचार्युं जे— ए व्यापार सारो, जो जीतीये तो बधो थाळ आवे अने हारीये तो मात्र एक रत्न आपवुं. आ प्रकारे ठराव करी (हा भणी) रमवा लाग्या. जे हारे ते रत्न मुकता जाय, एम सर्वे नगरनां लोक हारी गया. कोई पण चाणाक्यने जीती शक्युं नहीं. एम करतां करतां राजानो भंडार भर्यो अ-र्थात् एक एक रत्ने करी संपूर्ण भंडार रत्न वडे पासाना प्रतापे

नर्यो, एक पण वखत दाव खाली गयो नहीं, एवा ते पासा हता. तेम आ मनुष्यनव रुपी रत्न, धर्म विना एळे गुमाव्यो ते, जेम पासाए करी पाडलीपुर वासीउए रत्न गुमाव्यां ते पाछां मळी शके नहीं, तेम आ मनुष्यनव मळवो महा डुर्लन छे. कदापि बीजो कोई देवनी सहाय्ये करी चाणाक्ये जीती लीधेलां रत्नो पासा वडे तेने हरावी पाछां वाळे, परंतु उपर जणाव्या प्रमाणे धर्म विना मनुष्य-नव जे खोयो ते फरी फरीने पामवो डुर्लन छे. माटे हे नव्य जीवो! धर्मने विषे उद्यम करवो. ए पासानो बीजो दृष्टांत जाणवो.

॥ मनुष्यनवनी डुर्लनता उपर त्रीजो धान्यनो दृष्टांत ॥

जेम कोई राजाये नरतक्षेत्रमां चोवीसे जातना धान्यने एकठां करी तेनो अंबार (ढगलो) कर्यो. पछी पराक्रमहीण, जेना शरीरनां संधाण सथल वथल थयां छे, उठवा जाय तो नमर (चक्कर) आवे, शरीर थरथर कंपे, आंखे फांफांफुंफां देखे, हाथ पगमां पराक्रम नहीं, आंख चूए, मुखे लाल गळे, काने बहेरी, केड थकी बेवडी वळी गयेली, वळी लाकडीनोज जेने आधार छे, एवी सो वर्षनी डोसीने कह्युं के– आ चोवीस जातिनां धान्यनो जे ढगलो छे तेमांथी सर्वे जातनां धान्य जूदा जूदा काढ. ते मोसीथी ए करणी थई शकशे के केम ? एम प्रश्न करवाथी समजुए कह्युं के–ए कार्य मोसीथी पार पडी शके नहीं. तेम धर्म विना खोयो जे मनुष्यनव ते फरीने पामवो डुक्कर छे.

॥ मनुष्यनवनी डुर्लनता उपर चोथो जुवटानो दृष्टांत ॥

जीतारी राजाने घणा बेटा हता. ते सुखरुप राज्य लीला नोगवता हता. ते राजाने बेसवानी राज्यसनानुं मकान घणुं मोहोटुं हतुं. ते मकानमां एकसो ने आठ थांनला हता, अने ते एक एक थांनलाने एकसो ने आठ आठ हांसो हती. एक वखत राजाना वडा पुत्रे विचार कर्यो के हुं गरढो थवा आव्यो तो-

पण म्हारो पिता मर्ण पाम्यो नहीं अने मने राज्यगादी मळी नहीं, माटे कोई पण उपाये तेमने कालधर्म पमाडुं. आवो विचार करी तेणे पोताना पिताने मारवानी पेरवी करवा मांडी. आ वातनी प्रधानने खबर पडवाथी तेणे ते राजाने जणावीने कह्युं के– राज्यनो मालीक ए थवानो छे छतां तेने हाल माठी बुद्धि उपजी छे तेथी विनाश थवानो संभव छे. माटे युक्तिपूर्वक बुद्धिबले करी कोई एवो उपाय योजो के तमे तथा तमारो कुमार बन्ने जीवता रहो अने राज्यसुख जेम भोगवो छो तेम भोगवो. प्रधाननुं कहेवुं सांभली राजाये वडा पुत्रने तेडाव्यो अने कह्युं के– अरे भाई ! हुं तने एक वात कहुं ते सांभळ. हवे म्हारी वृद्धावस्था थई छे अने राज काज पण बरोबर करी शकातुं नथी, तेमज ते करवानी मारी ईच्छा पण नथी, तेथी म्हारे तने राज्याभिषेक करी राज्यनो स्वतंत्र मालीक करवो छे; परंतु आपणा कुलमां एवी रीत छे के–आपणी राज्यसभामां जे एकसो आठ थांभला छे अने ते दरेक थांभलाने एकसो आठ आठ हांसो छे ते प्रत्येक हांस दीठ आपणे जुवटु रमी पासा खेलवा. एक साथे लागट एकसो आठ वार पाधरो दाव पडे तो एक थांभलो जीत्यो गणाय, परंतु वच्चमां कोई दाव अवलो पडे तो ते जीतेला दाव रद गणाय अने फरीथी एकसो आठ लागट जीतवा पडे. ए प्रमाणे एकसो आठ थांभला जीततां तुरत तने राज्याभिषेक करी हुं निवर्त्त थाउं एवी म्हारी ईच्छा छे. आ प्रमाणे जीतीने राज्य मेलवी शकाय नहीं. कदापि कोई देवतानी साहाय्य वडे दाव पाधरा पाडी एकसो ने आठे थांभला जीतीने राज्य मेलवे, परंतु मनुष्यभव धर्म विना एले गुमावे ते फरीने पामवो महा दुर्लभ छे. माटे भव्य जीवे धर्मने विषे उद्यम करवो पण लगार मात्र प्रमाद न करवो.

॥ मनुष्यजवनी डुर्लजता उपर पांचमो रत्ननो दृष्टांत ॥

वसंतपुर नगरमां घणा धननो स्वामी धन नामे व्यवहारी रहेतो हतो. तेने पांच पुत्र हता. रत्नपरिक्षा ग्रंथनी तेणे घणी सारी माहिती मेलवी हती,तेथी ते रत्ननी परिक्षामां घणो निपुण गणातो हतो. धनशेठ पासे घणुं ड्रव्य हतुं. ते ड्रव्यने साटे तेणे घणां रत्न लीधां हतां तेथी लोकमां तेनुं रत्नसार शेठ नाम पड्युं हतुं. जे जे रत्न तेना जोवामां आवे ते ते, ते लीधा विना रहेतो नहीं, तेथी तेना पांचे पुत्रो तथा तेनी जार्या सुधां तेने घणुं खीजता,पण कोईनुं कहेवुं ते मानतो नहोतो. एम करतां घणा दीवस थया. सघलां रत्नो तेणे एक ओरडीमां जर्यां हतां, त्यां ते सुतो, वेसतो. कोईनो विश्वास करतो नहोतो. ओरडी सुनी मुकतो नहीं. तेमज तेमां कोईने पेसवा पण देतो नहीं. एकदा प्रस्तावे घणुं अगत्यनुं खरे खरुं काम पडवाथी ठरडीए तालुं वासीने शेठ वाहार गया पण तेनुं मन तो रत्नना ओरडामांज फरतुं हतुं. शेठ गया के तुरत ज पुत्रे तालुं जागीने ओरमी उघाडी व्यापारीउने तेडावी सघलां रत्नो वेची नाख्यां. परदेशी व्यापारीओ रत्नो लेई दिसो दिसे चाल्या गया. शेठ घेर आव्या. जुए तो ओरडी उघामी दीठी, तेमां एके रत्न न मले. पुत्रने पुढ्युं के–रत्न क्यां गयां? स्त्रीए कह्युं जे–तमारे पुत्रे वेच्यां. ते सांजली शेठे घणो पश्चाताप कर्यो. पण दिसो दिस जे वेराई गयां अर्थात् जूदे जूदे अनेक स्थले बुटा पडी गयेलां रत्नो पाठां एकठां न मले. न मलवानो संजव ठतां कदापि ते कोई देवतानी साहाय्ये करी एकठां करे; परंतु धर्म विना जे मनुष्यजव खोयो ते फरी न पामीये. माटे धर्मने विषे उद्यम करवो.

॥ मनुष्यजवनी डुर्लजता उपर ढठो स्वप्ननो दृष्टांत ॥

अवंती देशमां उजेणी नामे नगरीने विषे मूलदेव नामनो

राजकुमार रहेतो हतो. पुरुषनी बोहोतेर कलानो जाण हतो. लोको तेने घणुं चहाता हता. ते नगरमां देवदत्ता नामे एक गणीका रहेती हती. तेना उपर मोहित थई मूलदेव राजकुमार तेना पासमां पडी रात्रि दिवस तेने घेर रहेतो हतो. एक वखत अचल नामे व्यवहारीयो ते गणीकाने घेर आव्यो. ते बन्नेने मांहोमांहे विवाद थयो. त्यारपछी मूलदेव जुगारी थयो तेथी तेने मावित्रे घरमांथी काढी मुक्यो. कापडीनो वेष धारण करी ते देशांतर जवा चाली नीकल्यो. फरतां फरतां त्रण दीवस थया त्यारे एक गामनी भागोले तलावनी पाल नजीक सन्यासीनो मठ हतो त्यां रात्रे सुई रह्यो. पछी कांईक जागतां अने कांईक उंघतां तेणे सोल कलाए संपूर्ण चंद्रमा पीधो, एवुं स्वप्न दीठुं. तेनी पासे एक घोसाईनो चेलो सुतो हतो तेणे पण तेज प्रकारे चंद्र पीधो, एवुं स्वप्न दीठुं. सवारे चेलाए गुरुने स्वप्ननी हकीकत जणावी तेनुं फल पुछ्युं. गुरुए कह्युं के—आज तने घीए चोपडेलो घहुंनो रोटो गोल सुधांत मलशे. मूलदेव त्यां आगल बेठेलो हतो तेणे पोताना मनमां गुरुए चेलाने स्वप्नतुं जे फल कह्युं ते सांभली विचार्युं जे स्वप्नतुं ए फल महारे नहीं अर्थात् एवुं फल एनेज हज्यो. त्यारपछी घोसाईनो चेलो भीक्षा मागवा माटे गाममां गयो. त्यां कोई स्त्रीए पोताने छोकरां जीवतां नहोतां तेथी कोईए टुचको बताव्यो हतो ते प्रमाणे तेणीए घहुंनो रोटलो करी घीए चोपडी तेना उपर गोल मुकी भीक्षुकने आपवा तैयार करी मुकेलो हतो. भावी योगे पेलो घोसाईनो चेलो तेने घेरज गयो. त्यां ते स्त्रीए तेने रोटलो आप्यो. चेलो स्वप्नतुं फल गुरुए जणाव्युं हतुं ते मुजब मलवाथी घणो खुसी थतो गुरु पासे आव्यो अने प्रत्यक्ष मलेलुं फल बतावी गुरुना ज्ञाननी प्रसंसा करवा लाग्यो

मूलदेवी संन्यासीना मठमांथी नीकली एक मालीनी वाडी-मां गयो. तेनी सेवा उठावी तेथी तेणे (मालीए) प्रसन्न थई फल फूल आप्यां. ते फल फूल लेईने मूलदेवे निमीत्तियाने घेर जई तेवडे तेनी पूजा करी पोताने आवेला स्वप्ननुं फल पुछ्युं. निमीत्तियाये स्वप्नफलमां जणाव्युं जे – " आज थकी सातमे दिवसे तुं राज्य पामीश." मूलदेव एवुं सांजली हर्ष पाम्यो. त्यारपछी ते त्रण दीवसनो भूख्यो होवाथी गाममां भीख मागवा गयो. त्यां तेने कोईके अडदना बाकला आप्या. ते लेई तलावनी पाल उपर आवीने भोजन करवा बेसतो हतो तेवामां भाग्य योगे मासखमणने पारणे गोचरी करवा सारु नी-कलेला मुनीमहाराज आव्या. तेमना सामो जई विनती करीने बोलावी लावी घणा सन्मान साथे उलट आणी बाकला वहोराव्या. साधुए ते वडे मासखमणनुं पारणुं कर्युं. मूलदेवे पण त्रण दीव-सनुं पारणुं कर्युं अने मनमां घणी अनुमोदना करवा लाग्यो जे–हुं आज धन कृतारथ थयो. पछी ते वननी देवीए प्रत्यक्ष थई मुलदेवने कह्युं के– साधुने तें दान आप्युं तेना महिमाये करी हुं तहारा उपर तुष्टमान थई छुं माटे मनईछित वर मांग. मूलदेवे कह्युं के–हे देवता! जो तमे त्रुठा छो, तो मने राज्य आपो. देवीए कह्युं जे–में तने राज्य आप्युं. सात दीवस थतां ते नगरनो अपुत्रीयो राजा मर्ण पामवाथी प्रधाने पंचदिव्य रच्यां. हाथी १, घोडो २, छत्र ३, चामर ४, अने कलस ५, ए पांच दिव्य प्रगट करी वाजते गाजते हाथणीने फेरवी. बधुं नगर फरी वली ज्यां मूलदेव सूतो हतो त्यां आवीने मूलदेवना मस्तक उपर हाथणीए कलस ढोल्यो. एटले जय जय शब्द थयो. राजमंदीरे लावी मूलदेवने सिंहासनारुढ करी तेनी अखंडित आण प्रवर्तावी. पछी मूलदेव राजाये पेला घोसाईना चेलाने बो-

लावरावी कह्युं के–जे वखते तें स्वप्न दीठुं हतुं ते वखते में पण तेवाज प्रकारनुं स्वप्न दीठुं हतुं. ते स्वप्नना प्रभावथी हुं राज्य पाम्यो अने तूं रोटो पाम्यो. जोगीना चेलाये कह्युं के–म्हारा अने तमारा एकज जातना स्वप्ननुं फल जुदुं केम? मूलदेव राजाये जणाव्युं जे– गुरुमां फेर, तेम एनां फलमां पण फेर. जेवो गुरु तेवुं ज्ञान अने जेवी भक्ति तेवुं फल जाणवुं. ते वखते चेलाए विचार्युं जे–फरीने सुई रहुं अने जो ते स्वप्न देखुं तो तेनुं फल निमीत्तियाने पुछुं, के जेथी हुं पण राज्य पामुं. ते माटे वारंवार घणुंए सुत्रो पण ए स्वप्न फरीने क्यांथी पामे? कदापि देवतानी साहाय्ये करी ते पण पामे, परंतु मनुष्यनो जे भव खोयो ते फरीने पामवो दोहिलो छे. ते माटे धर्मने विषे उद्यम करवो अने मनुष्यभव एले गुमावी देवो नहीं.

॥ मनुष्यभवनी दुर्लभता उपर सातमो चक्रनो दृष्टांत ॥

इंद्रपुर नामना नगरने विषे इंद्रदत्त राजा राज्य करतो हतो. तेने बावीस बेटा हता. एकदा समये राजाना जोवामां मंत्रिसरनी पुत्री आवी. ते घणी रूपवंत होवाथी राजा तेना उपर मोहित थयो. प्रधानने तेभावी मांगणी करीने राजाए तेनी साथे लग्न कर्युं. कर्मयोगे परण्या पछी तरतज राजाए तेने परिहरी. तेने दीठी पण गमे नही तेथी ते पोताना पिताने घेर रहेती हती. एक वखत ते स्त्री ऋतुस्नान करी गोखमां बेठेली राजाए दीठी. पछी सेवकने पुछवाथी तेणे राजाने कह्युं के–महाराज! आ तो प्रधानपुत्री आपनी भार्या छे. राजा रात्रे प्रधानने घेर रह्यो. ऋतुदानने योगे करी ते समये कोईक पुन्यवंत जीव आवी गर्भने विषे उत्पन्न थयो. प्रभाते राजा घेर गयो. स्त्रीए पोतानी मा आगल रात्रिनी हकीकत कही. माताये प्रधानने कह्युं. प्रधाने दीवस तारीख वार चोकस नीशानी सहित सर्व कागल

उपर नोंधी राख्युं. नव मसवारें ते स्त्रीए पुत्र प्रसव्यो. तेनुं सुरेंद्रदत्त नाम राख्युं. ते कुमार बीजना चंद्रनी परे वध्यो. प्रधाने तेने कलाचार्य पासे भणवा मुक्या. कलाचार्य खांते करी चूंपशुं भणाववा लाग्यो. राजाना बीजा जे बावीस पुत्रो हता ते पण तेज कलाचार्य पासे भणवा आवता हता. बेदरकारनी पेठे ते बावीसे भणता नही अने चपलाई करता हता. कलाचार्य तेउने मारे त्यारे ते सामा थता. कंटालीने कलाचार्ये ते ना आवे तो सारा, एम विचारीने तेओनी उपरथी ममता उतारी नाखी. सुरेंद्रदत्तने सर्व विद्यानो पारगामी कर्यो. राधावेधनी कला पण शिखवी. प्रधाने अध्यापकने घणुं धन आपी संतोष्यो.

मथुरा नगरीमां जितशत्रु राजानी चोसठ कलानिधान भृतईसेना नामे कन्या हती. एकदा तेनी माताये शृंगार सजावी तेने राजा पासे मोकली. राजाये स्वयंवरामंडप योग्य तेने थयेली जोई पुछ्युं के–हे वत्स! मन मान्यो वर वरज्यो, के अमारी ईछानो वर वरज्यो. कन्याये कह्युं–जे राधावेध साधशे तेने वरीश. त्यारपछी शुभ दीवस जोवरावी राजाये ते कन्याने सपरिवारे इंद्रपुरे मोकली दीधी. इंद्रदत्त राजाये तेने घणा आदर साथे सात भूमीआ आवास प्रत्ये उतारो आप्यो. कन्याना अर्थात् जितशत्रुराजाना प्रधाने इंद्रदत्त राजाने कह्युं के–तमारे घणा बेटा छे एवुं अमे सांभलेलुं छे. आ कन्यानो एवो निश्चय छे के, जे राधावेध साधे तेने वरवुं. माटे ए विषे परिक्षा करी आपना योग्य पुत्ररत्नने आ कन्या परणाववा सारु अमे अहीं आव्या छीये. इंद्रदत्त राजाये नगर शिणगारी स्वयंवरा मंडप रचाव्यो. राधावेध माटे तेना मध्यमां एक थंभ उभो कराव्यो. तेना उपर चार सवलां अने चार अवलां, एम आठ चक्र गोठव्यां. वली तेना उपर मध्यभागे राधा नामे पुतली मावी आंखे कांणी बीजा

आठ चक्रसहित एवी रीते मुकावी के चक्रना मध्यभागे थईनेज त्यां बाण जई शके; हेठल तेल भर्यो लोह कढाइ मुकाव्यो. राजकन्या पांचवर्णा फूलनी माला लेईने ते मंडपनी एक बाजुए सखीओ सहवर्तमान आवीने उभी रही. राजाना बावीसे पुत्रो हाथमां धनुष्य बाण लेईने राधानो वेध करवा माटे आव्या. राजा तथा राजवर्गादि पुरजनो स्वयंवर मंडपमां योग्य आसनपर आवीने बेठा. राधावेध साधवानी शरुआत थई. तेमां केटलाक कुमारनां बाण एक चक्रने, कोईकनां बे चक्रने, कोईकनां त्रण चक्रने, कोईकनां चार चक्रने, कोईकनां पांच चक्रने अने कोईकनां छ चक्रने (बाण) भेदी गया. पण सोले चक्र सरखां आवतां कोई पण बाण साधी शक्युं नहीं तेथी सर्वे विलखा थया. पूर्वे साध्या नथी तेमज एवा भाग्यवंत नथी तेथी बावीसे निष्फल थवाने लीधे राजा इन्द्रदत्त पण विमासणमां पडी विचार करवा लाग्यो के, महारा पुत्रनी प्रसंशा सांभली ए कन्या अहीं आवी. पण राधावेध सधायो नही, तेथी आवेली कन्या जशे अने दुनीयामां हांसी थशे ते तो जूदी! एम विलखो थई राजा विचारशून्य जेवो बेठो हतो तेने जोई प्रधाने कह्युं के, महाराजा! शी फीकर करो छो? हजी तमारो एक पुत्र छे, ते राधावेध साधशे एवी मारी खात्री छे. राजाये कह्युं–ते कीयो? प्रधाने पोताने घेर राजा रह्यो हतो ते वात कहीने राखेली नोंधनो कागल वंचाव्यो. राजानी शंका मटी गई. तरतज सुरेंद्रदत्तने बोलाव्यो. सुरेंद्रदत्ते धनुष्यबाण सहित राजानी पासे आवी सविनय नमस्कारादि करी आज्ञा मलतां राधावेध साधवाने बाण ताक्युं. नीचे मुकेली तेलथी भरेली कढाईमां अधो मुख करी तेमां पडता थंभ उपर मुकेली राधा नामनी पुतलीना प्रतिबिंबने नीहाली उपर फरता उलटा सुलटा आडा अवला सोले चक्र सरखां

आवतां तेना छेद मार्गे बाणने छोडी (पार करी) राधा पुतलीनी डाबी आंखने वींधी नांखी. प्रतिज्ञाप्रमाणे राधावेध साधनार सुरेंद्रदत्त राजकुमारना कंठमां कन्याए वरमाला आरोपी. जयजयारव शब्द थयो. पाणीग्रहण कर्युं. पछी राजाये घणो दायजो आप्यो. प्रधान पोताने घेर गयो. सुरेंद्रदत्त राज्यनो धणी थयो. बावीसे कुमारो विद्या जण्या नही अने चक्रनी गति समजी शक्या नहीं तथा राज्य पाम्या नही तेथी घणो पस्तावो करवा लाग्या. कदापि कोई देवतानी साहाय्यथी चक्रनो भ्रमण काल समजी राधावेध साधी कन्या अने राज्य प्राप्त करी शके, परंतु जे कोई मनुष्यज्जव पामी एले करी खूए, ते गयो फरी पामवो डुर्लज्ज छे. माटे धर्मने विषे उद्यम करवो एज श्रेयस्कर छे.

॥ मनुष्यज्जवनी डुर्लज्जता उपर आठमो कुरमनो दृष्टांत ॥

कोईएक लक्ष योजन प्रमाणनो द्रह छे. ते द्रहमां एक म्होटो काचबो रहे छे. एकदा प्रस्तावे वायराना जोग थकी पाणी उपरनुं सेवाल उघड्युं. ते वखते काचबे आकाश सामुं जोयुं तो आसोई पुनमनो चंद्र दीठो. ते तमासो जोईने काचबे विचार्युं जे:– म्हारां सगांने तेडी लावी ए तमासो देखाडुं. पछी ते पोताना परिवारने तेडवा गयो. त्यांथी तेडीने पाछो आवे छे तेटलामां तो सेवाल पाछो मली गयो. तेथी पोते, तेमज तेडी लावेलो परिवार कांई पण नीहाली शक्या नहीं. तेउए घणुंए जोर कर्युं. पण ते टाणानो जोग पाछो न मल्यो. तेम जे धर्म विना एले खोयो मनुष्यज्जव ते फरी पामवो डुर्लज्ज जाणवो. माटे धर्मने विषे उद्यम राखवो पण क्षण मात्र प्रमाद न करवो.

॥ मनुष्यज्जवनी डुर्लज्जता उपर नवमो धूंसरानो दृष्टांत ॥

तिर्छालोकमां लवण सुमद्र विगेरे ठाण बमणा असंख्याता द्वीप समुद्र छे. तेमां छेल्लो स्वयंज्जूरमण समुद्र अर्ध राज प्रमा-

आठ चक्रसहित एवी रीते मुकावी के चक्रना मध्यभागे थईनेज त्यां बाण जई शके; हेठल तेल भर्यो लोह कढाह मुकाव्यो. राजकन्या पांचवर्णा फूलनी माला लेईने ते मंडपनी एक बाजुए सखीओ सहवर्तमान आवीने उभी रही. राजाना बावीसे पुत्रो हाथमां धनुष्य बाण लेईने राधानो वेध करवा माटे आव्या. राजा तथा राजवर्गादि पुरजनो स्वयंवर मंडपमां योग्य आसनपर आवीने बेठा. राधावेध साधवानी शरुआत थई. तेमां केटलाक कुमारनां बाण एक चक्रने, कोईकनां बे चक्रने, कोईकनां त्रण चक्रने, कोईकनां चार चक्रने, कोईकनां पांच चक्रने अने कोईकनां छ चक्रने (बाण) भेदी गया. पण सोले चक्र सरखां आवतां कोई पण बाण साधी शक्युं नहीं तेथी सर्वे विलखा थया. पूर्वे साध्या नथी तेमज एवा भाग्यवंत नथी तेथी बावीसे निष्फल थवाने लीधे राजा इंद्रदत्त पण विमासणमां पडी विचार करवा लाग्यो के, म्हारा पुत्रनी प्रसंशा सांभली ए कन्या अहीं आवी. पण राधावेध सधायो नही, तेथी आवेली कन्या जशे अने दुनीयामां हांसी थशे ते तो जूदी! एम विलखो थई राजा विचारशून्य जेवो बेठो हतो तेने जोई प्रधाने कह्युं के, महाराजा! शी फीकर करो छो? हजी तमारो एक पुत्र छे, ते राधावेध साधशे एवी मारी खात्री छे. राजाये कह्युं—ते कीयो? प्रधाने पोताने घेर राजा रह्यो हतो ते वात कहीने राखेली नोंधनो कागल वंचाव्यो. राजानी शंका मटी गई. तरतज सुरेंद्रदत्तने बोलाव्यो. सुरेंद्रदत्ते धनुष्य बाण सहित राजानी पासे आवी सविनय नमस्कारादि करी आज्ञा मलतां राधावेध साधवाने बाण ताक्युं. नीचे मुकेली तेलथी भरेली कढाईमां अधो मुख करी तेमां पडता थंभ उपर मुकेली राधा नामनी पुतलीना प्रतिबिंबने नीहाली उपर फरतां उलटा सुलटा आडा अवला सोले चक्र सरखां

आवतां तेना छेद मार्गे बाणने छोडी(पार करी) राधा पुतलीनी डाबी आंखने वींधी नांखी. प्रतिज्ञाप्रमाणे राधावेध साधनार सुरेंद्रदत्त राजकुमारना कंठमां कन्याए वरमाला आरोपी. जयजयारव शब्द थयो. पाणीग्रहण कर्युं. पछी राजाये घणो दायजो आप्यो. प्रधान पोताने घेर गयो. सुरेंद्रदत्त राज्यनो धणी थयो. बावीसे कुमारो विद्या जाण्या नही अने चक्रनी गति समजी शक्या नहीं तथा राज्य पाम्या नही तेथी घणो पस्तावो करवा लाग्या. कदापि कोई देवतानी साहाय्यथी चक्रनो भ्रमण काल समजी राधावेध साधी कन्या अने राज्य प्राप्त करी शके, परंतु जे कोई मनुष्यभव पामी एले करी खूए, ते गयो फरी पामवो दुर्लभ छे. माटे धर्मने विषे उद्यम करवो एज श्रेयस्कर छे.

॥ मनुष्यभवनी दुर्लभता उपर आठमो कुरमनो दृष्टांत ॥

कोईएक लक्ष योजन प्रमाणनो द्रह छे. ते द्रहमां एक म्होटो काचबो रहे छे. एकदा प्रस्तावे वायराना जोग थकी पाणी उपरनुं सेवाल उघड्युं. ते वखते काचबे आकाश सामुं जोयुं तो आसोई पुनमनो चंद्र दीठो. ते तमासो जोईने काचबे विचार्युं जे— म्हारां सगांने तेडी लावी ए तमासो देखाडुं. पछी ते पोताना परिवारने तेडवा गयो. त्यांथी तेडीने पाछो आवे छे तेटलामां तो सेवाल पाछो मली गयो. तेथी पोते, तेमज तेडी लावेलो परिवार कांई पण नीहाली शक्या नहीं. तेउए घणुंए जोर कर्युं. पण ते टाणानो जोग पाछो न मळ्यो. तेम जे धर्म विना एले खोयो मनुष्यभव ते फरी पामवो दुर्लभ जाणवो. माटे धर्मने विषे उद्यम राखवो पण क्षण मात्र प्रमाद न करवो.

॥ मनुष्यभवनी दुर्लभता उपर नवमो धूंसरानो दृष्टांत ॥

तिर्छालोकमां लवण समुद्र विगेरे ठाण बमणा असंख्याता द्वीप समुद्र छे. तेमां छेल्लो स्वयंभूरमण समुद्र अर्ध राज प्रमा-

एनो छे. तेणे एटली बधी पृथवी रुंधी छे. ते समुद्रनी पूर्व दिशाने छेडे धुंसरु नाखे अने पश्चिमदिशाने छेडे समेल नाखे, तो ते समेल ते धुंसरानो जे छेद तेमां केम पेसे? न पेसी शके. कदापि कोई देवतानी साहाय्यना योगे पेसे, पण धर्म विना मनुष्यनो भव खोयो ते फरी पामवो दोहिलो छे. माटे धर्म करवाने क्षणमात्र पण प्रमाद न करवो एज मनुष्यभव पाम्यानुं सार्थक छे.

॥ मनुष्यभवनी दुर्लभता उपर दशमो परमाणुनो दृष्टांत ॥

कोईक देवता म्होटा पथरना थंभने भागीने तेनुं एवुं तो झीणुं चूरण करे के ते आंखमां आंजवाथी लगार पण खटके नहीं. ते चूरणने वांसनी भूंगळीमां भरी मेरुपर्वतनी चूलीका उपर चढीने फूंके. ते परमाणुआ दशो दिशे वेराई गया ते पाछा एकठा करी शकाय नहीं. कदापि देवानुयोगे भेगा थई आवे, पण मनुष्यनो भव जे खोयो ते फरीने न पामीये. माटे हे भवि जीवो मनुष्यनो भव पामीने धर्मने विषे उद्यम करवामां लेश मात्र प्रमाद न करवो. मनुष्यभव मलवो अति दुर्लभ छे अने एज मोक्षनी नीसरणी छे. हाथ आवेली नीसरणी छूटी गई तो भवरुपी समुद्रमां गोथां खावां पडशे. माटे महा पुन्यानुयोगे पामेलो मनुष्यभव धर्म करी सफल करो अने मोक्ष सुख मेलवो.

॥ अथ सज्जन विषे ॥

॥ सदयमन सदाई दुःखीयां जे सहाई, परहित
मतिदाई जास वाणी मीठाई ॥ गुणकरि गहराई
मेरु ज्यूं धीरताई, सुजनजन सदाई तेह आणंददाई॥१३

भावार्थ– सदाये मनमां दया आणवी, दुःखीयां प्राणीनो सखाई तथा परहित करवानुं जेनुं मन रहे, तेने सज्जन प्राणी कहीये; जेनी वाणीमां मीठास छे, गुणे करीने जे गिरुआ छे, मेरुनी परे जे

धीर छे, ते सज्जन प्राणी सदाय कहेतां निरंतर आणंदना देण-
हार एटले आपनारा छे. १३.

॥ जइ दुरजन लोके दूहव्या दोष देई, मनमलिन
न थाए सज्जना तेह तेई ॥ द्रुपदजनक पुत्री अं-
जना कष्टयोगे, कनकजिम कशोटी ते तिसी शील योगे॥१४॥

भावार्थ—जगतने विषे दूरजन लोके माथे दोष आपीने दूहव्या
छतां पण सज्जननुं मन मेलुं थतुं नथी; जेम द्रुपदराजानी पुत्री
द्रौपदी तथा अंजनाने कष्ट पड्युं पण सोनु जेम कसोटीये कसाय
तेम सीलना प्रभावे करी ते नष्ट थयुं पण तेमनुं मन मलिन न थयुं.

॥ सज्जनता उपर द्रौपदीनो प्रबंध ॥

हस्तीनागपुरे पांडु राजाने युधिष्ठीर (धर्म), भीम, अर्जुन,
नकुल अने सहदेव नामे पांच पुत्रो हता. ते पांचेनी द्रौपदी
नामे एक भार्या हती. वडो पुत्र युधिष्ठीर राज्यगादी उपर
हतो. पांडुराजानो म्होटो भाई धृतराष्ट्र हतो. तेने दूर्योधन वि-
गेरे सो पुत्र हता. ते कौरव नामथी ओलखाता हता.तेओ दुष्ट स्वभावी,
कपटी अने कुबुद्धिना कोथला हता. पांडुराजाना पांच पुत्रो
पांडवना उपनामथी ओलखाता हता. तेओ सरल स्वभावी अने
भद्रक परिणामी हता. एक वखत कपटभावे दूर्योधने पांडवोने
जुवटे रमवानुं कह्युं. भद्रक पांडव तेनो मर्म समज्या नही अने
हा पाडी जुगार रमवा बेठा. पहेली वारना दावमां दुष्ट दूर्योधने
कपटकला केलवी तेमने हरावी सघली राजारिद्धि जीती लीधी.
अनुक्रमे तेओ आभूषण धन प्रमुख हार्या अने अंते पोतानी
प्राणवल्लभा द्रौपदीने पण हारी गया. कौरवोए पांडवने राज्य
तजी जवाने कह्युं. युधिष्ठिर पोताना चारे भाई सहित वनवास
जवाने तैयार थई घेरथी नीकळ्या त्यारे तेओनी साथे जवाने
द्रौपदी पण नीकली. ते वखते दूर्योधने पोताना भाई दुशासनने

कह्युं के– पांडव, द्रौपदीने हारी जवाथी ते आपणी थई चूकी छे माटे तेने पकडो. डुशासने तेने पकडीने कह्युं के–तने अमे जीती लीधेली छे तो तुं क्यां जाय छे? तने नहीं जवा दे-ईये. एम कही तेने घसडीने राज्यसजामां ज्यां डूर्योधन बेठो हतो तेना सन्मुख लावीने उन्नी राखी. डूर्योधने तेने पोताना खोलामां आवीने बेसवा कह्युं. द्रौपदी दीग्मूढ उन्नी थई रही. ते वखते डुशासने तेनुं चीर खेंच्युं एटले ते महासतीना सीलना महिमाये करी देवताये वीजुं चीर आप्युं. डुशासने वीजुं खेंची लीधुं के तत्काल त्रीजुं आप्युं, एम अनुक्रमे जेटलां चीर खेंची लीधां तेटलां देवताए पुर्यां. अर्थात् ते जेम जेम खेंचतो गयो तेम तेम नवां चीर ते सतीना अंग उपर प्रगट थतां गयां. आवो चमत्कार-आश्चर्य कारक बनाव जोई लोकमां द्रौपदीनो महीमा घणो वध्यो. लोकोये डूर्योधनने समजावी द्रौपदीने मुकावी. पछी ते पोताना पति पांडवोनी साथे वनमां गई. ए द्रौपदीना प्रजावथी पांडवनो जस महिमा विस्तारवंत थयो. पोताना अंग उपरनुं वस्त्र खेंची लेवा सुधीनुं महाकष्ट पड्युं पण द्रौपदीए सज्जनता न मुकी, तेमज पोतानुं मन मलीन करी डूर्योधन उपर कोप कर्यो नही. तेम स-ज्जन माणस जे छे ते पोतानुं मन मलिन करता नथी.

॥ सज्जनता उपर अंजनानो प्रबंध ॥

जरत क्षेत्रमां समुद्रनी पासे आवेला दंती नामना पर्वत उ-पर महेंद्रनगरना विद्याधर राजा माहेंद्रनी स्त्री सुंदरीने पेटे सो पुत्र उपर एक अंजनासुंदरी नामे पुत्री जन्मी हती. ते ज्यारे व-रावबा योग्य थई त्यारे तेने लायक वर पसंद करवा तेना पिताए घणा विद्याधर राजकुमारोनी तसबीरो मंगावी हती. तेमां हिरण्य-न्थ नामना राजानी स्त्री सुमतीने पेटे पेदा थएला विद्युतप्रजनी तथा वैताढ्य पर्वत उपर आवेला आदित्यपुर नामना नगरना

राजा प्रल्हादनी स्त्री केतुमतीने पेटे पेदा थयेला पवनंजय कुमारनी तसवीरो आवी हती. ते उपरथी आ बन्ने रुपवंत, कुलवंत, विद्यावंत, धनवंत तथा बीजा पण अनेक गुण संपन्न जणाया. माहेंद्रराजाए आ बेमांथी कन्याने योग्य वर कोण छे ? एम प्रधानोने पुछवाथी तेओए जणाव्युं के, विद्युतप्रभ अढार वर्ष जीवीने मोक्षे जशे अने पवनंजय दीर्घायुषी छे एम ज्योतिषीओए निर्माण करेलुं छे, माटे पवनंजयने कन्या आपवी जोईये. आ वात अंजनासुंदरीना सांभलवामां आवतां तेणीए मनमां विचार कर्यो के, " दूध तणो टबको भलो, शुं कीजे ते छास; अवर वस्तु शा कामनी, जेथी चित्त उदाश. " एटले थोडा वर्षनुं जीवित तो खरुं, पण ए भलुं, केमके चरमशरीरी एवा गुणीनो संग क्यांथी होय ? कदापि घणुं जीव्या ने कुसंगति होय तो ते शा कामनी ? आवी अंजनासुंदरीना मननी धारणा समज्या विना, माहेंद्रराजाए पवनंजय साथे अंजनासुंदरीनुं लग्न करवानुं पोताना मनमां नक्की कर्युं. प्रल्हादराजाए अंजनासुंदरीना रुप गुणनी प्रशंसा सांभली हती तेथी पोताना पुत्र पवनंजय माटे ते कन्यानुं मागु कर्युं. बन्नेने मलतावशेक आववाथी लग्नदीवस मुकरर कर्यो. पवनंजये पोताना मित्र प्रहसितने पुछ्युं के, म्हारुं लग्न अंजनासुंदरी साथे थवानुं छे तेने तमे जोई छे, ? ते केवी छे ? प्रहसिते कह्युं के—ते रंभादिक अप्सराओथी पण अधिक रुपाली छे, एना रुपनुं तादृश वर्णन करवा महान् पंडित पण समर्थ थाय एम नथी. मित्रना मुखथी तेना रूप गुणनी प्रशंसा सांभली पवनंजये जणाव्युं जे, लग्नो दिवस तो दूर छे, अने तेणीने निहालवानी मने घणी ईछा छे ते पूर्ण थाय तो घणुं सारुं. पछी बन्ने मित्र अंजनासुंदरीने घेर ज्यां ते सातमे मजले रहेती हती त्यां राते गुप्तपणे जई तेना द्वार आगल अंधारामां उभा रही एक छिद्र वाटे अं-

दर जोवा लाग्या. ते वखते अंजनासुंदरीनी वसंततिलका नामे दासी कहेती हती के, हे स्वामीनी! तने पवनंजय पतिनी प्राप्ति थई, माटे तुं धन्य छे. एटलामां मीश्रकेसी नामनी सखी बोली के, चरमशरीरी जे विद्युतप्रभराजा, तेने मुकीने तुं कया वरनी स्तुति करे छे? तुं तो भोली छे! तने कांई पण खबर नथी.! जो के विद्युतप्रभ राजा थोडा आयुषवालो छे, तथापि ते आपणी स्वामीनीने योग्य छे. तेने मुकीने बीजानी तारीफ करे छे माटे तुं मूर्ख छे. कह्युं छे के, "अमृत थोडुं पीवुं ते सुखकारक छे अने फेर घणुं पीवाथी दुःख थाय छे." एवी रीतनुं बन्ने सखीओनुं बोलवुं सांभलीने पवनंजये विचार्युं के, मीश्रकेसीनुं बोलवुं अंजना सांभली रही तेथी एम मालम पडेछे के, ते वात तेने प्रिय हशे! नहीं तो ते तेनो तिरस्कारयुक्त निषेध कर्या वगर रहेत नहीं. पछी ते क्रोधावेशे खड्ग खुल्लुं करी कहेवा लाग्यो के, जेना मनमां विद्युतप्रभ वर वरवानुं सारुं लाग्युं छे, तेनां माथां धडथी हुं अलगां करीश. एम बोली ते तरफ जवा लाग्यो, त्यारे प्रहसिते तेनो हाथ झालीने रोक्यो अने प्रतिबोध कर्यो के, विचार कर्या वगर सहसा कार्य करवुं योग्य नथी. वली स्त्री अपराधी छतां गायनी पेठे तेने मारवी नहीं, ए शुं तुं जाणतो नथी? आ तो विचारी निरपराधी छे. एनो मनोभाव संपूर्ण समज्या शिवाय कांईपण करवुं ते शुं योग्य कहेवाशे? एवी रीते पवनंजयने समजावी शान्त पाडी बन्ने जण त्यांथी पाछा पोताने मुकामे आव्या. पवनंजये पाणीग्रहण कर्या विना त्यांथी पाछा जवानो पोतानो विचार प्रहसितने जणाव्यो, पण तेणे घणी युक्तिथी समजावी नीर्धारेला शुभदीवसे अंजनासुंदरी साथे तेनुं लग्न कराव्युं. माहेंद्रराजाए तेओनो घणो सत्कार कर्यो. सर्व कार्य थई रह्या पछी वर वहुने लेईने परिवार सहित प्रल्हाद राजा पोताना नगरमां आव्यो.

अंजनाने रहेवा सारु तेणे सात मजलानो रमणिय महेल आ- प्यो. पवनंजये घेर आव्या पछी अंजनाना सामुं पण जोयुं नहीं. तेने परिहरीने बीलकुल बोलावे पण नहीं, वात पण नहीं अने कोई पण प्रकारनो संबंध पण नहीं. अंजना महा शोकसागरमां पमी जई विचारवा लागी के, भवांतरनां जे कर्म ते मुजने आ समये आवीने नड्यां जणाय छे. एम मन साथे घणी विमासण करती पोतानुं सीलव्रत साचवती दीवस कहाडवा लागी.

एक वखत रावणे पोताना शत्रु पाताललंकाना स्वामी वरुणराजाने जीतवा सारु प्रल्हादराजाने कहेवमाव्युं के सैन्य लेईने आवज्यो. रावणनी आज्ञापालक प्रल्हादराजाए जवानी तैयारी करवा मांमी, त्यारे पवनंजये कह्युं के, पिताजी! ए कार्य करवानी मने आज्ञा आपो. हुं रावणनी साह्य करवा माटे जईने वरुणने जीती टुंक समयमां पाछो आवीश. प्रल्हादराजाए पवनंजयने योग्य जाणी रावणनी मददे जवानी आज्ञा आपी. सर्व सैन्य सज्ज करी, जवानी वखते पवनंजय पोतानी माताने पगे लागवा माटे घेर आव्यो. पोतानो पति परदेश लडाई उपर जवानो छे एवुं सांभलीने तत्काल अंजनासुंदरी, जे माल उपर हती त्यांथी नीचे उतरी आवीनें पुतलीनी माफक बारणाना थांभलाने अंग टेकीने उभी रही, एवा इरादाथी के आज तो ए मने जरुर बोलावशे. पवनंजय तो पोतानी माताने नमस्कारादि करी, अंजनाने बोलाववानुं तो बाजु पर रह्युं परंतु तेना सामे तिरस्कार युक्त दृष्टीए निहाली चालवा लाग्यो. ते वखते अंजना तेनी पासे आवी, तेना पगमां मस्तक मुकी, बे हाथ जोमी विनती करवा लागी के, हे प्राणनाथ! आप सर्व लोकनी साथे बोल्या तथा मल्या, तथापि महारा साथे लगार पण न बोलवानुं कारण शुं छे? हुं नीरपराधी छुं. महारी एक अर्ज ध्यानमां लेशो? ते ए के, मने

कोई पण वखत भुली जशो नहीं, तेमज कार्य सिद्ध करी जलदी पाछा पधारजो. तमारुं कल्याण थाओ, एवो हुं आशिर्वाद देउ छुं. आवां महा दिनता भरेलां वचनो बोलनारी विचारी अंजनाने कांई पण प्रत्युत्तर न देतां तेनो अनादर करीने पवनंजय चालतो थयो. अंजना पोताना कर्मनो दोष जाणी पतिवियोग दुःखथी शोकातुर थई पोताना महेलमां आवी. पवनंजये त्यांथी निकलीने संध्या समये मानसरोवर उपर जई मुकाम कर्यो. त्यां तेणे एक चकवीने धणीना वियोगथी पीडाती दीठी. जे पोताना आपेला कमलतंतु खाती नथी, थंडीमां जेने गरमी लागी रही छे, चंद्रमा जेने भडका जेवो जोवामां आवे छे, अने करुणामय उंचा स्वरे रुदन करी रही छे. वली चकवो आ कांठे आवे छे त्यारे चकवी पेले कांठे जाय छे. एवी ते चकवीनी दुर्दशा जोईने पवनंजय मनमां विचार करवा लाग्यो के, आ चकवी आखो दाहाडो तेना धणी (चकवा) नी साथे क्रीडा करे छे, फक्त एक रातनो वियोग थयो ते तेनाथी खमातो नथी; तो म्हारी स्त्रीने में परणवाना दीवसथी तजी दई बीलकुल बोलावी नथी, तेमज आज नीकलती वखते ते म्हारी पासे आवी तो पण में तेनो अनादर कर्यो तेथी ते विचारीनी शी वले हशे ? वली म्हारा दुःखरूपी डुंगर तले दबाई रहेली अंजना उपर वियोगरूपी आ बीजो पर्वत में मुक्यो. एटलुं बधुं दुःख ते शी रीते खमी शकशे ? ए प्रमाणे पोताना मनमां पस्तावो करतां तेणे पोताना मित्र प्रहसितने ते वात जणावी. प्रहसिते कह्युं के, हे मित्र! पंखीथी पण तुं नपावट छे, तेने परणे बावीस वर्ष थयां तो पण बोल्या व्यवहार नथी परंतु आजना बनाव उपरथी हुं धारुं छुं के ए निरपराधी अबला जरुर मृत्यु पामशे. हे मित्र! हजी पण तेनुं आश्वासन करवाने तुं योग्य छे. त्यां

जई तेनी साथे मधुर भाषण करीने पछी पोताना काम सारु जवुं जोईये. पोताना मनमां हतुं तेवुंज मित्रे कहेवाथी तेने साथे लेईने पवनंजय कोई ना जाणे तेम रात्रे अंजनाने महेले आव्यो. त्यां तेने तरफडती जोईने तेनुं आश्वासन करी रतुदान देई पाछो जवा लाग्यो त्यारे अंजनाए तेनी पासेथी तेना हाथनी नामांकित मुद्रिका मागी लीधी अने पोतानी माताने मलीने जवा जणाव्युं. पवनंजय, थोडा दीवसमां आवीश एवो दीलासो देई त्यांथी पाछो लश्करनो पडाव जे मानसरोवर उपर हतो त्यां प्रभात थतां पहेलां आवी पहोंच्यो. अंजनाने ते दीवसथी गर्भ रह्यो, ते दीवसे दिवसे वधतो देखी तेनां सासु ससरादिए विचार्युं जे एना भर्तारनो एने बावीस वर्ष थयां मेलो थयो नथी छतां ए शुं ? अरे ए असती छे ! पछी अंजनाने पुछ्युं. त्यारे तेणीए पोतानो पति लडाई माटे चाली नीकल्यो ते ज रात्रिए पोताने महेले आवी गयो हतो अने तेनी निशानी तरीके पोताना हाथनी नामांकित मुद्रिका आपी हती, ते सर्वने बतावी. आ वात कोईए मानी नहीं अने तेणीने निर्भंछीने घरमांथी काढी मुकी. अंजना पोताना पिताने घेर गई त्यांथी पण कलंकित लेखवीने हांकी काढी. पछी ते वनमां जईने रही. त्यां पर्वतनी गुफामां पुत्र प्रसव्यो. ए मार्गे थई अंजनानो मामो विमानमां बेसीने जतो हतो, तेणे गुफामां रहेलो बालक रुदन करतो हतो ते सांभल्युं. विमान थोभावीने रुदनानुसार तेनी तपास करवा ते नीचे उतर्यो, त्यां तेणे पोतानी भाणेजीने पुत्र सहित जोई. तेनी सर्व हकीकतथी वाकेफ थई ते बन्नेने पोताना विमानमां बेसाडी त्यांथी चाली नीकल्यो. मार्गमां जतां अंजनासुंदरीना खोलामां बालक हतो ते विमाननुं फुमणुं लटकतुं देखी लेवाने उछल्यो, तेथी नीचे शीला उपर ढली

पड्यो. तेथी जाणे वज्र पड्यो होय तेम शीला चकचूर थई. अंजनानो मामो बालकने पडतो देखी गाभरो बनी वीमानथी नीचे उतरी तेने लेवा गयो तो जेमनोतेम वाग्या वगरनो पडेलो दीठो अने पथ्थरना ककडे ककडा थई गयेला तेना जोवामां आव्या. त्यांथी बालकने उचकी लेईने विमानमां आवी अंजनासुंदरीने आपी तेने रडती छानी राखी. पछी ते बालक सहित अंजनाने लेईने पोताना हनुपुर नामना नगरमां आव्यो. जन्म्या पछी तरतज ए बालक हनुपुरमां आव्यो तेथी तेनी माताए एनुं नाम हनुमान पाड्युं. तथा विमानमांथी पडतां शैलने तोड्यो तेथी तेनुं बीजुं नाम श्रीशैल राख्युं. एनी हकीकत घणी लांबी छे ते जाणवाना जीज्ञासुए रामचरित्र याने जैनरामायण आदि ग्रंथोथी सवीस्तर जाणी लेवी. अहीं विषयने अनुसरती संक्षेप मात्र दाखल करवामां आवी छे. अंजनासुंदरी हनुमाननुं पालण पोषण पोताना मामाने त्यां हनुपुरमां रही करे छे अने पोताना पतिना वियोगे करी दुःखी छतां पण मामा मामीना आदर सत्कार वडे सुखरुप दीवसो गुजारती सासूए मूकेलो दोष क्यारे निवारण थशे, एवो विचार करती पोताना पतिनी राह जोई रही छे. पवनंजय जे रावणनी मददे गयो हतो ते वरुण साथे सलाह करी पाछो पोताना आदित्यपुर नगरमां आव्यो. त्यां तेणे अंजनाने दीठी नहीं. लोकोने पूछतां तेना जाणवामां आव्युं के, गर्भधारण करेलो होवाने लीधे तेनी माताए कलंक देई तेणीने काढी मुकी छे. एवुं सांभलतांज ते तेनी शोध करवा नीकली पड्यो. वन, वाडी, आराम, पर्वत तथा नगरादि घणां जोई वल्यो पण तेनो पत्तो लाग्यो नहीं तेथी तेना वियोगने लीधे पवनंजये चितामां प्रवेश करवानो निर्धार कर्यो. अंजनानी शोध सारु

मोकलेला विद्याधरोथी पवनंजये चितामां प्रवेश करवानो निश्चय कर्यानुं अंजनाए जाण्युं. तेथी वलोपात करती पोताना मामा प्रतिसूर्यने साथे लेई वीमानमां बेसी एकदम ज्यां पवनंजय चितामां प्रवेश करवाने तत्पर थई रहेलो छे त्यां आवी. पवनंजय, प्रल्हाद, प्रतिसूर्य विगेरे मल्या अने हनुपुरमां गया. सर्वनो संदेह टली गयो. शाता थई. अंजना सती जगत्मां प्रसिद्धिने पामी. सासू ससराए पण पोते करेला अघटित कार्यनी क्षमा मागी सतीने संतोषी. दुर्जन प्राणी एवा गुणीने पण दोष चढावे छे पण जेना उत्तम गुण होय ते नष्ट थतां नथी. जेम कसोटीए सोनु कसीए तेम जे गुणी होय छे ते निर्मल सीलना प्रभावे करी खोटा कलंक तथा दुःखथी कसोटीए चढी मुक्त थाय छे.

॥ अथ गुण विषे ॥

॥ गुणगहि गुण जेमां ते बहु मान पावे, नर सुरभिगुणे ज्यूं फुल शीशे चढावे ॥ गुणकरि बहु माने लोक ज्यूं चंद्रमाने, अति कृश जिम माने पूर्णने त्यूं न माने ॥ १५ ॥

भावार्थ—जेम सुगंधने लीधे फूलने मनुष्यो पोताना मस्तके चढावे छे, तेम जे मनुष्यमां बीजाना गुण ग्रहण करवानो गुण छे, अर्थात जे गुणग्राहक छे, ते बहुमान पामे छे; वली जेम बीजने दीवसे चंद्रमा कृश छतां तेमां कलंक न होवाने लीधे सर्व लोक तेने बहु माने छे अने पूनमने दीवसे ते संपूर्ण होय छे तेम छतां कलंक सहित होवाने लीधे तेने कोई मानतुं नथी (तेम गुण ग्राहक जो दुर्बल होय तो पण तेने सौ माने छे, अने मातो होवा छतां जो निर्गुण होय तो तेने कोई मानतुं नथी माटे गुणग्राही थवुं). १५

॥ मलयगिरि कडे जे जंबुलिंबादि सोई, मलयज-
तरु संगे चंदना तेह होई॥ ईम लहिय वयस्युं
कीजिये संग रंगे, गजशिरचडि बेठी ज्यूं अजा
सिंहसंगे ॥ १६ ॥

भावार्थ– मलयाचल पर्वतने कांठे (तेनी पासे–तेना उपर)
जे जांबु अने लींबडा विगेरेनां वृक्षो छे, तेमां मलयतरु एटले
चंदनना वृक्षना संगने लीधे सुगंधपणुं थाय छे; वली जेम ब-
करी सिंहनी संगतथी हाथीना मस्तक उपर चढी बेठी तेम उ-
त्तमनी संगते उत्तमता प्राप्त थाय, माटे रंगे एटले आदर पूर्वक
उत्तमनी सोबत करवी. (कह्युं छे के, " सोबते असर" अर्थात्
जेवो संग तेवो रंग बेसे छे. माटे नीच, हलकट, निर्गुणीनी संगत
करवी नही अने उत्तम गुणग्राहीनी संगत करवी, के जेथीक-
रीने बहुमान पामीये.)

॥ अथ न्याय विषे ॥

जग सुजस सुवासे न्यायलक्ष्मि उपासे, व्यसन
दुरित नासे न्यायथी लोक वासे ॥ ईम हृदय वि-
मासी न्याय अंगी करीजे, अनयः अपहरिजे वि-
श्वने वश्य करीजे ॥ १७ ॥

भावार्थ–जगत्‌ने विषे न्यायथी लोकवासे अर्थात् लोकोमां सु-
जस कहेतां सारो जस पामे तथा लक्ष्मि उपार्जन करे अने
व्यसने करी भलां–हडां जे मनुष्य ते वेगला नासे, लोकमां ज-
सवाद न पामे; एम हृदयमां विचारीने न्यायनो मार्ग अंगी-
कार करवो अने अन्याय (अनर्थ) नो मार्ग छांडीने विश्वने
वश करवुं.

पशु पण तस सेवे न्यायथी जे न चूके, अनयपथ
चले जे भाइ ते तास मूके ॥ कपिकुल मिलि से-
व्यो रामने सीस नामी, अनयकरि तज्यो ज्यूं भा-
इए लंकस्वामी ॥ १७ ॥

भावार्थ–जे मनुष्य न्यायथी चूकतां नथी तेने पशु सरखा ती-
र्यंच पण सेवे ठे अर्थात् पशु पण न्यायवंतनो पक्ष करे ठे; अने
जे अन्यायमार्गे चाले ठे तेने पोतानो भाई पण तजी देठे; जेम
कपिकुल कहेतां वानरवंशे रामचंद्रजीप्रत्ये मस्तक नमावीने
तेमनी सेवा करी अने लंकाना राजा रावणनो अन्याये करी
तेना भाइ बिभीषणे त्याग कर्यो. १७

॥ अन्याये करी रावणनो त्याग करनार बिभीषणनो प्रबंध ॥

अयोध्या नगरमां दशरथ राजा राज्य करतो हतो. तेने कौशल्या,
सुमित्रा, केकेयी विगेरे राणीओ हती. राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रु-
घ्न नामे चार पुत्रो हता. कैकेयीए पोताना स्वयंवरोत्सवमां द-
शरथराजाने हरिवाहनादिक राजाओनीसाथे युद्ध थयुं हतुं त्यारे
तेनुं सारथीपणुं करी शेलाणीनी पेठे पोतानुं कलाचातुर्य शत्रुओना
रथनी सामे एवी रीते बताव्युं हतुं के, जाणे तेउना रथोनी सामे
अकेक रथ उनो कर्यो होयनी! आवी तेनी चालाकी अने सामर्थ्य
जोईने दशरथ राजाए शत्रुओने जीती तेनी साथे पाणीग्रहण
कर्युं ते वखते पोतानी पासे वर मागी लेवानुं कह्युं. कैकेयीए
"ज्यारे मने जरुर पडशे त्यारे मागी लईश," एम कही ए वर
अनामत राख्यो हतो. दशरथराजाए रामने ज्यारे राज्याभि-
षेक करी गादीनसीन करवानुं मुकरर कर्युं त्यारे कैकेयीए पो-
ताना पुत्र भरतने राज्यगादी अपाववा माटे तेमनी पासे अनामत
राखेलो वर माग्यो. दशरथराजाए पोताने दीक्षा लेवाना निषेध

सिवाय जे मरजीमां आवे ते मागवानुं कहेतां कैकेयीए पोताना पुत्र भरतने राज्य आपवुं अने राम लक्ष्मण वनमां जाय एवी पोतानी इच्छा दर्शावी. दशरथराजा आ वचन सांभली घणो खेदातुर थयो, पण पोते वर आपेलो हतो तेथी भरतने राज्य आप्युं. राम, लक्ष्मण अने पोतानी प्रिया सीता सहित वनवास गया. वनमां वसतां एक वखत रावणनी बहेन सुर्पनखानो शंबुक नामे पुत्र सूर्यहास खड्गनी विद्या साधतो हतो, तेने ब मास थवाथी खड्ग प्रगट थयुं हतु. एवामां फरतो फरतो लक्ष्मण ते स्थले आव्यो. तेणे ते अपूर्व खड्ग लेई तेनी धार तपासवा माटे वंशजाल कापी, तेथी तेमां उंधे मस्तके रहेला विद्यासाधक शंबुकनुं मस्तक छेदाई गयुं. ते देखी लक्ष्मण अति शोक करतो निरपराधी अने हथीआररहितने हणवाथी पोताना ए साहस कर्मने धिक्कारतो खड्ग लेई त्यांथी चाली नीकल्यो. एटलामां शंबुकनी माता सुर्पनखा पोताना पुत्रने माटे खड्गनी पूजानी तथा पारणुं करावबानी सामग्री लेइने त्यां आगल आवी. तेणीए पुत्रनुं मस्तक छेदाएलुं दीठुं, तेथी शत्रुनी शोध करवा लागी. तेवामां नजीकज लक्ष्मणने जोयो. तेना उपर मोहित थवाथी शत्रुवटने कोराणे मुकी काम भोगनी इच्छाए तेनी प्रार्थना करवा लागी. लक्ष्मणे तेणीने राम पासे मोकली. रामे शुद्ध सीलवंत अने न्यायी होवाथी तेना प्रति तिरस्कार कर्यो क्रोधातुर थई सुर्पनखाए त्यांथी चाली नीकली पोताना पति खरदुषण पासे आवी पुत्रमरणनी वात जणावी तेनुं वैर लेवाने कह्युं. खरदुषण, रामचंद्र साथे युद्ध करवा आव्यो. ते वखते लक्ष्मण सिंहनाद करवानो संकेत करी रामचंद्रने सीता पासे रहेवा देई युद्ध करवा गयो. खरदुषण अने लक्ष्मण वच्चे युद्धनो आरंभ थयो. सुर्पनखा पतिने युद्ध करवा मोकलीने बेसी रही नही, पण वली ते

पोताना भाई रावणने मळी अने तेने सीतानी अति सौंदर्य-
तानी वात कहीने एटलेसुधी तेनुं मन भ्रमित कर्युं के तत्काल ते
(रावण) सीतानुं हरण करवा आव्यो. रामना तेजने लीधे
सीतानुं हरण करवुं तो वेगळुं रह्युं पण तेमना आश्रम नजीक
पण ते आवी शक्यो नहीं. रावणे अवलोकनी विद्यानुं स्मरण क-
रवाथी रामने ते स्थलेथी खसेडवानी तेणे युक्ति बतावी. रावणे
जे जंगाए लक्ष्मण युद्ध करवा गयो हतो त्यां जई बराबर ल-
क्ष्मणना जेवो सिंहनाद कर्यो. संकेत प्रमाणे थयेलो सिंहनाद
सांभलवाथी आग्रह करी सीताए रामचंद्रने लक्ष्मणनी साह्य सारु
मोकल्या. सीता एकली पडवाथी रावणे तेनुं हरण कर्युं. लक्ष्मण
पासे जतां सिंहनाद कोईए कपटथी कर्यो छे एम रामना जाणवामां
आवतां ते बन्नेना पेटमां फाल पडी. पर्णकुटीए पाछा आवी रामे
जोयुं तो सीताने दीठी नहीं. लक्ष्मण शत्रुने जीती तेमने
मळ्यो अने सीतानी शोध करवा लाग्या. सीतानुं हरण करी लेई
जतां रस्तामां जटायुपक्षीए रावणने अटकाव्यो. तेनी पांखो
कापी नाखी विमानने वेगवडे चलावी रावणे सीताने पोतानी
लंकानगरीमां लावी देवरमण उद्यानमां राखी. रावणे सीतानी
घणी प्रार्थना करी, पोते तेनो दास थई रहेवा सुद्धांनुं जणाव्युं परंतु
सीताए न्यायमार्ग न मूक्यो. पोतानुं सीयल साचवी छ मास
पर्यंत दुःख सहन करतां रामनुं रटण करती सीता रावणना
ताबामां रही. राम अने लक्ष्मण सीतानी शोध करता अनुक्रमे
किस्किंधा नगरीए आव्या. त्यां सुग्रीवादिक सर्व वानर न्या-
यमार्गथी तेमने प्रणाम करी सेवामां तत्पर रह्या. हनुमान लं-
कामां जई सीतानी शोध लाव्यो. राम अने लक्ष्मण वानरादि-
कना अथाग सैन्य सहित रावण साथे युद्ध करी सीताने छो-
डावी लाववा लंकाए गया. रावण ते सांभली कोपायमान थयो.

ते वखते तेना लघुभाई बिभीषणे अन्याय मार्ग तजी सीताने तेना पतिने स्वाधीन करवानुं समजावतां रावणने कह्युं के, ज्यारे सीतानुं हरण करी लाव्या हता त्यारे पण में तमने कह्युं हतुं के, आ काम कर्याथी आपणा कुलने कलंक लाग्युं. वली ते महा बलवान अने न्याई छे माटे ज्यांसुधी ते आपणा उपर चढाई लेईने आवे नहीं त्यांसुधीमां सीताने लेई जईने पाछी आपवाथी आपणुं सारुं थशे. जो तेम करवामां नहीं आवे तो सीताना योगे आपणा कुलनो क्षय थशे एवां जे ज्ञानीनां वचनो छे ते तारा आ कृत्यथी खरां थशे. थवानुं छे ते अवश्य थाय छे तथापि हुं तने प्रार्थना करुं छुं के कुलनो घात करनारी जे आ सीता, तेने तुं पाछी मुकी आव. तमे ते वखते पोताना पराक्रमनी परिसीमा जणावी कह्युं हतुं के, अलबत में सीतानुं हरण कर्युं छे, ते महारी स्त्री थशे. बचारा गरीब राम लक्ष्मण जो अहीं आवशे तो तेउने तेज वखते मारी नाखीश. आवां गर्व भरेलां वेण सांभली निरुपाये हुं मौन धारण करी रह्यो हतो. परंतु हाल असंख्य सैन्य लेई राम लक्ष्मण युद्ध करवा आव्या छे. तेउ महा बलवान अने न्यायमार्गे वर्तनारा छे. तमे अन्याय करेलो छे. छ महीना सुधी कोई पण न करे तेवी रीते तमे सीतानी प्रार्थना करी पण तेणीए तमारा सन्मुख पण जोयुं नथी, एटलुंज नहीं पण घणी वखत तमारो तिरस्कार पण थयेलो छे, माटे सीता कोई पण प्रकारे तमारे वश थवानी नथी अने ज्ञानीनां वचन आपणा कुलनो क्षय थतां सिद्ध थशे एम निश्चय संभवे छे. हजु पण कांई बगड्युं नथी. सीताने तेउने स्वाधिन करो एटले तेमने समजावी पाछा काढीशुं. ए न्यायवंत छे तेथी जरुर मानशे. ते वखते रावणनो पुत्र इंद्रजित, जे ते वात सांभलतो हतो तेणे बिभीषणने कह्युं के, काका ! तुं जन्मनो बीकण छे.

इंद्रराजा विगेरे अनेक राजा राणाने जीतवावालो तथा सर्व संपतिनो नायक जे महारो पिता, तेने तुं मारवा मागे छे ! सैन्य लई सन्मुख आवेला शत्रुप्रत्यें नमावी महारा पितानी मेलवेली कीर्त्तिने तुं कलंकित करवा इछे छे, माटे तुं अमारी मसलतमां कांई पण कामनो नथी. विज्ञीषणे तेने कह्युं के, हुं शत्रुनो लगारे पक्षपाती नथी. कुलनाश करनारो पुत्ररूपे तुं शत्रु उत्पन्न थयो छुं. ए विगेरे घणी रीते तेने कह्युं. पछी वली विज्ञीषणे रावणने कह्युं के, पुत्रनी शिखामण तथा तहारा पोताना चरित्रोथी तुं थोडाज दिवसमां नाश पामीश, तेथी मात्र मने डुःख थवानुं देखाय छे. एवुं सांजलीने अति क्रोधमां आवी हाथमां खड्ग लेई रावण मारवा उठ्यो. तेने कुंजकर्ण तथा इंद्रजिते वचमां पडी मुकाव्यो. त्यारपछी रावण बोल्यो के, तुं महारी नगरीथी बाहार नीकल, तुं अग्निनी पेठे सर्व खानारो छुं. आई छतां पण अन्याई रावणनो त्याग करी विज्ञीषण अगीआर अक्षोहिणी राक्षसने लेई न्यायवंत रामने मल्यो. अनुक्रमे राम अने रावण वच्चे युद्ध थयुं. न्याये करी रामनो जय थयो अने अन्याय थकी रावण मरण पाम्यो. ए संबंधी विशेष हकीकत जैनरामायणथी जिज्ञासुए जाणी लेवी.

॥ अथ न्यायधर्मविषे ॥

॥ हय गय न सहाई युद्ध कीर्ती सदाई, रिपुविजय वधाई न्याय ते धर्मदाई॥ धरमनय धरे जे ते सुखे वैरि जीपे, धरमनय विहूणा तेहने वैरि कोपे ॥१ए॥

नावार्थ– युद्धनेविषे हमेशां कीर्ती मेलववामां हाथी अने घोडा साह्यकारी थता नथी पण शत्रुने जीती जय मेलववानी वधामणी तो न्यायधर्मथी मले छे; न्यायधर्मना रागी होय छे

ते सुखे करी वैरीने जीते छे अने धर्मनयथी जे विहूणा एटले वेगला होय छे तेने वैरी पराभव करे छे. १ए.

॥ धरमनय पसाये पांडवा पंच तेई, करि युद्धे जय पाम्या राज्यलीला लहेई ॥ धरमनय विहूणा कौरवा गर्व माता, रणसमय विगूता पांडवा तेह जीत्या २०

भावार्थ– धर्मनय (न्यायधर्म) ना प्रतापे करी पांच पांडवो- ए युद्धनेविषे जय मेलवीने राज्यसुख भोगव्युं; अने धर्मनय वगरना कौरवो, जो के महागर्विष्ट हता तो पण रणसमय कहेतां युद्धनेविषे वगोवाया अर्थात् हार्या (नाश पाम्या) अने पांडवो जीत्या. २०

॥ अथ प्रतिज्ञाविषे ॥

॥ शुभ अशुभ जिकांइ आदर्युं जे निवाहे, रवि पण तस जोवा व्योम जाणी वगाहे ॥ करिगहन निवाहे तास निस्संत आपे, मलिन तनु पखाले सिंधुमां सूर आपे ॥ २१ ॥

भावार्थ– शुभ अथवा अशुभ जे कांई आदर्युं एटले प्रतिज्ञा लीधी तेनो निर्वाह (निभाव) करे (प्राण जतां पण ते प्रति- ज्ञा भंग न थाय), सूर्य पण तेने व्योम जाणीने जोवाने इछे छे; ऊंडी अर्थात् विषम, पालवाने घणी कठण थई पडे तेवी प्र- तिज्ञानो निर्वाह करे तेने निश्चेकरी समुद्रमां मलिन शरीरने धोई निर्मल करवानी माफक देवता साह्यकारी थाय. (जे जेम अंगीकार कर्युं होय तेम तेनो निर्वाह करे छे अने जे प्रतिज्ञा- वंत छे तेने समुद्रमांहे तथा अटवीमांहे पड्या थकां पण दे- वता साहाय्य करे छे) २१.

॥ पुरुषरयण मोटा जे गणीजे धराये, जिण जिम पडिवज्यूं ते न छांडे पराये ॥ गिरिश विष धर्यो जे ते न अद्यापि नाख्यो, दुरगति नर लेई विक्रमादित्य राख्यो ॥ २२ ॥

भवार्थ– जेणे जेवी रीते पडिवज्यूं कहेतां अंगीकार कर्युं ते प्राये छांडता नथी अर्थात् ते प्रमाणे पाळे छे तेने पृथ्वीनेविषे मोटा रत्नसमान पुरुष गणवा; जेमके, महादेवे समुद्रनुं मथन करवाथी विष मेळव्युं हतुं तेने कंठनेविषे राख्युं पण हजु सुधी तेनो त्याग कर्यो नथी, वळी विक्रमादित्ये (वचनमात्रथी पर्वत* नामे कोश्क) दुर्गत पुरुषने विशेष हीत करीने पोतानी समीपे राख्यो हतो. (माटे जे प्रमाणे अंगीकृत कर्युं होय ते प्रमाणे पाळनार पुरुष पृथ्वीने विषे रत्नसमान समजवा). २२

॥ अथ उपशमविषे ॥

उपशम हितकारी सर्वदा लोकमांही, उपशम धर प्राणी ए समो सौख्य नांही ॥ तप जप सुर सेवा सर्व जे आदरे छे, उपशमविण जे ते वारि मंथा करे छे ॥ २३ ॥

भावार्थ– लोकमांही एटले जगत्नेविषे हमेशां उपशम एटले क्षमा हितनी करनारी छे, ते माटे हे प्राणी! क्षमा धर अर्थात् समता धारण कर के जेना सरखुं बीजुं कोई सुख नथी; वळी तप जप अने देवतानी सेवा (स्मरण) विगेरे सर्व जे करवामां आवे छे ते क्षमा विना पाणी वलोव्यानी पेठे करेछे अर्थात् जेम पाणी वलोव्याथी माखणनी प्राप्ती थती नथी तेम ते फळदायी थतुं

* विक्रमादित्य अने पर्वतनो संबंध अन्यदर्शनीना ग्रंथनो छे.

थी. (उपशम विना जे चारित्रनुं पालवुं ते पण पाणी वलो-
यानी परे जाणवुं. आखा जन्मपर्यंत चारित्र पाळ्युं होय अने
एक वार क्रोध करे तो ए चारित्रादिक बली भस्म थाय, तो गृ-
हस्थाश्रमीने तो क्षमागुणना लेश विना शा फळनी प्राप्ती थशे? अने
केवी गति थशे? ते ज्ञानी विना कोई बतावी शके तेवुं नथी. माटे
दरेक मनुष्ये क्षमागुण आदरवो श्रेयस्कर छे.) ९३

उपशम रस लीला जास चित्ते विराजी, किम नर
भव केरी रिद्धिमां तेह राजी ॥ गज मुनिवर जेहा
धन्य ते ज्ञान गेहा, तपकरि कृश देहा शांति पी-
यूष मेहा ॥ ९४ ॥

भावार्थ—जेना चित्तमां उपशमरूप लीला विराजी छे अर्थात् जे-
नामां क्षमागुण प्रगट्योछे ते संसारिक रिद्धिमां कहेतां सुख भो-
गमां केम राजी थाय? (राजी थायज नही); गजसुकमाल मुनि-
वर के जे ज्ञानगुणना मंदिर हता अने जेमणे तप करीने काया
शोशवी वर्षादनी धारानी माफक शांत गुण आदर्यो तेमने धन्य छे.

॥ क्षमागुण उपर गजसुकमाल मुनीनो प्रबंध ॥

वसुदेवनी स्त्री देवकीने पेटे थयेला छ पुत्रोने तेना भाई
कंसे जन्म मात्र मारी नाख्यानुं ते बन्ने स्त्री भर्तार विगेरे जाणता
हता. पण देवताए तेओने चरमशरीरी होवाथी पूर्व पुन्यानु-
योगे सुलसा नामा श्राविकाने घेर लावी सोंप्या हता. त्यां ते-
ओनुं पुत्र प्रमाणे पालण पोषण करी सुलसाए योवनावस्थाये
तेओने परणाव्या हता. संसारिक सुख भोगवतां एकदा ते न-
गरना उद्यानमां श्री नेमनाथ भगवंत समोसर्या. देवताए स-
मवसरणनी रचना करी. त्यां बेसी चतुःमुखे बार पर्षदा सन्मुख
प्रभु देशना देवा लाग्या. ते सांभळी देवकीजीना छए पुत्र प्रति-

बोध पाम्या. स्त्री आदि सर्वे छांडीने सुलसानी सम्मती लेई ते छ जणे श्री नेमनाथजी पासे चारित्र लीधुं. भगवाननी साथे गामानुगाम विचरता तेओ एक वखत द्वारिका नगरीयें आव्या.

छ पुत्र पछी सातमा श्री कृष्ण देवकीजीने उदरे आव्या. ते कंसनी बीके गोकुल गाममां नंदने घेर म्होटा थया. जरासंधना भयने लीधे समुद्रविजयादि दसे दशारण (वसुदेव सुधां तेमना दश भाईओ) नी साथे नासीआवीने श्रीकृष्ण, देवताए वसावी आपेली द्वारावतीमां ते वखते राज्य करता हता. श्री नेमेश्वर भगवान् आव्यानी वधामणी मलतां श्रीकृष्ण घणा हर्ष वडे चतुरंगी सेना लई नगरना सर्व लोक सहित तेमने वांदी गया. पछी प्रभुजीनी आज्ञा मागी छ साधुमांना बे बे साधुना त्रण संघाडा नगरप्रत्ये वोहोरवा माटे नीकल्या. एक संघाडे नीकलेला बे साधु देवकीजीने घेर आव्या, तेमने भाव साथे बहुमान करी देवकीजीए सिंहकेसरीया मोदक वोहोराव्या. ते साधु गया. एटले बीजा बे साधु देवकीजीने घेर वोहोरवा आव्या. राणी (देवकीजी) यें पोताना मनमां विचार कर्यो के आ साधु बीजी वार आव्या तेथी आहारनो घणो खप होय एम जणाय छे; एम धारी बीजी वखत पण सिंहकेसरीया मोदक वोहोराव्या. ते वोहोरीने गया एटले वली त्रीजा संघाडाना बे साधु वोहोरवा आव्या. देवकीजी त्रीजी वार तेना ते ज साधुनें वोहोरवा आवेला समजी पोताना मनमां विचार करवा लाग्यां के, साधुने खप होय तो एक वार आवे, तेथी विशेष जरूर होय तो कदी बीजी वार आवे, पण ए त्रीजी वार तो आवेज नहीं, अने आ साधु केम आव्या ? द्वारावती नगरीमां श्रावक तो घणा भावीक छे, शहेर पण मोटुं छे, तेम छतां आ त्रीजी वार

आव्या, ए शुं ? एवुं विमासी तेमना सामुं जोई रह्या. ते वखते साधु बोल्या जे– महानुजाव ! तमे शा विचारना वमलमां पड्यां ढो ? राणीए जणाव्युं जे– स्वामी ! तमे वैराग्य पामी प्रजु पासे दीक्षा लीधी ढतां एकज घेर त्रीजी वार आव्याथी म्हारा मनमां ते संबंधी विमासण करुं बुं. साधुए कह्युं के, अमे त्रण संघाडे बे बे साधु जूदा जूदा वोहोरवा आव्या ढीये. तेनातेज फरीथी आव्या एवो लेशमात्र संशय तमारा मनमां न लावशो. आ वाक्य सांजलतांज देवकीजीने पुत्र उपर जेवो प्यार आवे तेवोज मोह उपज्यो, थाने पानो आव्यो. पढी साधुने वोहोराव्युं एटले तेठ गया. त्यारपढी तरतज पोताना मननो संशय दूर करवा अर्थात् ते ढए साधु उपर पुत्रवत् प्रेम शाथी उत्पन्न थयो तेनो निर्धार करवा माटे देवकीजी प्रजु पासे आव्या. प्रजुने त्रण प्रदक्षिणा देई वंदन नमस्कारादि करी योग्य स्थानके बेसी विनय सहित देवकीजीए पुब्युं. जगवंते कह्युं के, महानुजाव ! तमारा ढ पुत्र कंसनी बीके देवताये हरीने सुलसाने त्यां मुक्या हता, ते ए ढे. ए वात सांजली देवकी घेर आवी आर्त्तध्यान ध्यावामां पड्यां, जे ए ढ पुत्र सुलसाने घेर म्होटा थया अने सातमो कृष्ण आहीरने घेर वाध्यो. में तो एके पुत्रने हुलराव्यो नहीं, धवराव्यो नहीं, रमाड्यो नहीं, म्हारो तो जन्मारो निष्फल गयो. एवी चिंता करतां थकां बेठेलां देवकीजीने कृष्णे उदासी देखी पुब्युं के, माताजी ! आज एवडी तमने शी चिंता उपनी ढे ? अने आंखमांथी आंसु नाखोढो तेनुं कारण शुं ढे ? जे कांई आपने उदासी थवानुं कारण होय ते मने महेरबानी करीने कहो, म्हारा सरिखा पुत्रने नहीं कहो तो केने कहेशो ? देवकीजीए नीसासो नाखीने कह्युं के– म्हारी कुखे सात पुत्र थया पण एकेने में रमाड्यो नहीं, तेनी मने चिंता ढे.

ते वखते कृष्णे माताने दीलासो आपी अठमनो तप करी ह-रणगमेषी देवताने आराध्यो. तेणे तत्काल आवीने आराधवानुं कारण पुछतां कृष्णे पोतानी माताने पुत्रप्राप्ती विषे पुछ्युं. देवताए कह्युं के – पुत्र थशे पण वहेलो संसार मुकशे अर्थात् लघुवयमांज चारित्र ग्रहण करशे. एवुं सांभलीने कृष्णे देवकीजीने जणाव्युं जे– हे माताजी ! तमारुं चित प्रसन्न थशे, मनोरथ सिद्ध थशे. देवकीए कह्युं– एमज थाउ. त्यारपछी कोईक पुन्यवंत जीव देवकीनी कुखे उपन्यो, तेना प्रभावथी रात्रिने विषे माताये स्वप्नमां गज दीठो. अनुक्रमे गर्भ वाधतां पूर्णमासे पुत्र प्रसव्यो. तेनुं नाम स्वप्नानुसारे "गजसुकमाल" राख्युं. घणो उछव कर्यो, ज्यारे ते आठ वर्षनो थयो त्यारे ते नगरना रहेनार सोमील नामना ब्राह्मणनी पुत्री साथे तेनुं लग्न कर्युं. एवखते श्रीनेमनाथ भगवान त्यां समोसर्या. कृष्ण, देवकीजी विगेरे सर्व वांदवा गयां तेमनी साथे गजसुकमाल पण प्रभुने वांदवा गयो. देवरचित समवसरणमां बेसी प्रभु देशना देता हता, ते सांभली गजसुकमाल वैराग्य पाम्यो. संसारने असार जाणी तेणे सर्वने समजावी अनुमती लेई संजम लीधुं. तेज रात्रे प्रभुनी आज्ञा मागी ते (गजसुकमाल) मसाणभूमिकाए जई काउसग्ग ध्याने उभा रह्या. एवामां फरतो फरतो तेमनो ससरो सोमील ते स्थले आव्यो. गजसुकमालने साधुवेषे निहाली हृदयमां द्वेष आणी मुखथी कहेवा लाग्यो के– अरे पापिष्ट ! तें म्हारी पुत्रीनो जन्मारो बगाड्यो– खुवार कर्यो ! तेनुं फल तने प्रत्यक्ष बतावुं छुं. एम बोली तत्काल तेनी नजीक तलाव हतुं त्यांथी लीली माटी लावीने गजसुकमालना मस्तकने विषे पाल बांधी. पछी ठीब भरी मसाणमां बलता खेरना धगधगता अंगारा लावीने तेमां

(माथा उपर) समाया तेटला जर्या, अने रात्रे ते पण मसा-णमां पासेज रह्यो.

समताना भंडार गजसुकमाल मुनी बलता अग्निए करी तडतड नसो तुटतां पण सोमील ससराना उपर लेशमात्र द्वेष नही लावतां तेणे करेला अपकारने बदले तेनो मनने विषे उप-कार मानता विचार करवा लाग्या के, आ भव भ्रमणनो झट निस्तार लाववामां ए म्हारो खरेखरो सखाई थयो छे. वली निश्चल मने करी स्थिर थई जीवदया माटे चिंतवन करवा लाग्या के, र-खेने अंगारो मात्र भूंई पडे ! रखेने कोई जीवनी विराधना थाय! एवी रीते समतामय क्षपक श्रेणीए शुद्ध अध्यवसाये करी शुक्ल ध्यान ध्यातां थकां ते अंतगड केवली थईने मोक्षपद पाम्या.

गजसुकमाले दीक्षा लीधा पछी कृष्ण वासुदेव रात्रे पोताना मनमां चिंतवन करवा लाग्या के, म्हारो भाई संजमे करी वमील छे पण ते वयमां न्हानो छे,तेनाथी संजम केम पलशे? तेमाटे सवारे प्रभु पासे जई ते विषे योग्य तजवीज करीश. समय थतां कृष्ण वासुदेव प्रभुने वांदवा आव्या. प्रभुने वांदी सघला साधुने वंदना करी, तेमां गजसुकमालने न दीठा. ते वखते प्रभुने पुछवा लाग्या के–हे भगवन्! हे स्वामी! अमारा भाई गजसुकमालजी क्यां बेठा छे ? प्रभुजीए जणाव्युं जे–ते तो अनंत सुखना भोगी थई बेठा, एटले नजरे क्यांथी आवे ? अनंता सुख आवासमां पेठा, माटे हवे ते स्वरुपे तो तेमनां दर्शन दुर्लभ छे. हे कृष्ण! ए सिद्धिपद पाम्या माटे ईहां थकी नमस्कार करवा योग्य थया. एवुं सां-भली श्रीकृष्णे पुछ्युं के–हे स्वामी! एम तत्काल सिद्धगतीने केम पाम्या ? भगवंते कह्युं के, तेमने साहाय्यनो करणहार मल्यो. कारण जोगनो मेलवनार मल्यो एटले ते कारणने जोगे करी

तेमना कारजनी सिद्धि थई गई. ते अंतगड केवली थई मोक्ष-पद पाम्या. अनंत सुखविलासी थया. ते वखते वली कृष्णे ज्ञग-वंतने पुछ्युं के, हे स्वामी! ते कोण तेमने साहाज्यकारी मल्यो? प्रज्ञुए कीधुं के, जेम काले तमे पेला मोसाने ईंटनुं साहाज्य कर्युं तेमः एटले के ज्यारे तमे हाथीथी हेठे उतरीने एक ईंट हाथमां लीधी, त्यारे तमारा सोल हजार मुगटबंधे उपाडी (ईंट लीधी) डोसाने मारतांवांत तत्काल ते डोसानुं काम थयुं. तेम तमारा ज्ञाईनुं पण एज रीते थयुं. परंतु कारजमां फेर. तेहज कारणे काम करी आप्युं. कृष्णे पुछ्युं के, हे स्वामी! ते प्राणी कीयो? ज्ञगवंते जणाव्युं जे—तमने देखीने जेनुं हृदय फाटशे, ते जाणजो. पछी ज्ञगवान्ने नमस्कार करी कृष्ण वासुदेव पोताने घेर जवा नी-कल्या. मार्गमां महापापी ऋषीहत्यानो करणहार सोमील मसा-णमांथी नीकली आवतां सामो मल्यो. श्रीकृष्णजीनी स्वारी आवती देखी ते पोताना मनमां विचारवा लाग्यो के, कदापि में एना ज्ञाईने हण्यो छे ते वात एना जाणवामां आवी हशे तो ए मने मारशे, माटे उपरले मार्गे जाउं. एम विचारीने ए मार्गे गयो एटले त्यांज श्रीकृष्ण जोवामां आवतां तरतज तेना हृदयना फाटीने बे ज्ञाग थया. ऋषीहत्याना पातिकथी ते मरीने नर्के गयो.

आ कथामां सार ए ग्रहण करवानो छे के, गजसुकुमाल मुनीश्वरना मस्तक उपर खेरना अंगारा ज्ञर्या. जेथी सहन न थई शके एवी वेदना थई, तरु तरु नाडीउं त्रुटी, पण लेशमात्र द्वेष नहीं लावतां क्षमा गुण लावी, ते सहन करी तेना अप-कारने बदले मनमां उपकार मानी कर्म खपावी दीधां अने तत्काल मोक्षपद पाम्या. माटे अमृतमय अने शान्तिगुणमय एवी क्षमा जाणीने त्रिकरण शुद्धे ते (क्षमा) धारण करवी, के

जेथी आ लोक अने परलोकमां सुख संपत्ति प्राप्त थवा उपरांत मोक्षसुख मलतां कांई पण वार लागनार नथी. २४

॥ अथ त्रिकरण शुद्धि विषे ॥

जग जन सुखदाई चित्त एवुं सदाई, मुखे अति मधुराई साच वाचा सुहाई ॥ वपु परहित हेते त्रण्य ए शुध्द जेने, तप जप व्रत सेवा तीर्थ ते सर्व तेने ॥ २५ ॥

भावार्थ–जगतना जीवने सुख थाय एवुं हमेशां जेनुं मन छे; मुखे घणीज मीठी अर्थात् अमृत सरखी, शोभनीक अने साची वाणी बोले; वली आ काया छे ते परने उपकार करवाने कामनी छे अने ते प्रमाणे जे करे, एम त्रणे (मन वचन काया) जेनां शुद्ध छे अर्थात् ए त्रिकरण शुद्धि जेने विषे छे, तेने तप, जप, व्रत, सेवा, तीर्थयात्रा, ए सर्व लेखे आवे. २५

मण वच तनु त्राणये गंगज्यूं शुध्द जेने, निज घर निवसंतां निर्जरा धर्म तेने ॥ जिम त्रिकरण शुध्दे द्रौपदी अंब वाव्यो, घर सफल फलंतो शील धर्मे सुहाव्यो ॥ २६ ॥

भावार्थ–मनजोग, वचनजोग अने कायजोग, ए त्रणे गंगानां पाणी जेवां जेनां निर्मल छे; तेने पोताना घरमां रहेवा छतां पण निर्जरा-धर्म छे (अर्थात् तेनां मनोवांछित सफल थतां ते निर्जरा करी अक्षय सुख पण प्राप्त करी शके छे); जेवी रीते पांडवनी स्त्री द्रौपदीए त्रिकरण (मन, वचन अने कायानी) शुद्धताये करी आंबो वाव्यो तो ते फल्यो अर्थात् तेने अकाले फल लाग्यां अने तेना सीलनुं महात्म्य झलकी नीकल्युं, एटले तेनी धारणा पार पडी अने वाह वाह कहेवाई.

१ द्रौपदीए आंबो वाव्यो अने तेनां फल वडे तापसोने जमाड्या ए वात अन्य दर्शनी (मिथ्यात्वी) मां कहेली छे.

॥ त्रिकरण शुद्धि उपर द्रौपदीनो प्रबंध ॥

एक वखत पांच पांडव सभामां बेठा हता त्यां अठ्यासी ह-जार तापस आव्यानुं तेमणे सांभळ्युं तेथी तेउने जमवानुं नो-तरुं दीधुं. ते वखते ताप घणो सख्त पडतो हतो तेनी गरमी शान्त पाडवा माटे तापसोने आंबाना फळे पारणुं करवानी इछा थवाथी तेमणे पांडवोने कह्युं के, जो तमे केरीउना रसे अमने पारणुं करावो तो करीये. एवुं सांभळीने पांडवोने चिंता उत्पन्न थई के अमारो मनोर्थ पूरो केम पडशे ? अकाळे आम्र-फळ क्यांथी मळे? के तापसने जमाडी शकाय ? जो जमाडी शकाय नहीं, तो अमे करेलुं आमंत्रण वृथा थतां अमारी हांसी थाय ! आ प्रमाणे पांडवो सोचमां पड्या हता. ते अवसरे त्यां नारद रुषीश्वर आव्या. पांडवोने चिंतातुर देखी नारदजीए तेनुं कारण पुछतां पांडवोए जणाव्युं के, स्वामी ! अ-ठ्यासी हजार तापसोने जमवा नोहोतर्या छे, तेउने अकाळे आंबाना रसनुं पारणुं करवानुं मन थयुं छे ते संबंधी फीकरमां पड्या छीये. नारदऋषीए जणाव्युं जे- एमां शी फीकर करो छो ? तमारी चिंता दूर थाय तेवो उपाय बतावुं ते सांभळो. पां-डवोए कह्युं के- स्वामी ! आप बतावो ते प्रमाणे अमे करवा तैयार छीये. हरकोई प्रकारे आंबाना रसवडे तापसोने ज-माडी शकीये तेवो उपाय दर्शाववा कृपा करो. नारदजीए कह्युं के,- आम्रवृक्षनुं सुकुं ठुंठुं ववरावो, ते नवपल्लव थाय, ते आंबे मोहोर आवे, तेने फळ बेसे, ते म्होटां थाय अने ते फळ ज्यारे पाके त्यारे अठ्यासी हजार तापस पारणुं करे. ए सिवाय बीजो कोई उपाय नथी. आ रुतुमां बीजे कोई स्थळे केरीउ मळी शके तेम नथी. पांडवो आ हकीकत सांभळी विचारना वमळमां गोथां खावा लाग्या के, आ काम सुलभ नथी. महा कठिन छे.

वृक्षनुं सुकुं ठुंठुं शी रीते नवपल्लव थाय अने फल आवे ? कोई उपाय न जड्यो त्यारे छेवटे मान मुकी तेउ नारदजी प्रत्ये कहेवा लाग्या के, आ वात बनाववीअने अमारी लाज शरम राखवी ए तमारा हाथ छे. तमे नाग्याना नीरु छो, माटे अमारुं आ कार्य आप पार पाडो. पांडवोनां आवां मुखवचन सांजली नारदे कह्युं जे– तमारी स्त्री द्रौपदीने सर्व हकीकत कहुं अने पुछुं, ते जो साचुं बोले तो हुं ते प्रकारनो उद्यम करुं. एम कही पांडव पासेथी उठीने नारदजी ज्यां द्रौपदी हतां त्यां तेनी पासे गया, अने सर्व हकीकत निवेदन करीने पुछवुं हतुं ते पुछ्युं. द्रौपदीए कह्युं जे– हे रुषीजी ! हुं तमारी आगल साचुं बोलीश, जर्तारनी प्रतिज्ञा पूरवाने समर्थ छुं, सती छुं, ते काममां केम चूकीश. पछी नारदे द्रौपदी पासे आम्रवृक्षनुं सुकुं ठुंठुं ववराव्युं– रोप्युं, आली परिचय (पाल) बंधावीने नारदे द्रौपदी प्रत्ये पुछ्युं जे, तमारुं जे शील ते केवुं छे ? ते वखते द्रौपदी बोल्यां, सांजलो नारदजी ! राजाउना स्वरूप जोआर एवा पांच पांडव जेवा माहारे जर्तार छे तो मन छठा उपर शुं ध्याय, ईछे, के प्रवर्त्ते छे ? अर्थात् त्रिकरण योगे पांच पांडव सिवाय स्वप्नमां पण हुं कोईने ईछती नथी. वली पांचमां पण जेनो वारो होय तेनेज इछुं छुं. एवुं जो म्हारुं शील होय तो म्हारा पतिनी प्रतिज्ञा पूर्ण थजो. आ प्रकारे द्रौपदीए कह्युं, एटले तत्काल जे सुकुं ठुंठुं हतुं ते नवपल्लव थयुं, मोहोर आव्यो, फल बेठां, म्होटां थयां अने पाक्यां, तेवडे एटले ए आंबानी केरीउना रसवडे अठ्यासी हजार तापसोने पारणां कराव्यां. शीलधर्म एवो उत्तम छे. एनुं महात्म्य वध्युं. त्रिकरण योगे द्रौपदीनुं शील साचुं हतुं तेनुं प्रत्यक्ष फल मल्युं.२६

॥ अथ कुलविषे ॥

॥ सहज गुण वसे ज्यूं शंखमां श्वेतताई, अमृत
मधुरताई चंद्रमां शीतलाई॥कुवलय सुरसाई इक्षुमां
ज्यूं मिठाई, कुल मणुजहकेरी सनावे नलाई॥२७॥

नावार्थ–जेम शंखमां उजलाशपणुं, अमृतमां मधुरपणुं एटले मीठास साथे स्वादिष्टपणुं, चंद्रमामां शीतलपणुं, कमलमां नरमाशपणुं अने शेलडीमां मीठासपणुं, ए तेना सहज गुणे करी अर्थात् तेना मूल स्वनावेज होय ठे, तेम उत्तम कुलना माणसोमां स्वनावेज नलमणसाईपणुं होय ठे, एटले कुलवान माणसो नला–सारा गुणवान होय ठे ॥ २७ ॥

जिण घर वर विद्या जो हुवे तो न ऋद्धि, जिण घर दुय
लाने तो न सौजन्य वृद्धि॥सुकुल जनम योगे ते त्रणे
जो लहीजे, अनय कुमर ज्यूं तो जन्म साफल्य कीजे २८

नावार्थ–जेने घणी विद्या होय तो तेने घेर लक्ष्मी न होय, जेना घरनेविषे विद्या अने लक्ष्मी ए बंने होय तो तेने घेर कुटुंब परिवारनी वृद्धि न होय, सारा कुलना योगे ए त्रणे (विद्या, लक्ष्मी अने कुटुंब परिवार) जो मले तो अनयकुमारनीपेठे जन्म सफल थाय. एटले ए सघला योग अनयकुमारने मल्या अने एमना जन्मनुं सार्थक थयुं, तेम जे माणसने ए त्रणे जोग उत्तम कुलसहित मले तो जन्मनी सफलता थाय. २८

॥ अथ विवेकविषे ॥

हृदय घर विवेके प्राणि जो दीप वासे, सकल नव तणो
तो मोह अंधार नाशे॥ परम धरम वस्तु तत्व प्रत्यक्ष
नासे, करम नरम पतंगा स्वांग तेता विध्वंसे ॥ २९ ॥

भावार्थ–हृदय कहेतां हैयारुपीया घरमांहे विवेकरुपीयो दीवो प्रगट थाय, त्यारे सबला जवनो जे मोह तद्रूपीयो जे अंधकार ते प्राणीनो नासे, त्यारे परम कहेतां उत्कृष्टो धर्म, जे वस्तुनुं वस्तु पणुं एटले जाणपणुं थयुं, तेवारे ते तत्वनी वार्ता जाणे, अने वस्तुने पोतानो अखय खजानो दीठो त्यारे शुं थयुं? कर्म-रूप जे पतंगीया ते दीपकमांहि पड्या अर्थात् क्षय थाय, ए शा माटे जे–जेना घरमांहि विवेकरूप दीवो प्रगट्यो त्यारे तेना घटमांथी अविवेकपणुं मटे अने तत्वनी वात जाणे. ॥ २९ ॥

विकल नर कहीजे जे विवेके विहीना, सकल गुण भर्या ते जे विवेके विलीना ॥ जिम सुमति पुरोधा भूमि गेहे वसंते, उगति जुगति कीधी जे विवेके उगंते ॥ ३० ॥

भावार्थ–जे प्राणीमां विवेकनो गुण नथी तेने विकल कहेतां गमार जाणवो, अने जेनामां विवेकपणुं छे ते प्राणी सर्व गुण संपन्न उत्तम काममां लीन छे, विवेक ते शुं? सत्य असत्यनुं जाणवुं अने ओळखवुं. ते न जाणे ते माटे तेने अविवेकी ने विकल क-हीये, एज लक्षण जाणवुं. सुमती नामना प्रधानने राजाये भूमी घर (भोंयरा)मां राख्यो हतो, तो पण त्यां तेणे विवेकाईना गुणे करी सर्व प्रकारनी युक्ति जुक्ति करी. आ सुमती प्रधाननो प्रबंध ग्रंथांतरथी जाणी लेवो ॥३०॥

॥ अथ विनयविषे ॥

निशिविण शशि सोहे ज्यूं न शोभे कलाई, विनयविण न सोहे त्यूं न विद्या वडाई ॥ विनयवहि सदाई जेह विद्या सहाई, विनयविण न कांई लोकमां उच्चताई ॥ ३१ ॥

भावार्थ–सोळे कळाये सहित छतां पण जेम रात्रि विना चंद्रमा शोभा प्रत्ये पामतो नथी, तेम विनय विना विद्यानी

वडाई कहेतां मोटाईपणुं, ए पण शोभतुं नथी, जेने विद्यानी साह्यता छे ते निरंतर विनयथी वर्तनारा छे अर्थात् विद्यानी वडाई ते विनयगुण जाणवो, विनय गुण ते सर्व थकी श्रेष्ठ छे, शा माटे जे विनयगुण विना लोकमां उंचपणुं न पामे, एटले यश प्रतिष्ठा पामे नहीं ॥ ३१ ॥

विनय गुण वहीजे जेहथी श्री वरीजे, सुर नर पति
लीला जेह हेलां लहीजे ॥ पर तणय शरीरे पेसवा
जे सुविद्या, विनय गुणथि लाधी विक्रमे तेह विद्या ३२

भावार्थ— विनयगुण करवो के जेथीकरीने लक्ष्मी पामीये, देवता अने मनुष्यो तथा राजाउना सुखनी लीला पण जेणे करी तत्काल पामीये, जेम पारका शरीरमां पेसवानी जे सारी (परकाय-प्रवेश) विद्या, ते विनयगुणवडे विक्रमे मेलवी. ॥ ३२ ॥

॥ विनयगुण उपर विक्रमराजानो प्रबंध ॥

साकेत नामा नगरमां विक्रम राजा राज्य करतो हतो. ते एक वखत पोताना कर्मनी परीक्षा करवा निमित्ते मंत्रीने राज्य भलावी (सोंपी) परदेश चाल्यो गयो. जतां जतां घणेक दी-वसे एक पर्वत पासे आव्यो. ते पर्वतमां एक जोगी रहेतो हतो. तेने जोई भक्तिए करी नमस्कार करवापूर्वक विनयादि साचवीने राजा तेनी सन्मुख बेठो. जोगीए तेने पुछ्युं के, तुं कोण छे ? राजा विक्रमे कह्युं जे— स्वामी! हुं क्षत्रीपुत्र छुं. जोगीए पुछ्युं— तुं क्यां जईश ? राजाए जणाव्युं जे— स्वामी ! आपनीज सेवा करीश, म्हारे अन्य स्थले शुं प्रयोजन छे ? गुरु-सेवा थकी गुणज नीपजे. एम कही ते योगी समीपे रह्यो. यो-गीनो बहु प्रकारे विनय करतो थको ते त्यां रहे छे. तेनी साथे वली ते योगीनी पासे एक विप्र रहेतो हतो, ते बाह्यथी यो-गीनो विनय करतो हतो. भक्तिभावे नहीं पण विद्या लेवाना प्र-

योजने ते सेवा करतो हतो. ए प्रकारे ते बंने (राजा अने विप्र)ने योगीनी सेवा करतां घणां वर्षों वित्या पछी एकदा राजा विक्रमने योगीए कह्युं के, हे वत्स! तने सेवा करतां बहु वर्ष थयां, तुं घणो दक्ष, विनयी अने योग्य छुं, माटे हवे तुं जा अने अपर शरीरमां पेसवानी विद्या छे. एम कहीने योगीए विक्रमराजाने परकाय प्रवेशनी विद्या आपी. ते वखत राजाए कह्युं के– स्वामी ! मने विद्या आपी, परंतु आ विप्र तो म्हारा करतां पण आगल आपनी पासे आवेलो छे, माटे तेने पण विद्या आपवी जोईये. योगीए कह्युं के– ए अयोग्य छे, एने विद्या न देवाय. राजाए कह्युं के–म्हारा उपर प्रसन्न थईने एने विद्या आपो. योगीए कह्युं के– अरे ! तुं उपकारबुद्धिए करी एने विद्या अपावे छे, पण ते तने पीडाकारी थशे. राजाए कह्युं के– हे स्वामी ! म्हारा कर्ममां पीडा लखी हशे तो एनो शो वांक ? माटे उपकार तो करवो. राजानुं आ प्रमाणे युक्तियुक्त बोलवुं सांभळी योगीए विप्रने पण विद्या आपी. पछी ते बन्ने जणा योगीने पगे लागी पोताना देश तरफ चाल्या. मार्ग उलंघता उलंघता साकेत नगरे आवीने बन्ने जणे बाहार मुकाम कर्यो. ए वखते राजानो पटहस्ती मरण पाम्यो हतो तेथी नगरना सर्व लोक खेद पामेला हता. तेवुं जोई राजाए ब्राह्मणने कीधुं के, "आ म्हारुं शरीर जालवजे, आ हाथी मरण पाम्याथी ए म्हारुं नगर खेदातुर छे तेने सजीवन करी हर्ष पमाडुं." एम कही राजाये हाथीना शरीरमां पेसीने तेने सजीव कर्यो तेथी सर्व लोक हर्ष पाम्या. ब्राह्मणे ते वखते पोताना मनमां विचार्युं जे, ए राजा दीसे छे, तो हुं एना शरीरमां पेसीने राजा थई सुख भोगवुं. एम चिंतवी ते विप्र राजाना शरीरमां पेठो. पछी तेणे मंत्री प्रमुखने जणाव्युं तेथी राजा विद्या

शीखी आव्या एम जाणी तेने महोत्सवे करी नगरप्रवेश कराव्यो, सिंहासने बेसाड्यो. त्यारपछी ते मेहेलमां गयो त्यां अंतेउरमां अजाण्या सरिखो आवतो देखीने श्रीकांता राणीने शंका उत्पन्न थई जे– राजानुं शरीर तो एज छे, पण ए राजा विक्रम तो नहीं ! ए कोई तेना सरखुं रूप करी आव्यो जणाय छे ! पछी प्रधानने बोलावी राणीए ए हकीकत जणावी. बन्ने जणे सलाह करी हाल तुरत तेने मेहेले आववानो निषेध कर्यो. हाथीना शरीरमां राजाए प्रवेश कर्यो हतो तेणे विप्रनुं स्वरूप जाण्युं तेथी ते हाथी वनमां चाल्यो गयो. त्यां हस्तीनुं पुद्गल तजीने सुडाना पुद्गलमां पेसी उडीने राणी पासे आव्यो. राणीने अत्यंत प्रेम लगाडी तेनी पासे रह्यो. त्यारपछी एक वखत सुडाना पुद्गलमांथी नीकलीने ते गरोलीना पुद्गलमां पेठो एटले सुडो मरण पाम्यो. सुडाउपर राणीनी एटली बधी प्रीति थई गई हती के क्षणवार पण तेनो विरह वेठवाने ते समर्थ थई शकी नहीं, तेथी घणो विलाप करी मरवा तैयार थई. ते वखते राजा बनेला ब्राह्मणे राणीने कह्युं के– तुं श्याने मरे छे ? हुं ए सुडाने जीवतो करुं ! राणीए जणाव्युं जे–ए जीवतो थाय तो हुं जीवुं. पछी ते ब्राह्मण एकांते शरीर मुकीने सुडाना पुद्गलमां पेठो. सुडाने जीवतो जोई राणी हर्ष पामी. ते अवसर योग्य जाणीने राजा घरोलीना शरीरमांथी नीकली, पोतानुं शरीर, के जेमांथी नीकली ब्राह्मण शुडाना शरीरमां पेसी एकांते मुकी गयो हतो ते पोताना शरीरमां पेठो, पछी दरबारमां गयो. ते पूर्वेनी परें राज्य पालतो साक्षात् विक्रम जाणी राणी श्रीकांता हर्ष पामी. पछी ते ब्राह्मणनी देह बाली दीधी. ते ब्राह्मण तिर्यंच रूपे रह्या. आ प्रबंधमां सार ग्रहण करवानो ए छे के, विक्रमे विनये करी पोते विद्या मेलव्या उपरांत जे भावसहित विनय करतो न-

होतो तेने पण विद्या आपावी. माटे डुनीयामां विनय ए वडो छे अने विनयथी सर्व काम सिद्ध करी शकाय छे माटे विनय गुण करवो.

वली श्री उपदेशमालामां कह्युं छे के श्रेणीक राजाये चंडालनो विनय कर्यो तो विद्या आवडी. " चंडालने सिंहासन उपर बेसाडी राजा हाथ जोडी तेना सन्मुख उभो रह्यो. " ए प्रकारे बीजा प्राणीउए पण विनय करवो. ते उपर श्रेणीकनो संबंध कहे छे.

॥ विनय करवा उपर श्रेणीक राजानो प्रबंध ॥

राजगृह नगरमां श्रेणीक राजा राज्य करता हता. तेमने महा बुद्धि निधान अभयकुमार नामे पोतानो पुत्र मंत्रिनी पदवी पर हतो. ए नगरमां एक चंडाल रहेतो हतो तेनी भार्याने गर्भना महिमाये करी अकाले आंबानां फल खावानो डोहोलो उपजवाथी ते दिवसे दिवसे डुर्बल थवा लागी. ते जोई चंडाले तेनुं कारण पुछवाथी स्त्रीए पोताना मननो परमार्थ कह्यो. ते सांभली चंडाले मनमां विचार्युं के, आ तो घणी मुश्कल वात छे, कारण के, आज वगर ऋतुए अकाले आंबानां फल जोईये! जो ते न मले तो स्त्री सुकाती सुकाती मरण पामे. माटे ते फल मेलववां अने तेणीनो मनोरथ पूर्ण करवो. एम चिंतातुर थयो थको बेठो छे तेवामां तेने याद आव्युं के श्रेणीक राजानो चेलणा राणीना रहेवाना मेहेलनो एक थंभीयो आवास छे ते वाडीमां ए फल छे. हालमां बीजे कोई स्थले ए फल मली शके तेम नथी. परंतु ते वाडी अने ते आवास देवतानुं निपजावेलुं छे तेथी त्यां ए ऋतुनां फल फूल बेसे छे, माटे त्यां जईने ते फल लावुं. एम विचारीने ज्यां वाडी हती त्यां ते आव्यो. वृक्ष जोयां, फलनी धारणा धारी, तेणे विचार्युं जे ए फल कांई सेहेजे हाथमां आवे एम नथी.

छेवट तेनी पासे बे विद्याओ हती तेना प्रभावे लेवानो विचार कर्यो. एक विद्यामां एवी शक्ति पराक्रम गुण हतो के "जे उंची डाल होय ते नीची नमे" अने बीजी विद्याथी "जे डाल नीची नमी होय ते पाछी उंची जाय." ए बे प्रकारना जूदा जूदा गुण बे विद्यामां हता. पछी रात्रे ते (चंडाल) चेलणा राणीना एक थंभा आवासे आव्यो. त्यां सर्वे चोकीदार उंघेला दीठा एटले तेणे एक मंत्र गण्यो तेथी आम्रवृक्षनी डाल नीची आवी, ते उपरथी फल लीधां. पछी बीजो मंत्र गण्यो एटले डाल प्रथम हती तेम उंची गई. फल लावीने स्त्रीने आप्यां, ते तेणीए खाधां अने डोहोलो पूर्ण कर्यो. परंतु ते स्वादिष्ट लागवाथी स्त्रीए एवां फल निरंतर लावी आपवानुं कहेवाथी मोहवशे चंडाल चेलणा राणीनी वाडीमां हमेशां जईने ते फल लाववा लाग्यो. एम करतां आखी डाल खाली थई गई. एक वखत एक थंभीया मेहेले चढी वाडीनी शोभा निहालतां निहालतां श्रेणीक राजानी दृष्टी ते आंबानी डाल उपर पडी. तदन फल विनानी डाल जोई ते मन साथे विचारवा लाग्या के, आ डाल आकाशे अडी छे, ए डाल उपर कोई चडी शके तेवुं नथी, चारे दिशाए चोकी पण छे, कोईथी पोहोंची शकाय नहीं एवी छे, छतां एनां फल केम गयां? आ आश्चर्यकारक बनाव केम बन्यो? ए वातनो निर्णय पोते करी शक्या नही तेथी अभयकुमार मंत्रीने तेडावी कह्युं के, आपणी वाडीमांथी आंबानी आकाशसुधी उंची डाल छतां ते उपरनां बधां फल गयां, ए शुं? तहारा जेवो विचक्षण प्रधान छतां ए चोरी करनार केम फाव्यो? ते समजी शकातुं नथी? माटे ए चोरने पकडवो जोईए अने तेणे केवी रीते फल लीधां ते पण जाणवुं जोईए? राजानो

हुकम सांभली अभयकुमारे चौटामां आवीने साद पडावी लोकोने भेला करी नीचेनी वात कही.

"धनश्री नामे उपवर (परणवा योग्य उम्मरनी) थएली एक कन्या पोताने योग्य वरनी प्राप्ती थवा माटे प्रछन्नपणे एक मालीनी वाडीमां यक्षना मंदीरे दररोज आवती अने तेनी पूजा करवा सारु ते वाडीमांथी फूल वीणी लेती हती. हमेशां फूल ओछां थवाथी माली तेनी तपास करतो हतो. एवामां एक वखत ते धनश्रीने फूल वीणतां तेणे दीठी; तेथी पकडीने पुछतां तेणीए जणाव्युं के उत्तम भर्तार पामवानी आशाये हुं यक्षनी सेवा करवा फूल लेउं हुं माटे मने मुकी द्यो. आज पछी हुं फूल नहीं लेई जाउं. आ कन्याने खूबसुरत जोई मालीए तेना उपर मोहित थई कह्युं के, जो तुं परणीने प्रथम म्हारी पासे आवे तो हुं तने छोडुं. धनश्री निरुपाय होवाथी तेनुं कहेवुं कबुल राखीने समसगरा करी पोताने घेर आवी. केटलेक दिवसे ते कन्यानुं लग्न थयुं त्यारे ते पोताने सासरे आवी शयनगृहमां गई, ते वखते तेणे पोताना पतिने माली साथे जे वात बनी हती ते अथ इति कही. पतिए तेनी प्रतिज्ञा पूरी करी आववानी आज्ञा आपी. पछी ते शोल शृंगार सजी माली पासे तेनी वाडीए जवा सारु एकाकिपणे चाली नीकली. मार्गमां आवतां चोर मल्या. तेओ तेने लुटवा लाग्या त्यारे पोतानी प्रतिज्ञा पूर्ण करवा माटे मालीनी पासे जवा संबंधीनी सर्वे हकीकत तेणे चोरोना मुख आगल कहीने आजीजी करी जणाव्युं के, माली पासे जई प्रतिज्ञा पूर्ण करी पाछी फरतां हुं आ वाटे आवीश, त्यारे तमारे लुटवी होय तो लुटज्यो. तेनां वचन सांभली चोरे तेनुं वचन लेई त्यांथी जवा दीधी. आगल चालतां रस्तामां अतिसे विक्राल घणा दिवसनो भुख्यो एक राक्षस मल्यो. अकस्मात्

तेना उपर दोट मुकी खाई जवा आवता ए राक्षसने धनश्रीए घणा कालावाला साथे माली अने तेना वच्चे बनेली सर्वे हकीकत निवेदन करी, पोताना पतिए पण ते प्रतिज्ञा पूर्ण करवा जवामाटे आज्ञा आप्यानुं जणावी, माली पासे जईने आ मार्गेज आववानुं कहेवाथी राक्षसे तेनुं वचन लेई जवानी रजा आपी. पछी ते मालीनी वाडीमां आवी. माली पण तेनी वाट जोई रह्यो हतो. तेणे धनश्रीने आवतां आवकार देई पुछ्युं के, तहारा भर्तारथी छानी, के प्रगटपणे आवी छुं? स्त्रीए तेना उत्तरमां जणाव्युं-जे, पतिने सर्वे हकीकत वाकेफ करतां तेमणे प्रतिज्ञा पूर्ण करवा माटे आज्ञा आपवाथी हुं तमारीपासे आवी छुं. ते वचन सांभली मालीए मनमां विचार कर्यो के धन्य छे! ए स्त्रीने! अने धन्य छे! एना भर्तारने! आवी सत्य प्रतिज्ञा पालनार स्त्री अने ते पूर्ण करवानी सम्मती आपनार तेना स्वामीने जेटली साबासी आपीए तेटली ओछी छे! माटे म्हारे पण ए स्त्रीने वतावबी (तेनुं सील खंडन करवुं) घटे नहीं. एम विचारी मालीए ते स्त्रीने पोतानी बहेननी परे लेखवीने सासरवासो करी वोलावी, अर्थात् तेने वस्त्राभूषण आपी पोताने घेर पाछी मोकली दीधी. रस्तामां आवतां ते प्रथम राक्षसने मली. राक्षसे तेने सत्य प्रतिज्ञा पालनार जाणी माली साथे बनेली बीना तेना मुखथी सांभलीने साबासी आपी वीदाय कीधी. त्यांथी चोर पासे आवी. चोरे पण तेमज सत्यवती अने सीलवती जाणी साबासी आपी आभूषणादि बक्षीस करी तेने घेर जवानी रजा, आपी. त्यांथी ते पोताना भर्त्तार पासे आवी अने मालीने त्यां तथा रस्तामां जतां आवतां जे जे बनाव बन्यो हतो ते सर्वे कही संभलाव्यो. ते वात सांभली भर्तारे तेने घणीज सन्मानी."

अभयकुमारे लोक आगल उपर प्रमाणे वात कहीने पुछ्युं के,

कहो भाईयो ! एमां डुष्कर काम करनारो कोण ? ते वखते केटलाक, के जेउ विषयवंत अधीरा जीव हता तेमणे भर्तारने वखाण्यो. केटलाक विषयी प्राणी हता तेमणे मालीने वखाण्यो. केटलाके. ए बन्ने एटले माली अने भर्तारने वखाण्या, के रात्रिनेविषे स्वामीए प्रथम समागमे स्त्रीने माली पासे मोकली अने मालीए रूपवती अने जोवनवती पोतानी पासे आवेली स्त्रीने बहेनपणे लेखवी, माटे ए बन्ने जणे डुष्कर काम कर्युं. तेथी माली अने भर्तार ए बन्नेने साबासी घटे छे. वली केटलाक जीव मांसना लालची हता तेणे राक्षसने वखाण्यो अने जेणे आंबानां फल लीधां हतां ते एकलाए चोरने वखाण्यो. अभयकुमारे सेवक पासे ते चोरने पकडाव्यो. लोकोए अभयकुमारनी बुद्धि माटे तेनां घणां वखाण कर्यां. पछी सर्वे पोतपोताने घेर चाल्या गया. अभयकुमारे ते चोरने कांगे (केद) कर्यो एटले तेणे आम्रफल लीधानी वात कबुल करी. एटली बधी उंची डाल उपरथी फल केवी रीते लीधां ? एम ज्यारे पुछ्युं, त्यारे चोरे जणाव्युं के, "नीम्नीनी अने उन्नीनी" ए बे विद्या महारी पासे छे, तेणे करी में लीधां. पछी ते चोरने राजा श्रेणीकनी पासे लाव्या. राजाए कह्युं के अमारी वाडीमां चोफेर चोकी छतां तेमने सुता वेचीने आकाश जेटली उंची डाल उपरथी तुं फल केम लेई शक्यो ? अमारा आगल साचे साचुं कहे ? चोर थरथर धुजवा लाग्यो. राजाए तेने खरची (शिक्षा) करवानुं कहेतां अभयकुमारे कह्युं के, महाराज ! एनी पासे विद्या छे माटे एम न थाय. एनी पासे विद्या छे ते तमे ल्यो ? क्यां तमने ते ना पाडे छे ? राजाए कह्युं के, ए विद्या मुज प्रत्ये कहे. चोरे मंत्रोच्चार कर्यो, पण मरणनी बीकथी ते बोल्यो तेथी राजाने मोढे चढ्यो नहीं. त्यारे अभयकुमारे कह्युं के,

हे राजान् ! एने सिंहासने बेसारो अने तमे तेना सन्मुख हाथ जोमी हेठा बेसो. राजाए तेमज कीधुं, अर्थात् चोरने सिंहासन उपर बेसारी पोते तेना सन्मुख हाथ जोमी उज्ञा रह्या. चोरे (चंमाले) मंत्र कह्यो. राजाने तत्काल आवम्यो. अन्नयकुमारे राजाने कह्युं के, ए चोर अने नीचकुलनो ढे परंतु तेनी पासे विद्या ढे माटे ए पूजवा योग्य ढे. गुरुने सरपाव आपवो जोईए. कह्युं ढे केः–"एकाक्षर फल दातारं ॥ योगुरु नैव मन्यते ॥ श्वानजोनी सतं गत्वा । चंडालेष्वपि जायते ॥ १ ॥ अर्थ–एक अक्षर शिखवनारने जो गुरुबुद्धियें न माने तो सो ज्ञव कुतराना अने हजार ज्ञव चंमालना करे." माटे ए तो गुरु थयो तेथी एने जीवतदान द्यो. चंडाल(चोर)ने ढोडी मुकी राजा श्रेणीके तेने पोताने घेर बोलावी लाख पसाय कर्यो.

आ कथामां सार ए ग्रहण करवानो ढे के, विनय ए वडो ढे. श्रेणीक राजाए विनय कर्यो त्यारेज तेने विद्या आवमी. विनयथी थोकुं ज्ञणेलुं पण घणुं विस्तार पामे ढे, माटे सर्वे मनुष्ये विनय करवो. ३२

॥ अथ विद्या विषे ॥

अगम मति प्रयुंज्ये विद्ययें कोन गंजे, रिपुं दल बल ज्ञंजे विद्ययें विश्व रंजे ॥ धनथि अखय विद्या सीख एणे तमासे, गुरुमुख ज्ञणि विद्या दीपका जेम ज्ञासे॥३३॥

ज्ञावार्थः–विद्यावान होय ते आगल बुद्धि प्रयोग विचारे अने तेने कोई गांजी (ठगी) शके नही, विद्यावान शत्रुना दल कहेतां लश्करना बलने ज्ञागी नाखे अर्थात् तेने कोई जीती शके नही अने विद्याथी आखुं जगत रंजे कहेतां खुशी थाय, धन करतां पण विद्या अक्षय खजानो ढे, केमके धन खरचतां खूटी जाय

छे पण विद्या खूटती नथी; ए तो वावरतां वधती जाय छे अने वळी एज तमासो जुओ, जे धननुं कारण ते पण विद्या छे अर्थात् विद्यावान अखूट धनप्रत्ये पामे, गुरुना मुखथी जे विद्या भणी (शीखी) होय ते दीवानी पेठे प्रकाश करे, माटे विद्यानो अभ्यास करवो. ३३

सुर नर सुप्रसंसे विद्ययें वैरि नासे, जग सुजस
सुवासे जेह विद्या उपासे ॥ जिणकरि नृप रंज्यो भोज
बाणे मयूरे, जिणकरि कुमरिंदो रीजव्यो हेम सूरे ॥३४॥

भावार्थः–देवता अने मनुष्य सघलाये विद्यावंतने वखाणे अने विद्यावंत थकी वैरी नाश पामे, जे विद्याने उपासे एटले तेनी उपासना करे–भणे तेनो जगत्मां सुजस विस्तरे अने सौभाग्य आपे, जेणे करी अर्थात् विद्याथी बाण अने मयूर पंडितोए भोजराजाने रीजव्यो. तेमज हेमचंद्राचार्यें कुमारपालराजाने पण विद्यावडे रीजव्या–प्रतिबोध पमाड्या. तेम बीजाने पण थाय, माटे विद्या भणवी. ३४

॥ विद्याथी रीजववा उपर बाण तथा मयूर पंडितोनो प्रबंध ॥

उजेणि नगरीमां भोजराजा राज्य करतो हतो. तेना दरबारमां बाण तथा मयूर नामना बे ससरो जमाई पंडित हता. विद्याना मदथी मांहोमांहे ते विवाद करता हता. एक बीजानी सरसाई सहन करी शकता नहीं. "यतः–नसहंतिइक्कमिक्कं, नविणाचिठंतिइक्कमीक्केण ॥ रासभवसहतुरंगा, जूआरिपींमीआर्किभा ॥ १ ॥ भावार्थ– तमाम बाळकोने एकलां गमे नहीं, अने भेळा (एकठा) थाय त्यारे वढे छे." तेम ए बे पंडित ससरो जमाई छतां नित्य दरबारमां विवाद करता हता. राजाए तेओने कह्युं के– तमे काश्मीरमां जाओ. जेने सरस्वती वखाणे ते घणो

पंकित अने न वखाणे ते ऊंधो पंकित मुकरर थशे. एवुं सांभलीने बन्ने पंडित काश्मीर जवा नीकल्या. रस्तामां ॐकारनी टीकाना दोढ हजार पोठीया मल्या. तेमां शुं भर्युं छे ? एम पुछवाथी पोठीवाले कह्युं जे— ॐकारनी वृत्तिना पोठी छे. ए सांभलतां ते बन्नेना भरपूर मद हता ते लगारेक (कांईक उतरीने) नरम पड्या. त्यांथी आगल जतां रात्रि पडवाथी सुई रह्या. त्यां आकाशनेविषे सरस्वतीये प्रश्न पुछ्युं, एटले बाण पंकित तत्काल बोलतां, विचारे छे जे ए सारदायें शुं कह्युं ? जे— "सतचंद्रनभस्थलं." पछी समस्या पुरतां ते बोल्यो के— दामोदरकराघात, विधुलीकृतचेतसां ॥ दृष्टाचाणूरमल्लेण, सतचंद्रनभस्थलं ॥ १ ॥ एवुं वचन सांभलीने मयूरे बीजी वार हुंकारो कह्यो जे ए देवीये शुं कह्युं ? पछी एणे पण कह्युं. त्यारे सरस्वतीये कह्युं जे— जेणे हुंकारो न दीधो ते पूरो पंडित अने जेणे हुंकारो कह्यो अने ते बोलीने समस्या कही ए सामान्य पंडित जाणवो. ए रीते सरस्वतीये विवाद चुकव्यो. पछी तेउ उजेणिए आवी भोजराजाने पोतानी विद्यावडे खुसी करता रह्या. ३४

॥ अथ उपकार विषे ॥

॥ तन धन तरुणाई आयु ए चंचला छे, परहित करि लेजे तादृशो ए समे छे॥ जब जनम जरा जां लागशे कंठ साई, कहिनी तिण समे तो कोण थाशे सहाई ॥ ३५ ॥

भावार्थः— काया (शरीर), द्रव्य, युवानी अने आयुष्य, ए सर्वे चंचल एटले अनित्य— नाशवंत छे, माटे आ तहारो समय अर्थात् वखत होवाथी पारकानुं हित करजे, अने ज्यारे तने गलु पकडीने जरा आवी लागशे (वृद्धावस्था थशे) एटले शरीरनुं प्राक्रम गलशे— जतुं रहेशे, इंद्रिउ सीथल थतां कांई

काम करी शकाशे नहीं, त्यारे हे भाई ! तुं पोतेज कहे, के तहारो सखाई एटले सहाय करनारो कोण थशे ? एक धर्म सखाई थशे माटे परनुं हित करवुं. (उपकार करवो). ३५

॥ नहि तरू फल खावे ना नदि नीर पीवे, जस धन परमार्थे सो भले जीव जीवे ॥ नल करण नरिंदा विक्रमा राम जेवा, परहित करवा जे उद्यमी दक्ष तेवा ॥ ३६ ॥

भावार्थ— झाडने जे फल थाय छे ते झाड पोते खातुं नथी तेम नदीनुं पाणी नदी पीती नथी, एतो पारकाने काम आवे छे. अर्थात् झाडनां फल अने नदीनुं पाणी बीजा जीवो खाय छे अने पीए छे. ते प्रमाणे जेनुं धन परमार्थमां वपराय छे, अर्थात् बीजाना काममां आवे छे ते प्राणी भले जीवे, एटले तेवा माणसनुं जीववुं सार्थक छे, ते दीर्घायुषी थाउ. एवो उपकार करनार कोण थया छे ? नलराजा के जेणे कुवामां पडेला सर्पने चारे बाजु अग्नि सलगतो हतो तेम छतां पण तेमांथी काढ्यो, तथा करणराजाए जगत्ने विषे दीन दुःखीयाउने उद्धर्या, वली विक्रमादित्ये पोताना द्रव्यनो पर उपकारमां व्यय कर्यो अने रामचंद्रजीए परहितनां कार्य कर्यां, एवा उद्यमी, समर्थ अने डाह्या हता. एवी रीते मनुष्ये बीजाने उपकार करवो ए तात्पर्यार्थ छे. ३६

॥ अथ उद्यम विषे ॥

रयण निहितरीने उद्यमे लक्ष्मि आणे, गुरु भगति करीने उद्यमे शास्त्र जाणे ॥ दुख समय सहाई उद्यमे छे भलाई, अति अलस तजीने उद्यमे लाग भाई ॥ ३७ ॥

भावार्थः—समुद्र तरवाना उद्यमे करी लक्ष्मी लावे, गुरुनी

ज्ञक्ति-सेवा चाकरी करवाना उद्यमथी शास्त्रनो पार पामीये, दुःखनी वखते उद्यम साथ्य करनारो छे अने उद्यमथी ज्ञला-इनो गुण नीपजे छे, ते माटे अत्यंत आलस छांडीने हे जाई! तुं उद्यमसर था-उद्यम कर. ३७. वली उद्यमथी शुं शुं नीपजे छे ते कहे छेः-

नृपशिर निपतंती वीज जात्कारकारी, उद्यम करि सुबुद्धि
मंत्रिए ते निवारी॥ तिम निज सुतकेरी आवती
दुर्दशाने, उद्यम करि निवारी ज्ञानगर्ज प्रधाने ॥ ३८ ॥

ज्ञावार्थः-राजाने माथे जे जाज्वल्यमान वीजली पडवानी हती ते उद्यम वडे सुबुद्धि नामा प्रधाने निवारी कहेतां अट-कावी दूर करी, तेमज ज्ञानगर्ज कहेतां बुद्धिवंत प्रधाने उद्यमे करी पोताना दीकराथी आवनारी दुर्दशानो नाश कर्यो. ३८

॥ उद्यम उपर सुबुद्धि प्रधाननो प्रबंध ॥

श्री शान्तिनाथ चरित्रमां जणावेला विजयराजा एक वखत राजसज्जामां बेठा हता. त्यां एक निमित्तिठ आव्यो. राजाए तेने पुठ्युं के, जो तमो ज्ञानबले करी अगम निगमनी वात जाणी शकता हो, तो हालमां कांइ नवीन बनाव बनवानो होय ते बतावो? निमित्तियाए कह्युं के, हुं सर्व जाणी शकुं छुं. आजथी सातमे दीवसे पोतनपुर नगरना राजाने मस्तके वीजली पडशे. आ वात सांज्ञलीने सर्व सज्ञाजनो दीलगीर थया. राजाये विचार्युं जे संबंध हशे ते बनशे! ते वखत म्हाेटा म्हाेटा प्रधानो ज्ञेगा थइ ए विघ्न विलय (नाश) थवानो उपाय योजवा लाग्या. एक प्रधाने कह्युं के-नवो राजा स्थापीये, एटले ते राजाने माथे वीजली पडशे. राजाए ते सांज्ञलीने जणाव्युं के-म्हारा प्राण उगारवा सारु बीजाने दुःख देवुं ए घणुं अयोग्य

छे, माटे तेम करवुं नही. पछी बीजाए अभिप्राय आप्यो के-अथाग (घणा ऊंडा) पाणीमां वहाण राखी तेमां राजाने राखीये तो बचे, केमके तेवा वहाणमां वीजली पडती नथी. एवुं सांभली एक प्रधान बोल्यो जे-ए वात पण कामनी नही, कचित ए वहाण डुबे तो एवुं एज, अर्थात् एक नही तो बीजुं पण विघ्न आवी पडवानो संभव छे. छेवट सुबुद्धि प्रधाने कह्युं जे-महाराज ! एक म्हारुं वचन कबुल करो. ते ए के, "आजथी सात दीवस सुधी जिनराजनी सेवा भक्ति करो, तेने विषे तमारा चेतनने शुभ भावमां प्रवर्त्तावो, दान पुन्य करो, धर्मकाममां सावधान रहो, अने सिंहासन उपर आप (राजा) ने बदले काष्टमय यक्षनी मूर्ति स्थापन करो." आ योजना सर्व प्रधान तथा राजाए मान्य करीने ते प्रमाणे सघलो जोग कर्यो. पछी निमित्तियाना जणाव्या प्रमाणे सातमे दीवसे वीजली काष्टनी मूर्ति उपर पडी तेथी तेनो नाश थयो. राजा बची गयो. सर्वत्र आनंद फेलायो. जय जय शब्द थयो. निमित्तियाने घणुं द्रव्य आपी तेनुं दलीद्रपणुं मटाड्युं. सर्व लोक खुशी थता पोतपोताने उद्यमे वलग्या. आ वातमां सार ए ग्रहण करवानो छे के, बुद्धिबले करी, उद्यम कर्यो तेथी मरण कष्ट नष्ट थयुं. माटे उद्यम करवो.

॥ उद्यम उपर बीजो ज्ञानगर्भ प्रधाननो प्रबंध ॥

एकदा राजा दरबारमां बेठो हतो, तेवामां एक निमित्तियो आव्यो. राजाए पुछ्युं के, तहारा निमित्तशास्त्र उपरथी जोईने कहे के थोडा समयमां कांई जाणवा जोग बनाव बनशे ? तेणे कह्युं के, महाराज ! पंदर दीवसमां प्रधानने मर्णांत कष्ट पडशे. ते वात प्रधाने पण सांभली तेथी ते दरबारमांथी निमित्तियाने पोतानी साथे लेईने घेर आव्यो. भक्ति युक्ति करी तेणे कष्ट पडवानुं कारण-निमित्त पुछ्युं. निमित्तियो तेना वडा पुत्रथी

કષ્ટ છે એમ જણાવી ત્યાંથી ગયો. પછી પ્રધાને પુરુષ પ્રમાણે પ-
ટારો કરાવી તેમાં ખાવા પીવાનો સર્વ સામાન પંદર દિવસ પોહોંચે
તેટલો ભરાવીને પોતાના વડા પુત્રને બોલાવી સઘળી બીનાથી
વાકેફ કરી તે પટારામાં પેસવાનું કહ્યું. પુત્ર વિનીત હોવાથી
પિતાનું વચન પ્રમાણ કરી પટારામાં પેઠો. પ્રધાને તાળાં દેઈને તે
પટારો સેવક પાસે ઉપડાવી દરબારમાં રાજાપાસે જઈ કીધું કે, મ્હારે
માથે આપદા આવી છે તો સંપદાને શું કરું? આ મ્હારી સંપદા આપને
ત્યાં મુકવા આવ્યો છું, તે હુકમ કરો ત્યાં મુકું. રાજાની આજ્ઞાથી પ્ર-
ધાને તે પટારો અંતેઉરમાં મુકાવી તેની કુંચીઉ રાજાને સોંપીને કહ્યું
કે, પંદર દિવસ પછી ઉઘાડજો. પછી જિનમંદિરે જઈ તેણે વીત-
રાગના ગુણની સ્તુતિ કરવા માંડી. એમ નિત્યપ્રત્યે પ્રભુના ગુણ-
ગ્રામ કરતાં પંદર દિવસ થયા ત્યારે અંતેઉરમાં મુકેલા પટા-
રામાંથી ગેબી અવાજ થવાને લીધે પટરાણીની વેણી પ્રધાનના પુત્રના
હાથમાં છે એવો સોર બકોર સંભળાયો. રાજાયે તે વાત સાંભળી
તેથી ક્રોધારુણ નયણ કરી સેવકને હુકમ કર્યો કે, પ્રધાનને
પકડી લાવો અને ગરદન મારો. રાજાના આદેશથી સેવકો
પ્રધાનને ઘેર ગયા. ત્યાં તે નહી મળવાથી છેવટ વીતરાગને દેહેરે
જઈ પ્રધાનને પકડી રાજા પાસે લેઈ ગયા. રાજા ઉપરાંઠો થઈ
(આડું જોઈને) બેઠો. પ્રધાને કહ્યું કે—મહારાજ ! પટારો મં-
ગાવો અને તાળુ ઉઘાડીને જુઓ— તેમાં શું છે ? રાજાએ પટારો
મંગાવીને તાળુ ઉઘાડી માંહે જોયું તો તેમાં પ્રધાનના વડા
પુત્રને દીઠો. તેના એક હાથમાં વેણીપાસ અને બીજા હાથમાં
ખડ્ગ તેમના જોવામાં આવ્યું. રાજા વિસ્મય થયો. ક્રોધ
ચઢ્યો હતો તે સમ્યો. આ ચર્ચા આખા નગરમાં ફેલાઈ
અને આ કૌતકરૂપ કાર્ય કેમ બન્યું? તે વિષે કાંઈ નિર્ણય કરી
શક્યા નહીં. કેટલેક દિવસે ત્યાં એક જ્ઞાની આવ્યા. તેમને એ

विषे खुलासो पुछतां तेमणे जणाव्युं के–"पाछले जवे प्रधाननी जे स्त्री हती ते मरण पामीने व्यंतरी थई छे, तेणीए प्रधानने कष्ट देवा माटे ए कर्युं हतुं. पण प्रधानना जाग्ये उद्यम करवाथी कष्ट विलय गयुं (नाश पाम्युं), सुख थयुं. माटे उद्यमने मुख्य जाणवो. ३७

॥ अथ दानविषे ॥

थिर नहि धन राख्यो तेम नाख्यो न जाए, इणि पर धन जोतां एव गत्या जणाए॥इह सुगुरु* सुपात्रे जेह दे जक्ति जावें, निधि जिम धन आगे साथ तेहीज आवे ॥ ३ए ॥

जावार्थः– द्रव्य स्थिरतापणे न रहे, राखवाने अर्थे घणा उपाय करे तोपण द्रव्य अथिर होवाथी रहेतुं नथी, तेम द्रव्यने कांई नाखी देवाय नही, लक्ष्मीनी गति त्रण प्रकारनी छे. दान, जोग, के नाश. दान अने जोग, एतो पुन्यवंतने होय. ए बे प्रकार जो न होय तो अंते नाश थाय. माटे उत्तम जीव जे जक्तिजावथी सद्गुरु अने सुपात्रनेविषे दान देवा विगेरेमां पोतानुं द्रव्य खर्चे छे ते आगे कहेतां परजवनेविषे निधाननीपेठे साथे आवे छे. ३ए (हवे दानना अधिकारी कोण कोण थया छे ते बतावे छे)–

नल बल हरिचंदा जोज जे जे गवाए, प्रह समय सदा ते दानकेरे पसाए॥ इम हृदय विमासी सर्वदा दान दीजे, धन सफल करीजे जन्मनो लाहु लीजे ॥ ४० ॥

जावार्थः– नलराजा, बलिराजा, हरिश्चंद्रराजा अने जोजराजा विगेरे जेनी जेनी हमेशां पोफाटतां सवारमां स्तुति गवाय छे, ते दानगुणनुं महात्म्य छे, माटे ए वात हृदयनेविषे विचा-

* बीजी प्रतमां 'सुगुरु' ने बदले ' सुगुण ' छे.

रीने हमेशां (यथाशक्ति) दान देवुं, अने दान देवावडे धनने सफल करीने मनुष्यभवनो लाहो लेवो. ४०

॥ दानगुण उपर कर्णराजानो प्रबंध ॥

कर्णराजा घणा दानेश्वरी हता. कोई कारणवशात् ते बंदीखानामां पड्या हता. ते वखत तेमनी पासे कांई पण द्रव्यादि नहोतुं. एवी अवस्थामां होवा छतां दानगुणनुं पारखुं जोवा माटे एक याचक स्तुति बोलतो बोलतो तेमनी पासे गयो. ते सांभली कर्णराजाए कह्युं के, आ वेलायें तुं शुं आव्यो ? परंतु तुं नीराश जाय ते पण सारुं नहीं ! एम विचार करी नजीकमां पत्थर पड्यो हतो ते मंगाव्यो. याचके ते लावी आप्यो. तेवडे पोताना दांतमध्ये सोनानी रेख हती ते याचकने काढी आपी.

॥ अथ शीलविषे ॥

॥ अशुभ करम गाले शील शोभा दिखाले, गुणगण अजुआले आपदा सर्व टाले ॥ जस नर बहु जीवी रूप लावण्य देई, परभव शिव होई शील पाले जिकेई ४१

भावार्थः– शील– खोटां कर्मने गाले छे, शोभा देखाडे छे, गुणना समुदायने अजवाले छे अने सघलां संकटने दूर करे छे, तेमज वली जे कोई प्राणी शील पाले छे ते आ भवनेविषे जसवादी तथा दीर्घायुषी थाय छे अने रूप लावण्यपणुं पामे छे तथा परभवमां मोक्षप्रत्ये पामे छे. ४१

इण जग जिनदास श्रेष्ठि शीले सुहायो, तिम निरमल शीले शील गंगेव गायो ॥ कलि करण नरिंदा ए समा छे जिकोई, परभव शिव पामे शील पाले तिकोई ॥४२॥

भावार्थः– आ जगतमां जिनदास शेठ सीलगुणे करी शोभा

पाम्यो, तेमज निर्मल शीलगुणे करी गंगेव कहेतां जीष्मपिता-नुं शील वखणायुं, वली कलिकालमां पण करण अने तेना जेवा बीजा जे कोई शील पालनार थया छे अने थशे ते पर-जवे मोक्ष पामशे. (शीलनो महिमा म्होटो छे, तेथी संग्राम सोनीनी परें आ जवमां जस प्रतिष्ठा पामे, वचन पण प्रमाण थाय. माटे शील पालवुं.) ४१

॥ शील पालवा उपर सुदर्शनशेठनो दृष्टांत ॥

सुदर्शन शेठने अन्नया राणीए तेना उपर मोहित थवाथी कपटकला केलवी पोताने महेले एकांतमां तेडाव्यो. घणा हाव-जावसहित तेनुं शील खंडवाना उपाय कर्या परंतु ते (सुदर्शन शेठ) चल्यो नही. छेवटे बलात्कारे पूरेपुरुं कष्ट पाडवानी ध-मकी आपीने जोगविलास करवानुं कह्युं. त्यारे पोते पुरुषातनमां नथी एम कही छुटी नीकल्यो. पण शील खंडन कर्युं नहीं. त्यारपछी केटलोक समय वीत्याबाद नगरमां महोत्सव हतो. लोकनां वृंद शृंगार सजी उद्याननेविषे जता हता. अन्नयाराणी पोतानी सखि साथे गोखमां बेठी हती. ते रस्ते थई समान रूप-वाला छ युवान घोडी अस्वारी सहित जता तेना जोवामां आव्या. अन्नयाराणीए तेमने नहीं ओलखती होवाथी सखि-प्रत्ये पुछ्युं के ए कोना पुत्र छे ? सखिए कह्युं के, ए तो मनोरमा स्त्रीनी कुखनेविषे उत्पन्न थयेला सुदर्शनशेठना पुत्र छे. राणीए कह्युं के, अरे जुंडी ! ए तो पुरुषातनमां नथी अने तुं ए शुं बोली ? सखिए कीधुं के, हे बहेन ! एणे तने वंची (छेतरी) ! खरेखर एनाज ए पुत्र छे. ए वातमां तुं कांई पण संदेह राखीश नहीं. हुं तेमने सारी पेठे पीछानुं छुं. राणी आ वात सांजली क्रोधवंत थई थकी विचारवा लागी के, ए मने छेतरीने चाल्यो गयो छे, तो हुंज खरी ! के, एने विपत पाडुं अने कालधर्म

(मरण) पमारुं. पछी ते त्रुटी खाटली उपर मस्तकना केश छुटा मुकी पोताने हाथे दील वलुरी नाखीने चिंतातुर चहेरे आलोटती पडी. थोडीवारे राजा त्यां आव्या, तेमणे राणीने आमण-डुमणी आलोटती देखीने पुछ्युं के, आज आम केम सुती छुं ? राणी बोली के, कांई कहेवाय एवुं नथी. राजाए आग्रह करी समसगरा देई पुछ्युं. त्यारे कह्युं के, हे स्वामी ! हवे आ नगरमां रहेवाय एवुं नथी. राजा कहे के, एवडुं शुं छे ? तेनुं कारण तो मने कहे ? जे दुःख थतुं होय ते अगर तने कोईए दुजवी होय तो ते पण कहे ? वात कह्या विना उपाय न थाय, माटे जे होय ते जलदी कहे ? तेनो उपाय करी तहारुं दुःख दूर करूं. पछी राणीए कह्युं के, " महाराज ! आप ज्यारे रयवाडीये पधार्या, त्यारे सुदर्शनशेठे महेलमां आवीने महारी शीलनी वाडी भांगवाने घणो प्रयत्न कर्यो. घणाज बलात्कारे करीने पण में महारो आचार राख्यो. परंतु ते वखतनी महारी काया कंपे छे, अने हवे अहीं रहेवाने पण महारुं मन मानतुं नथी. राजाए ते सांभलीने तुरतज सुदर्शनशेठने पकडी लाववा ध्वंस अर्थात् लश्करी तुकडी मोकली. तेने पकडी लाव्या एटले पाधरो स्मशाननेविषे शूलीए चडाववा मोकली दीधो. लोकमध्ये हाहाकार थयो. शेठने शूलीए चढावतां तेना अखंड शीलगुणे करी शासननुं रखोपुं करनार शासना देवीए आवीने तेनो महिमा बतावबा सारु शूली भांगीने सिंहासन कर्युं. ते अधरनुं अधर देवतानुं विमान थई रहे तेम रह्युं. वली शेठना उपर फूलनी वृष्टी थई. देवतानी आकाशनेविषे वाणी थई के, शुद्ध शीलना धरणहार सुदर्शनशेठने आवो उपद्रव्य कर्यो छे, तेने हुं शिक्षा देईश. आकाशमां थतो आवो घोष सांभलीने राजा सहित नगरना लोको अचंभित थया थका तेनी पांसे आवी

विनयसहित पगे लागीने तेने हाथी उपर वेसाडी वाजते-गाजते म्होटे मंडाणे नगरमां लेई आव्या. तेना गुणग्राम करवा लाग्या. माटे शीलनो प्रजाव वर्णवी न शकाय तेवो छे. एना गुणनो पार नथी. माटे शुद्ध शील पालवुं. ४२

॥ शीलगुण उपर गांगेयनो टुंक हेवाल ॥

शांतनुराजानी गंगा नामनी राणीनी कुक्षीनेविषे उत्पन्न थयेला गांगेयकुमारे पोताना पितानी इच्छा पूर्ण करवा माटे माछी पासे मागणी करी कन्यां आपवातुं कह्युं. माछीए तेने राज्य करवायोग्य पाटवी कुमर ते पोते होवातुं कारण जणावी मागणीनो अनादर कर्यो. गांगेये राज्य न लेवुं अने पोताने प्रजा पण न थाय तेटलामाटे ब्रह्मचर्य पालवातुं पण, पण लीधुं. पितानो मनोरथ पूर्ण कर्यो. पोते जीष्मकर्म कर्युं तेथी लोकमां "जीष्मपिता" कहेवाया. बालपणथी ब्रह्मचर्य पालनार ए अतुल्य बली पांरूव कोरवना युद्धमां घायल थया पछी दीक्षा अंगीकार करी देवगति पाम्या छे. माटे शीलव्रत पालवुं के जेथी मनकामना सिद्ध थतां छेवट मोक्षसुख मलवाने मुश्केल पडतुं नथी. ४२

॥ अथ तपविषे ॥

तरणि किरणथी ज्यूं सर्व अंधार जाए, तपकरि तपथी त्यूं डुःख ते दूर थाए ॥ वलि मलिन थयूं जे कर्मचंडाल तीरे, तिम तनु ते पखाले ते तपस्वर्ण नीरे ४३

जावार्थः—जेम सूर्यना किरणथी अंधकार नाश पामे अने उद्योत थाय, तेम ए तपथी जे डुःख होय ते नाश पामे, वली कर्मरुपीया चंडालनी परें मेलां थयां जे कर्म, तेने पखालवाने, सोनावाणी जेम कायाने पखालवाने छे एटले जलमध्ये सोनु नाखीने अबोखो

नाखवाथी जेम कायानी आजडछेट टळेछे तेम तपरुपी सोनावाणी-थी अर्थात् तप करवाथी कर्मनुं अपवित्राईपणुं मटे छे माटेतप करवो.

तपविण नवि थाए नाश दुःकर्म केरो, तपविण न टळे ते जन्म संसार फेरो ॥ तप बल लहि लब्धी गोतमे नंदिखेणे, तप बल वपु कीधुं विष्णु वैक्रीय जेणे ॥४४॥

भावार्थः—तप विना माठां कर्मनो नाश न थाय, तप विना जे जन्म जरा मरण तेनो फेरो न मटे, तपना प्रभावथी गौतमस्वामी तथा नंदीखेण मुनिने लब्धी उपनी, अने विष्णुकुमारे तपना प्रभावथी वैक्रीय (लाख जोजननुं) रूप कर्युं. ४४

॥ तपना प्रभावे लब्धी उपार्जन करनार गौतमस्वामीनो प्रबंध ॥

श्री महावीरस्वामी भगवाने एक वखत देशना समये कह्युं जे—पोतानी लब्धियें करी अष्टापद तीर्थे जे जात्रा करे ते सिद्धिने पामे. ते वखत श्री गौतमस्वामी, भगवंतनी आज्ञा लेई जात्रा करवा माटे गया. ज्यारे अष्टापद पर्वतनी नजीक आव्या त्यारे त्यां आगल पडाव नाखी रहेला पंदरसें त्रण तापस तेमने जोइ मांहोमांहे विचार करवा लाग्या के तप करवाथी आपणुं शरीर कृश थयेलुं छे तोपण आपणे आ अष्टापद पर्वत उपर चढीने जात्रा करी शकता नथी, तो आ हाथी जेवी कायावाला शी रीते चढी शकशे ? गौतमस्वामी सूर्यना किरण अवलंबीने चढ्या. ते जोई तापसे धार्युं के, खरेखर लब्धिवंत जणाय छे, माटे ए ज्यारे उत-रीने हेठा आवशे त्यारे आपणे तेना चेला थईशुं तो आपणुं काम थशे. गौतमस्वामीए, भरत महाराजाए भरावेला सुवर्णना चतारि अठ दश दोय ए अनुक्रमे बीराजमान करेला चोवीसे तीर्थंकरना बिंबने जुहारी—दर्शन करीने भावस्तव चैत्यवंदन कर्युं. जगचिंतामणीनी आखी स्तुति करीने पछी प्रासादनी बाहिर

आवीने बेठा. एवामां वयरस्वामीनो जीव जे तिर्यक जृंनक देवता हतो ते त्यां आव्यो. तेने प्रतिबोध पमाडीने गौतमस्वामी नीचे आव्या. सघला तापसो आवीने तेमने पगे लाग्या. पछी ते तापसोने साथे लेई चाल्या जाय छे एवामां मार्गनेविषे एक गाम आव्युं. त्यां आगल गौतमस्वामीये तापसोने पुछ्युं के, तमारे नोजन करवानी शी इछा छे ? तेउए कह्युं के, स्वामी ! पंचामृत नोजननी इछा छे. ते तापसनी इछा जाणीने पोते वोहोरवा गया. ए वखते ए गाममां एक गृहस्थने घेर खीर नीपजावेली हती, तेनेज घेर आव्या. गृहस्थे पण नाव सहित खीर वोहोरावी. पडघो नरीने खीर लाव्या. तापस विचार करवा लाग्या के, आटला एक पडघे तो सौने कपाले चांदलो करशे तोए पण पूरो नहीं थाय ! तो आपणी नूख केम नागशे ? गौतमस्वामीये कह्युं के, हे महानुनावो ! कोगला करो. पछी त्रपणी पाणीये सर्वने कोगला कराव्या. त्यारपछी पारणाने अर्थे बेसवानुं कहे-वाथी पांचसेंएक पांचसेंएकनी त्रण पंक्तिउ करी बेठा. गौतमस्वा-मीये "अखीणमाणसीलधी" ए मंत्र नणी खीरना पडघाम अंगुठो मुकी सर्वने खीर प्रीसवा मांडी. सर्वे तापसोए आहार करवा मांड्यो. लब्धिना प्रनावथी सर्वने खीर पूरी पडी. सारी पेठे पारणां कर्यां. वली पुछ्युं के, कांई जोईये छे ? सौए ना पाडी एटले अंगुठो काढी लीधो. पछी जेटली खीर रही हती तेट-लीनुं पोते पारणुं कर्युं. आहार करतां शुन्न नावना नावतां थकां एक पंक्तिमां बेठेला पांचसे ने एक तापसने केवलज्ञान उपन्युं. त्यांथी वली आगल चालतां तापसे पुछ्युं के, स्वामी ! तमे क्यां पधारशो ? गौतमस्वामीये कह्युं के, अमारा गुरु पासे जईशुं. तापस कहे के, स्वामी ! तमारा ते गुरु केवा छे ? ते व-खते गौतमस्वामीये पोतांना जेवा गुरुना गुण सत्तामांहे छे तेवा-

ज तेमना मों आगल कहेवा मांड्या. अशोक वृक्ष आठ महा-प्रातिहारज तद्रूप जे बाह्यलक्ष्मीवंत छे, वली देवता सेवामां हाजरना हाजर छे, अणहुते पण कोडिगमे देव सेवा करे छे, त्रण भुवनना नायक छे, चामर छत्र सिंहासनादिके विराजीत छे. एवा वर्णव सांभलतां वांत पांचसें ने एक तापसने केवलज्ञान उपन्युं. त्यारपछी आगल जतां समोवसरण दीठुं. ते वखते तापसें पुछ्युं के, स्वामी ! आ शुं छे ? गौतमस्वामीए कह्युं के, एतो अमारा गुरुनुं समोवसरण छे. ते सांभलीने बाकी रहेला पांचसें ने एक तापसने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं. एवी रीते सर्वे तापसो केवली थया. पछी गौतमस्वामी कहे के, जे रीते हुं गुरुने वांदुं तेज प्रमाणे तमे पण वांदजो. तापसोए कह्युं के, वारु स्वामी ! परंतु तेमणे पोताने केवलज्ञान उत्पन्न थयानुं जणाव्युं नहीं. हवे प्रभुना समोवसरणमां गया त्यारे गौतमस्वामीये प्रभुने प्रदक्षिणा देई वांद्या अने पाछल जोयुं तो एक पण तापसने दीठो नही. पछी केवलीनी संप्रदायमां तेमने बेठेला जोई कहेवा लाग्या के, हे महानुभाव ! तमने में नहोतुं कह्युं? जे हुं वांदुं तेम तमे पण प्रभुने वांदजो ! तमे त्यां केम जई बेठा ? ते वखते भगवंतें कह्युं के, हे गोतम ! केवलीनी आशातना म करो. ए सघला केवली छे. त्यारे गौतमस्वामीये भगवंतने पुछ्युं के मने केवलज्ञान उपजशे के नही ? प्रभुए जणाव्युं के तने छेडे (थोडी उम्मर बाकी रहेतां) उपजशे, एटले तुं अने हुं बरोबर थईशुं. ते सांभलीने गोतमस्वामी हर्षवंत थया. आ कथामां सार ए ग्रहण करवानो छे के, गौतमस्वामीने तपस्या करवाथी घणी लब्धिउ उपजी अने तेवडे मनमानी जात्रा करी शक्या. तथा तापसोने जमाड्या शक्या. माटे तप करवो के जेथी लब्धि उपजे अने मागां कर्म पण त्रुटे. ४४

॥ तपना प्रज्ञाव उपर बीजो नंदीखेण मुनिनो प्रबंध ॥

राजगृही नगरीमां श्रेणिक राजाने नंदीखेण नामे पुत्र हतो. तेने पाली पोषी म्होटो करी यौवनावस्था आवतां पांचसो कन्याउ साथे पाणिग्रहण कराव्युं हतुं. एक वखत राजगृही नगरीना उद्यानने विषे वीरप्रज्ञु आवी समोसर्या. तेमनुं आगमन सांज्ञली श्रेणिकराजा सपरिवार वांदवा आव्या. वांदीने देशना सांज्ञलवा बेठा, तेमां नंदीखेण प्रतिबोध पाम्या. घेर आवीने नंदीखेणे मावित्र पासे दीक्षा लेवानी आज्ञा मागी. मावित्रे घरमां राखवा माटे घणा दृष्टांत कही समजाव्यो, पण तेमनुं कहेण नहीं मानतां उपरवट थई तेणे वीर प्रज्ञु पासे आवीने चारित्र आपवानी विनती करी. ते वखते आकाशे वाणी थई के, हजी एने ज्ञोगनो उदय छे. ज्ञगवंते पण एमज कह्युं. ते नहीं मानतां तेणे विचार्युं जे मुजने ज्ञोगकर्म शुं करशे? छता ज्ञोगने छांडुं छुं, तो ए शुं करनार छे? एम धारीने उजमाल थई तेणे प्रज्ञु पासे दीक्षा लीधी. पछी अरसविरस लुखो सुको आहार लेवा लाग्यो अने तप पण विशेष करवा मांड्यो. तेम छतां काम प्रदीप्त थतो गयो, तेथी तेमणे (नंदीखेणे) झंपापात करवा मांड्यो, त्यारे देवताए तेनुं निवारण कर्युं. झंपापात करवा दीधो नही. छेवट म्होटी म्होटी तपस्या करतां शरीर महा रांकडुं (शुष्क) थयुं. एकदा प्रस्तावे राजगृही नगरीमां जिक्षार्थे अजाणतां गणिकाने घेर जई चढ्या. त्यां धर्मलाज्ञ दई उज्ञा रह्या. गणीका कहे पधारो, अहीं रांकडीया शरीरवंत तुमथी शो उधारु? अहीं तो अर्थलाज्ञ जोईये! एवुं तेनुं वचन सांज्ञली मनमां अमख (अहंकार) आणी त्यां आगल पडेलुं डाज्ञलुं तरणुं लईने ते मुनि बोल्या के– "म्हारा तपनी शक्तिनो प्रज्ञाव होय तो सोनईयानो ढगलो थजो–" आम

कहेतां तत्काल तेमना शरीरप्रमाणे उंचो सांडा बार क्रोड सोनईयानो ढगलो थयो. पूर्वे (प्रथम) गणीकाए वचन कह्यां सीला, पढी मुनिये करी देखाड्या पीला. ते देखीने गणीका चमत्कार पामी. मुनि त्यांथी पाबा वलवा लाग्या एटले ऊट जईने गणीका आडी उन्नी रही अने ढेडो पकडीने बोली के–अरे स्वामी! अम अवला उपर रीस धरीने केम जाउ ढो ? तमारे जवुं होय तो तमारो ए माल देई जाउ, के अम साथे रही ज्ञोगवो. एहवे (तेवेला) आकाशे वाणी थई जे– तमारे एनीज साथे बार वर्ष ज्ञोगनो उदय ढे ते नहीं मिटे! एवुं सांज्ञली नंदीखेण उंघो मुहपत्ति उंचे वलगाडीने त्यां (वेश्याना घरमां) रह्या. परंतु आत्मानेविषे शुद्ध दर्शन खरेखरुं ढे. अज्यंतरना गुण निर्मल ढे. जेनी शुद्ध दशा ढे ते ए बाह्यकारण निमीत्तकारण अनुज्ञव्या विना आत्माने निर्मल न थाय (न करी शके) एवी ज्ञावदिशा आणीने नंदीखेणे प्रतिज्ञा करी के, नित्य नित्य दश प्राणीने प्रतिबोध पमाडवा. एवी रीते बार वर्षसुधी गणीकाना घरमां तेनी साथे ज्ञोग ज्ञोगवता रह्या ढतां प्रतिज्ञा प्रमाणे बेतालीस हजारने प्रतिबोध देई प्रज्ञु तथा थिवीर पासे मोकली दीक्षा लेवरावी. एम करतां बारे वर्षे ज्ञोगकर्म पूरां थयां त्यारे नव जणने प्रतिबोध्या बाद दशमो एक सोनी मल्यो. ते कहे के, तमे सर्वेने प्रतिबोध द्यो ढो अने पोते तो कामक्रीडा करो ढो! तमे केम प्रतिबोध पामता नथी ? तेवा समयनेविषे रसोई तैयार थयेली होवाथी गणीका वाट जोई रही हती के हमणां आवशे. एम वाट जोतां जोतां घणी वार थई तेथी रसोई टाढी थई गई. एटले गणीका तेमनी पासे आवी अने ज्ञोजनार्थे पधारवानी विनती करी. नंदीखेणे कह्युं के, आवीये ढीये! गणीका पाढी गई. नवी रसोई तैयार करी. जमवाने काजे आकली थती गणीकाए

बे त्रण वखत माणसने तेडवा सारु मोकल्या तो पण ते आव्या नहीं त्यारे वली पोते आवीने कह्युं जे-स्वामी उठो. मुजने भूख घणी लागी छे. असुर घणुं थयुं छे. नंदीखेणे कह्युं के- आ दशमो प्रतिबोध पाम्यो नथी माटे केम उठाय? गणीकाये कांईक आक्रोश अने कांईक शांत गुण एटले मध्यस्थ वचने करी कह्युं जे- ए कामी पुरुष न समज्यो तो चाल्युं! हवे एने ठेकाणे तुमेज दशमा, एमज करी जाणज्यो; माटे उठो, भोजन करीये. एवुं वचन सांभलतां तुरतज ते उठ्या अने साप जेम कांचलीने तजे तेम वेश्याने तजीदेई उंघो मुहपत्ति लेई वीरप्रभुनी पासे आवीने फरी चारित्र लीधुं. आत्मार्थ साध्यो. अहीं कहेवानुं तात्पर्य एटलुं छे जे- एक तृण मात्र ताणवाथी सोनईयानो ढगलो थयो ते तपनुं महात्म्य जाणवुं. माटे आदर सहित तपश्चर्या करवी.

॥ तपना प्रभावे लाख जोजननुं रूप करनार विष्णुकुमारनी कथा ॥

उजेणी नगरीमां धर्म नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने नमुंचि नामे मिथ्यादृष्टि प्रधान हतो. एकदा प्रस्तावे सुव्रताचार्य पांचसें मुनीना परिवारे उजेणी नगरीए पधार्या. सर्व नगरीना लोकसहित राजा तेमने वांदवा गयो. नमुंचि पण त्यां आव्यो. उद्धतपणे तेणे गुरुने पोतानी साथे वाद करवानुं कह्युं. वादमां एक क्षुल्लके तेने जीती लीधो. ते वखते शासन देवताए तेने थंभाव्यो. प्रभाते लोको तेने देखीने निभ्रंछवा लाग्या. एटले लज्जा पामी त्यांथी नीकलीने ते हस्तीनागपुरे गयो. त्यां पद्मोत्तर राजा राज्य करे छे. तेने एक ज्वाला नामे समकिती अने बीजी लक्ष्मी नामे मिथ्यात्वी, एम बे राणीउ हती. ज्वाला राणीने विष्णुकुमार अने महापद्मकुमार नामना बे पुत्र हता. एक वखत ज्वालादेवीए जिननो रथ अने लक्ष्मीदेवीये ब्रह्मानो रथ कराव्यो.

ते बन्नेना रथ गाममां फेरवतां सामा सामी मळ्या त्यारे तेमने मांहोमांहे विवाद थयो. पछी राजाये जे दीशाथी रथ लाव्या हता ते ज दीशाए पाछा वाल्या. ते देखीने महापद्मकुमार रीसाईने परदेश चाल्यो गयो. देश विदेश फरतां घणी राजऋद्धि मेलवी छेवटे चक्रवर्त्तिपणुं पामी ते पाछो पोतानी नगरीये आव्यो. नमुंचि पण हस्तीनागपुरमां आव्या पछी त्यां केटलोक वखत रही परदेश गयो हतो, ते फरतो फरतो फरी त्यां आवीने महापद्मकुमारने मळ्यो. तेणे नमुंचिने पोतानो प्रधान बनाव्यो. पद्मोत्तर राजाये विष्णुकुमारसहित राज्य छांडीने सुव्रताचार्य समीपे चारित्र अंगीकार कर्युं. महापद्मचक्रवर्तिए पोतानी मातानो, जे रथ फेरववानो मनोरथ हतो ते पूर्ण कर्यो. विष्णुकुमार मुनी घणी तपस्या करवा लाग्या. आकरा तपने प्रभावे ते मेरुपर्वत उपर जई कायोत्सर्गे रहेताहता. एम तप करतां छ हजार वर्ष थयां. एहवे एकदा सुव्रताचार्य साधुना परिवार सहित हस्तीनागपुरे चोमासु रहेवा माटे आव्या. ते सांभलीने नमुंचिये विचार्युं जे–एणे (सुव्रताचार्ये)मने भ्रष्ट कर्यो हतो माटे एने हणुं. पछी तेणे चक्रवर्त्ती पासे पूर्वे तेने आपेलो वर भंडारे राख्यो हतो तेनी याचना करी. चक्रवर्त्तीए ते वर पूर्ण करवानुं कहेतां नमुंचिए त्रण दीवसनुं राज्य माग्युं. ते राज्य देई राजा मोहोले गयो. नमुंचि राजा थयो. एटले शेठ शाहुकारादि प्रजावर्ग तेमज सर्व दर्शनी (बीजा बधा धर्माचार्यो) तेमने मलवा आव्या, पण सुव्रताचार्य आव्या नही. राजाए कहेवराव्युं के, " तमे अमने मलवा न आव्या माटे त्रण दीवसमां अमारी सर्व पृथ्वी मुकीने चाल्याजज्यो. महारा राज्यनी हदमां रहेशो तो तमने मारीश." एवुं सांभलीने आचार्ये संघने मुखे कहेवराव्युं जे–" साधु मलवा न आवे, अने साधुथी चोमासामां न जवाय." परंतु कोईनुं वचन तेणे (नमुंचिए)

मान्युं नही. पछी आचार्यमहाराजे विष्णुकुमारने मेरुपर्वत उपरथी तेडाव्या. तेमणे आवीने गुरुने वांद्या. गुरुए नमुंचिनी वात कही संजलावी. विष्णुकुमारे महापद्म पासे जईने कह्युं जे, आ साधुने उपसर्ग केम करो छो ? तेणे कीधुं के, हुं वचननो बांध्यो छुं. पछी नमुंचि पासे जईने तेने घणो घणो समजाव्यो पण ते न समज्यो अर्थात् पोतानो हुकम नहीं फेरवतां साधुने त्यांथी चाल्या नही जशे तो मारी नाखवामां आवशे एम ज्यारे आग्रहपूर्वक कह्युं त्यारे विष्णुकुमारे कह्युं के, " कांई पण रहेवाने जूमी दें छे ? तेवारे त्रण पगलां जूमी दीधी. विष्णुकुमारे तपनी शक्तिवडे लाख जोजननुं रूप करीने एक पग पूर्वे अने एक पग पश्चिमे मुकीने नमुंचिप्रत्ये कह्युं जे–हे नमुंचि ! त्रीजा पगनी अर्थात् त्रीजु पगलुं मुकवाने जमीन आप ? नहींतर तुं सुई रहे. नमुंचि बीजी कांई जमीन नहीं होवाथी नाईलाजे सुतो एटले तेनी पीठ उपर त्रीजो पग मुक्यो जेथी ते पृथ्वीमां पेसी गयो. ए रीते विष्णुकुमारे सर्व उपसर्ग समाव्यो. तपना प्रजावथी लब्धि पाम्या तेथी लाख जोजननुं रूप करी शक्या अने साधुनो उपसर्ग टाल्यो, माटे तप म्होटो छे. तपथी घणा तर्या छे अने तरशे माटे तप करवो ए घणुंज उत्तम छे.

॥ अथ जावनाविषे ॥

मनविण मिलवो ज्यूं चाववो दंतहीणे, गुरुविण जणवो ज्यूं जीमवो ज्यूं अलूणे ॥ जसविण बहु जीवी जीव ते ज्यूं न सोहे, तिम धरम न सोहे जावना जो न होहे ॥४५॥

जावार्थः–जेनी साथे मन जांग्युं तेनी साथे मल्या ते शा कामनुं ? कांई कामनुं नही. वली दांत तो पडी गया अने चाववानो स्वाद करवा जाय ते पण नकामुं जाणवुं, गुरु विनानुं

जे ज्ञान भणवुं ते पण नकामुं जाणवुं, वली मीठा वगरनुं भोजन जमतां स्वाद न पामीये, तेम भाव विना जे क्रिया अनुष्ठान करवुं, ते पण निष्फल जाणवुं. तेनुं फल मले नही. वली जस (कीर्त्ति) वगर बहु जीवनारो माणस जेम शोभा न पामे तेम भाव विनानो जे धर्म करवो ते पण न शोभे. माटे भावना जे ठाली भाववी ते सर्वथा प्रकारे कांईपण काम नावे. एटला सारु शुद्ध भावना सहितज धर्म कह्यो छे.

भरत नृप ईलाची जीरणश्रेष्ठि भावे, वली वलकल चीरी
केवल ज्ञान पावे ॥ बलभद्द हरिणो पंचमे स्वर्ग जाये,
इहज गुण पसाये तास निस्तार थाए ॥ ४५ ॥

भावार्थः—भावे करीने अर्थात् भावना भावतां भरत चक्रवर्त्ती तथा ईलाची कुमार केवलज्ञान पाम्या तथा जीरणशेठ देवलोकनां सुख पाम्या, वली वलकलचीरी पण केवल ज्ञान पाम्या अने बलभद्रमुनी तथा हरण पांचमे देवलोके देवपणे उत्पन्न थया. अने एज गुण वडे अर्थात् भावना भाववाथी तेमनो निस्तार थयो अने थशे अर्थात् मोक्ष गया अने जशे.

॥ भावना भाववा उपर भरत चक्रवर्त्तीनो प्रबंध ॥

भरत चक्रवर्ती छ खंड पृथ्वी साधी दिग्विजय करीने घेर आवीने राज्यलीला भोगवता थका एकदा आरीसाभुवन (काचना मेहेलमां) बेठा हता. ते वखते मात्र तेमना हाथनी एक अनामिका (टचली) आंगलीमां आभरण (वींटी) नहीं पहेरेलुं होवाथी ते देखीने विचारवा लाग्या जे आ आंगली सिवाय बधुं शरीर शोभायमान लागेछे, तेनुं कारण तेमां आभरण पहेरेलुं नथी एज जणाय छे. तथापि आभूषण विना तमाम काया केवी देखाय छे ए जोवुं जोईये । एम विचारी अंग उपरनां सघलां

आभूषण उतार्यां, तो शरीरनी शोभा तदन जोवामां आवी नही, अर्थात् आभूषण विनानुं अंग सारुं देखायुं नही. ते वखत ए अनित्य भावनामां चढ्या, क्षपक श्रेणी मांडी घाती कर्म खपावीने केवल ज्ञान पाम्या. एटले शासन देवताये साधुनो वेश आप्यो. त्यांथी विहार कर्यो त्यारे तेमनी साथे दस हजार मुगटबंध राजा नीकळ्या. घणा दीवस पृथ्वी पावन करी, घणा जीवने प्रतिबोध पमाडी अष्टापद तीर्थनेविषे अघातीयां कर्म खपावीने अनंतचतुष्टय थया अर्थात् भरत चक्रवर्त्ती मोक्षप्रत्ये पाम्या. ए अनित्य भावनानुं फल जाणवुं.

॥ भावना भाववा उपर बीजो एलाचीकुमारनो प्रबंध ॥

एलावर्धनपुर नामना नगरनेविषे ईभ्य नामे व्यवहारियानो पुत्र एलाचीकुमार नामनो हतो. अनुक्रमे म्होटो थतां ए एलाचीकुमार बोहोतेर कलामां प्रवीण थयो. मातापिताने ते अति वाहालो हतो. एकदा ए नगरमां नाटकीया आव्या. तेनी पुत्रीप्रत्ये जोईने एलाचीकुमार व्यामोह पाम्यो. तेणे नाटकीयाने कह्युं जे- तहारी पुत्री मने परणाव. नाटकीयो कहे के, अमारी न्यातिविना पाणीग्रहण न करीये अर्थात् न्याति सिवाय बीजाने अमे कन्या आपता नथी. पछी नाटकीयाने धननी घणी लालच दीधी त्यारे छेवटे तेणे कह्युं के, "परणवुं होय तो अमारा भेला आवो, अमारी (नाचवानी) कला शीखो अने कोईक राजाने रीझवी धन लावो, तो तमने कन्या परणावीये." पछी एलाचीकुमारे पोताना मातापिताने कह्युं जे- हुं तो ए नाटकीयामां रहीश अने एनो वेश आदरीश. माटे मने आज्ञा आपो, के जेथी हुं तेनी पुत्री परणुं. मातापिताये कह्युं के, हे पुत्र ! एनाथी पण अधिक स्वरूपवंत कन्या तने परणावीशुं. पण एलाचीकुमारे तेमनुं कहेवुं न मान्युं अने

नाटकीया साथे चाली नीकल्यो. तेमना भेगो रही नाचवानी सर्वे कला शीख्यो. पछी ते नाचवामाटे जवा लाग्यो. एम करतां करतां एक वखत बेनातट नगरनेविषे तेओ गया. त्यांना राजाने मल्या. राजाए नाटक करवानी आज्ञा आपी. राजासहित सर्व पुरजन जोवा आव्या. एलाचीकुमारे वांस रोपीने नाटक करवा मांड्यो. नाटकणी ढोल वगाडवा लागी. राजा तेनी खूबसुरती जोई मोह पामी मनसाथे विचारवा लाग्यो के, जो आ नाटकीयो वांस उपरथी पडे अने मरण पामे तो हुं ए नाटकणीने परणुं. दुरध्यानमां राजा कृष्णलेश्याना घरमां पड्यो. एलाचीकुमारे वांस उपर अधर नाची सर्व लोकनां मन रीझव्यां. सर्व खुसी थया अने हर्ष पाम्या थका कहेवा लाग्या के, घणांए नाटक जोयां, पण आ नाटकना समान पृथ्वीमां बीजो आपणे दीठो नथी. एलाचीकुमारे नाटक करी वांस उपरथी हेठे उतरी राजाने मुजरो कर्यो. त्यारे राजाए कह्युं जे– हजी ऊभो शुं थई रह्यो छे ? घणी वेला थाय छे, अमे खोटी थईये छीये, वांस उपर केम चढतो नथी ? तेवारे वली ढीगां ढीगांग, एम ढोल वाह्यो, अने जे बीजा राजाओए दान आपेलां हतां तेमनां गुणानुवाद गातां ते बीजी वार वंशाग्रे चढ्यो. लोक सर्व आश्चर्य पाम्या. पण राजा तो, ए क्यारे पडीने मरण पामे, एवीज राह जोई बेठो हतो. वली बीजी वार वांस उपरथी उतरीने राजाने मुजरो करी सन्मुख ऊभो रह्यो. त्यारे पण राजाए तेहज जवाब दीधो. तेथी एलाचीकुमारादि नाटकणी प्रमुख सर्व लोक चमक्या अने मनमां विचारवा लाग्या के, राजानी ध्यांनत वगडी दीसे छे. वली राजाना आदेशे ते त्रीजी वार वांस उपर चढ्यो. ते वखत नाटकणी पोताना मनसाथे विचार करवा लागी के, जूठं तो खरा ! ए राजा साहुकार वखतावर कहेवाय

छे, तेम छतां तेनी धारणा खोटी मालम पडे-छे. म्हारो स्वामी म्हारे माटे एटलुं बधुं दुःख सहे छे माटे परमेश्वर करे ने ए म्हारा भर्तारनी आशा पूरी पडे तो घणुं सारुं ! एवामां वांस उपर चढ्या थका एलाचीकुमारनी नजर नगर मध्ये एक व्यवहारीयाना घरमां तेनी स्त्री सिंहकेसरीया मोदकनो थाल भरी साधुने वोहोरावती हती तेना उपर पडी. घणो आग्रह करीने ते स्त्री साधुने मोदक लेवानुं कहेती हती. पण साधु ते वोहोरता नथी. एवुं जोईने एलाचीकुमार अनित्य भावनाये चढ्यो. ते भावना भावतां भावतां घातिकर्मनो क्षय करी ते केवलज्ञान पाम्या. देवताए तेनो उच्छव कर्यो. राजा उठीने पगे लाग्यो. नाटकणीये चारित्र लीधुं. एलाचीकुमार मोक्षे गया. माटे शुभ भाव प्रगट थाय तो भावनामांज लाभ घणो जाणवो. भाव रूडो छे, मुख्य भावना विना कांई उद्धार न थाय. ए एलाचीकुमारनो संबंध संक्षेपमात्र कह्यो. आगल तो घणो संबंध छे ते बीजा ग्रंथोथी जाणी लेवो.

॥ भावना भाववा उपर त्रीजो जीरणशेठनो प्रबंध ॥

श्वेतांबिका नगरीनेविषे छद्मस्थावस्थाये श्री महावीर स्वामी चोमासी तपे रह्या हता. त्यां जीरणशेठ नित्य नित्य सवारे जइने प्रभुजीने वांदीने विनती करतो हतो के, स्वामी ! म्हारे घेर पधारो, भात पाणीनो लाभ देज्योजी. प्रभुजी प्रत्युत्तर देता नहोता, तेथी उपवास हशे एम धारी जीरणशेठ पोताने घेर जतो. चोमासी तप पूर्ण थतां पारणाने दिवसे ज्यारे शेठे भगवंतने वांदीने विनती करी त्यारे वर्त्तमान जोग कहेवाथी ते आज तो नक्की आवशे एम धारीने घेर गयो. पछी पोताना घरनी खडकीए उभो रही वाट जोवा लाग्यो, जे हमणां प्रभुजी पधारशे. एम उभो उभो भावना भावे छे. निरमोही प्रभुजी

तो अभिनव शेठने घेर गया, के जेने धर्म उपर तेवी रुची नहोती. तेणे भीखारी जाणीने घोडाने वास्ते निपजावेला अड-दना बाकला प्रभुजीने अपाव्या. ते प्रभुजीये वोहोर्या, एटले आकाशे देवडुंदुभिनो शब्द थयो. जीरणशेठे ते सांभल्यो अने जाणवामां आव्युं के, प्रभुजीए अभिनव शेठने घेर पारणुं कर्युं. ते वखत भावनी वृद्धि हती ते खंडाणी. पूर्वे प्रभुनी वाट जोई भावना भावतां बारमा देवलोक सुधी क्षपक श्रेणीये चड्या हता. एवुं जो अंतर्मुहुर्त्त ध्यान अर्थात् भावनाथोडो समय वधारे रही होत तो मोक्ष पामत. परंतु देवडुंदुभि सांभलीने ते भा-वना तुटीगई तेथी भावनी वृद्धिनो बंध पड्या मुजब जीरणशेठ बारमे देवलोक गया. माटे भावना ए सर्वथी प्रधान एटले म्होटी छे.

॥ भावना भाववा उपर चोथो वलकलचीरीनो प्रबंध ॥

पोतनपुर नगरमां प्रसन्नचंद्र राजा राज्य करतो हतो. तेनो भाई घोडेस्वार थई क्रीडा करवामाटे उद्यानमां जतां आडे मार्गे चढी जवाथी वनमां घणोज दूर नीकली गयो. ते घेर न आव्यो तेथी राजाये तेनी घणी शोध करावी पण कांई भाल मली नहीं. राज्यकुमार जतां जतां तापसने आश्रमे गयो. ए तापसने आ कुमारना पिता साथे संसारी अवस्थामां संबंधपणुं हतुं तेथी तेणे घणां वानां करी तेने (राज्यकुमारने) पोतानी पासे राख्यो. एनुं नाम वलकलचीरी पड्युं. एक वखत ते तापसना आश्रममां बेठो थको सेहेजे सेहेजे तापसना वासण जोतो हतो. ते जोतां जोतां धर्मक्रियाना उपकरण तेना दीठामां आव्यां. पछी पूजवुं अने प्रमार्जवुं एवुं करतां देखी मनमां ईहापो करतां तेने जातिस्मरण ज्ञान थयुं. एटले तेणे पोताना पाछला भवनुं स्वरूप दीठुं. तेथी पाछले भवे साधुपणुं पाल्युं हतुं एम तेना समजवामां आव्युं. हवे ते शुभ भावना भावतां क्षपक-

छे, तेम छतां तेनी धारणा खोटी मालम पडे छे. म्हारो स्वामी म्हारे माटे एटलुं बधुं दुःख सहे छे माटे परमेश्वर करे ने ए म्हारा भर्त्तारनी आशा पूरी पडे तो घणुं सारुं! एवामां वांस उपर चढ्या थका एलाचीकुमारनी नजर नगर मध्ये एक व्यवहारीयाना घरमां तेनी स्त्री सिंहकेसरीया मोदकनो थाल भरी साधुने वोहोरावती हती तेना उपर पडी. घणो आग्रह करीने ते स्त्री साधुने मोदक लेवानुं कहेती हती. पण साधु ते वोहोरता नथी. एवुं जोईने एलाचीकुमार अनित्य भावनाये चढ्यो. ते भावना भावतां भावतां घातिकर्मनो क्षय करी ते केवलज्ञान पाम्या. देवताए तेनो उत्सव कर्यो. राजा उठीने पगे लाग्यो. नाटकणीये चारित्र लीधुं. एलाचीकुमार मोक्षे गया. माटे शुभ भाव प्रगट थाय तो भावनामांज लाभ घणो जाणवो. भाव रूडो छे, मुख्य भावना विना कांई उद्धार न थाय. ए एलाचीकुमारनो संबंध संक्षेपमात्र कह्यो. आगल तो घणो संबंध छे ते बीजा ग्रंथोथी जाणी लेवो.

॥ भावना भाववा उपर त्रीजो जीरणशेठनो प्रबंध ॥

श्वेतांबिका नगरीनेविषे छद्मस्थावस्थाये श्री महावीर स्वामी चोमासी तपे रह्या हता. त्यां जीरणशेठ नित्य नित्य सवारे ज इने प्रभुजीने वांदीने विनती करतो हतो के, स्वामी! म्हारे घेर पधारो, भात पाणीनो लाभ देज्योजी. प्रभुजी प्रत्युत्तर देता नहोता, तेथी उपवास हशे एम धारी जीरणशेठ पोताने घेर जतो. चोमासी तप पूर्ण थतां पारणाने दिवसे ज्यारे शेठे भगवंतने वांदीने विनती करी त्यारे वर्त्तमान जोग कहेवाथी ते आज तो नक्की आवशे एम धारीने घेर गयो. पछी पोताना घरनी खडकीए उभो रही वाट जोवा लाग्यो, जे हमणां प्रभुजी पधारशे. एम उभो उभो भावना भावे छे. निरमोही प्रभुजी

तो अभिनव शेठने घेर गया, के जेने धर्म उपर तेवी रुची नहोती. तेणे भीखारी जाणीने घोडाने वास्ते निपजावेला अड-दना बाकला प्रभुजीने अपाव्या. ते प्रभुजीये वोहोर्या, एटले आकाशे देवदुंदुभिनो शब्द थयो. जीरणशेठे ते सांभल्यो अने जाणवामां आव्युं के, प्रभुजीए अभिनव शेठने घेर पारणुं कर्युं. ते वखत भावनी वृद्धि हती ते खंडाणी. पूर्वे प्रभुनी वाट जोई भावना भावतां बारमा देवलोक सुधी क्षपक श्रेणीये चढ्या हता. एवुं जो अंतर्मुहुर्त्त ध्यान अर्थात् भावनाथोडो समय वधारे रही होत तो मोक्ष पामत. परंतु देवदुंदुभि सांभलीने ते भा-वना तुटीगई तेथी भावनी वृद्धिनो बंध पड्या मुजब जीरणशेठ बारमे देवलोक गया. माटे भावना ए सर्वथी प्रधान एटले म्होटी छे.

॥ भावना भाववा उपर चोथो वलकलचीरीनो प्रबंध ॥

पोतनपुर नगरमां प्रसन्नचंद्र राजा राज्य करतो हतो. तेनो भाई घोडेस्वार थई क्रीडा करवामाटे उद्यानमां जतां आडे मार्गे चढी जवाथी वनमां घणोज दूर नीकली गयो. ते घेर न आव्यो तेथी राजाये तेनी घणी शोध करावी पण कांई भाल मली नहीं. राज्यकुमार जतां जतां तापसने आश्रमे गयो. ए तापसने आ कुमारना पिता साथे संसारी अवस्थामां संबंधपणुं हतुं तेथी तेणे घणां वानां करी तेने (राज्यकुमारने) पोतानी पासे राख्यो. एनुं नाम वलकलचीरी पड्युं. एक वखत ते तापसना आश्रममां बेठो थको सेहेजे सेहेजे तापसना वासण जोतो हतो. ते जोतां जोतां धर्मक्रियाना उपकरण तेना दीठामां आव्यां. पछी पूजवुं अने प्रमार्जवुं एवुं करतां देखी मनमां ईहापो करतां तेने जातिस्मरण ज्ञान थयुं. एटले तेणे पोताना पाछला भवनुं स्वरूप दीठुं. तेथी पाछले भवे साधुपणुं पाल्युं हतुं एम तेना समजवामां आव्युं. हवे ते शुभ भावना भावतां क्षपक-

श्रेणीये चढ्या. तेना प्रजावथी केवल ज्ञान उपन्युं अने मोक्ष गया. माटे धर्मनी जावना जाववी ए श्रेष्ठ छे.

॥ जावना उपर पांचमो बलजद्र, हरण अने रथकारनो प्रबंध ॥

द्वारिका नगरीमां कृष्ण वासुदेव तथा तेमना जाई बलजद्र (बलदेव) राज्य करता हता. एकदा तेमना पुत्रो सांब प्रद्युम्नादिक वनमां जईने द्वीपायन ऋषीने पत्थरादि मारी पाछा नगरीमां आव्या. तेथी द्वीपायने द्वारिकानो दाह करवानुं नीयाणुं कर्युं. ते मरण पामी अग्निकुमार देवता थयो. तेणे द्वारिका नगरीये आवीने नगरमां रहेनारा छपन कुल कोटी अने नगरनी बाहार रहेनारा बोहोतेर कुल कोटी जादवो सहित सर्व नगरवासीउने, कृष्ण अने बलदेव ए बे सिवाय बाली जस्म कर्या. पछी कृष्ण अने बलजद्र बन्ने जाईयो त्यांथी नीकलीने वनमां गया. त्यां कृष्ण तृषातुर थया. तेने माटे बलजद्र जल लेवा गया. कृष्ण पग उपर पग चढावी सुई रह्या. तेवामां जराकुंवर नामे तेमनो जाई कृष्णनुं मरण तेना हाथथी थवानुं छे एम जाणीने पोताने हाथे एम बनवा न पामे माटे एकाकी वनमां रहेतो हतो तेणे कृष्णना पगमां वेगलेथी पद्म देखी मृगनी भ्रान्तिये बाण मार्युं. ते बाणे करी कृष्णनो पग वींधाणो. समीप आवीने जोयुं तो मृगने बदले कृष्णने देखीने ते घणो खेद पाम्यो. बलदेव आवशे तो एने मारशे एम चिंतवी कृष्णे तेने विदाय कर्यो. पछी कृष्णे प्राण त्याग कर्या. बलदेव जल लेईने आव्या. जाईने सुतो देखी तेने जगाडवा लाग्या, पण जवाब न दीधो. घणा कालावाला करी कह्युं, परंतु मृतक देह होवाथी कांइ उत्तर न मल्यो तोपण प्रीतिने लीधे पोताथी रीसाईने ए (कृष्ण) बोलता नथी एम पोताना मनमां निश्चय करी तेने उपाडीने छमास सुधी फर्या. छेवटे काया विणसती देखी देवताए दृष्टांत कही बतावीने सबने

अग्नि संस्कार कराव्यो. पछी वैराग्य पामी बलदेवे चारित्र ग्रहण कर्युं. वनमांहे तप करतां एक वखत पारणाने अर्थे गाममां आव्या. त्यां नगरनी स्त्रीउ बलज्ञद्रनुं रूप देखी कूप उपर रही थकी घटने ठामे पुत्रने गले गालो घालीने फांसवा लागी. एवुं देखीने बलज्ञद्रमुनी "हवेथी नगरमां न पेसवुं. वनमांज सुजतो आहार लेई त्यां रहीश," एवो नियम लेई वनमां गया. त्यां धर्मनो उपदेश करता हता तेथी घणां पशु धर्म पाम्या. तेमां एक मृगलो (हरण) शुद्ध श्रावक, जाणे मुनीनो शिष्यज न होय! तेम मुनीने आहारने अर्थें जोतो रहे ठे. एक वखत एक रथकार (सुथार) काष्ट कापवा माटे वनमां आव्यो. तेने देखीने मृगलो मुनीने तेडी आव्यो. रथकारे मुनीने ज्ञावसहित शुद्ध आहार वडे पडीलाज्या. तेवारे मृगलो पण ज्ञावना ज्ञाववा लाग्यो जे, हुं माणस होत तो आवी रीते मुनीने दान देत. वली रथकार मनमां चिंतवतो हतो के, हुं धन्य छुं, के आज में आवा मुनीने पडीलाज्या. साधु पण पोतानी ज्ञावनामां लीन ठे. एवा अवसरनेविषे अरधी कापेली वृक्षनी डाल त्रुटी पडी. तेथी मुनी, मृगलो अने रथकार, ए त्रणे मरण पामी पांचमे देवलोके देवपणे उपन्या. ए पण ज्ञावनुं कारण जाणवुं. बलज्ञद्रजीनी कथा घणी म्होटी ठे ते बीजा ग्रंथोथी जाणी लेवी. अहीं तो ज्ञावना ज्ञाववा उपर संक्षेप मात्र कहीठे.

॥ अथ क्रोध विषे ॥

तृण दहन दहंतो वस्तु ज्यूं सर्व बाले, गुण रयणं ×ज्ञरी त्यूं क्रोध काया प्रजाले, प्रसम जलद धारा वह्निने क्रोध वारे, ^मणुअ ज्ञव समारे सुगुरु सीख धारे ॥ ४७ ॥

× बीजी प्रतमां 'रयण' ने बदले 'करण' ठे. ^'मणुअ ज्ञव समारे सुगुरु सीख धारे,' आचरणने ठेकाणे बीजी प्रतमां 'तप जप व्रत सेवा' प्रीति वह्नी वधारो. एवु चरण ठे.

भावार्थः—घासनो अग्नि पण बालतो बालतो जेम सर्व वस्तुने बाली नाखे, तेम गुणरूपीया रत्ने भरी जे काया, तेने क्रोध बाली नाखे छे. ए क्रोधरूपीया चंडालनुं जोर क्यारे मटे? के ज्यारे प्रसम कहेतां उपसमरूपीयो जलधर एटले मेघ वर्षे त्यारे क्रोधरूपी अग्नि मटे, अर्थात् घटने विषे उपशम समता प्रगट थाय त्यारे क्रोध नाश पामे. अने उत्तम गुरुनी शिखामण मनमां धारण करे तो पामेलो मनुष्यभव सफल थाय. माटे सुगुरुनी शिखामण मानीने उपशम आदरी क्रोधने दूर करवो. ४७

धरणि परशुरामे क्रोधे निःक्षत्रि कीधी, धरणि सुभुमचक्रे क्रोधे निःब्रह्म साधी॥ नरकगति सहायी क्रोध ए दुःख दाई, वरज वरज भाई प्रीति दे जे वधाई॥ ४८॥

भावार्थः—क्रोध थकी परशुरामे पृथ्वी निःक्षत्री कीधी अर्थात् तेना जाणवामां जेटला क्षत्री आव्या ते सघलाने मारी नाख्या, सुभुम चक्रवर्तीए ब्राह्मण विनानी पृथ्वी करी अर्थात क्रोधे करी सघला ब्राह्मणोने मारी नाखीने पृथ्वी पोताने कबजे करी, माटे नर्कगतिना सखाई एटले आपवावाला ए दुःखदाई क्रोधने हे भाई! तुं छांड! छांड! वली क्रोध ए प्रीतने पण नसाडनारो छे.

॥ क्रोध करवा उपर परशुराम अने सुभुम चक्रवर्त्तीनो प्रबंध ॥

प्रथम देवलोके एक मिथ्यात्वी अने एक जैन, एवा बे देवताने मांहोमांहे धर्मनो विवाद थयो. नित्यप्रत्ये तेउ परस्पर विवाद करता एकेकनो धर्म वखाणवा लाग्या. छेवट तेउ तेनी (धर्मनी) परीक्षा करवा माटे मृत्युलोकमां आव्या. ए वखत मिथुला नगरीना राजा पोतानी मेले लोच करीने (दीक्षा अंगीकार करीने) तत्काल विहार करी जता हता. तेमने जोई मिथ्यात्वी देवताप्रत्ये जैन देवता कहेवा लाग्यो के, आपणे एक शेरडीए अर्थात् रस्ते जवाना एक मार्गे कीडीयो विकुर्विये अने

बीजे मार्गे तीखी अणीआली सूलो विकुर्वि मुनीनी परिक्षा करीये ? मिथ्यात्वी देवताए ए प्रमाणे करवानी हा कहेवाथी एक मार्गे कोडो कीडीउ अने बीजे मार्गे तीखी भाला जेवी अनेक सूलो विकुर्वी. मुनीराजे विहार करतां एक मार्गे कीडीउं अने बीजे मार्गे सूलो. दीठी. तेथी विचार्युं जे—आत्म विराधना रुडी पण जीवनी विराधना अति दुःखदाई माठी गति देवावाली छे ते माटे संयम-विराधना टालवी. एम धारी कीडीउंवालो मार्ग तजीने सूलो-वाला मार्गे चाली नीकल्या. पग लोही लूहाण थया. रुधिरनी धारा चाली, पण लगार मात्र मनमां दूहवाणा नही. जैन देवता ए जोई साधुने पगे लागी मिथ्यात्वी देवताप्रत्ये कहेवा लाग्यो के, केम ? जोयुं ? जैननो तो एवो पराक्रम महिमा छे. त्यार-पछी बन्ने देवता एक अटवीमां आव्या. त्यां जमदग्नि नामे तापस तपस्या करतो हतो के, खेडेली भूमीये पग न मुकवो अने फल फूल पडेलां खावां. वली तापस जूटा जूट मलिन छे, एनो माननारो जे देवता, तेणे जैन देवताने कह्युं के, आपणे एनुं पारखुं जोईये. पछी ते देवताये चडकला चडकली (चकलो अने चकली) नुं रूप करीने ते तापसनी लांबी म्होटी वधी गयेली दाढीमां मालो करी बेसाड्युं. पछी चकले चकलीने कह्युं के, तुं अहीं रहेजे, हुं काम छे ते करी आवुं. चकलीए कह्युं के, हुं तमने नहीं जावा देउं. चकलो कहे शा माटे ? चकली कहे के, मने तमारो विश्वास नथी आवतो माटे ! चकले कह्युं के, तेनुं कारण तो कहे ? चकलीए जणाव्युं के, कदापि तमे मुज सरखी अवर कोई स्त्री मले अने ते तमने आववा न दे त्यारे तमे नावो माटे ! वली तमे तेणीना उपर मोह पामीने रहो तो म्हारी शी वले ? हुं शुं करूं ? पछी चकले चार हत्या प्रमुखना घणा सम खाधा तो पण चकलीए मान्युं नहीं.

अने कह्युं के, जो तमे आ तापसना सम खाउ तो जावा देउं, नहींतर नहीं जावा देउं. चकले कह्युं के-"जो हुं पाछो ना आवुं तो आ तापसनुं पाप म्हारे माथे. ए पाप लेवा जेवुं नथी, परंतु ते हुं तह्यारे वास्ते लेउं छुं."चकलानुं आवुं वचन सांजलतां तापसने क्रोध चड्यो. तेणे एक हाथे चकलो अने बीजे हाथे चकलीने पकडी पुछ्युं जे-कहो रे कहो! तमे मने पापी केम कह्यो? में एवुं शुं पाप कर्युं छे,के तमे मने पापी ठराव्यो ? चकलारुपे देवताए तापसने कह्युं के, त्यारे तमे शो धर्म करो छो ते तो कहो ? अमे तो तमारा गुणने उंलख्या; पण तमे तमारा जे साधुना गुण तेने ज्यारे नथी उंलखता त्यारे तमे शुं धर्म करता हशो ? तापस कहे जे-तमे जनावर ज्यारे जाणोछो त्यारे तुमथकी अमे कांई जईशुं ? अमे अमारो धर्म जाणताज होईशुं अर्थात् जाणीये ज छीये. पक्षीए कह्युं के, जो जाणो छो तो कहो ? तापसे कह्युं के, तुं तो कहे ? तह्यारुं हुं डह्यापण तो जोउं ? चकलीए कह्युं के, त्यारे तुं कांईए जाणतो नथी, माटेज तह्यारा सम खवरावबा पडे छे तो! तापस कहे के, रे रांड! एवुं शुं छे ? ते वखते पक्षी बोल्यां के, तमारा धर्मशास्त्रमां कह्युं छे जे-"अपुत्रस्यगतिर्नास्ति, स्वर्गोनैव च नैवच ॥ तस्मात्पुत्रमुखं दृष्ट्वा, स्वर्गेगछंतिमानवा ॥ १ ॥ अर्थ-अपुत्रीयानी सारी गति थती नथी अने तेने स्वर्ग मलतुं नथी, ज्यारे पुत्रनुं मों जुवे छे अर्थात् जेने पुत्र होयछे तेज माणस स्वर्गे जाय छे." माटे खुल्लुंज देखाय छे के, तमे तो मांरु (फोकट) खोटी थाउ छो. पंखीनां आवां वचन सांजली तापस ध्यानथी चूक्यो, अने विचारवा लाग्यो के, ए वात तो खरी! जुउ-जनावर सरखां पण म्हारी वात जाणे छे! एना जेटली पण म्हारामां समजण नथी. एवुं मनमां चिंतवी त्यांथी नजीक एकनगर हतुं त्यां आवी राजसजामां गयो. राजा तापसने देखी

जयवंत थई उठीने सामो आव्यो, अने प्रणाम करी कह्युं के, आपनुं आगमन केम थयुं छे ? मारा योग्य जे कांई काम काज होय ते फरमावो. हुं ते शीरने जोरे (शीर साटे) करीश. तापसे कह्युं के, तहारे सात पुत्रीउं छे तेमांथी एक मने परणाव, नहींतर बालीने नस्म करीश. ए वचन सांजली राजा बीहीन्यो, जे रखे ए तापस कांई करे ! अर्थात् राजाने तापसनो घणो जय लाग्यो तेथी तेणे कह्युं के, स्वामी ! म्हारी सात पुत्रीउंमांथी तमने जे चाहे, तेने तमे सुखे वरो. एवुं सांजलीने ज्यां राजकन्याउं हती त्यां ते गयो. तेनुं मलीन शरीर देखीने छ कन्याउं नाशी गई. पण एक न्हानी धूलमां रमती हती ते तेमज रही. एटले तापसे तेने एक बीजोरु आपवा पोतानो हस्त तेनी सामे लंबाव्यो, तेथी ते लेवा माटे बालिका, के जेनुं नाम रेणुका हती तेणीए पोतानो हाथ सामो कर्यो. अर्थात् हाथ धर्यो. तापस तरत ते कन्याने उपाडी राजा पासे लाव्यो, अने कह्युं के, आ कन्या मने चाहे छे. राजाए ते कन्या तापसने परणावी. करमोचन वेलाए घणुं धन धान्य ढोर विगेरे राजाए आप्युं ते सघलुं लेईने राजकन्या सहित तापस वनमां ज्यां पोतानो आश्रम हतो त्यां आव्यो. अनुक्रमे जमदग्नि तापसने त्यां रहेतां रेणुका युवावस्था पामी. एक वखत तेणीए तापस (पोताना पति) ने कह्युं के, स्वामी ! बे चरु मंत्री आपो. तापसे पुछ्युं के, बे चरुने शुं करशो ? रेणुकाए जणाव्युं के, एक म्हारी बहेनने आपीश अने एक हुं खाईश. तापसे पुछ्युं के, ए तहारी बहेन क्यां छे ? रेणुकाए जणाव्युं जे—हस्तीनागपुरमां अनंतवीर्य राजाने घेर छे, तेने माटे मंत्री आपो. पछी तापसे एक ब्राह्मणनो अने एक क्षत्रीनो, एम बे चरु मंत्री आप्या. रेणुकाए एक चरु पोतानी बहेनने मोकल्यो अने एक पोते खाधो. अ-

नुक्रमे बन्ने बहेनोए गर्भधारण कर्यो, अने पूर्ण मासे पुत्रो प्रसव्या. ते म्होटा थया. त्यारपछी रेणुका पोतानी बहेनने मलवा सारु हस्तीनागपुरे गई. त्यां तेनुं रूप जोई अनंतवीर्यराजा तेना पर मोहीत थयो थको तेनी साथे भोग भोगववा लाग्यो तेथी तेणीने गर्भ रह्यो. जमदग्निए ए वात जाणी तेथी हस्तीनागपुर जई रेणुकाने तेडी लाव्यो. रेणुकानो पुत्र, के जेनुं नाम परशुराम राखवामां आव्युं हतुं ते तापसीविद्या सीख्यो हतो. तेणे पोतानी मातानुं दुश्चरित्र जाणी तेणीने कालधर्म पमाडी, अर्थात् मारी नाखी. त्यारपछी तेणे हस्तीनागपुर जईने अनंतवीर्यराजाने पण मार्यो. अनंतवीर्यना पुत्र कृत्यवीर्ये जमदग्निने मरण पमाड्यो. एम करतां बन्ने वच्चे विषवाद वधतो गयो. परशुरामे क्रोधे करी एकवीस वार नक्षत्री पृथ्वी करी, अर्थात् सघला क्षत्रीओने मारी नाख्या. क्षत्रीनुं एक बालक सरखुं पण जीवतुं रहेवा दीधुं नहीं. कृत्यवीर्यने पण मार्यो. ते वखत तेनी सगर्भा स्त्री नासीने वनमां जती रही. त्यां तेणीने एक तापसे भूमीग्रह (भोंयरा) मां छानी राखी. तेणीए त्यां पुत्र प्रसव्यो. ते भूमीग्रहे उपन्यो माटे तेनुं नाम 'सुभुम' पाड्युं. अनुक्रमे ते म्होटो थयो. तापसे तेने भणाव्यो. ते सर्व कला सीख्यो. एकदा समये सुभुमे पोतानी माताने पुछ्युं जे– 'पृथवी एटलीज छे?' माताए जणाव्युं के– 'पृथवी तो घणी छे, पण आपणे तो बीके करी अहीं रह्या छीये.' सुभुमे पुछ्युं– कोनी बीक छे? माताए जणाव्युं जे– 'परशुरामे तहारा पिताने तथा पिताना पिताने मारी आपणुं राज्य लेईने सघला क्षत्रीओने हण्या छे.' एवुं सांभली सुभुमकुमारने क्रोध चढ्यो, तेथी तत्काल भोंयरामांथी नीकलीने पृथवीने जोवालाग्यो. त्यांथी तेणे फरतो फरतो हस्तीनागपुरे आवीने चक्रवडे परशुरामने

मार्यो.पछी चक्रवर्तीपणुं पामीने एकवीस वार निःब्राह्मणी पृथ्वी करी तेमणे द्वेषे करी संबंधी छतां एक बीजाने हण्या अने तेने लीधे बीजानो पण घाण वाली नाख्यो माटे क्रोध महा माठी गति आपवावालो छे तेने त्यजवो. क्रोधे करी क्रोडपूर्वनुं संयमफल पण नाश पामे छे. वली नर्कनो सखई एटले नर्कमां लेई जनारो पण क्रोध छे. माटे क्रोधने छांडवो अर्थात् कोई उपर क्रोध करवो नही. ४७

॥ अथ मान विषे ॥

॥ विनय वनतणी जे मूल शाखा विमोडे, सुगुण कनककेरी शृंखलाबंध तोडे ॥ उनमद करि दोडे मान ते मत्त हाथी, निजवश करि ले जे अन्यथा दूर एथी ॥४ए॥

भावार्थः- जे विनयरूपीया वननी मूल शाखाने मरडी नाखे अर्थात् विनयनो समूलो नाश करे, वली जे उत्तमगुणरुपी सोनानी सांकलने तोडी नाखे, एवो मानरूपीयो मस्त हाथी अहंपदे मगरुरीथी दोडा दोड करे छे अर्थात् विनय अने उत्तम गुणोनुं नाश करवावालुं ज मान छे, तेने तुं पोताने स्वाधिन करी लेजे, कारणके एने (मानने) वश कर्या विना एके गुण निपजे नहीं,अर्थात् ज्यांसुधी मान (अहंपद) छे त्यांसुधी सर्व गुण विनयादि दूर रहे छे. अहीं बाहुबलनो दृष्टांत जाणवो. ज्यारे एमणे मान मुक्युं त्यारेज केवलज्ञान उपन्युं. ए वार्ता प्रसिद्ध होवाथी अहीं लखी नथी. ४ए

॥ विषद विष समो ए मान ते सर्प जाणो, मनुज विकल होवे एण डंके जडाणो ॥ इह न परिहर्यो जो मान दुर्योधने तो, निज कुल विणसाड्यो मानने जे वहंतो ५०

भावार्थः- आकरा (हलाहल) विष तथा सर्पना जेवुं मानने जाणवुं, ए मानना जोगे करी मनुष्य विकल थाय-गजराय, अर्थात् ए मनरूपी सर्पने डंके करी चेतन जड थयो छे. तेने जे

परिहरें एटले तेनो जे त्याग करे तेने धन्य छे, दुर्योधन राजाए मान परिहर्युं नही अने अहंपद (मान) राख्युं तेथी तेना सर्व कुटुंबनो विनाश थयो. ५०

॥ मान करवाथी नाश पामनार दुर्योधननो प्रबंध ॥

पूर्वे पांच पांडव अने दुर्योधनादिक कुरु देशनुं राज्य करता हता. कपट करी जुवटामां हरावि दुर्योधने पांडवोने वनवास दीधो. ते वनवासनी प्रतिज्ञा पूर्ण करी पांडवो द्वारिकाये आव्या. कृष्णे तेमने आदर देई राख्या. पछी कृष्णे दुर्योधनप्रत्ये कहेवराव्युं के, पांडवो प्रतिज्ञा पूर्ण करीने आव्या छे माटे तेमने भाग आपो. नहीं तो युद्ध करवाने सज थाओ. दुर्योधने दुतने जणाव्युं जे—ए पांडव ते कोण मात्र! अर्थात् ते शा लेखामां छे? जो तेमने भाग लेवो होय तो कहेजे के युद्ध करवाने सज थई आवज्यो. दुते द्वारिकामां आवी ते हकीकत निवेदन करतां तत्काल कृष्णने साथेलेई पांडवो हस्तीनापुरे गया. दुर्योधन माने जर्यो थको पोताना भाई प्रमुख सैन्य लेई सामो आव्यो. मांहोमांहे दारूण युद्ध थयुं. पांडवोए तेना भाईओ सहित दुर्योधनने हणी जय करी पोतानुं राज्य लीधुं. आ प्रबंधथी सार ए ग्रहण करवानो छे जे—दुर्योधने मान कर्युं तो पोताना कुलनो नाश कर्यो. तेमज मानी (अभिमानी) पुरूष कांई विचारता नथी अने अभिमानना पूरमां तणाई मरजी माफक आचरण करे छे तेथी पारकुं अने पोतानुं-सर्वेनो विणसाडनारो थाय छे. माटे सर्व मनुष्ये मानने त्याग करवो. ५०

॥ अथ माया विषे ॥

निठुरपणु निवारी हीयडे हेज धारी, परिहर छल माया जे असंतोषकारी ॥ मयुर मधुर बोले तोहि विश्वास नाणे, अहिगलण प्रमाणे मायिने लोक जाणे ॥ ५१ ॥

भावार्थः—जे मायानो धणी एटले जे मायावी मनुष्य होय ते निठुर अर्थात् मनमां कपट भाव राखी मुखे उपर उपरथी सारू लगाडनारो होय तथा तेना हैयामां हेज कहेतां दयाभाव होय नहीं, मायावी छलमां ने छलमां रहे अने असंतोषी होय, वली मायावी मीठुं मीठुं बोले पण ते मधुर–मीठुं बोलनार मोरनी माफक विश्वास राखवा लायक न होय! केमके मोर मधुर बोले छे पण सर्पने आखो ने आखो गली जाय छे, तेवोज मायावीने अविश्वासपात्र जाणवो. माटे माया भुंडी छे, तेनो त्याग करवो. जुओ मल्लिनाथ स्वामीए माया करीने तपनी वृद्धि करी हती, बीजुं कांई मातुं काम तो कर्युं नहोतुं, तो पण एटलीज मायाथी स्त्रीवेद बांध्यो. माटे मायाने परहरवी ए उत्तम मनुष्यनुं कर्तव्य छे.

म कर म कर माया दंभ दोषह्नु गाया, नरय तिरिय केरा जन्म दे जेह माया ॥ बलि नृप छलवाने विष्णु माया वहंतां, लहुयपण लह्युं जे वामनारूप लेतां ॥ ५२ ॥

भावार्थः— माया ए दोषरूप विषनुं झाड छे, तथा ए नर्क अने तीर्यंचनी गति आपनारी छे, माटे तुं ते (माया) न कर-नकर. वली बलिराजाने छलवा (छेतरवा) ने माटे श्री कृष्णे माया थकी वामन रूप कर्युं तेथी लघुताई पाम्या. माटे माया (कपट) न करवुं. मायावी जे होय ते कुड कावित्रुं करी आगल्याना पेटमां पेसी जाय, दंभपणुं धरी मायावीपणुं करी आगल्यानुं कालजुं काढतां वार न करे, माटे मायावीने छांडवो. ५२

अथ लोभ विषे ॥

सुणी वयण सयाणे चित्तमां लोभ नाणे, सकल व्यसनकेरो मार्ग ए लोभ जाणे ॥ ॥ इक खिण पण एने संग रंगे म लागे, भव भव दुःख दे ए लोभने दूर त्यागे ५३

भावार्थः– उत्तम रुडां वचन सांभलीने मनमां लोभ करीश नहीं; कारण के व्यसनादिक माठां कृत्य करवानी जे इंछा थाय छे ते सर्वे कष्टनुं मूल मंडाण ए लोभने जाणवो अर्थात् लोभज छे, वली एक क्षणवार पण लोभनो संग करवाथी अर्थात् लोभने विषे रातो मातो थवाथी ए भवोभव दुःख देवावालो छे, माटे लोभनो त्याग करवो. ५३

॥ लोभ करवाथी कष्ट पामनार सुभुमचक्रवर्तीनो प्रबंध ॥

सुभुम चक्रवर्तीए आ भरतक्षेत्रना छए खंड साध्या तो पण लोभ न गयो, तेथी तेणे धातकीखंडना छ खंड साधवाने वास्ते लवण समुद्रमां चर्मरत्न मुकीने तेना उपर पोतानुं सर्व सैन्य चढाव्युं. ते चर्मरत्नने हजार देवता अवलंबीने चाले छे. तेमांथी एक देवताए विचार्युं जे, भरतना छ खंड साधतां घणां वर्ष वीत्यां अने हवे आगल कोईए पण नही साधेला धातकीना छ खंड साधवा जवानुं प्रयाण कर्युं छे तेथी केटलां वर्ष वही जशे तेनो अनुमान थई शके तेवुं नथी; माटे देवांगनाने मली आवुं तेटलो वखत हुं नही अवलंबु तो ए शुं नही चाले ? एम विचारीने तेणे चर्मरत्न मुकी दीधुं. एम अनुक्रमे हजारे देवताना मनमां एवो विचार आववाथी समकाले सर्वे देवताए चर्मरत्न मुकी दीधुं. एटले पापना उदयेकरी ते चर्मरत्न चक्रवर्तीना सैन्य सहित समुद्रमां डुबी गयुं. ते सघलानो नाश थयो. लोभनो थोभ न रहेवाथी देवता जेनी सेवामां हता तेवा चक्रवर्तीनो पण नाश थयो, तो बीजानो थाय तेमां तो नवाई-ज शानी ? माटे लोभ अति दुःखदाई छे तेथी तेनो त्याग करवो.

कनकगिरि कराया लोभथी नंदराये, निज अरथ न आया ते हर्या देवताये ॥ सकल निधि लही जे खाय ते विश्व कीजे, मन तदपी न रीझे लोभ तृष्णा न छीजे॥५४

भावार्थः–नव नंद राजाये सोनानी डुंगरीउं करावी पण ते तेमना पोताना कामसमां आवी नही–देवताये हरी लीधी, ते तो अतृप्ताज गया, सघली निधि तेमज वली बधी पृथवी पोताने वश होय तो पण लोभतृष्णा नही छीपवाथी मन कदी संतोष पामतुं नथी. ५४

॥ लोभनो त्याग करवा उपर कपिल ब्राह्मणनो दृष्टांत ॥

एक नगरमां राजाए प्रभाते उठी ब्राह्मणोने बे मासा सोनानुं दान देवानुं नक्की कर्युं हतुं. त्यां कपिल नामनो ब्राह्मण रहेतो हतो. ते बे मासा सोनु लेवानी जंखणामां रात्रे सुई रह्यो, तेथी रात्रिनी खबर न पडवाने लीधे मध्यरात्रे उठीने दरबारगढ तरफ चाली नीकळ्यो. रस्तामां पोरेदारे चोर जाणी तेने पकडीने चोकीमां बेसाड्यो. प्रभाते तेने राजा पासे लेई आव्या. तपास करतां ए चोर नथी एम राजानी खात्री थई त्यारे पुछ्युं के तुं कोण छुं ? कपिले कह्युं के दासी (लक्ष्मी)नो प्रेर्यो हुं आव्यो छुं, अर्थात् तेणे बे मासा सोनानी जंखणा संबंधी सघलो वृत्तांत जणाव्यो. ते सांभली राजाये विचार्युं जे म्हारा नगरमां आवा पण दलिद्री वसे छे. एवी दयाये करी ब्राह्मणने राजाये कह्युं के, " तुं जे मागीश ते हुं आपीश, माटे आलोच करी आव." पछी ते कपिल ब्राह्मण एकांते जई विचार करवा लाग्यो जे–राजा कने हुं सो रूपैया मांगु के बसें चारसे, के हजार बे हजार, के लाख बे लाख, के चार लाख दश लाख, के वीस लाख, एम क्रोड सुधी चढ्यो, परंतु मननो परिणाम एटला द्रव्य उपर पण स्थिर न रह्यो. वली तेथी पण वधारे वधारे मन आगल दोडवा लाग्युं. राज्य लेवा सुधीनी मागणी करवा उत्सुक थयो तोपण न धरायो. एम करतां करतां छेवट एवा विचार उपर आव्यो के मन तो धरातुंज नथी. ए अथिर पदार्थ छे. ए मने छोडशे, के हुं एने

छोडीश. एवी शुभदशा जागवाथी जवनी जे जावठ ते जागी. एटले संयमथी लय लागी, त्यारे विचार्युं जेः–"जहा लाहो तहा लोहो, लाहो लोहोए वढई ॥ दो मासा कयं कज्जं, कोडीए नव निठिए ॥ १ ॥" एवुं विचारीने तेज वेलाये पंचमूष्टी लोच करीने राजा पासे आव्यो अने धर्मलाज देई उजो रह्यो. राजाये पुंब्युं के–ए शुं कीधुं ? कपिल कहे–चारित्र लीधुं. तमे कह्युं हतुं के आलोची आवो, ते आ (मस्तक) लोची आव्यो. जे विचारवुं हतुं ते विचारीने आव्यो. राजा उठीने पगे लाग्यो. मुनीए त्यांथी विहार कर्यो. मार्गमां जतां पांचसें चोर मळ्या तेने प्रतिबोध पमाडीने ते निर्मल अप्रतिपाती केवल ज्ञान पामी मोक्ष पहोंच्या. एम जे लोज मुके ते सुखीया थाय अने लोज करे ते खुआर थया छे अने थशे. माटे लोजनो त्याग करवो. ५४

॥ अथ दया विषे ॥

सुकृत कलप वेली लंछि विद्या सहेली, विरतीरमण केली शांति राजा महेली ॥ सकल गुण जलेरी जे दया जीव केरी, निज हृदय धरी ते साधिए मुक्ति सेरी ॥ ५५ ॥

जावार्थः– दया केवी छे ? उत्तम करणीरूप कल्पवृक्षनी वेल समान छे, लक्ष्मीनी सखाई छे, ज्ञान गुणनी सहचारी छे, वली विरती रूप जे राणी तेह दया छे, अने ए दया शांति राजानुं सदन छे, सघला जला– सारा गुण अने जे जीवदयानुं मूल छे, एवी दयाने हृदयनेविषे धारण करीने शुं साधीए ? मुक्ति रुपीणी शेरी, अर्थात् दया थकी मुक्ति पामीये. माटे अहो जव्य प्राणीउं ! ए जे जीवदया छे तेमां घणाज गुण जर्या छे अने तेथी घणा जीव पार पाम्या छे. जे जे तीर्थंकर थया तेमणे पण एतुं एज वचन प्रकाशेलुं छे. ते ए जेः– सव्वे पाणां, सव्वे जूआ,

सव्वे सत्ता, सव्वे जीवा न हंतव्वा ॥ आ प्रमाणे अनंता थया छे अने थशे ए सघला तीर्थंकरोनी एवीज वाणी होवाथी ते मान्य करवी अर्थात् जीव दया पालवी. ५५

निज सरण परेवो शेनथी जेण राख्यो, षट दशम जिने
ते ए दया धर्म दाख्यो ॥ तिह हृदय धरीने जो दया
धर्म कीजे, ज्ञवजलधि तरीजें ङःख दूर करीजे ॥ ५६ ॥

ज्ञावार्थः– सोलमा तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ ज्ञगवाने पोताना पाछला दशमा मेघरथ राजाना ज्ञवमां सींचाणाना ज्ञयथी आवेला पारेवाने वचावी दयाधर्म दर्शाव्यो, तेवी रीते जो बीजा पण पोताना हृदयने विषे दया लावीने वर्त्तशे तो तेना प्रज्ञावथी ज्ञव रूपी समुद्र तरीने ङःखने वेगलां करशे अर्थात् मोक्षसुख मेलवशे. माटे दयाधर्म पालवो. दया एज होटी छे.५६

॥ दया चिंतवीने पारेवाने शरणे राखनार मेघरथराजानो प्रबंध ॥

पूर्वे श्री शांतीनाथनो जीव दशमा ज्ञवने विषे मेघरथ नामे राजा हतो. एकदा ते पोताना दरबारमां बेठा हता त्यां ध्रुजतो ध्रुजतो एक पारेवो तेमने शरणे आवीने पेठो. तेनी पाछल तेने मारवाने उत्सुक थई आवेलो सींचाणो ते वखते मनुष्यज्ञाषाये बोल्यो के– " एकने तुं उपकार करे अने एकने मारे, ए शुं तने घटार्थ छे ? आज त्रण दिवस थयां हुं ज्ञूख्यो छुं. माटे तुं एने मुकी दे. शुं तने एटली पण दया नथी आवती ? म्हारुं पेदा करेलुं अर्थात् शोधी कहाडेलुं ज्ञक्ष तहारी पासे आव्युं छे, ते तुं मने आप अने सुखी कर. हुं महाङःखी थाउं छुं. ज्ञूखनुं ङःख हवे महाराथी वेठी शकातुं नथी, माटे महारुं ज्ञक्ष मने आपो के जेथी महारी ज्ञूख ज्ञांगे. हुं तमने आशीश देईश. " राजाये

कह्युं के "तुं जे कहे ते तने मगावी आपु." सींचाणो कहे के– 'ते शुं काम आवे ? हुं तो मांसनुं भक्षण करनारो छुं, माटे म्हारुं जे भक्ष छे ते आपो. ए विना बीजी वधी वस्तु म्हारे नकामी छे.' राजाये विचार्युं जे, जेने जे आहार तेने ते वहालुं. माटे एने तो एज जोईये. परंतु आपणी पासे आव्यो तेने आपणे केम आपीये ? कदापि आपीये तो आपणुं बीरुद जाय. माटे हवे तो 'अर्थं साधयामि के देहं पातयामि.' एम विचारीने तोला (त्राजुडी)मंगावी, तेमां एक पासे पारेवो मुक्यो अने बीजे पासे राजाये पोतानी जांग प्रत्ये छेदीने मांस मुक्युं. पारेवाना प्रमाण करतां पण वधारे मांस मुक्युं तो पण ए त्राजवुं उचुं ने उचुं रह्युं. राजा पोतानी देह कापतो जाय अने मांस मुकतो जाय, परंतु देवमायाये करी पारेवानी बरोबर ना थाय. ए वखते प्रधान तथा बीजो बधो परिवार तेमज राणीयो वीगेरे सर्वे मलीने राजाने कहेवा लाग्यां के, हे स्वामी ! 'ए कायाने शुं घात करो छो ? एक पंखी तीर्यंच जीव माटे आपनो अमूल्य देह कां विनाशो छो ?' आ प्रमाणे सज्जन वर्गे कह्युं, तेने न गणकारतां महा धैर्यवंत मेरु शिखरनी परे निश्चल मनवाला राजाये, थोडे थोडे मांसे ए पूरु थतुं नथी, माटे आ (म्हारी) वधी काया ए जीवना उपर खूरबान ! एम विचारीने पोतानुं शरीर संकल्पीने पल्लामां चढी बेठा. जीवदया उपर मेघरथ राजानुं पोतानो देह अर्पण करवा सुधीनुं धैर्य– साहस जोई देवता तुष्टमान थई तेमने पगे लागी चवत् कुंडलाभरण थई सौधर्म देवलोकप्रत्ये गयो. राजानी काया पूर्वे जेवी हती तेवी सोना सरखी थई. माटे दृढ मनथी जीवदया पालवी. ५६

॥ अथ सत्य विषे ॥

गरल अमृत वाणी साचथी अग्नि पाणी, सुज सम अहिराणी साच विश्वास खाणी, सुपसन सुर कीजे साचथी ते तरीजे, तिण अलिक तजीजे साचवाणी वदीजे ॥ ५७ ॥

नावार्थः–सत्य थकी सर्पनुं जे गरल होय ते पण अमृत थाय अने सत्य थकी अग्नि पण पाणी थाय, सत्य थकी रूमो जस कीर्त्ति पामे, सत्य थकी सर्व जगन्न विश्वास आणे अर्थात् सत्य ए विश्वासनी खाण ठे, सत्य थकी देवता पण प्रसन्न थाय, ए सर्व सत्यपणाथी पामीये, ते माटे मृषावाद ठांमीने सत्य वाणी बोलीये. ५७

जग अपजश वाधे कूमवाणी वदंतां, वसु नृपति कुगत्यें साख कूडी नरंतां ॥ असत वचन वारी साचने चित्त धारी, वद वचन विचारी जे सदा सौख्यकारी ॥ ५७ ॥

नावार्थः–जूग बोला थवाथी अर्थात् जूठुं बोलवाथी जगत्नेविषे अपजशनो पम्हो वागे, (जुउ) वसुराजा खोटी शाख नरवाथी नर्के गयो, माटे असत एटले जूठु वचन ठांडीने सत्यवाणी बोलवी. वली जे वचन बोलवुं ते विचार करीने बोलवुं, के जे हमेशां सुखकर थाय. ५७

॥ कूडी साख नरवाथी नर्के जनार वसुराजानो प्रबंध ॥

खीरकदंबक नामना अध्यापकनी पासे तेनो पुत्र पर्वत, वसुराजा तथा नारद, ए त्रण जण साथे नणया हता. ते अध्यापके काल कर्यो एटले पर्वत अध्यापक थयो. एकदा फरतां फरता नारद, पर्वतने त्यां आव्या. ते वखत "अजै होतव्यं" एवो पाठ ते पोताना शिष्योने नणावतो हतो. तेणे तेनो अर्थ क-

रतां जणाव्युं के " यज्ञमां अज एटले बोकडानो होम करवो."
नारदे ते सांभळीने कह्युं के—आपणा गुरु तहारा पिताये तो
ज्यारे हुं, तुं अने वसुराजा भणता हता त्यारे ' अज ' शब्दनो
अर्थ बोकडो नहीं, पण ' त्रण वर्षनां वृही ' कह्यां छे ? तेम छतां
तुं अवळो—खोटो अर्थ केम करे छे ? पर्वते जणाव्युं के, तमारूं
कहेवुं खोटुं छे. गुरुमहाराजे तो ' अज ' शब्दनो अर्थ ' बो-
कडो ' ज बतावेलो छे. ते प्रमाणे हुं शीखवुं छुं. नारदे तेनुं
कहेवुं तदन खोटुं छे एम वारंवार कहेवाथी ते बन्ने वच्चे घणो
विवाद थयो. छेवट पर्वते जणाव्युं जे—वसुराजा आपणी साथे
भणेला छे माटे तेमनी पासे जईने खरूं शुं छे ? तेनो निर्णय क-
रीये. आ वात नारदे कबुल करी बीजे दीवसे राजा पासे ज-
वानुं ठराव्युं. पर्वतनी माता, नारद अने पर्वत वच्चे अज शब्दना
अर्थ माटे विवाद थतो हतो ते सांभळती हती. तेणीये नारदना
गया पछी पोताना पुत्र पर्वतने कह्युं के, तहारा पिताए 'अज'
शब्दनो अर्थ ' त्रण वर्षनां वृही ' बतावेलो छे, ते हुं पण
जाणुं छुं. तें नारद साथे खोटी जीकर करीने वसुराजा पासे जइ
निर्णय करवानुं ठराव्युं छे. ए सत्यवादी राजा छे तेथी जुठुं बोलशे
नहीं तेथी तुं खोटो पडीश. पर्वते पोतानी मातानां आवां वचन
सांभळी तेणीने वसुराजा पासे जई पोते जणावेलो अर्थ खरो छे
एम कहेवाने भलामण करवा मोकली. तेणी वसुराजा पासे
गई. गुरुपत्नी जाणी राजाये तेनो आदर सत्कार कर्यो अने आ-
गमननुं कारण पुछ्युं ? तेणीये पुत्रभीक्षा माटे आवी छुं, एम
जणाव्युं. राजाये तेनो वाल कोण वांको करनार छे ? ए
महारो भाई छे ! एना सामुं जोनार कोण छे ? ते मने बतावो ? एम
ज्यारे कह्युं; त्यारे गोराणीये पर्वत अने नारदनी वच्चमां जे विवाद
थयो हतो ते जणाव्यो, अने विशेषमां कह्युं के, पर्वतनो पक्ष

करी तमारे तेने साचो ठराववो योग्य छे. गुरूपत्नीनां आवां वचन सांज्ञली वसुराजा विचारवा लाग्यो के महाराथी असत्य केम बोलाय ? हुं आ स्फाटिकरत्नना सिंहासन उपर बेसुंछुं ते महारा सत्य वडे अंतरिक्ष रहे छे एम जे सर्व लोको कहे छे ते महारूं बीरूद हरूहडतुं जुठुं बोलवाथी केम रहेशे ? आ तो ' वाघ नदीनो जोग मिल्यो,. पछी वसुराजाये जूठुं नहीं बोलाय एम कह्युं. त्यारे छेवटे ब्राह्मणीये जणाव्युं के, जो तुं महारा छोकरानो पक्ष नहीं करे तो तेनुं मोत थशे अने हुं पण तने महारी हत्या आपीश. वसुराजा आथी शरमींदो थई गयो अने तेणीने विदाय करतां जणाव्युं के तमारा पुत्रनो पक्ष करीश. तेणीये राजानो कोल लेई पोताने घेर पाछी आवीने पर्वतने ते वात जणावी. पछी ठराव प्रमाणे बीजे दीवसे नारद तथा पर्वत वसुराजा पासे गया. अजाण थई आगमननुं कारण वसुराजाये पुछवाथी, अध्यापके ' अज ' शब्दनो अर्थ ' त्रण वर्षनां व्रीही' बताव्यो हतो एवुं नारदे, अने 'बोकडो' बताव्यो हतो एवुं पर्वते जणावीने ते बेमांनो खरो अर्थ कयो छे, तेनो निर्णय करवा माटे तमारी पासे आव्या छीये एम जणाव्युं. एटले वसुराजा मनमां विचार करी कहेतो होय एवो डोल करी बोल्यो के, ' अंज ' एटले ' बोकडो ' कह्यो छे. ते वखत—हे वसुराजा ! तमे एनो अर्थ खोटो केम करो छो ? एवुं नारद बोल्या, के तत्काल देवताये सिंहासन उपरथी उछालीने वसुराजाने हेठो नाख्यो. ते मरीने नर्के गयो. एक शब्द मात्रनो अर्थ जूठो करवाथी वसुराजानी नर्क गति थई तो पछी वारंवार असत्य बोलनार तो एवा केटला ज्ञव ज्ञटकशे तेनी.गणत्री थई शकवी मुश्कल छे.माटे असत्य अलीक वचन छांडीने सत्य वाणी बोलवी. ५७

॥ अथ चोरी विषे ॥

परधन अपहारे स्वार्थपें चोर हारे, कुल अजस वधारे
बंध घातादि धारे ॥ परधन तिण हेते सर्प ज्यूं दूर
वारी, जगजन हितकारी होय संतोषकारी ॥ ५९ ॥

नावार्थः– कुलनी मर्यादा मुकीने जे स्वार्थी चोर पारकुं द्रव्य चोरे ते जगत्मां अपजशने वधारे, बंधीखाने पडे तथा घातनी वेदना पामे अर्थात् जीवथी पण जाय, वली जेम सर्पथी लोक वेगला जाय तेम ए चोरथी पण लोक वेगला नासे, ते माटे ए चोरपणुं मुकीने जगत्ना जीवने हितनुं करवावालुं संतोषपणुं आदरवुं. ५९

निशिदिन नर पामे जेहथी दुःख कोडी, तज तज धन
चोरी कष्टनी जेह ओरी॥ पर विनव हरंतो रोहिणी चोर
रंगे, ग्रह्यो अनयकुमारे ते ग्रह्यो बुद्धि संगे ॥ ६० ॥

नावार्थः– चोरी थकी मनुष्य रात्रि अने दिवस दुःखनी कोडी पामे अर्थात् वेसुमार दुःख पामे, ते माटे हे नाई ! एने (चोरीने) तुं गंरु, गंड ! शा माटे जे ए चोरी ते चालती दुःखनी ओरडी समान छे, वली पारकी संपदा हरतां कोरडी एटले नकरी वेदना नोगवती वेला कोई आडो आवे नही, जुओ ! रोहिणीया चोरने जेम अनयकुमारे बुद्धिना जोगे ग्रह्यो एटले पकड्यो, ते माटे चोरीप्रत्ये गंडवी. ६०

॥ अथ कुशील विषे ॥

अयश पडह वागे लोकमां लीह जागे, दुरजन बहु
जागे जे कुले लाज लागे ॥ सजन पण विरागे मां रमे
एण रागे, परतिय रस रागे दोषनी कोडि जागे ॥ ६१ ॥

नावार्थः– परस्त्रीनी संगतथी जगतने विषे अपजसनो पमह वागे तथा लोकमांथी नार वक्कर जाय, लज्जा पामे, दोषी डुश्मन जागे, कुलमां पण कलंक लागे अने सज्जन माणस तेनाथी विरागे एटले दूर रहेवा इछे, माटे तुं एनो संग करीश नहीं; केमके परस्त्रीना रसने रागे करी अवगुणनी कोडि जागे अर्थात् परस्त्रीनो प्रसंग करवाथी अनेक अवगुण थाय छे. ६१

परतिय रसरागे नाश लंकेश पायो, परतिय रस त्यागे शील गंगेव गायो ॥ डुपद जनक पुत्री विश्व विश्वे विदीती, सुर नर मिलि सेवी शीलने जे धरंती ॥ ६२ ॥

नावार्थः– परस्त्रीना रसने रागे करी लंकापति रावण नाश पाम्यो अर्थात् रामचंडनी स्त्री सीता उपर मोहीत थइ तेनुं हरण करी जवाथी रावणनां दस मस्तक रणने विषे रुळ्यां, अने परस्त्रीना विरमणथी गंगाना पुत्र गांगेयकुमारे (नीष्मपिता) के जेमणे वाल्यावस्थामांथीज शील पाळ्युं तेथी जगत्नेविषे गवराणा एटले जशवाद पाम्या, वळी डुपद राजानी पुत्री ते पांमवनी नार्या डौपदी तथा जनक राजानी पुत्री ते रामचंडनी पत्नि सीता त्रण जगतने विषे प्रसिद्धिने पामी अने एवा शीलवंत प्राणीउनी देवता तथा मनुष्य सेवा करे छे. शीलगुणनुं म्होटुं महात्म्य छे. माटे परस्त्रीनो त्याग करवो अने शील पालवुं. ६२

॥ अथ परिग्रह विषे ॥

शशिउदय वधे ज्युं सिंधु वेला नलेरी, धनकरि मन साए तेम वाधे घणेरी ॥ डुरित नगर सेरी तूं करे ए परेरी, ममकर अधिकेरी प्रीति ए अर्थकेरी ॥ ६३ ॥

नावार्थः– चंडमाना उदयथी जेम समुडना पाणीनी वेल

वधे, तेम मूर्छाए परिग्रहनी ममता वधे, वली ए परिग्रहनी ममता ते नर्क गतिनी शेरी कहेतां वाट छे अर्थात् ए नर्के लेई जनारी छे, माटे ए परिग्रहनी अधिक प्रीति तुं न कर. ६३

मणुअ जनम हारे दुःखनी कोडि धारे, परिग्रह ममता ए स्वर्गनां सौख्य वारे ॥ अधिक धरणी लेवा धातकी खंड केरी, सुजुम कुगति पामी चक्रिराये घणेरी ॥ ६४ ॥

भावार्थः— ए परिग्रह थकी पोतानो मनुष्यभव हारी जाय अने कोडी गमे दुःखनी परंपराने पामे, वली ए परिग्रहनी ममताथी देवलोकनां सुख पण खोई बेसे, कोनी परे ? तो के— जेम सुजुम चक्रवर्त्तिये सुख खोयां अने कुगति पाम्यो तेनी पेठे थाय. माटे परिग्रहनो ममत्व करवो नही. ६४

॥ परिग्रहनी ममताथी नर्के जनार सुजुम चक्रवर्त्तिनो प्रबंध ॥

सुजुम चक्रवर्त्तिए छ खंड साध्या. पछी बीजा कोई चक्रवर्त्ति साधता नथी एवा धातकी खंडमांहेला छ खंड साधु तो हुं खरो ! एवी परिग्रह उपर ममता थवाथी तेणे धातकी खंडमां जवा माटे बे लाख जोजनना लवण समुद्रमां चरमरत्न मूक्युं. तेमां सैन्यादि सर्व परिवार बेठो. ए वेला चरमरत्नना हजार देवता सेवक छे तेमांना एके विचार्युं जे आ छ खंड साधतां केटलांएक वर्ष वही गयां तो वली आ बीजा छ साधतां तो केटलाए वर्ष वीती जशे ? माटे छानोमानो हुं महारी देवीने मली आवुं. एम धारीने एक देवता गयो. एम बीजो, एम त्रीजो. एवी रीते हजारे देवता चरमरत्न मुकीने हींडता थया — चाल्या गया. एटले चरमरत्न बूड्युं. हाथी घोडा सहित सर्व लश्करनो नाश थयो अने सुजुम चक्रवर्त्ति मरीने सातमी

નર્કે ગયો. માટે પરિગ્રહની મમતા વડે ચેતન દુઃખ પામે તેથી તેની મૂર્છા ટાળવી. અર્થાત્ પરિગ્રહ ઉપર મમત્વભાવ કરવો નહીં.

॥ અથ સંતોષ વિષે ॥

સકળ સુખ ભરાએ વિશ્વ તે વશ્ય થાએ, ભવજળધિ તરાએ દુઃખ દૂરે પળાએ ॥ નિજ જનમ સુધારે આપદા દૂર વારે, નિતુ ધરમ વધારે જેહ સંતોષ ધારે ॥ ६५ ॥

ભાવાર્થઃ— સંતોષથી સર્વ (ઘણાં) સુખ પામે અને બધી પૃથવી વશ થાય, સંતોષથી સંસારરુપી સમુદ્રને તરે અને દુઃખ વેગળાં જાય, એ સંતોષ થકી પોતાનો જન્મારો પણ સુધરે તથા આપદા જે કષ્ટ તે પણ દૂરે જાય, જે પ્રાણી સંતોષને આદરે તે નિત્યપ્રત્યે ધર્મમાં વધારો કરે અર્થાત્ રુડો ધર્મ પામે. ६५

સકળ સુખતણો તે સાર સંતોષ જાણે, કનક રમણિકેરી જેહ ઇચ્છા ન આણે ॥ રજનિ કપિળ બાંધ્યો સ્વર્ણની લોલતાએ, ભમર કમળ બાંધ્યો તે અસંતોષતાએ ॥ ६६ ॥

ભાવાર્થઃ—જ્યારે સઘળાં સુખનું મૂલમંડાણ જોઈયે ત્યારે તો એ સંતોષ જાણવો, અર્થાત્ સર્વ સુખનું મૂલ સંતોષ છે, કનક અને કામિની અર્થાત્ ધન અને સ્ત્રી એ બન્નેની જે ઇચ્છા ન કરે તેને સંતોષી જાણીયે. જુઓ—ફક્ત બે માસા સોનાની લોલુતાયે કરી રાત્રિને વિષે કપિલ નામનો બ્રાહ્મણ બંધાણો અને ભમરો પણ કમલમાં બેઠો થકો વાસના લેવામાં લીન થવાને લીધે અર્થાત્ વાસનાના અસંતોષપણાને લીધે સૂર્યાસ્તની વેલા પણ જાણી શક્યો નહી, તેથી કમલ બીડાણું તેમાં બંધાણો તે ફરી નીકલવા સમર્થ ન થાય. માટે હરેક બાબતમાં સંતોષ રાખવો. ६६

॥ अथ विषय विषे ॥

शिवपद यदि वांछे जेह आनंद दाई, विषसम विषया तो छांडि दे दुःखदाई ॥ मधुर अमृत धारा दूधनी जो लहीजे, अति विरस सदा तो कांजिका स्युं ग्रहीजे॥ ६७ ॥

भावार्थः—जो ए आत्माने आनंदने आपवावाला मोक्षपदने पामवानी ईछा होय तो विष (झेर) समान दुःख देवावाला विषयने तजी दे, जो मीठी अमृत जेवी दूधनी धारा मळी तो अत्यंत विरस–स्वाद विनानी कांजी होय तेने कोण ग्रहण करे, अर्थात् दूधनी धारा समान मोक्षपद पामवानी ईछावाळो कांजी समान विरस आठ मद, (१ पोतानी जातिनो मद, २ पोतानो बहु धननो लाभ मद, ३ पोताना कुलनो मद, ४ पोतानी लक्ष्मीनो मद, ५ पोताना बलनो मद, ६ पोताना रूपनो मद, ७ पोताना तपनो मद, ८ पोताना ज्ञाननो मद) केम करे ? न ज करे. ६७

विषय विकल ताणी कीचके भीम भार्या, दशमुख अपहारी जानकी रामभार्या ॥ रति धरि रहनेमी देखी श्री नेमिभार्या, जिण विषय न वर्ज्या तेह जाणो अनार्या ॥ ६८

भावार्थः—विषयना विकलपणाये करीने एटले विषयनां वाह्या थकां वेराट राजाना सो साळा मध्येना वडा कीचके भीमनी भार्या एटले पांडवोनी पत्नी द्रौपदीने ताणी–खेंची, वळी विषयथकी दशमूख एटले रावणे रामनी स्त्री जानकी (जनकराजानी पुत्री सीता) नुं हरण कर्युं, (तेथी सोए किचक अने रावण मरण पाम्या) वळी कंदर्पना धरणहार रहनेमीए पोताना सरखी चारित्रवंत श्रीनेमनाथनी भार्या राजेमतीने वस्त्र रहित महास्वरूपवान देखीने तेना प्रत्ये विषयनी प्रार्थना करी, परंतु सती साध्वी राजेमतीए अगंधन जातिना नागादिना दृष्टांतादि देखाडी तेने मार्गमां आण्या, अर्थात् मन

विह्वल थयुं ते संबंधी प्रायश्चित जगवान पासे तेमने मोकली लेवराव्युं, माटे जे प्राणीये विषयनो त्याग नथी कर्यो ते प्राणीने अनार्यपणे एटले धर्मरहित जाणवो. ६७

॥ अथ इंद्रिय विषे ॥

गज मगर पतंगा जेह नृंगा कुरंगा, इकइक विषयार्थे ते लहे डुःख चंगा॥ जस परवश पांचे तेहनुं शूं कहीजे, इम हृदय विमासी इंद्रि पांचे दमीजे॥ ६ए॥

जावार्थः– हाथी, मगर, पतंग, जमरो, अने हरण, ए पांचे जीव एक एक इंद्रिना विषयने लीधे अर्थात् एक एक इंद्रि मोकली मुकवाथी महा डुःख पामे छे; तो बीजा जे जीवनी पांचे इंद्रि परवश होय अर्थात् जे जीव पांचे इंद्रि मोकली मूके त्यारे तो ते अति डुःखी थाय एमां ते शुं कहेवुं ? खचीत ए तो डुःखी थायज, एम हृदयमां विचारीने पांचे इंद्रिने दमवी एटले वश करवी. ६ए

विषय वन चरंतां इंद्रि जे उंटफाए, निज वश नवि राखे तेह दे डुःखडाए ॥ अवश करण मृत्यु ज्यूं अगुप्तेंद्रि पामे, स्ववश सुख लह्यां ज्यूं कुर्म गुप्तींद्रि नामे[१] ॥ ७० ॥

जावार्थः– उंट जेम वनने विषे चरतां ज्यां त्यां अर्थात् सघले ठेकाणे मों घाले छे तेम विषयरूपीया वनने विषे इंद्रिने ज्यां त्यां जटकवा दे अने पोताने वश न राखे ते प्राणी डुःखप्रत्ये पामे, वली जे अगुप्तेंद्रि छे अर्थात् जेणे इंद्रियो मोकली मूकी छे ते निश्चय मृत्युने पामे छे, अने जेणे इंद्रियोने पोताने वश राखी छे ते इंद्रियोने वश राखनार कुर्मनी पेठे सुख पामे छे. ७०

१ बीजी प्रतमां "स्ववश सुख लह्यां ज्यूं कुर्म गुप्तींद्रि नामे" ए चरणने ठेकाणे " निज वश करि इंद्रि ज्यूं सदा सौख्य पामे " एवुं चरण छे. तेनो अर्थ– जेणे इंद्रियो वश करी ते निरंतर सुख पामे.

॥ अथ प्रमाद विषे ॥

सहु मन सुख वांछे दुःखने को न वांछे, नहि धरम विना
ते सौख्य ए संपजे छे ॥ इह सुधरम पामी कां प्रमादे
गमीजे, अति अलस तजीने उद्यमे धर्म कीजे ॥ ७१ ॥

भावार्थः– सघलां प्राणी सुखने इछे छे पण दुःखने कोई इछतुं नथी, परंतु धर्म विना ते सुख मलतुं नथी, वली आवो उत्तम धर्म मळ्या छतां प्रमाद करीने तुं तेने केम गमावी दे छे? ए तने युक्त नथी, माटे आलस प्रमाद छांकीने धर्मने विषे उद्यम कर, के जेथी सुख मले. ७१

इह दिवस गया जे तेह पाछा न आवे, धरम समय
आले कां प्रमादे गमावे ॥ धरम नवि करे जे आयु आ-
ले वहावे, शशि नृपतिपरे त्यूं सोचना अंत पावे ॥ ७२ ॥

भावार्थः– आ जे दीवसो गया ते फरी पाछा आवता नथी, माटे प्रमादने वश पड्यो थको धर्मनो समय फोकट केम गमावे छे? जे धर्म नथी करतो ते पोतानुं आयुष्य फोकट हारी जाय छे, अने ते शशिराजानी पेठे छेवटे सोचना पामे छे. ७२

॥ अथ साधुधर्म विषे ॥ शार्दूल विक्रीडित छंद. ॥

जे पंच व्रत मेरु भार निवहे, निःसंग रंगे रहे ॥ पंचा-
चार धरे प्रमाद न करे, जे दुःपरिस्सासहे ॥ पांचे इंद्रि
तुरंगमा वश करे, मोक्षार्थने संग्रहे ॥ एवो दुःकर साधु
धर्म धन ते, जे ज्यूं ग्रहे त्यूं वहे ॥ ७३ ॥

भावार्थः– साधु केवा छे? तो के– जे मेरुपर्वतना दुःखे करी

उपाडवा जेवा भार समान १ प्राणातिपात, २ मृषावद, ३ अ-दत्तादान, ४ मैथुन, अने ५ परिग्रह, ए पांच महाव्रतने वहन करे छे (पाले छे); जे निःसंगी छे अर्थात् कोइनो संग करता नथी; जे ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार अने विर्याचार, ए पांच आचारना धरनारा अर्थात् पालक छे, प्रमाद करता नथी; जे दुःखना परिसाने सहन करे छे; वली जे पांचे इंद्रि-रूप घोडाने वश करे छे अने मोक्षार्थ एटले मोक्षना साधनोनो संग्रह करे छे; एवो दुष्कर साधुनो धर्म छे, ते जेवी रीते ग्रहण करे तेवी रीते तेनो निर्वाह करे तेवा साधुने धन्य छे. तेने मुनी जाणवा. ७३

(मालीनी छंद) मयण शिर विमोडी कामिनी संग छोडी,
तजिय कनक कोडी मुक्तिसूं प्रीति जोडी ॥ भव भव भय
वामी शुद्ध चारित्र पामी, इह जग शिवगामी ते नमो
जंबु स्वामी ॥ ७४ ॥

भावार्थः– कंदर्पना विकारने कखी नाखी जेणे स्त्रीनो संग छोड्यो, जेणे कनकनी कोडी अर्थात् क्रोडो सोना मोहोरोनो त्याग करीने मुक्तिरूपी स्त्रीनी साथे स्नेह बांध्यो एटले मोक्ष-मार्ग जेने वाहालो लाग्यो अने जेणे शुद्ध चारित्र पामी (पाली) ने भवोभवनो भय दूर कर्यो, एवा आ जगतनेविषे मोक्षप्रत्ये पाम्या ते श्री जंबुस्वामीने नमस्कार करो – हुं नमस्कार करुं छुं. ७४

॥ अथ श्रावकधर्म विषे ॥ शार्दूल विक्रीडित छंद.

जे सम्यक्त लही सदा व्रत धरे, सर्वज्ञ सेवा करे ॥ सं-
ध्यावश्यक आदरे गुरु भजे, दानादि धर्माचरे ॥ नित्ये
सद्गुरु सेवना मन धरे, एहवो जिनाधशरे ॥ भाख्यो
श्रावकधर्म दोय दशधा, जे आदरे ते तरे ॥ ७५ ॥

नावार्थः— श्रावक केवो होय ? तो के— जे समकित पामीनें हमेशां व्रत करे तथा सर्वज्ञ प्रजुनी सेवा (पूजा) करे, जे उ-जय टंक (सवार सांज) आवश्यक (प्रतिक्रमण) करे अने आदर सहित गुरुने नजे; तथा जे दान, शीयल, तप, अने नाव, ए चार प्रकारनो धर्म आचरे, वली जे हरहमेश उत्तम गुरुनी सेवना मननेविषे धारण करे अर्थात् सुसाधुनी नक्ति करे; एवो श्री जिनेश्वर नगवाने बार पर्षदानी आगल १ प्राणा-तिपात, २ मृषावाद, ३ अदत्तादान, ४ मैथुन, ५ परिग्रह, ए पांच अणुव्रत तथा ६ दीशी विरमण व्रत, ७ नोगोपनोग विर-मण व्रत अने ८ अनर्थदंड विरमण व्रत, ए त्रण गुणव्रत तथा ए सामायक, १० देशावकासिक, ११ पौषध अने १२ अतिथी संविनाग, ए चार शिक्षाव्रत मलीने बार नेदे श्रावकनो धर्म प्रकाश्यो बे, श्रावकनां ए बार व्रत जे आदरे एटले पाले ते प्राणी तरे अर्थात् तेवो श्रावक नवरूपी समुद्र तरीने मोक्षसुख पामे. ७५

(मालिनी बंद) निशिदिन जिनकेरी जे करे शुध्द सेवा,
अणु व्रत धरि जे ते काम आनंद देवा ॥ चरम जिन
वरिंदे जे सुधर्मे सुवास्या, समकित सतवंता श्रावका
ते प्रसंस्या ॥ ७६ ॥

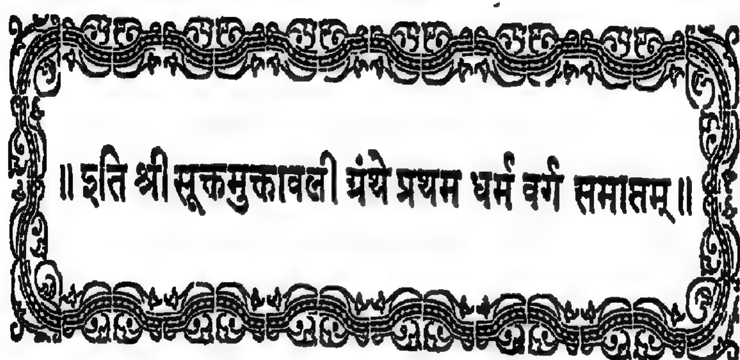
नावार्थः— जे प्राणी प्रजुनी शुद्ध मने रात्र अने दिन सेवा करे तथा अणु कहेतां मुनीथी पातलां श्रावकनां व्रत बे ते धारण करे अर्थात् अहनिश जिनेश्वर नगवाननी सेवा करनारा तथा बार व्रत पालनारा श्रावक होय. एवा कोण थया ? तो के—आ-नंद अने कामदेव, के जेनुं समकित अने सत्यवादीपणुं श्री वीर नगवाने समुखे वखाएयुं बे अने ते प्रथम सौधर्म देव-लोकने विषे गया बे. ७६

॥ कामदेव श्रावकनो प्रबंध ॥

चंपानगरीमां कामदेव श्रावके एक वखत रात्रिनेविषे काउसग्ग कर्यो हतो. ते वखत बत्रीस लाख विमानना स्वामी प्रथम देवलोकना इंद्रे तेमनां वखाण कर्यां. ते सांभलीने एक मिथ्यादृष्टी देवताये कह्युं के– ए तो समज्या ! हवणां हुं जइने चलावुं, एना शा भार छे ? एम कही ते ज्यां कामदेव हता त्यां आव्यो. तेणे हाथीनुं स्वरूप करी कामदेवने हेठो नाखी गुंद्यो तो पण ते वाज न आव्या अर्थात् जरामात्र ध्यानथी चूक्या नहीं. पछी देवता मूसल जेवडुं जाडुं काला वर्णनुं सर्पनुं रूप करी फूं फूं कार करतो डसवा लाग्यो तो पण ते चल्या नही. पछी अटंट्टहास करता राक्षसनुं रुप विकुर्व्युं, तेणे परिसह कर्यामां कांई मणा न राखी. रात्रिना चारे पहोर महा कदर्थना पीडा नीपजावी परंतु कामदेव ध्यानथी लेश मात्र चल्या नहीं. देवताये अवधीज्ञान वडे पोते करेला उपसर्गनी अतुल्य देवनानो प्रभाव जोयो तो मेरुना शिखरनी परे तेने (कामदेवने) निश्चल दीठा तेथी ते पगे लाग्यो अने पोतानो अपराध खमावीने स्वस्थानके चाल्यो गयो. ए विषे उपदेश मालामां कह्युं छे ते गाथाः– “जेदेवेहिं कामदेवो, गिहीवीनविचालीउ ॥ तवगुणेहिंमत्तगयंदभुयंगम, रखसघोरट्टहासेहि ॥ १ ॥” पछी प्रभाते कामदेव काउसग्ग पारी श्रीवीर भगवानने वांदवा गया. ते वखत भगवाने बार पर्षदानी आगल कह्युं के, साधु थका तो नियम पाले, पण जुउ ! आ श्रावक थके केवो नियम पाल्यो छे ? पछी रात्रिने विषे बनेली देवताना उपसर्गनी सर्व हकीकत जणावीने ए समकितवंता शुद्ध श्रावकनी भलीपरें पसंस्या करी. ३६

इम अरथ रसाला (विशाला) जे रची सूक्तमाला,
धरम नृपति बाला मालिनी छंद शाला (माला)॥ धरम
मति (नय) धरंतां जे इहां पुन्य बांध्यो (ए इहां पुण्य
बाध्यो), प्रथम धरम केरो सार ए वर्ग (धर्म) साध्यो ॥३३

भावार्थः-ग्रंथकार कहे छे के,-एवी रीते वोहोला अने रसाल अर्थ जेमां छे, एवी आ धर्मराजानी पुत्री समान सूक्तमालानी रचना विशेष मालिनी छंदमां करी छे, अहींया धर्मबुद्धि धारतां प्राणी पुन्यनी रासी बांधे छे, एवो आ चार वर्ग मांहेलो पहेलो धर्म वर्ग कह्यो. ३३


॥ इति श्री सूक्तमुक्तावली ग्रंथे प्रथम धर्म वर्ग समाप्तम् ॥

॥ अथ अर्थ वर्ग प्रारभ्यते ॥

॥ तत्र–अर्थवर्गना प्रकार ॥ उपेंद्रावज्राछंद.

अथार्थवर्गे हितचिंतनं श्री,र्मितं पदार्थस्व महीशसेवा ॥ ख-
लादिमैत्री व्यसनादि चैव,मिहावधार्याःकतिचित्प्रसंगा॥१॥

ભાવાર્થઃ–આ બીજા અર્થ વર્ગને વીષે १ સંપદા, २ હિત કરવું, ३ લક્ષ્મી ઉપાર્જવી, ४ દ્રવ્ય પદાર્થ, ५ નરેશને સેવવો, ६ ખલાદિની મૈત્રી ન કરવી, અને ७ વ્યસનનો સંબંધ, એ રીતે સાત પ્રકારનો સંબંધ કહેવાશે. १

॥ અથ અર્થ એટલે સંપદા વિષે ॥ માલિની છંદ ॥

અરથ અરજિ જેણે સ્વાયતે વિશ્વ હોવે, જિણ વિણ ગુણ
વિદ્યા રૂપને કોણ જોવે ॥ અભિનવ સુખકેરો સાર એ અર્થ
જાણી, સકલ ધરમ એથી સાધિએ ચિત્ત આણી ॥ २ ॥

ભાવાર્થઃ–જો સંપદા પાસે હોય તો વિશ્વ કહેતાં બધી પૃ-થવી પોતાને હાથ થાય; એના (સંપદા) વિના ગુણ, વિદ્યા અને રૂપને કોઈ જોતું નથી, અર્થાત્ જેની પાસે ધન ન હોય અને તે ગુણવાન હોય, વિદ્યાવાન હોય અને રૂપવાન હોય તો-પણ તે શોભાને પામતો નથી–ધન વિનાનો હોય તેને કોઈ લે-ખામાં ગણતું નથી, માટે ગુણનું ઘર તે દ્રવ્ય જાણવું; વલી અ-ભિનવ સુખનું મૂલ એ અર્થને જાણવો, એટલે ધન પાસે હોય તો હરેક પ્રકારનું સુખ પ્રાપ્ત થાય છે; અને તેના વડે બધા ધર્મ પણ સાધી શકાય છે તથા ચિત્ત ઠામનું કારણ પણ દ્રવ્ય છે. અર્થાત્ જો ધન પાસે હોય તો ચિત્ત પણ સ્થિર રહેછે. તે ઉપર ઉત્તમ કુમારનું ચરિત્ર ઉપયોગી હોવાથી અહીં બતાવીયે છીએ. २

॥ संपदाथी सुख पामनार उत्तम कुमारनी कथा ॥

वणारसी नगरीमां मकरध्वज राजानी शीलगुणे करी विराजमान लक्ष्मीवती राणीनो पुत्र दयालु, सत्यवादी, न्यायधर्मने विषे कुशल, डाह्यो, परस्त्रीविरत, संतोषी, देव गुरुभक्तिकारक, धर्मनो रागी, परउपकारी, बहोत्तेर कलानो पारगामी, विनई, ईत्यादि अनेक गुण संपन्न "उत्तमकुमार" नामे हतो. एक वखत घरमां बेठा थका, परदेश जई भाग्यनुं पारखुं जोवानो विचार करी ते चाली नीकल्यो. गाम, नगर, शहेर, पुर, पाटणादिना मंडाण जोतो जोतो ते चित्रकुट पर्वतने विषे गयो. त्यांना महसेनराजाना तावामां मेवाड, मालवो, बाणुंलक्ष मारवाड, सौराष्ट्र, कर्णाटक विगेरे घणो मुलक हतो. तेने पुत्र के पुत्री कांई नहोतुं. तेथी ते वैराग्यनी वासनामां लीन थई राज्यना वारस माटे चिंता करतो कोईक गुणवंत मली आवे तो तेने पोताना पुत्र तरीके राखवा शोध करतो हतो. एकदा ते राजा नवा वछेरा उपर बेसीने नगर बाहार फरवा गयो हतो. ते वछेरानी मंदगति जोईने राजाए प्रधानप्रत्ये तेनुं कारण शुं छे ? एम पुछ्युं. ते वखत त्यां आगल उत्तमकुमार आवेलो हतो तेणे ते प्रश्न सांभलीने कह्युं के, ए घोडे (वछेरे) भेंसनुं दूध पीधुं छे तेथी एनो वेग मंद छे. केमके भेंसनुं दूध वायडुं छे तेथे करी ते दोडी शकतो नथी. एवुं सांभली राजाये पुछ्युं जे—वत्स ! तें ए केम जाण्युं? उत्तमकुमारे तेना उत्तरमां जणाव्युं के—हुं घोडानी परिक्षा (अश्वविद्या) जाणुं छुं. राजाये कह्युं—तहारूं कहेवुं साचुं छे. ए घोडानी मा मरी गई हती तेथी एने भेंसनुं दूध पायुं छे. पछी राजाये पुछ्युं के, तुं कोण छे ? उत्तमकुमारे यथायोग्यताये जणाव्युं. राजाए आ कोईक राजपुत्र तो खरो ! एम विचारी कह्युं के:—तुं महारूं राज्य ग्रहण कर. केमके महारे

आ संसार मुकीने परमेश्वरनो मार्ग आदरवो छे. उत्तमकुमारे कह्युं के–हे पिताजी ! म्हारे आगल जवुं छे, माटे आवतां जे कहेशो ते करीश. एम कही ते त्यांथी आगल चाल्यो. अनुक्रमे भरूच आव्यो. त्यां नगरनो तमासो जोतो जोतो श्री मुनीसुव्रत स्वामीना प्रासाद पासे आव्यो. देहेरामां जई घणी भक्ति सहित परमेश्वरने नमस्कार कर्यो. त्यांथी नीकलतां तेने खबर मली के आ शहेर (भरूच) नो कुबेरदत्त नामे वहाणनो व्यापारी अढारसें जोजन उपर मुग्ध नामे द्वीप छे त्यां जवा माटे वहाण भरीने तैयार थयो छे. उत्तमकुमार तेनी पासे गयो अने पृथवीनुं कौतक जोवा माटे भाडुं ठरावी ते वहाणमां बेठो. भरूच बंदरथी वहाण नीकली दरीयामार्गे जतां केटलेक दीवसे वहाणमां भरी राखेलुं मीठुं पाणी खूट्युं. लोक चिंतातुर थया. पछी अन्य द्वीपे जई पाणी भरी लीधुं. त्यां भ्रमरकेतुराजा घणा राक्षसनो परिवार लेईने आव्यो. तेणे केटलाक माणसोने पोतानी कक्षामां घाल्या, केटलाकने हाथमां झाल्या, अने केटलाकने पग नीचे चांप्या. केटलाक लोक त्यांथी नाठा अने केटलाक वहाणमां छुपाई रह्या. लोकोनी एवी दुरदशा जोईने सत्यवान्, पराक्रमी, वीर अने धैर्यवंत एवा उत्तमकुमारे राक्षसना राजाने पोतानी सामे बोलावी युद्ध करवा मांड्युं. लढतां लढतां ए घणे दूर नीकली गया. उत्तमकुमारनो मार सहन नही थवाथी भ्रमरकेतु नाशी गयो. पछी ते समुद्र कीनारे आव्यो तो मालम पड्युं के वहाण चाली गयां. तेथी मनमां चिंतवन करवा लाग्यो के, जुओ ! में ए सर्वेने जीवता मुकाव्या अने ए मने मुकीने चाल्या गया. माटे संसारमां कोई केहनुं नथी. अथवा वली ते लोक पण शुं करे ? कर्यां कर्म त्हारे भोगववांज जोईये. वली तुं एकलो छे, त्हारूं कोई नथी, त्हारो

धर्म एक छे, एवे समये कोईने दोष देवो घटे नही, महारां भवांतरनां कर्यां जे कर्म ते भोगववांज जोइये. एवुं विचारीने त्यां आगल भाग्यां वहाणना जेवुं चिन्ह करीने रह्यो. फल फूलेकरी प्राण धारणा करे छे. एवामां साक्षात् कंदर्पावतार समान आ उत्तमकुमारनुं रूप देखीने ए द्वीपनी देवी व्यामोहप्रत्ये पामी. हाव भाव रूप शृंगारादिक जे स्त्रीयोना सोले सामंत तेने तैयार करीने उत्तमकुमारना कंदर्पराजाने जीतवा काजे ते देवीए प्रथम नेत्ररूपी सामंत मार्फत भ्रमर रूपीया बाण नाखवा मांड्यां. पछी जीव्हायें वचन रूपीया बाण नाखवा मांड्यां. पछी स्तन रूपीया शीखर देखारुवा लागी. शामाटे जे? कंदर्पराजानी अस्वारीनी वेलायें जाणे ए हृदय रूपीया पर्वत उपर निशानज चढाव्यां होयनी शुं ! एम जाणे ए स्तन रूपीयां नगारां नहोय शुं ? अर्थात् कंदर्पने जीतवा माटे मोहराजानी फोजनां स्तनरूपी नीशानडंका देखाडीने उत्तमकुमारने ललचाववा मांड्यो. एवा घणा प्रकार करी करीने थाकी पण मेरूपर्वतना शीखरनी परे उत्तमकुमारने निश्चल जाणीने देवी हर्ष पामी, तेथी तेणे साढा बार क्रोड सुवर्णनी वृष्टि करी अने कुंवरनी स्तुति करी ते पोताने स्थानके चाली गई. त्यारपछी त्यां आगल समुद्रदत्त वहाणवटीनां वहाण आव्यां. तेणे उत्तमकुमारने पोताना वहाणमां बेसार्यो. ए वहाण चालतां केटलोक वखत थतां तेमां पण पाणी खुटवाथी लोको तरसे आकुल व्याकुल थवा लाग्या. ए वखत मालमे (निर्यामके) शास्त्र जोईने कह्युं के, भाईयो ! वेलनां पाणी जलकांत रत्ने करी फरश्यां छे माटे अहीं पर्वतने विषे अगाध कुंड छे तेथी पाणी महा मुस्केलीये पामीये एवुं छे. वली अहीं भ्रमरकेतु राक्षस रहे छे ते लोकनो संहार करे छे एवी वात में परंपराए सांभली छे. परंतु नजीकमां बीजे पाणी मले

तेवुं नथी, माटे अहीं वहाण राखीने पाणी भरी ल्यो. एम कही तेणे नांगर नाखीने वहाण थंभाव्या. पाणीनी घणी अगत्य हती पण राक्षसना भये करी वहाणथी नीचे उतरवानी कोईनी हाम चाली नहीं. अर्थात् कोई पण माणस उतर्युं नही. पछी करूणारसना भंडार उत्तमकुमारे वहाणमांथी उतरीने पाणीना स्थानके जई दोर बांधी लोकोने कह्युं के, आवो, आवो. हुं उभो छुं, छतां जोउं के राक्षस तमने शुं करे छे ? एटले म्हारी हाजरी होवाथी राक्षस तमने कांई करी शकनार नथी माटे सुखेथी आवो. एम कही कुमार राक्षसनी पासे जईने बेठो. पछी लोक निर्भय थया थका उतरीने जलने वास्ते भाजन लेई कुवा आगल गया. तेमणे दोर बांधीने वासण कुआमां फांस्यां पण चलुं करे एटलुंए पाणी आव्युं नही. अने कोईनी तरस पण छीपी नही. ते जोई उत्तमकुमारे विचार्युं जे आटला बधा लोक पाणी विना मरशे. कुवामां पाणी देखाय छे परंतु ते वासणमां आवतुं नथी. माटे कोई पण प्रकारनुं कारण खरूं ! वली लोकनां वृंद पण कूप मध्ये आडुं अवलुं जुए छे अने मनमां राक्षसनी बीक पण धरे छे के, रखेने राक्षस आवशे तो आपण सर्वेने भक्षण करी जशे. ए वखत वहाणनो अधिकारी बोल्यो जे—भाईयो ! एवो कोई पुरूष छे ? के जे कुवामां उतरी जल मोकलुं करे ? राक्षसनी बीके करी कोईये हा भणी नही तेथी सर्व चिंतातुर थया. पछी परोपकारी उत्तमकुमारे, हुं हाजर छतां उपकार न करूं तो म्हारूं साहसीकपणानुं बीरूद जाय, एम विचारी कुवामां उतरवानी तैयारी करी. बीजा व्यवहारीया ते वखत कहेवा लाग्या के तमे उतरशो नही. परंतु उपकार करवाने जेनुं मन तलपापड थई रह्युं छे एवो उत्तमकुमार तरतज रज्जु (दोर साथे मांची) बंधावीने कुवामां उतर्यो. ते पाणी

आवतां अटक्यो अने जोयुं तो नीचे सोनानी जाली हती तेना ठीद्रोमांथी थोडुं थोडुं जल आवतुं मालम पड्युं. तेथी ते विचार करवा लाग्यो के, एमां कांई पण कारण ठे खरुं! एवी सुवर्णनी कंवा (जाली) तो किहांये दीठी नथी, तेम सांजली पण नथी. पठी उत्तमकुमारे जोर करी जालीने आडी अवली हलावी एटले पाणीनो प्रवाह चाल्यो. कुआ उपर रहेला लोक हर्षवंत थया थका. कुमारनी स्तुति करवा लाग्या. लोकोए पाणी पीधुं अने जाजन जरी लीधां. हवे आगुं अवलुं तपासतां उत्तमकुमारे कुवानी जींते उंचे एक जाली दीठी. त्यां कांखीने जोतां मांहे मणीरत्नमय पावडीयां दीठां. पठी मनमां विचार कर्यो के अहीं पण जाग्यनी परिक्षा करवा जेवुं दीसे ठे! एम धारीने ते जाली खसेडी अंदर पेठो ने पगथीआं उतर्यां, एटले एक मार्ग तेनी नजरे पड्यो. त्यांथी आगल चालतां एक अनुपम महेल तेना जोवामां आव्यो. तेनी नजीक जतां एक वृद्ध स्त्री त्यां बेठेली हती ते बोली के, हे हीन पुन्याईना धणी! तुं कोण ठे? शुं तुं ज्रमर राक्षसने उलखतो नथी? जे तुं अहीं आव्यो ठे? तेवारे कुमार बोल्यो के, हुं तेने जाणुं ठुं, हुं ए ज्रमरकेतु राक्षसने जीतनार ठुं. माटे ए प्रासाद कोनो ठे अने तुं कोण ठे? ए मने कहे. वृद्धा स्त्री एवुं सांजलीने कहे ठे जे- हे सत्ववंत! हे धीरजवंत! सांजल. अहींथी ढुंकडो राक्षस द्वीप ठे, त्यां लंका नगरी ठे. तेनो स्वामी ज्रमर नामे राक्षस ठे. तेने महालसा नामे चोसठ कला निपुण अति रूपवान एक पुत्री ठे. एकदा ज्रमरकेतुए निमित्तियाने तेनो जर्तार कोण थशे? एवुं पुठवाथी ज्ञानवले तेणे कह्युं के-जूचर क्षत्रीय उत्तमकुमार एनो जर्तार थशे. ए राजाधिराज थशे तथा घणा विद्याधर एने सेवशे. ते सांजली ज्रमरकेतु

खेद पाम्यो जे, हुं राक्षस छतां म्हारी पुत्री भूचर क्षत्रीय परणशे, ए कशा कामनुं नही. एवुं विचारीने तेणे आ कुवामां मार्ग करीने आ प्रासाद तैयार करावी तेमां पोतानी पुत्रीने राखी छे. वली ए राक्षसे पुत्रीना रागे करी तेणीने पांच दीव्य मनोहर रत्न आप्यां छे. एक वखत दासीनी साथे तेणीए कांईक वस्तु मगावी ते दासी लेईने आवतां थकां कुवामां पडी. तेथी ए राक्षसे कुवामां सोनानी जाली जमावी छे; त्यारपछी वली राक्षसे निमित्तियाने पुछ्युं जे— आ पुत्रीनो भर्तार कोण थई आवशे. त्यारे पण तेणे कीधुं के— भूचर क्षत्रीय थशे. राक्षसे कह्युं के, एनुं कांई एधाण कहे ? निमित्तियाए जणाव्युं के— समुद्रमार्गे वहाणमां बेसी आवनारा लोकने त्हारो भय छे, ते तेहज मटावशे. त्हारी साथे युद्ध करीने ए तने जीतशे. एवुं सांभली शून्य चित्त थयो थको ते (राक्षस) द्वीप मांहे फरे छे. त्यारपछी आगल जे कांई थयुं होय ते, ए जाणे. म्हारा मोंहो आगल जे कांई थयुं छे अने में सांभलेलुं छे ते सर्वे बीना तमोने कही. ए वात सांभली कुमार चिंतववा लाग्यो के, भ्रमरकेतु राक्षसने तो में जीत्यो छे, ए म्हारो शत्रु छे अने तेनेज घेर हुं आवी चढ्यो छुं, माटे हवे कांईक माया करुं ! एटलामां तो महालसा कन्या त्यां आवी. तेनी तथा उत्तमकुमारनी दृष्टी मली, तेथी ते व्यामोह पामी. तेवारे वृद्धा स्त्रीए ते बे जणने गांधर्व लग्न करी परणाव्यां. पछी महालसाए दासी पासे रत्ननो करंडीओ मगाव्यो. ते लेई बन्ने जणा (उत्तमकुमार तथा महालसा) कुवानी मेखलाये आव्या. ए अवसरने विषे कोईक वहाणना लोक पाणीने वास्ते कुवा उपर आवेला हता तेओए कुमारने अंदर दीठो. एमणे दोर मुकी दासी सहित बन्नेने बाहार काढ्यां. तेमने जोई, आ ते कोई

देवता संबंधी छे के शुं ? एम तेओ विचार करवा लाग्या. पछी ते बन्नेने वहाणमां बेसारीने तेओ त्यांथी चाली नीकळ्या. वहाण चाल्यां जाय छे एवामां वली तेमां पण केटलेक दीवसे पाणी खुट्युं. तेणेकरी सर्व लोक चिंतातूर थया. ते वेलाये महालसा बोली– हे स्वामी ! महारी पासे करंडीआमध्ये रत्न छे तेनो घणोघणो महिमा कह्यो छे, ते सांभळो. १ पृथवी नामे रत्न छे. तेने पूज्युं थकुं मणी कनक रत्नमय भाजन प्रगट थाय एवो ए मणीरत्ननो प्रभाव छे. बीजुं–जलरत्न छे. ते पूज्या थका व्योमघृतवांछित जल वृष्टि थाय, ए रत्नना जोगथी अकाले मेघ वरसे. त्रीजुं– वह्नि रत्न छे. तेनाथी अग्नि विना सूर्यपाक रसवति निपजे. चोथुं– वायु रत्न छे. तेनाथी तापनी व्यथा समे, मनमान्यो वायरो वाय. अने पांचमा रत्नथी देवदुष्य वस्त्रनी प्राप्ती थाय. एवां महिमावंत पांच रत्न छे. माटे हे स्वामी ! तमे दुखीया लोकने उधरो, उपकार करो. एवुं नारीनुं वचन सांभळीने हर्षवंत थया थका कुमारे जलरत्नने पूजीने वहाणना कुवास्थंभे बांध्युं. तत्काल वरसात वरस्यो. लोकोए पाणीवडे पात्र भर्यां, जल पीधुं अने आनंद पाम्या. त्यारपछी केटलेक समये अन्न खूट्युं. त्यारे पृथवी नामा रत्नने पूजी धूपीने धान्यने स्थानके मूक्युं. एटले अखूट धान्य थयुं. लोकनी भूख भागी. आवो अथाह उपकार करनार कुमारनी सघला लोक सेवा करेछे. पण ते वहाणनो उपरी (मालीक) समुद्रदत्त रंभा समान स्त्री अने रत्नो देखीने ललचायो. तेणे परलोकनी पण बीक न राखतां लाग जोई उत्तमकुमारने समुद्रमां नाख्यो. लोकमां हालकलोल थयो. घणा लोको रोवा लाग्या. महालसा ए वात सांभळी मरवाने उजमाल थई. ते वखत दासीए कह्युं जे– बालमरणे शुं थाय ? जिनेश्वरना शासनमां बालमरणनी ना कही छे. माटे जेम तेम

करी समुद्रदत्तने भोलवीने शील राखो. वली रत्नना प्रभावथी आपणे अभिष्ट तटे जईशुं. त्यां भाग्य योगे समुद्रथी आवेल तमारा स्वामी पण मलशे, एम हुं धारूंछुं. तेम छतां जो ए नही मले तो आपणे दीक्षा लेवी. सखीनां वचन सांभली मदालसाए ते प्रमाणे वर्त्तवा निर्धार कर्यो.

उत्तमकुमार समुद्रमां पड्या पछी तेने एक म्होटा मगरमछे गल्यो. ते मछ तटनेविषे आव्यो एटले माछीए जालमां पकडी तेने विदार्यो. तेमांथी उत्तमकुमार नीकल्यो. धीवरे तेने उपचार करी सावध कर्यो. मदालसाए अभिष्ट द्वीप संभार्यो एटले वायुरत्नना जोगथी तेना साहाय्ये करी ते वहाण बे दीवसमां पल्ली नामना बंदरने कांठे आव्यां. त्यां जैनधर्मी नरवर्म राजा राज्य करे छे. तेनी पासे घणां रत्ननुं भेटणुं तथा मदालसाने साथे लेई समुद्रदत्त आव्यो. राजानी सन्मुख भेटणुं मुकी उभो रह्यो एटले राजाये कुशल वार्ता पुछीने कह्युं जे—अहो जहाजना वेपारी! तमे कोण देश, कोण द्वीप, कोण नगर अने कोण बंदरथी आव्या. वाणीये कह्युं के, हुं चंद्रद्वीपथी आव्यो. मार्गे आवतां थकां एक स्त्री जडी छे माटे हुकम आपो तो आपनी साखे हुं तेणीने स्त्री करी राखुं. ते सांभलीने मदालसाए कीधुं के, हे स्वामी! ए वणीक महा धूर्त्त छे. एणे म्हारा स्वामीने समुद्रमां ढोली नाख्यो छे. ए महा पापीष्ट छे, महा चंडाल छे. माटे ए दुष्टनुं मुख पण जोवुं घटीत नथी. ए पापीनुं मों जोवाथी पाप लागे. स्त्रीनां आवां वेण सांभलता राजा वणीकना उपर क्रोधायमान थयो अने तेनां पांचसो वहाण हतां ते जप्त करी तेने बंधीखानामां नाख्यो. मदालसाने पोतानी पुत्री सदस राजाये राखी. पछी तेणीये रत्नना प्रभाव वडे धन धान्यादि मेलवी अछलकदान देवा मांड्युं.जैनधर्मनेविषेघणी सावधान रहेवा लागी.

वली जिननी पूजा करे, जीवने उपकार करे, ईत्यादि धर्म कार्यमां ते अहर्निश तत्पर रहेती. तेणीये काया बलवंत थाय तेवी वस्तु वापरवानो निषेध कर्यो. पृथ्वी उपर सयन करवुं, स्नान न करवुं, रूडां वस्त्राभरण न पहेरवां, सुगंधिक विलेपन न करवां, तंबूल न खावां, लविंगादिकनो त्याग, सर्वे शाकनो नियम, दही डुध-पक्वानादिक तथा गोल खांड साकर प्रमुख सर्वेनो नियम कर्यो: निरस आहार लेवो, एकासणुं करवुं, कोई म्होटा काम विना बाहिर न नीकलवुं, गोखे पण न बेसवुं, लोकना विवाह पण न जोवा, सखी साथे पण शृंगारादिकनी वात न करवी, वैरागनी ज वातो करवी, वली चाकर नफर साथे पण वात न करवी, एवा एवा अनेक नियम धारीने ते रहेछे.

उत्तमकुमारने साथे लेई कांईक कारणसर माछी पल्लीबोलाकुले आव्यो. ए वखत नरवर्मराजा पोतानी पुत्री सारू सातभूमीउं आवास करावता हता तेना उपर उंचा उभारही नगरनी चर्चा जोता हता. उत्तमकुमार पण उपर गयो. त्यां जे कसीआ सुथार मजुर काम करता हता तेनी पासे जईने तेने तेउने वास्तुकशास्त्र प्रमुखनी समजुती आपी. सहुए ते सांभली चमत्कार पाम्या अने जे कारीगर हता तेमणे ए विश्वकर्मा छे एवुं धारीने तेने पोतानी पासे राख्यो. तेनी साथे जे माछी आव्यो हतो तेनी नात जुदी पडी एटले उत्तम मध्यम जातना भिन्नपणानी परिक्षा करी आपी. पछी आवास संपूर्ण थवाथी राजा प्रमुख ते जोवा सारू आव्या. त्यां उत्तमकुमारनुं रूप सुंदरपणुं जोईने राजा विचारवा लाग्यो के, आकारनी चेष्टायेकरी ए कोईक उत्तम जाति जणाय छे. उत्तम कुल वंश विना एवुं स्वरूप न होय ! माटे उत्तम वंशनो खरो ! एम मन साथे निश्चय करी निमित्तियाना वचने राजाये पोतानी त्रिलोचना नामे पुत्रीने तेनी

साथे परणावी निश्चिंत थवानो विचार कर्यो. पछी शुज्ञ मूहूर्त्ते पाणीग्रहण कराव्युं. अने रहेवा माटे एज सातमालनो आवास आप्यो. उत्तमकुमार ते आवासमां सुखे रहेछे. एक वखत महालसा पोतानी दासीने कहेवा लागी के, हजीसुधी महारा ज्ञर्तारनी खवर कांई न पमी, तेथी हुं एम धारूं छुं के ते समुद्रमां मरण पाम्या हशे. माटे हवे जीवीने शुं करवुं छे ? आपणे तो ए रत्नना महिमाथी वितरागदेवनां प्रासाद कराव्या, स्वामीवत्सल कर्या, ज्ञान लखाव्यां, दान दीधां विगेरे धर्मनो लाहो लीधो छे, माटे हवे आ धन संपदा त्रीलोचनाने आपीने संसारसमुद्र तरवा माटे दीक्षा ग्रहण करीशुं. ते वखत दासीये कह्युं के–स्वामीनी ! एम एवमो विपवाद म करो. एवुं सांज्ञलवामां आवे छे के, राजकन्या त्रीलोचना रूपलावण्य सर्व गुणना ज्ञाजन एवा एक परदेशीने वरी छे. शुं जाणीये जे एहज तहारो ज्ञर्तार हशे ! जो तमे रजा आपो ता हुं त्यां जईने जोई आवुं. स्वामीनीनो आदेश पामी दासी त्रिलोचना पासे गई. त्यां तेणे उत्तमकुमारने जोयो, पण कांईक ज्ञ्रान्ति रही. पछी त्रिलोचना साथे वातचित करी पोताना मुकामे आवीने महालसा आगल परदेशीना रूप लावण्यनी हकीकत कहीने जणाव्युं के ए आपणा स्वामी जेवो छे, परंतु ते विपे हुं संपूर्ण खात्री करी शकी नथी. ते सांज्ञली महालसा वोली जे–धिक्कार पमो मने, के जे में काने परपुरूषनुं नाम सांज्ञल्युं. ए परपुरूप उपर राग आण्यो ते पाप लाग्युं. एम विचारीने वली पाछी धर्मने विपे सावधानपणे थई. दासीना गया पछी कुमारे त्रिलोचना प्रत्ये पुछ्युं जे, हमणां तहारी साथे वात करी गई ते वृद्धा स्त्री कोण हती ? स्त्री कहे–हे स्वामी ! हे प्राणेश ! महालसा नामे परदेशी स्त्री, के जेने में वेहेन कही छे, तेनी ए दासी आवी हती. ते सांज्ञलीने उत्तमकुमार मन साथे

विचार करवा लाग्यो के, शुं ए महारी नारजा तो न होय! वली विचार्युं जे, ए ते में शुं चिंतव्युं? ए में डुर्ध्यान शुं ध्यायुं? एवुं चिंतवी विरक्तपणे पोतानी निंद्या करवा लाग्यो. पछी एक दीवस मध्यान समये ते पोताना घरनी नजीक देरासर हतुं त्यां पूजा करवा गया. त्यां पूजा नक्ति करतां थकां घणी वेला थई घरे नाव्या तेथी त्रिलोचनाए तेमनी खबर काढवा दासीने मोकली. दासीए त्यां आवी सघले जोया पण किहांये न दीठा तेथी ते पाछी गई, अने त्रिलोचनाने ते वात जणावी. ते सांनली त्रिलोचना चिंता करवा लागी.

तेवा समयने विषे ए नगरमां महेसरदत्त नामे व्यवहारी रहेतो हतो. तेनी पासे छपन क्रोम द्रव्य हतुं. तेणे वहाण वटना व्यापार माटे पांचसें वहाण तथा थलवटना व्यापारार्थे अधोवाईनां जेवां पांचसें गाडां राख्यां हता. ते पांचसें घर, पांचसें हाट, पांचसें वखारो, पांचसें गोकुल, पांचसें हाथी, पांचसें घोमा तथा पांच लाख सेवकनो स्वामी हतो. एटली बधी संपदा छतां तेने एके पुत्र नहोतो. ईछा धरतां धरतां एक पुत्री थई हती तेने अध्यापक पासे नणावी छे. ते कोईक पुन्यानुयोगे करी चोसठ कला निधान थई छे. शेठ संसार उपर वैराग्यवंत थयो छे, पण पुत्री योवनवंत थई जाणीने तेना पाणीग्रहणनी चितामां पड्यो छे जे, कोईक गुणवंत वर मले तो तेने कन्या आपीने आ असार संसारनो त्याग करी चारित्र लेउं. पछी तेणे एक निमित्तियाने पोतानी पुत्रीनो नर्तार कोण थशे? ए विषे पुछ्युं. निमित्तियाए कह्युं जे– आजथी एक महिने अमुक तारीख वारे वर मलशे. ए राजाधिराज एकछत्रनो नोक्ता थशे. शेठे निमित्तियाना कहेवा उपर पूर्ण नरोंसो राखी बतावेला दीवसे पोतानी पुत्रीनुं लग्न करवानो निर्धार करी सर्व

सामग्री तैयार करी छे. म्होटा मांडवा बंधाव्या छे. गामोगाम तोरण बंधाव्या छे, धवलमंगल पण गवाय छे. कर मुकावणी वेलाये वरने आपवा माटे हाथी, घोडा, रथ, सुखपाल, वस्त्राभरण प्रमुख सर्व तैयार करी राख्यां छे. ए वार्ता आखा नगरमां विस्तरी छे. ते सांभली लोको विस्मय पाम्या के, वर विना विवाहनी सामग्री शेठे करी राखी छे एना जेवुं बीजुं शुं नवाई जेवुं होय ! नगरनो राजा पण ते वात सांभली आश्चर्य चकित थयो, तथा महेश्वरदत्त संसार छोडी दीक्षा लेवाने उजमाल थयो छे तेथी तेने धन्यवाद देवा लाग्यो. अने पोते पण वैराग्य पामी विचार करवा लाग्यो के, त्रिलोचनाना भर्तारनी शुद्धि मली नथी तेने खोली कहाडीने राज्यगादीए बेसाडी म्हारे पण चारित्र ग्रहण करवुं एज श्रेय छे. पछी ते महेश्वरदत्तने मल्यो अने बन्ने जणे मली नगरमां पडहो वजडाव्यो के, "जे कोइ त्रिलोचनाना भर्तारनी खबर अने महालसानी मूल वार्ता कहेशे, तेने राज्य आपवा साथे व्यवहारियानी सहस्त्रकला कन्या परणावशे." आ पडहो एक मास पूर्ण थवा आवतां एक शुके (पोपटे) छब्यो. अने ते राजपुरुषोप्रत्ये कहेवा लाग्यो के, हुं पडहा प्रमाणे बन्ने बाबत बतावीश तेथी मने कन्या परणावशो तथा राज्य आपशोने ? अरे जुओ जुओ राजसेवको ! म्हारुं पण भाग्य जाग्युं छे. शुकनुं आश्चर्यकारक वचन सांभलीने सेवको तेने राजा पासे लेई गया. तेणे राजाने कह्युं के, हुं त्रिकालनी वात जाणुं छुं. महालसाने तथा त्रिलोचनाने अहीं बोलावी परिश्च (पडदा) ने आंतरे राखो. एटले अतित, अनागत अने वर्त्तमान, ए त्रणे कालनी सघली वात कहुं. राजाए तेना कहेवा प्रमाणे बन्नेने बोलावी राखी. पछी पोपटे विचार्युं जे म्हारे राज्यने शुं करवुं छे ? तो पण महालसानो संबंध कहुं ते तमे सांभलोः—

" वाणारसी नगरीना राजानो पुत्र उत्तमकुमार वहाणमां बेठो. ते समुद्रनेविषे जलकांत पर्वतमां एक कुवो छे तेमां उतर्यो. त्यां पातालघरमां लंकाना स्वामी भ्रमरकेतु राक्षसनी पुत्री महालसाने परण्यो. पछी कुआमांथी नीकली समुद्रदत्तना वहाणमां बेठो. वहाणना लोकोने पंचरत्नना प्रभावथी जल, धान्य, वस्त्रादि पूरा पाडीने सुखी कर्या. पछी समुद्रदत्ते धन तथा स्त्रीना लोभेकरी तेने (उत्तमकुमारने) समुद्रमां नाख्यो. तेने मगरे गल्यो. माछीए मगरने विदार्यो. तेमांथी ते नीकल्यो. पछी माछीनी साथे आ नगरमां आव्यो. निमित्तियाने वचने करी राजाये तेने पोतानी पुत्री त्रिलोचना परणावी. ते सुखरुप अहीं रह्यो. एकदा मध्यानसमये ते वितरागदेवनी पूजाने अर्थे गयो. त्यां फूल पगर चढावतां तांबोलीयासर्पे रुस्यो. एटले ते उत्तमकुमार ईयल समान थयो छे. सर्पे तेने फूलना ढगलामां नाख्यो. " आ प्रमाणे महालसा तथा उत्तमकुमारनो संबंध कही पोपट कहेवा लाग्यो के, हे राजन् ! में तमारा आगल सघली वात कही, माटे मने राज्य आपो तथा कन्या परणावो. हवे तमे तमारुं वचन पालो. राजा विचारमां पड्यो के, ए पंखीने राज्य केम अपाय ? तेवारे शुक मौन करी रह्यो. फरी वली ते बोल्यो के, हे राजन् ! राज्य आपो, के ते हुं भोगवुं. राजा विचारमां पडी शून्य चित्त जेवो थयो. एटले शुक कहे जे- म्हारे शुं ? गमे तो राज्य आपो ! नही आपो तो तमारुं वचन वृथा थशे. म्हारे तो वन सलामत जोईये ! के ज्यां नवी नवी जातनां फुल फलादिक खाईने सुखे जीवीश. क्यां म्हारे तहारा राज्यनी तमा छे. में तो तहारी परिक्षा करी. वली सांभलः—कह्युं छे के – " जे माणस वचनथी चूक्यो ते जीवता पण मुआ समान जाणवो. " एवुं सांभलीने ते शुकने पोताना हाथमां लेई राजा तेना शरीर

ऊपर हाथ फेरववा लाग्यो; अने कह्युं के- हे सुकमाल शुक-बाल ! हे शिरोमणी ! हे कीर ! हे धीर ! तुजने राज्य आपीशुं. ए वातनी तुं चिंता म करीश. पण हवे तुं आगल वात कहे, जे ए उत्तमकुमार जीवे छे के केम छे ? शुके कह्युं जे- 'एणे तले तेल एटलुंज छे ! हवे कहे शुं ? ते तो पाणी मुलतान गयां ! तो पण राजन् ! हुं तुज सरिखो नथी थतो ! जो ! सांभल ! त्यारपछी जे वात थई, ते हुं तहारा आगल कहुं छुं. " उत्तमकुमारने सर्प डस्या पछी कोईक काम प्रसंगे एकाकी गणिका त्यां आवी चढी. तेणीए कुमारनी महारूपवान कांति देखीने तेना ऊपर मोह पाम्याथी तेनी पासे विषापहार मणीरत्न जडीत मुद्रिका हती तेने पाणीमां ऊली (धोइ) ने केटलुंक पाणी तेने पायुं अने केटलुंक तेना ऊपर छांट्युं. एटले तेज वेलाये विष ऊतरी गयुं अने ए ऊजो थयो. पछी गणिका तेने पोताने घेर तेडी गइ, अने पोताना आवासना चोथे मजले चित्रशालीमां राख्यो छे. ते त्यां तेनी साथे संसारिक रंगभोग विलसे छे. ते माटे हे राजन् ! एने शरीरे स्वस्ति एटले सुख छे. तेम तने पण स्वस्ति हो. हवे तुं मने मुकी दे, जेम हुं कुशले जाउं अने फल फूल खाउं. वली हुं आशीष वचन कहुं छुं के, तहारा-राज्यने पण स्वस्ति हो. महारे राज्यनो खप नथी. वली ते सत्यवादी मनुष्यने पण मंगलीक हो. एम कहीने वली बोल्यो के, एज वैद्य भलो, के जे रोगीयानो रोग टाले अने द्रव्यनी आश करीने ऊसरू आपे ते मूर्ख. माटे हे राजन् ! हुं पण पक्षी जात मूर्ख छुं. केमके सघली वात कहीने हवे हुं राज्यपदवीनी आशा करुं छुं. राजा ते सांभलीने कहेवा लाग्यो जे, तमे 'गुमडुं फाट्युं ने वैद्य वैरी' ए वैद्यवालो ऊखाणो कह्यो ते तो खरुं ! पण ए वातना मेल पूरो थया विना राज्य ते केम देवाय ? त्यारे शुके

कह्युं जे, तमे गणिकाने घेर जाओ. राजाए सेवक पासे गणिकानां सघलां घर जोवराव्यां. पण कुमारने किहांयें न दीठो, तेथी तेओ पाछा आव्या. राजाए कह्युं– हे शुकराज! ए शुं? जाइ! तुं अमने पण जोलवे छे? शुं तें छोकरां दीठां? हे जुंना! एम ठगे चालशे के? ते वखत शुक कहे छे जे– स्वामी सांजलो, जे गणिकाये अमृत छांटीने उत्तमकुमारने जीवाडी सज कर्यो तेणीये पोताना मनमां विचार्युं के, ए राजानो जमाइ छे, माटे राजा एने म्हारे घेर रहेवा नहीं द्ये. तेथी एणे मंत्रे मंत्रीने दोरो वांध्यो. तेज वखत ए (उत्तमकुमार) शुकरूप थयो. जोग वेलाए ते दोरो छोडे छे अने वली पाछो बांधे छे तथा पंजरमां राखे छे. "ते वखत में हृदयमां विचार कर्यो के, एवुं शुं पूर्वे पाप में कर्युं हशे के नर फीटी पंखी थयो? वली राक्षसनी पुत्री मदालसाने तेना बापथी छानी परण्यो ए विगेरे अत्यारसुधीमां में थोडां पण करेलां अघटीत आचरणथी आ दुःख मने पड्युं छे, ए तो आ जवनेविषे फूल बेठां अने परजवे नर्कने विषे एनां फल थशे. एवुं विचारतां विचारतां एक मास सुधी अनंगसेना वेश्याना घरने विषे हुं त्यां रह्यो. आज केटलेक दीवसे पांजरू बाहार मुकीने ते गणिका किहांयेक गइ. ते वखते ए पम्हो वाजतो सांजलीने त्यांथी उम्री आवी में ते फरस्यो. ए उत्तमकुमार ते हुं हुं." एवुं सांचली तरतज राजाए शुकना पगथकी दोरो छोमी नाख्यो. तेवारे दीव्य रूपनो धणी जेवो हतो तेवो मूलरूपे (उत्तमकुमार) थयो. राज्यवर्ग सहित राजा तथा नगरलोक हर्षवंत थया. ते वखत महेश्वरदत्ते निमित्तियाए बतावेली तारीख वार विगेरे बराबर मलतुं आववाथी पोतानी प्रतिज्ञा पूर्ण करवा माटे पोतानी पुत्री तेने परणावीने घणुं द्रव्यादि आप्युं. पछी ते त्रणे (मदालसा, त्रिलोचना तथा सहस्रकला) स्त्रीओ साथे जो-

ग भोगवतो थको सुखमां काल निर्गमन करे छे. त्यारपछी राजाये अनंगसेना गणिकाने तेवावी ताडना करीने फूल पगरथी अमृत छांट्यां संबंधी सघली वात पुछी.एटले तेणीए जणाव्युं के–समुद्रदत्त व्यवहारिये उत्तमकुमारने मारवा माटे पांचसें सोनईयानी लालच आपीने ए फूलमां महारी पासे सर्प नखाव्यो हतो. लोभांध थईने में ए म्होटुं पाप कर्युं. ते वात सांभली राजा कोपे चढ्यो. तेणे समुद्रदत्त थता गणिकाने गरदन मारवा आज्ञा आपी. उत्तमकुमारे दया लावी ते बन्नेने जीवतां मुकाव्यां. राजाये तेमनी सर्व माल मिलकत लुटावी देई देशबाहार काढी मुक्यां. राजा पूर्वनो अर्थात् अगाउथी वैराग्यवंत थयेलो हतो. तेणे जमाई मळ्या, पुत्रीने सुख थयुं, अने पोताने पुत्र नहोतो तेथी पोतानुं सर्व समुद्र सुधीनुं राज्य उत्तमकुमारने आप्युं. पछी चारित्र लीधुं. तेनी साथे केटलाक व्यवहारियाए पण दीक्षा लीधी. नरवर्मराजाने पाटे उत्तमकुमार राजा थया. ते न्यायधर्मे राज काज चलावता त्रणे स्त्रीउनी साथे संसारीक सुख भोग भोगवता थका ते नगरमां रहे छे.

एक वखत भ्रमरकेतु राक्षसे निमित्तियाने पुछ्युं के, महारो वैरी उत्तमकुमार हालमां क्यां छे ? तेणे कह्युं के, तहारी पुत्री महालसाने परणीने सारभुत पांच रत्न लेइ हमणां हवे ते पल्ली नामे वेलाकुले राज्य भोगवे छे. ते सांभळीने क्रोधातुर थइ तेणे उत्तमकुमार उपर चढाइ लेइ जवा माटे पोताना सात लाख राक्षसने एक ठामे बोलाव्या. परंतु अगाउथीज निमित्तियाए कहेलुं हतुं के भूचरक्षत्री तहारी कुमरीने परणशे. ए वात याद आवतां तेनो विचार बदलाइ गयो अने मन साथे विचारवा लाग्यो के– धन्य निमित्तियाना ज्ञानने ! अने वळी धन्य ते कुमारने ! के जेणे साहसीकपणे एकले कुआमां उतरीने त्यां

सुना आवासमां जइ कन्या साथे पाणीग्रहणकर्युं, तथा अमूल्य पांच रत्न पण लेइ गयो. वली एकतो ए जमाइ थयो, ज्ंकारे वध्यो, तथा कटकदले पण वध्यो. एवो विचार करतां तेनो क्रोध समी गयो. पछी ते उत्तमकुमारनी पासे तेना नगरमां आव्यो अने वैर विरोधनो त्यागकरी तेने पगे लाग्यो. कुशल समाचार पुछी आज्ञा मागीने ते पाछो पोताने गामे गयो.

एकदा उत्तमकुमार राजा सन्नाने विषे बेठा छे, त्यां एक दूत आव्यो. तेणे राजाने कागल आप्यो. ते लेइ वांचतां तेमां नीचे लख्या मुजबनो मचकुर मालम पड्यो. "स्वस्ति श्री वाणारसी नगरीथी ली. राजा मकरध्वज स्वपुत्र उत्तमकुमार प्रत्ये निर्न्नर आलिंगने क्षेम कुशल इछे छे. हे पुत्र! तमे घेरथी नीकल्या पछी अमे नगर, गाम, पहाड, पर्वतादि, ठामो ठाम तमारी खबर जोवरावी पण कंइ शुद्धि मली नही; तेथी दीलगीर हता. हालमां तमारा समाचार ज्यारे जाण्या त्यारे तमने तेडवाने अमे आखेपीयो मोकल्यो छे, माटे शीघ्रपणे जेम अवाय तेम वहेला वहेला आवज्यो. हवे अमारी वृद्धावस्था बहु थइ छे, तेणेकरी अमाराथी राज्यधुरानी चिंता थइ शकती नथी. वली तमारा विरहे आत्म व्याकुल थाय छे. पल्लिवेलाकुल नगरनुं म्होटुं राज्य तमे पाम्या तेथी अमे खुशी थया छीये. पण ए सुख वैनवमां गरक थइ त्यां नहीं रहेतां शीघ्रताये आववुं." कागलमां लखेल समाचार जाणीने तत्काल राजाये प्रधानने राज्य न्नलावी स्त्रीयोने साथे लेइ वाणारसी नगरीये जवा माटे प्रयाण कर्युं. रस्तामां चित्रकूट पर्वत आव्यो. त्यांनो महसेन राजा वैराग्यवंत थवाथी चारित्र लेवाने तत्पर थयेलो हतो. पण पुत्र परिवार न होवाथी राज्य कोने सोंपवुं एनी चिंतामां हतो. राजाये कुलदेवीनी न्नक्ति करीने आराधवाथी देवीये तुष्टमान थइ तेने कह्युं हतुं के, प्रातः-

समये राज्यधुराधारी उत्तमकुमार आवशे, तेने तमे राज्य आपीने तमारा आत्मानो अर्थ साधज्यो. (दीक्षालेज्यो) देवीना कहेवा प्रमाणे उत्तमकुमार आव्या. एटले घणा आदर सहित महसेनराजाये चित्रकूटनुं राज्य तेमने आप्युं अने पोते श्री चंद्रशेखर सुरीश्वर पासे चारित्र लेइ ज्ञवाब्धि तर्या. उत्तमकुमारे पोतानी आण प्रवर्त्तावी केटलाक दीवस त्यां रहीने घणा देश साध्या. पछी सिंधुसोवीर नगरना राजाने पोतानी आण मनाववा माटे डुतमुखे कहेवराव्युं. तेणे ते कबुल नही करवाथी प्रधानने राज्य सोंपीने चार अक्षोहिणी कटक लेई ते (उत्तमकुमार राजा) तेने जीतवा सारू गया. त्यां रणसंग्राम करतां ते फतेह पाम्या. पछी ते सिंधुसोवीर नगरना वीरसेन राजाये उत्तमकुमारने पोतानुं राज्य आपी एक हजार पुरूष साथे चारित्र लीधुं. त्यारपछी अनुक्रमे चालतां उत्तमराजा वाणारसी नगरीये आव्या. तेमना पिताये सामा आवी म्होटा मंमाणे नगरप्रवेश महोत्सव कर्यो. तेज दीवसे उत्तमराजाने तेमना पिताये राज्याज्ञिषेक करी पोतानुं राज्य सोंपीने दीक्षा लीधी. वधां मलीने उत्तमकुमार चालीस कोटी ग्रामना धणी थया. चालीस लाख गज, चालीस लाख अश्व, चालीश लाख रथ अने चालीश लाख पाला, एवी चतुरंगी सेना सहित राज्यरूद्धि जोगवतां थकां उत्तमकुमारे गामो गाम वितरागदेवना प्रासाद कराव्या. वर्षो वर्ष रथजात्रा करावता हता. गामो गाम दानशाला मंमावी. जीवदया मूल धर्म अंतःकरण पूर्वक पालता हता. वली ए दीन डुःखीयानो उद्धार करवामां सदा तत्पर रहेता हता.

एकदा उद्याननें विषे केवली महाराज पधार्या. वनपालके वधामणी आपी. तेने घणुं धन आपीने उत्तम राजा प्रमुख वांदवा गया. देशना सांज्ञल्या पछी उत्तमकुमारे पुछ्युं के, हे ज्ञगवान! शा कर्मे करी

हुं एवडी ऋद्धि पाम्यो ? शा कर्मेकरी हुं समुद्रमां पड्यो ? शा कर्मेकरी शुकपणुं थयुं ? अने अंगनसेना गणिकाने एवडुं शा कर्मे करवुं पड्युं ? ते, कृपा करी कहेशो. केवलीमहाराज बोल्या के, हे राजन् ! सांजलः–" पूर्वे तुं हीमाचलनी चूलीकानेविषे सुदत्त गाममां, धनो नामे कणबी हतो. तुं चार स्त्रीउं परण्यो हतो. प्रथम धन धान्येकरी तुं सुखी हतो. परंतु पूर्वेकृत कोईक कर्मना जोगे करी तने दारिद्रपणुं प्राप्त थयुं हतुं. एवामां रस्तामां आवतां वस्त्र पात्र लूटी लीधेला चार साधु ए गामने विषे आव्या. तेमने तें जद्रकपणे फासु घटमान वस्त्र पात्र वहोराव्यां, अने तारी चारे स्त्रीउंए अनुमोदना करी. तेना प्रजाव थकी तुं राजा थयो छे. चारे स्थानकनुं राज्य पाम्यो. चार नारी परण्यो. वली पांच रत्न पाम्यो, तथा बीजी सार सार वस्तुउं मली. ए बधु साधुने आप्यानुं महात्म्य जाणवुं. एकदा पूर्वेजवे तें साधुनी डुगंछा करी जे, आ साधु मल परसेवे करी मछ जेवा गंधाय छे. ए कर्मेकरी तने मगरमछे गळ्यो. वली पूर्वे जवनेविषे तें शुकने पंजरमां घाली राख्यो हतो. ते कर्मना योगे आ जवे तुं शुकपणुं पाम्यो. अनंगसेनाए पूर्वे जवे सोक्यनुं घणुं रूप जोईने हास्यमां तेने गणिका कही हती तेथी ते गणिका थई." एवां केवली जगवाननां वचन सांजलीने वैराग्य पामी उत्तमकुमारे घेर आवी पुत्रने राज्यनो जार सोंपीने एज केवली पासे दीक्षा लीधी. ए उग्र तप करी आयु पूर्ण थये थके काल करी देवता थया. त्यांथी चवीने महावीदेह क्षेत्रनेविषे अवतरी कर्म खपावीने मोक्ष जशे. अनंतु सुख पामशे. तेमज बीजा पण जे जीव उत्तम करणी करशे ते तरशे. जुउं ! उत्तमकुमारना जीवे पूर्वे जवमां पोतानी पासे अर्थ एटले द्रव्य नहोतुं तोपण साधुने सुपात्रे वस्त्र पात्रनुं दान दीधुं तेथी घणी राज ऋद्धि अने रमणीउं पाम्या.

माटे द्रव्यनो सद् उपयोग करवो. वली नीराशापणे करवाथी जेम उत्तमकुमार सुख वैभव पाम्या, तेम जे प्राणी नीराशाए करे ते सुख सौभाग्य पामे. माटे जे करवुं ते नीराशापणे करवुं. ए बीजाकाव्यनो परमार्थ कह्यो. २

अरथ विण कवन्नो जेह वेश्याइ नाख्यो, अरथ विण वसिष्ट राम जातो उवेख्यो ॥ सुकृत सुजस कारी अर्थ ते ए उपार्जो, कुवणज उपजंतो अर्थ ते दूर वर्जो ॥३॥

भावार्थः– केवन्ना शेठनी पासे द्रव्य खूटवाथी वेश्याए तेने कहाडी मुक्यो, रामचंद्र जेवाने पण द्रव्यरहित जाणी वसिष्ट रूषीये आदर न दीधो, माटे अर्थ ए जगतमां घणी वात छे, ते थकी सुकृतनो भंडार भराय, उत्तम जस पामे, अर्थवालाने गमे तेवुं काम होय अथवा मादुं काम होय तोपण ते सम्रुं थाय. माटे परिग्रह ए घणी वात छे. ३

॥ द्रव्य विना वेश्याए केवन्ना शेठने कहाडी मुक्यानो प्रबंध ॥

बार वर्ष सुधी वेश्याने घेर रही तेणीने सोल क्रोड द्रव्य आपनार केवन्ना शेठना माबाप मर्ण पामवाथी तेनी स्त्री धन रहित थइ त्यारे तेणीए पोतानां घरेणां मोकल्यां. वृद्ध वेश्याये घरेणां देखीने विचार्यु जे एने घेर हवे धन खूट्युं. माटे ए आपणे घेर कामनो नहि. पछी तेणीए पोतानी पुत्रीने कह्युं के, हे पुत्री ! ए निर्धन थयो मालम पडे छे माटे एनो संग मूको. पुत्रीये कह्युं के, क्रोडो रुपीया एना खाधा. वली एना सिवाय बीजानो संग पण में कर्यो नथी अने सर्व वाते ए लायक छे, माटे एनो संग केम मूकाय ? ते वखत अक्काये क्रोध करीने केवन्नाने पोताना घर थकी हांकी कहाड्यो. ज्यां लगण एनी पासे द्रव्य हतुं त्यां लगण राख्यो. द्रव्यहीण थयो त्यारे एक दीवस पण न राख्यो.

माटे द्रव्य ए जगतमां मोटी वात छे. द्रव्यथी सर्व काम थई शके छे तथा मान पण मळे छे. २

॥ द्रव्य रहीत होवाथी रामचंद्रने वसिष्ठरुषीये उवेख्यानो प्रबंध ॥

रामचंद्रजीने ज्यारे तेमना पिताये वनवास आप्यो त्यारे तेमणे विचार्युं जे गुरुने पगे लागी तेमनी आशीष लेईने जवुं, ए उत्तम छे. पछी ते वसिष्ट गुरुने वंदना करवा माटे गया. तेमने आवता देखीने एक शिष्ये गुरुने कह्युं के, रामचंद्रजी आवे छे. वसिष्ट रुषीये पुछ्युं जे, एमनी साथे कोण छे ? शिष्ये जणाव्युं जे, ए एकला छे. ते सांजळीने गुरु घरमां पेठा. पछी रामचंद्रजी आव्या. तेमणे पुछ्युं के, गुरु क्यां छे ? चेलाये कह्युं के, गुरु ध्यानमां छे. आवो उत्तर मळतां, लक्ष्मी विना सर्वे खोटुं छे, एम विचारी रामचंद्रजी त्यांथी पाछा वळ्या. वसिष्टरुषीये रामचंद्रजीने रुद्धिरहित जाणीने उवेख्या अर्थात् बीलकुल आदर न दीधो. माटे लक्ष्मी ए जगतमां सर्व स्थळे मान अपावनारी छे. लक्ष्मी रहितने कोई लेखामां पण गणतुं नथी. ३

॥ अथ हित चिंतन विषे ॥

परहित करवा जे चित्त उछाह धारे, परकृत हितहीये जे न कांई विसारे ॥ प्रति हित परथी ते जे न वांछे कदाई, पुरुष रयण सोई वंदिए सो सदाई ॥ ४ ॥

जावार्थः— जे प्राणी परने हित करवानुं मन राखे, अने जे पुरुषे परनो कोईक दीवसे कोईक वेळाये जे गुण कर्यो होय ते विसारे नही अर्थात् कोईनो करेलो गुण जूली जाय नही, वळी एवुं पण न धारे जे में एनो गुण कर्यो छे, माटे ए मुजने कांईक आपे, ए प्रमाणे कदी पण इछता नथी ते पुरुष रत्न समान अने हमेशां नमवा योग्य जाणवा. ४

निज छुख न गणीने पारकूं छुःख वारे, तिहतणि बलिहारे जाइये कोडि वारे ॥ जिम विषज्वर जेणे मंक पीडा सहीने, विषधर जिन वीरे बूऊव्यो ते वहीने ॥ ५ ॥

नावार्थः– जे प्राणी पोतानुं छुःख खातरमां गणे नही अने पारका छुःखने वारे अर्थात् पारकुं छुःख दूर करे, ते प्राणीनी क्रोम वार बलिहारी जईये, जेम श्री महावीरस्वामीये चंडकौसिक नामे सर्पे पोताने डंक मार्यो तेनी वेदना सहन करीने पण तेने प्रतिबोध पमाड्यो तेथी ते आठमा देवलोकनेविषे गया. एवी रीते जे माणस पोते छुःख वेठीने पारकानुं हित चिंतवे ठे तेनी क्रोड क्रोम वार वलीहारी जईये. ५

॥परहित चिंतनविषे महावीरस्वामी अने चंडकौसिक सर्पनो प्रबंध॥

चंमकौसिक नामे सर्प पूर्वनवमां साधु हतो. ते एक न्हाना चेलाने पोतानी साथे लेई वोहोरवा गयो. चेलो पठवाडे अने साधु आगल, एम रस्तामां जतां साधुना पग तले एक देमकी चंपाणी. ते चेलाये दीठी. तेणे गुरुने कह्युं के, स्वामी! आपना पग हेठे देडकी चंपाईने मृत्यु पामी ठे. माटे ईरियावही पमिकमो त्यारे ते आलोवज्यो. गुरुये कह्युं के, मह्यारा पग हेठे नथी चंपाणी. पठी आहार पाणी लेईने मुकामे आव्या, एटले गमणागमण आलोवतां थकां चेलाये देमकीनी वात गुरुने संनारी आपी. गुरुए कह्युं जे, अमे नथी मारी. चेलाये विचार्युं जे, सांजे पडिकमीने आलोवशे. पठी ज्यारे सांजना पमिकमणे पडिकमती वेलाये साधुये अथथी मांडीने ईति सुधी पडिकमणानी विधि करी पण पेली देमकी आलोवी नही; तेथी चेलाये पोताना मनमां विचार कर्यो के, गुरुने माथे पंचेंद्रि हत्यानो नार रहे अने संयममां खंडना लागे तेथी आत्मानो अर्थ ब-

गडे, ए ठीक नही. गुरुनी वृद्धावस्था होवाथी ते चूकी गया हशे. माटे महारे ते संजारी आपी एमने दोष मुक्त करवा जोईये. एम धारीने तेणे देरुकीविषे कह्युं. ते सांजलतांज गुरू क्रोधायमान थईने उंघो लेई चेलाने मारवा दोड्या. जुर्ज! जीवने उगारवानुं उपकरण जे उंघो, तेने आ वखत जीवहींसा रूप करी हाथमां लेईने गुरू पोताना हितचिंतक चेलाने मारवा धाया. चेलो अवसर विचारी त्यांथी पलायन करी गयो. गुरू तेनी पठवाडे मारवाने दोड्या. ते वखत वचमां अंधाराने लीधे थांजलो न देखवाथी ते गुरूना मर्मस्थानके कपालने विषे वाग्यो. तेने जोगे करी साधु मरीने ज्योतषी देवतामां जई उपन्या. त्यांथी चवीने ते चंडकोसीयो तापस थयो. त्यां तेणे फल फूलनी वाडी वावी हती. ते वाडीनेविषे आवीने घणा राजाउंना कुमार फल फूल चूंटी जता हता. केटलीक वार तेणे मना कर्या उतां पण राजकुमारो चूंटी जता बंध थया नही, तेथी तेउंना उपर रीसे जराई एक वखत हाथमां फरसी लेई तेमने (राजकुमारोने) मारवा माटे तापस दोड्यो. तेवामां कईक कर्मना योगे करी वचमां खाड हती तेमां पडता वेंतज तेने पोतानी फरसी पोताना पेटमां वागी. तेना योगथी मर्ण पामीने ते चंडकौसिक सर्पपणे उपन्यो. ए महा विषधर थयो. एना विषनी ज्वाला एवी तो तीव्र हती, के जे लोक तेनी दृष्टीए परुता ते तत्काल बलीने जस्म थता. एवो ते दृष्टी विष सर्प हतो, तेथी तेनो राफरुो हतो ते मार्ग छांडीने लोको बीजे मार्गे थई आव जाव करता हता. एवा समयनेविषे श्री महावीरस्वामी जगवान उद्मस्थावस्थाये विहार करता करतां त्यां पधार्या. चंडकोसीयानो राफडो हतो एज मार्गे ज्यारे जगवान जवा लाग्या त्यारे लोकोये तेमने वार्या जे, स्वामी ए मार्गे न जशो. परंतु सर्पने प्रतिबोधवा माटे वीर जगवान ए मार्गे जईने ज्यां

चंडकोसिया सर्पनुं बील हतुं त्यां काउसग्ग करी रह्या. एटले चंडकोसीये बीलमांथी नीकलीने प्रभुना सामुं जोई ज्वाला मुकी. पण ते प्रभुने न लागी. बीजी वार तेणे प्रभुने डस्या. ते वखत प्रभुना शरीर थकी दूधनी धारा छूटी. सर्प विचारमां पड्यो के, ए शुं ? बीजाने डसुं छुं त्यारे तो तेमांथी लोही नीकले छे अने एहुने तो दूध नीकल्युं ! ए ते शुं अचरीज ? एवुं ते विचारतो हतो एटले प्रभुजीये कह्युं के, हे चंडकोसिया ! बुझ ! बुझ !! अरे भुंडा ! ए क्रोधनां फल माठां छे, ए क्रोध थकीज तुं ए अवतार पाम्यो छुं. माटे भुंडा ! संसार तरीने उत्तम पदने पाम. जेम संसार रझलवो न पडे. प्रभुना मुखथी आवां वचन सांभली (जातिस्मर्ण ज्ञान थवाथी) चंडकोसिक दरमांथी बाहार नीकलीने प्रभुने पाखले त्रण आंटा (प्रदक्षिणा) देई, त्रण वार फण नीची नमावी पगे लागीने प्रभुना सन्मुख फण उंची राखीने बोल्यो के, हे स्वामी ! हे शरणागत वत्सल ! हवे मुजने तुं तार ! तार ! हे अनंता कालनी भावठना टालणहार ! तमे संसारसमुद्रमां पडता प्राणीने उधरवा समर्थ छो, अने महारा भाग्यना योगे पधार्या छो; ते माटे मुजने अणसण करावो. प्रभुये तेने पंदर दीवसनुं अणसण कराव्युं. ते अणसण करीने पछी तेणे पोतानी काया वोसरावी जे, हवे ए काया साथे ममत्व न राखवो. ए शरीर अनित्य छे. एम विचारीने तेणे पोतानुं मुख बीलमांहे घालीने बाहिर बधुं शरीर प्रछन्युं. पछी कोई जीवने पराभव करतो नहोतो. एम जाणीने लोक कहेवा लाग्या जे, हवे तो नागदेवता आपणा उपर तुष्टमान थया, माटे आपणे एमने पूजीये. पछी लोको नागदेवताने पूजवा लाग्या. आहीर लोक जे आवे ते कोईक घी, दूध, मांखण, तेना शरीर उपर चढावे. तेना योगे करी कीडी घीमेल आवीने तेने करडवा लागी. तेनुं

शरीर चालणी सरिखुं कर्युं. पण ते चंमकौसिक सर्प समता परिणामर्मा रह्यो. तेथी मर्ण पामीने आठमा देवलोकमां देवपणे उपन्यो.

आ कथामां सार ए ग्रहण करवानो छे के, जगवान श्री महावीर स्वामीये सर्पनो उद्धार करवा माटे पोते वेदना सहन करी. तेम जे प्राणी बीजाने उपकार करवाने तत्पर रहे छे अने पोतानुं डुःख गणकारता नथी तेवा परहितचिंतक प्राणीनी क्रोड क्रोड वार बलीहारी जईये. माटे परहित चिंतक थवुं. वली चंडकोसियानी पेठे जे कोई प्राणी समता आदरशे ते सुखी थशे. माटे आवी पडेलुं डुःख समताजावे सहन करवुं. ५

॥ अथ लक्ष्मी विषे ॥

हरि सुत रति रंगे जे रमे रात सारी, शिवतनय कुमारो ब्रह्म पुत्री कुमारी ॥ हितकरि हगलीला जेहने लछि जोवे, सकल सुख लहे सो सोहि विख्यात होवे६

जावार्थः– हरिसुत कहेतां ईंडनो पुत्र जयंत लक्ष्मी आपीने रती राणीनी साथे आखी रात रंगे रमण करतो हतो, शिवतनय एटले महादेवनो पुत्र जे गणपति ते ब्रह्मानी पुत्रीनो संगम पाम्यो ते पण लक्ष्मी वडेज, अर्थात् ए बे कुमर कुमरी पण लक्ष्मीना जोगथी संगने पाम्या, वली जे पुरुषने लक्ष्मी दृष्टीना वीलासे करीने जोवे ते सकल सुखने पामे तथा ते लक्ष्मी थकी जगत्रने विषे विख्यातपणुं पामे, अर्थात् लक्ष्मीवाननी ख्याती सर्व स्थले थाय छे. लक्ष्मीना विलास उपर मिथ्यात्विना ग्रंथमां घणां संबंध कह्या छे.माटे लक्ष्मी जे संपदा ते जगत्रने विषे घणी वात छे.६

लखमि बल यशोदा नंदने विश्व मोहे, लखमि विण विरूपी शंभू भिक्षु न सोहे ॥ लखमि लहिय रांके जे शिलादित्य जंज्यो,लखमि लहिय शाके विक्रमे विश्व रंज्यो७

भावार्थः– लक्ष्मी मली अने ते सदा सहचारी हती अर्थात् लक्ष्मीनुं बल हतुं तेथी यशोदानंद एटले श्रीकृष्णे आखी पृथवी वश करी, अने लक्ष्मी विना विरूपी एटले कडुपो शंभू (महादेव) भीखारीनी परे शोभ्यो अर्थात् भीखारीनी पेठे लक्ष्मी वगरनो महादेव शोभा पाम्यो नही, अने लक्ष्मी पाम्याथी रांके पण म्होटा शिलादित्य जेवा राजाने भांज्यो एटले नाश पमाड्यो, वली लक्ष्मी पाम्याथी विक्रमराजाये बधुं जगत् रिझवीने पोतानो शक प्रवर्ताव्यो. एवा संबंध मिथ्यात्मां घणा छे. ७

॥ अथ कृपण विषे ॥

कण कण जिम संचे कीटिका धान्यकेरो, मधुकर मधु संचे भोगवे को अनेरो ॥ तिम धन कृपणनो नोपकारे दिवाये, इमहि विलय जाए अन्यथा अन्य खाए ॥ ८ ॥

भावार्थः–कृपण केवा छे ? तो के–जेम कीडी एकेको दाणो वीणी वीणीने दरमां लावी एकठो करे, ते पोते पण न खाय अने कोई बीजाने पण न खावाये, वली मधमाखी मध नीपजावे (भेगु करे) पण तेनो भोक्ता कोई वीजो थाय अर्थात् पोते उत्पन्न करेलुं मद मधमाखी खाय नही पण ते बीजो कोई खाय, तेम कृपणे एकठुं करेलुं धन ते खाई शके नही, तेमज खरची पण शके नही, परोपकारमां पण देवाय नही, परंतु ते कोईक बीजो खाई जाय अथवा तो ते धन लेई कोई नाशी जाय, के कोई यक्ष लेई जाय, ए प्रकारे करपीनुं धन नाश पामे छे. पण तेनो उपयोग ते न करी शके. ८

॥ कृपणता उपर मधमाखीनो दृष्टांत ॥

एक दातारे ज्ञानीने पुछ्युं जे, हे स्वामी ! कृपणने मधमाखी जेवा केम कहो छो ? ज्ञानीए जणाव्युं जे, कृपणने मधमाखीनी

उपमा आपवानुं कारण ए छे जे–माखी ज्यां त्यांथी उद्यम करीने रस लावी एकठो करेछे. एटले जेना रसमध्ये मीठास छे ते रसरूप लक्ष्मी ते माखीने छे. ते एक पुडो बनावी तेनी नीचे कोकरु करीने तेमध्ये मधनो संचय करे छे. जेम द्रव्य भरवानी कोथली होय तेमध्ये द्रव्य लावी लावीने सींचे (भरे) तेम एणे पण रस सींचीने एकठो कर्यो छे. ते पोते पण न खाई शके अने बीजाने पण खावा न द्ये. एवामां पारधी आवीने नीचे धुमाडो करी माखीउने उमाडी मुकी तेणे नीपजावेलुं मध लेई जाय. पछी ते स्थानके माखी आवीने जुए तो पोतानो सींचेलो रस रूप द्रव्य (मध) न देखे; तेथी ते पोताना बे हाथ एकठा करी घसवा लागे. तेम कृपणे पण जे धन एकठुं कर्युं होय ते पोते खाई न शके तेमज खरची पण न शके. कदापि कोई जीव ते धन खाई जाय अथवा कोई लेईने नाशी जाय त्यारे ते कृपण माखीनी पेठे हाथ घसवा लागे. माटे कृपणने मधमाखीनी उपमा आपीछे ते वास्तविक छे. ७

॥ कृपण पणुं धरंतां जे नवे नंद राया, कनक गिरि क- राया ते तिहां अर्थ नाया ॥ इम भगत करंतां (इमज मति धरंतां) दुःख वासे वसीजे, कृपण पणुं तजीजे मे- घज्यूं दान दीजे ॥ ए ॥

भावार्थः–जे कृपण कह्युं ते कोनी परे ? तो के–जे नव नंद राजा थया तेणे जुदी जुदी नव डुंगरीयो सोनानी करावी, ते डुंगरीयो मुकीने हींमता थया, पण ते तेमने काम न आवी, एवी रीते जे करे छे ते दुःख पामे छे, माटे कृपणपणुं छांडीने जेम मेघ (वर्षात) दान आपेछे तेम दान देवुं. ए

॥ अथ याचन विषे ॥

निरमल गुण राजी त्यां लगे लोक राजी, तब लग कहि
जीजी त्यां लगे प्रीति जाजी ॥ सुजन जन सनेही त्यां
लगे मित्र तेही, मुख थकि न कहीजे ज्यां लगे देहिदेहि १०

भावार्थः—ज्यांसुधी निर्मल गुणनी श्रेणी होय त्यांसुधी लोक घणा राजी रहे, अने ज्यांसुधी (सदा) जीजी कहे त्यांसुधी प्रीती पण वधे, वली सज्जन वाहालां सगां संबंधी अने मित्र पण त्यांसुधी जाणवां, के ज्यांसुधी आप आप करे, कदापि कोईक वार कोई दीवस न अपाय तो तेनी साथे मलवुं, मलतुं अने मेलाप तेमज कोई दीवसनुं ओलखाण पण जाणे छेज नही. माटे जे कांई आपवुं ते योग जाणीने आपवुं. १०

जई वडपण वांछे मांगजे तो न कांई, लहु पण जिण
होवे केम कीजे तिकाइ ॥ जिम लघु थइ सोमे वीरथी
दान लीधूं, हरि बल नृप आगे वामना रूप कीधूं ॥११॥

भावार्थः— हे भाई! जो तुं म्होटाईपणुं वांछतो (ईछतो) होय तो कांई पण मागीश नही, केमके जेनाथी लघुपणुं पमाय छे ते केम करीये? मागणहार हलुआथी पण हलुउ जाणवो. ते कोनी पेठे? तो के— जेम सोमिल ब्राह्मणे हलुउ थईने श्रीवीर पासेथी दान लीधुं अने हरि कहेतां श्रीकृष्णे वलिराजाना मों आगल वामणनुं रुप कर्युं. ते माटे जगत्ने विषे मागवुं ते हलकामां हलकुं छे. ११

॥ अथ निर्धन विषे ॥

धनविण निज बंधू तेहने दूर छांडे, धनविण गृह भार्या
भृत्त सेवा न मंडे ॥ निरजल सरजेवो देह निर्जीव जेवो,
निरधन तृण जेवो, लोकमें तें गणेवो ॥ १२ ॥

भावार्थः– द्रव्य विना सगोभाई पण (पोताना भाईने) न माने– दूर तजी दे, अने द्रव्य विना पोतानी परणत स्त्री पण भर्तारनी सेवा न करे, अर्थात् निर्धन भर्तारने पोतानी भार्या लाज मर्यादा मुकीने एवां वचन बोले के, जा जा रे हाल, तने शुं करुं ? तुं तो हमेशां एवोने एवो रह्यो ! एम पासे रहे-नारा पांच पाडोसी अथवा अर्धी सेरी जाणे जे आज फलाणाने घरे फलाणी स्त्री वढे छे, वली निपट निर्लजपणे सदाय निरं-तर स्वामी साथे वंगालीने बोले चोले जे– ॥ दोहा ॥ एक न पूरी होवत सूरी, नवी पहोंचाडे आस ॥ इम उठे जूंकी कहे सुखी (शंखणी), शो तुजशुं घरवास ॥ १ ॥ जुओ ! पोतानी नारी, ते पण द्रव्यरहित स्वामीने निंद्रे छे. वली पाणी विनानुं खाली सरोवर जेम न शोभे तथा जीव वगरनो देह अर्थात् जीव नीकली गये थके काया जेम न शोभे तेम निर्धन– द्रव्यरहित प्राणी शोभा पामे नही, लोकनेविषे एने तरखला बरोबर गणे छे. १२

सरवर जिम सोहे नीर पूरे भरायो, धन करि नर सोहे तेम ते जे उपायो ॥ धनकरिय सुहंतो माघ जे जाण हूतो, धनविण पग सूजी तेह दीठो मरंतो ॥ १३ ॥

भावार्थः–जेम सरोवर पूरेपूरुं पाणीथी भरायुं होय तो शोभे, तेम जे मनुष्ये धन उपार्जन कर्यु होय, अर्थात् जेनी पासे धन होय, ते मनुष्य शोभा पामे छे. जुओ ! धनवडे शोभा मले छे एवुं जाणनारो माघ जेवो महान पंडित ते पण धन विना द-रिद्री थई पग सूजवाथी मर्ण पामेलो दीठो. अर्थात् मर्ण पाम्यो माटे धन ए घणी वात छे. १३

॥ अथ रांजसेवा विषे ॥

सुजनसुं हित कीजे इर्जना सीख दीजे, जग जन वश कीजे चित्त वांबा वरीजे ॥ निज गुण प्रगटीजे विंश्वना कार्य कीजे, प्रनु सम विचरीजे जो प्रनूसेव कीजे ॥१४॥

नावार्थः–जे सज्जन माणस होय तेनो विनय करे अने छुर्जन एटले लंठ, लांठीया, उच्चका, जे होय तेउने सीखामण दे, तथा जगत्वासी लोकने वश करे अने चित्तनेविषे (पोताना मनमां) कांई पण वांबा (इंबा) न राखे, वली छुनीयानां एटले सर्व लोकनां काम करे तथा जो प्रनुनी सेवा करे तो पोताना गुण प्रगट थाय अने प्रनुनी परे विचरे अर्थात् प्रनुता पामे एटले जे माणस उपर जणाव्या प्रमाणे वर्त्तन करे बे ते माणस प्रनु समान थाय (पूजाय) बे. १४

नगतिकरि वडानी सेव कीजे जिकाई, अधिक फल न आपे कर्मथी ते तिंकाई ॥ जलधि तरिय लंका सीत संदेस लावे, हनुमत करमे ते राम कबोट पावे ॥ १५ ॥

नावार्थः–आपणाथी जे वडा एटले म्होटा होय तेनी नक्ति (नाव) सहित सेवा करीये, पण कर्ममां जेटलुं लख्युं होय तेटलुं फल आपे (मले), जुउ–समुद्र तरीने लंकामां जई हनुमान सीतानो संदेशो लाव्यो, तेने रामचंद्रे ज्यारे नावामां वेठा त्यारे सीतानी वधामणीमां कबोटी (लंगोट) आपी. माटे कर्म प्रमाणे फल मले, परंतु वडानी नक्ती करवी. १५

---

*, बीजी प्रतमां " विश्वमां कार्य सीके " एवुं पद बे तेनो अर्थ " लोकमां पण काम थाय " एवो थाय बे. * " तिकाई " शब्दने ठेकाणे बीजी प्रतमां " नकांई " शब्द बे. तेनो अर्थ पण एज थायबे.

भावार्थः– द्रव्य विना सगोभाई पण (पोताना भाईने) न माने– दूर तजी दे, अने द्रव्य विना पोतानी परणत स्त्री पण भर्तारनी सेवा न करे, अर्थात् निर्धन भर्तारने पोतानी भार्या लाज मर्यादा मुकीने एवां वचन बोले के, जा जा रे हाल, तने शुं करुं ? तुं तो हमेशां एवोने एवो रह्यो ! एम पासे रहेनारा पांच पाडोसी अथवा अर्धी सेरी जाणे जे आज फलाणाने घरे फलाणी स्त्री वढे छे, वली निपट निर्लज्जपणे सदाय निरंतर स्वामी साथे वंगालीने बोले बोले जे– ॥ दोहा ॥ एक न पूरी होवत सूरी, नवी पहोंचाडे आस ॥ इम उठे भूंकी कहे सुखी (शंखणी), शो तुजशुं घरवास ॥ १ ॥ जुओ ! पोतानी नारी, ते पण द्रव्यरहित स्वामीने निन्दे छे. वली पाणी विनानुं खाली सरोवर जेम न शोभे तथा जीव वगरनो देह अर्थात् जीव नीकली गये थके काया जेम न शोभे तेम निर्धन– द्रव्यरहित प्राणी शोभा पामे नही, लोकनेविषे एने तरखला बरोबर गणे छे. १२

सरवर जिम सोहे नीर पूरे भरायो, धन करि नर सोहे तेम ते जे उपायो ॥ धनकरिय सुहंतो माघ जे जाण हूतो, धनविण पग सूजी तेह दीठो मरंतो ॥ १३ ॥

भावार्थः–जेम सरोवर पुरेपूरुं पाणीथी भरायुं होय तो शोभे, तेम जे मनुष्ये धन उपार्जन कर्युं होय, अर्थात् जेनी पासे धन होय, ते मनुष्य शोभा पामे छे. जुओ ! धनवडे शोभा मले छे एवुं जाणनारो माघ जेवो महान पंडित ते पण धन विना दरिद्री थई पग सूजवाथी मर्ण पामेलो दीठो. अर्थात् मर्ण पाम्यो माटे धन ए घणी वात छे. १३

॥ अथ रांजसेवा विषे ॥

सुजनसुं हित कीजे दुर्जना सीख दीजे, जग जन वश कीजे चित्त वांछा वरीजे ॥ निज गुण प्रगटीजे विँश्वना कार्य कीजे, प्रन्नु सम विचरीजे जो प्रन्नूसेव कीजे ॥१४॥

नावार्थः—जे सज्जन माणस होय तेनो विनय करे अने दुर्जन एटले लंठ, लांठीया, उच्चका, जे होय तेउने सीखामण दे, तथा जगत्वासी लोकने वश करे अने चित्तनेविषे (पोताना मनमां) कांई पण वांछा (ईछा) न राखे, वली दुनीयानां एटले सर्व लोकनां काम करे तथा जो प्रन्नुनी सेवा करे तो पोताना गुण प्रगट थाय अने प्रन्नुनी परे विचरे अर्थात् प्रन्नुता पामे एटले जे माणस उपर जणाव्या प्रमाणे वर्त्तन करे छे ते माणस प्रन्नु समान थाय (पूजाय) छे. १४

नगतिकरि वडानी सेव कीजे जिकाई, अधिक फल न आपे कर्मथी ते तिँकाई ॥ जलधि तरिय लंका सीत संदेस लावे, हनुमत करमे ते राम कछोट पावे ॥ १५ ॥

नावार्थः—आपणाथी जे वडा एटले म्होटा होय तेनी नक्ति (नाव) सहित सेवा करीये, पण कर्ममां जेटलुं लख्युं होय तेटलुं फल आपे (मले), जुउ—समुद्र तरीने लंकामां जई हनुमान सीतानो संदेशो लाव्यो, तेने रामचंद्र ज्यारे नावामां बेठा त्यारे सीतानी वधामणीमां कछोटी (लंगोट) आपी. माटे कर्म प्रमाणे फल मले, परंतु वडानी नक्ती करवी. १५

---

१ बीजी प्रतमां " विश्वमां कार्य सीके " एवुं पद छे तेनो अर्थ " लोकमां पण काम थाय " एवो थाय छे. * " तिकाई " शब्दने ठेकाणे बीजी प्रतमां " नकांई " शब्द छे. तेनो अर्थ पण एज थायछे.

॥ अथ खलता विषे ॥

रस विरस भजे ज्यूं अंब निंब प्रसंगे, खल मिलण हुवे त्यूं अंतरंग प्रसंगे॥ सुण सुण ससनेही जाणि ले रीति जेही, खल जन निसनेही तेहशूं प्रीति केही ॥ १६ ॥

भावार्थः—खल लोक केवा छे ? तो के– जेवी रीते आंबानुं अने लींबडानुं झाड जोडे होवाथी आंबानो रस विरस थाय छे एटले आंबानी केरीओनो खरो मीठासनो स्वाद फरी जई लींबडानी कडवासनी असर तेमां थाय छे, अर्थात् लींबडानी कुसंगते आंबो बगडे छे, तेवी रीते सज्जन मनुष्य खलनी संगतेकरी ख्वार थाय छे, ते माटे हे ससनेही वाल्हा ! सांभल ! सांभल ! निःसनेही एवा जे खल मनुष्य तेनी साथे प्रीति न करवी, अर्थात् खलनी संगत टालवी. १६

मगर जल वसंतो ते कपीराय दीठो, मधुर फल चखावी ते कर्यो मित्र मीठो ॥ कपि कलिज भखेवा मत्स खेली खलाई, जलमहि कपि बुध्धि छांडि दे ते भलाई ॥ १७ ॥

भावार्थः– पाणीमां रहेनारा मगरने मीठां फल खवरावीने वांदराये तेने पोतानो मित्र कर्यो, त्यारे वांदरानुंज कालजु खावानी खलाई तेणे (मगरे) करी, परंतु वांदरो पोतानी बुध्धिये करी जलमणसाईनो त्याग करी मगरने पाणीमां मुकी पोते बाहार नीकली आव्यो. माटे नीचनी सोबत करवी नही, कारण के कोईक दीवस पण ए खत्ता खवरावे. क्वचीत एवो जोग बनी गयो होय तो वांदरानी पेठे विचार करीने तेवा खलनो तत्काल त्याग करवो. ११ स्पष्ट समजवा माटे आ नीचे मगर अने वांदरानो प्रबंध लखीये छीये.

॥ खलई उपर मगर अने वांदरानो प्रबंध ॥

समुद्रना पाणीमां रहेनारा एक मगरमछने वांदराए दीठो. तेनी साथे मोहोबत करी पारस जांबु विगेरे उत्तम फलो वांदराए तेने खवराव्यां. स्वाद लागवाथी ते दररोज कांठा उपर आवी बेसतो हतो, ते वखत वांदरो तेने मीष्ट फल लावी आपतो हतो. एक वखत खातां खातां केटलांक फल वध्यां ते लेई जई मगरे पोतानी मगरीने आप्यां. मगरीए फल खाधां. ते घणां स्वादिष्ट लागवाथी तेणीये मगरने पुछ्युं के, आवां उत्तम फल क्यांथी लाव्या? मगरे जणाव्युं के, एक म्हारो मित्र छे, तेणे आप्यां. ते वखत मगरी कहेवा लागी के, स्वामी! जे प्राणी आवां उत्तम फल हमेशां खातो हशे तेनुं कालजुं तो जेने बीजी उपमा अपाय नहीं तेवुं अमृततुल्य मीष्ट हशे! माटे तेनुं कालजुं मने लावी आपो. ते खावानी म्हारी इछा छे; ते पूर्ण करो! वली मने गर्भनुं कारण पण छे अर्थात् हुं गर्भवती छुं अने ए खावानी मने इछा थई छे माटे हरकोई पण प्रकारे (छल भेद प्रपंच कुरू कपट कावित्रुं खल खंचपणे) एने भोलवीने तेमज एनी खीजमत करीने पासमां नाखी म्हारी पासे लावो. पछी हुं तेना कालजानुं भक्षण करी म्हारी इछा पूर्ण करीश. मगरे विचार्युं जे, ए काम कांई सरल नथी, परंतु गर्भवती मगरीनी इछा पूर्ण करवा माटे एने जेम तेम समजावी वने तेटलुं खलपणुं करीने पण मगरी पासे लाववो जोइये. पछी ते कांठा उपर आव्यो. त्यां तेने हमेशनी माफक फल लेई आवी वांदरो मल्यो. मगरे तेने कह्युं के, अरे भाई! आज तो आ त्हारां लावेलां मिष्ट फल खावानी मने बीलकुल इछा थती नथी. केमके म्हारुं मन घणुं व्यग्र थयेलुं छे. वांदराए

पुछ्युं जे, एम थवानुं कारण शुं छे ? मगरे कह्युं के, आज म्हारे मगरी साथे राड थई छे. में तेने घणुंए समजावी पण ए म्हारूं कहेवुं मानती नथी अने म्हारी साथे बोलती पण नथी, तेथी घणो दीलगीर थयो छुं. अहीं आववा जेवो समय पण नहोतो परंतु तमारा स्नेहने लीधे तमारो आववानो वखत थयो छे एम जाणी फक्त तमारा दर्शन माटे ज हुं आव्योछुं. ज्यां-सुधी अमो स्त्री भर्तार वच्चे थयेली राड भागशे नहीं त्यांसुधी म्हारा जीवने निरांत थशे नहीं, तेमज खावुं पीवुं पण भावशे नहीं. हुं धारूं छुं के, तमारा सीवाय म्हारूं ए दुःख दूर क-रनार बीजो कोई नथी. तमे म्हारा दीलोजान दोस्त छो, माटे म्हारी साथे आवीने तमारी भाभीने मनावी अमारी राड भागी आपो. वांदराए मगरनां वचन सांभळी विचार्युं जे, कोई जीव दुःख न पामे अने कोईनी राड मटे, एम करवुं ए उत्तम प्राणीनुं लक्षण छे. पछी तेणे मगरप्रत्ये कह्युं के, म्हारा बनता प्रयत्ने हुं तमारी राड भागी आपीश, तमे चिंता न करो. परंतु म्हाराथी तमारे त्यां पाणीमां शी रीते आवी शकाय ? म-गरे कह्युं के, तेनी फीर करशो नहीं. तमे म्हारा वांसा (पीठ) उपर बेसो, हुं तमने सुखरूप तेडी जईश. वांदरो म-गरना कहेवा मुजब तेना वांसा उपर बेठो. एटले ते पाणीमां तरतो चाल्यो. केटलेक दूर नीकळी गया पछी वात चीत करतां मगरे वांदराने कह्युं के, हे भाई ! म्हारी स्त्रीने तम्हारूं का-ळजुं जोईये छीये. ते सांभळी वांदरो पोताना मनमां विचारवा लाग्यो के, आतो म्हारो उपाय करवा मांड्यो दीसे छे अर्थात् मने मारवो धार्यो छे. माटे हवे हुं बुद्धि केळवुं तोज उगरीश. पछी तेणे मगरने कह्युं के, अरे भाई ! अरे भुंडा ! ए वात तें

मने अत्यारे केम कही ? अमे शुं ते (कालजुं) अमारी साथे साथे लेईने फरीये छीये ? अरे ! एतो अमे झाड उपर मुकीये छीये ! जो पाछा जईये तो लेई आवीये. वली जो ए लीधा विना जईशुं तो तहारी स्त्री मनाशे नहीं. माटे पाछा कांठा उपर चालो. झाड उपरथी ते लेईने वगर विलंबे तहारी स्त्री पासे जई तेने मनावी तहारी राड भागी आपीश. मगर तरत पाछो वलीने कांठा उपर आव्यो. तेनी पीठ उपरथी कुदको मारी वांदरो झाड उपर चढी बेठो. मगर तेना सामुं जोईने जलदी आववानो ईसारो करवा लाग्यो. एटले वांदराए कह्युं के, तहारे म्हारे किश्रा दिवसनी असनाई (मित्राई) ! तुं जलवासी अने हुं थलवासी. तेमछतां वली में तहारी साथे स्नेह बांधी तने मीष्ट फल खवराव्यां, त्यारे तुं म्हारूं कालजुं खवरावा तैयार थयो. माटे चाल्यो जा. ए वखत वही गयो. तहारूं खलपणुं हवे कांई पण काम आवनार नथी. पछी मगर निरास थईने चाल्यो गयो. आ वातथी ए सार लेवानो छे के, मगर जेवा खल प्राणीनी सोबत न करवी, केमके कोईक दीवस ए खत्ता खवरावे अने सुख टाले तथा कष्टमां नाखे. माटे तेनाथी दूर रहेवुं. १७

॥ अथ विश्वास विषे ॥ उपजाति छंद ॥

विश्वासिसाथे न-छले रमीजे, न वैरि विश्वास कदापि कीजे॥ जो चित्त ए धीर गुणे धरीजे, तो लच्छि लीला जगमां वरीजे ॥ १८ ॥

भावार्थः—जे मनुष्य विश्वास राखतो होय तेनी साथे छल (कपट) नी वात न करवी, अने वैरी एटले शत्रुनो कोई पण वखत विश्वास करवो नही, वली ए (शत्रु) आवीने मित्रनी

मांफक मली जाय अने तेथी एम जणाय के हवे कसी फीकर चिंता लेश मात्र नथी तो पण ते डूस्मननो विश्वास न करवो, जो चित्तनेविषे ए धैर्यतानो गुण धारण करीये अर्थात् विश्वासी साथे कपट न करे, दुस्मननो विश्वास न राखे, धीरपणुं धरे अने कायरपणुं न करे तो जगत्नेविषे लीला एटले सातेकमां लक्ष्मी पामीये. १७

(इंद्रवज्रा छंद) ॥ चाणायके ज्यूं निज काज सार्यो, जे राज जागी नृपतेह मार्यो ॥ जो घूअडे काक विश्वास कीधो, तो वायसे घूकने दाह दीधो ॥ १ए ॥

जावार्थः—जुन ! —विश्वास पमाडीने चाणाक्ये* पोतानो मित्र पर्वतराजा, के जे राज्यनो जागीदार हतो तेने मारीने पोतानुं काम साधी लीधुं, अने घूअडे कागडानो विश्वास कर्यो तो ते (घूअड) मृत्यु पाम्यो. ए घूअम अने कागमानो संबंध स्पष्ट समजवा माटे नीचे लख्यो छे. १ए

॥ कागमानो विश्वास करवाथी मृत्यु पामनार घूअडनो प्रबंध ॥

एक घूअम दररोज राते कागडाउने विपत पाडतो हतो. तेथी सर्व कागडाए नेला थइ विचार कर्यो के, घूअमनी साथे वाकरी बांधवाथी आपणुं दुःख दूर थशे नहीं, पण जो आपणे एनी साथे मली जइने विश्वास पामीये तो आपणुं धार्युं करी शकीशुं; अर्थात् आपणे एने जे करवुं हशे ते करीशुं. आपणा उपर विश्वास बेठा सिवाय एने कांई पण करी शकीये तेवुं नथी, माटे ए एम जाणे के आतो आपणा ज छे, लेशमात्र

---

* आ चाणाक्य अने पर्वत राजाना संबंधनी संपूर्ण हकीकत आ पुस्तकना ६२ मा पृष्टमां मनुष्यजवनी डुर्लजता उपर बीजा दृष्टांतमां आवेली छे त्यां जोई लेवी.

भीन्नभाव एना अने आपणा वच्चे नथी, एवो आपणा उपर एनो संपूर्ण विश्वास बेसाडवो. आ वात बधाने पसंद पडी तेथी तेउ घूअडराजा पासे आव्यां. विनय सहित नमस्कार करीने बेठा पछी एक वडेरो कागडो बोल्यो जे—हे पंखीराज ! तमे तो अमारा राजा छो. अमे सघला तमारा सेवक छीये. खरा बपोरनी चाकरीमां हमेशां हाजर छीये. माटे मनमां कसी वातनी वीक न लावशो. अम बेठे थके तमारूं नाम लेनार कोण छे ? तमारे माटे अमारा प्राण पण आपवा पाछी पेनी करीये तेवा नथी. पण महाराजा ! तमारी अमारा उपर कृपा दृष्टी जोईये ! अमारे तो तमारोज आधार छे. अमारा उपर महेरबानी करी तमे अमने चूंथशो मां. एटले अमे एम जाणीशुं जे, तमे अमने जीवतदान आप्युं. कागडानी आवी नम्र वाणी सांभली घूअडे कह्युं के, तमो महारी लेशमात्र धास्ती राखशो नहीं. जाउ, महारी चोकी करो. कागडाए तेम करवानुं कबुल कर्युं. पछी घूअड ते दहाडे पर्वतनी गुफामां रह्यो अने कागडा गुफाने बारणे चोकी करवा रह्या. हवे कागडाए विचार्युं जे आवो अवसर अने आवो लाग फरी फरी नहीं आवे. पछी तेमणे (कागडाए) आस्ते आस्ते त्यांथी वारा फरती एके एके उडीने पोतानी चांचमां दातणनी चीरीउ सलेखमां विगेरे लावीने ते गुफानुं बारणुं बुर्युं. त्यारपछी मसाणमांथी अधबळ्युं लाकडुं लावीने तेमां मुकी दीधुं. एटले चीरीउ वीगेरे सळगी उठ्युं, तेथी तेनी अंदर रहेलो घूअड मर्ण पाम्यो; तेमज त्यां आगल जाळां झांखरामां भराई रहेलां जेटलां घूअड हतां ते सघलां बळीने भस्म थयां. पछी तेनुं स्नान करी कागडा पोताने गामे जतां मांहोमांहे कहेवा लाग्या के, केवी भावठ कहाडी छे ? विश्वास पाड्या सिवाय एनो नाश कदी थवानो नहोतो. आ वातथी

सार ए लेवानो छे के, घूअडे पोताना दुश्मन कागडानो वि-
श्वास कर्यो तेथी प्राण खोया. माटे खलनो विश्वास कदापि
काले पण न करवो.

॥ अथ मैत्री विषे ॥ मालिनी छंद ॥

करि कनक सरीसी साधु मैत्री सदाई, घसि कसि तप वेधे
जास वाणी सवाई ॥ अहव करहि मैत्री चंद्रमा सिंधु
जेही, घंट घट वध वाधे सारखा बे सनेही ॥ २० ॥

भावार्थः—सदाय सोना सरखी साधु (उत्तम भला पुरुष)
नी मित्राई करवी. केमके सोनाने कसोटी उपर घसे छे त्यारे
तेनी कींमत थाय छे अने ज्यारे एने अग्निमां नाखे छे त्यारे
तेनी सवाई कींमत थाय छे, अर्थात् जेम जेम सोनाने ताप दे-
वामां आवे छे तेम तेम तेनी कींमत वधती जाय छे, ए पो-
तानो (निज) गुण पालटतो नथी, तेम खरो मित्र होय ते
अणीनी वखते आवीने उभो रहे, एनेज खरो मित्र जाणवो.
पण पीतल सरखो जे मित्र होय ते कशाये कामनो नही, जे काम
पड्ये मों संताडे ते पीतल समान मित्र जाणवो. जेम शुद्ध अ-
शुद्धपणानुं सोनानुं अने पीतलनुं पारखुं अग्नि करी आपे छे,
तेम परीक्षा करीने सोना समान मित्र करवो. वली कह्युं छे
केः—" सज्जन तब लग जाणीयें, जब लग पड्यो न काम; हेम
हुतासन परखियें, पीतल निकसे श्याम ॥ १ ॥ ते माटे मित्राई
ते उत्तम साधुजननी भली. साधुनी मित्राईथी सुखज थाय,
पण दुःख न थाय. वली कह्युं छे—॥ यदुक्तं ॥ साधु मले सुख
उपजे, जल मले मल जाय; साहमाने पावन करे, पोते पावन थाय.

*" घट घट वध वाधे सारखा बे सनेही " ए चरणने बदले बीजी प्र-
तमां " घटी घटी बुधी वाधे आस द्योति सुद्योती ".

॥ १ ॥ ते माटे साधुनी संगत ते सोना जेवी जाणवी. सोनु जेम रंग न पालटे साह्मो रंग वधे, तेम साधुजनने कांई पराज्ञव करीये तोपण तेने क्रोध न चढे, साह्मी संजमगुणनी वृद्धि थाय जे, मुजने साहाय्यकारी मख्यो. एम अपकारीनो गुण ले ठे अने परिसहना करनारनुं साहाय्य माने ठे; माटे साधुजननी मित्राई करवी. वली जेम पूर्णमासीना चंद्रमाना जोगथी समुद्रनी वेल वधे ठे अने चंद्रनी ज्योत्स्ना एटले कांति अने जलजोग मलवाथी ते बन्नेनी एटले चंद्रनी अने पाणीनी अधिक अधिक शोज्ञा वधे ठे तेवी मित्राई करवी. अर्थात् दीवसे दीवसे अधिक हेत थाय एवा सोना सरखा साधुजननी मित्राई करवी ए ज्ञावार्थ ठे. २० आ वात दृढ करवा माटे अत्रे सहस्त्रमल्ल साधुनो वृत्तांत कहीये ठीये.

॥ मैत्री उपर सहस्त्रमल्ल साधुनो प्रबंध ॥

अवंती देशना जितशत्रु राजानी पासे वीरसेन नामे क्षत्री चाकरी करवा आव्यो. तेने घणा दीवस थया. एवामां कालसंदिप नामे राजानो एक वयरी हतो ते महा अनाडी अने अज्ञिमानी होवाथी तेना सामो थई नमतो नहोतो. राजाये तेने पकडी लाववा माटे सज्ञामध्ये वीडुं फेरव्युं. कोई पण राजकुलीये तेना सामुं सरखुं पण न जोयुं. सर्व नीचां मों करी बेसी रह्या. एवुं जोईने वीरसेन क्षत्रीये तत्काल उठीने राजाने प्रणाम करी वीडुं लेईने कह्युं के, हूं एकलोज जईने एने बांधी लावीश. राजाये तेने आज्ञा आपी. एटले हुकम प्रमाण करी ते त्यांथी चाली नीकख्यो. केटलेक दीवसे कालसंदिपने नगरे जई ठल बल करी तेने पकडी लाव्यो. राजा एना उपर घणो खुशी थयो; तेथी एने एक देश (प्रांत) नुं राज्य आपीने एनुं सहस्त्रमल्ल नाम स्थाप्युं. एना उपर पूर्वे राजानो राग हतो तेना करतां पण अधिक राग वध्यो. राजाए कालसंदिपने

पोतानी आण मनावी सरपाव आपीने तेने नगरे मोकल्यो. राजानी अति घणी महेरबानी थवाथी सहस्रमल्ल स्वेच्छाये फरवा लाग्यो. कोईने खात्रमां गणतो नथी. एकदा त्यां आगल चार ज्ञानना धारक श्रुतसार सूरी आव्या. तेमनुं आगमन सांभलीने राजादिक वांदवा आव्या. सहस्रमल्ल पण पोतानो परिवार लेई वांदवा आव्यो. सर्वे सूरीमहाराजने वंदन नमस्कारादि करी उचित स्थानके बेठा. आचार्यभगवाने भवीक जीवने उद्देशीने देशना दीधी केः—

" यतः—नरणेनीरणेनीरजतेसूरो ॥ दाताभोक्ताभयप्रद ॥ नचाकपट्टत्वेन तत्वंवेत्तिसपंक्तिः॥ १ ॥ अर्थ—सूरो कोई नथी, दातार पण कोई नथी, वाचाल पण कोई नथी, अने पंडित पण कोई नथी. " गुरुना मुखथी एवां वचन सांभलीने सहस्रमल्ल बोल्यो के, " गुरुजी महाराज ! तमारा मुख आगले हुं हाजर छुं. शुं कहो छो ? साहिबनो सेवक सूरो ते आ हुं बेठो ! एकलो हुं कालसंदिपने बांधी लाव्यो. महारा समान कोण बलीयो छे ? " तेवारे गुरू बोल्या— ॥ गाथा ॥ " जेअप्पाचेवदमेअव्वो, अप्पाहूखलु दमो; अप्पादंतोसुईहोई, असंलोएपरत्थय ॥ १ ॥ अर्थ—अप्पा कहेतां आपणो जे जीव तेने आत्म कहीए ते आत्माने जे दमे ते भलो. एवुं गुरूए कह्युं त्यारे सहस्रमल्ले विचार्यु जे, " कोई जीवने दमे शुं थाय ? पोताना आत्माने ज दमवो. " पछी ते (सहस्रमल्ल) गुरू समीप चारित्र ग्रहण करीने कालसंदिपकने नगरे जई त्यां काउसग्गे रह्यो. एवामां रयवाडीथी पाछा आवतां कालसंदिपके एने काउसग्गध्यानमां रहेलो दीठो. तेने ओलखीने ते पोताना मनमां विचार करवा लाग्यो के, आतो मने बांधीने महारा वैरी कने लई गयो हतो ते महारो दूश्मन छे. वली कोईक प्रयोजनार्थे आवो वेश धारण करीने आव्यो लागे छे.

माटे हवे एने जवा देवो नही. पछी तेणे सेवकोने कह्युं जे, एने गरदन मारो. हुकम मळतां तरतज सेवकोए सहस्रमल्ल साधुने लाकडीयो, बंदुकनी मोहरीयो, अने तरवारनी मुठे वडे मारवा मांड्यो; तथा धूळनी पोटलीउ, ढेफां अने ढेखाळे करी सहन न थई शके एवो उपसर्ग कर्यो. साधु छे तो घणायें बलवंत ! जो ए पूर्वनी परें पराक्रम करे तो राजाना सघला सेवको भूरस्वाननी पेठे नाशी जाय. परंतु एटली शक्ति छतां पण ते फोरवता नथी तेनुं कारण ए छे जे, चारित्रना घरमां रखेने निजगुणमां खामी लागे, एम विचारीने समतावंत थयाछे. जेटला पराजव थया तेटला तेमणे सहन कर्या. लेशमात्र क्रोध कर्यो नहीं. एम समता परिणामनी सेढीये चढतां चढतां सहस्रमल साधु अंतगड केवली थईने मोक्षे पधार्या. कह्युं छे के, एवा साधुजीने छ कायना जीव साथे मित्राई छे. माटे साधु जननी साथे मित्राई करवी. २०

इह सहज सनेह जे +लहे मित्रताई, रवि परि न चले ते *कंजज्यूं बंधुताई॥ हरि हलधर मैत्री कृष्णने जे छमासे, हलधर निज खंधे ले फिर्यो जीव आसे ॥ २१ ॥

भावार्थः—जेम सूर्य चलावानो नही (चलायमानथतो नथी) तेम सहज स्वभावीनी साथे जे मित्राई होय छे ते मळ्या पछी बिछडे नही; अर्थात् मित्राई न छांडे, ते कोनी परे ? तो के—कृष्ण अने बलभद्रनी परे, एटले जेम बलभद्र छ मास सुधी कृष्ण जीवता छे एवी आशाए तेमना सबने पोताना खभा उपर लेईने फर्या, खरी मित्राई राखी, तेवी रीते सर्व मनुष्ये मित्राई राखवी.

+ बीजी प्रतमां "लहे" ने बदले "वधे" अने * "कंजज्यूं" ने बदले "काजज्यूं" शब्द छे.

॥ मैत्रि उपर बलभद्र अने कृष्णनो प्रबंध॥

द्वारिकानगरीनो दाह थयो त्यारे कृष्ण अने बलभद्र (बे बांधव) त्यांथी नीकलीने चालता चालता एक अटवीमां गया. त्यां कृष्णने पाणीनी घणी आकरी तृषा लागी. तेमणे बलभद्र पासे पाणी माग्युं, एटले श्रीकृष्णने मुकीने ते पाणी लेवा गया. तेमने रस्ते जतां सामा वैरी मळ्या. तेनी साथे युद्ध करवामां ते रोकाया. अहीं अटवीमां एक झाडनी नीचे पग उपर पग चढावीने श्रीकृष्ण सुई रह्या. तेमना पगनेविषे पद्म हतुं तेनो झलकाट दूरथी देखातो हतो. एवामां जराकुमार नामे तेमनो लघु बांधव, के जे पोताने हाथे कृष्णनुं मृत्यु थशे एवी ज्ञानीनी वाणी सांभळीने तेम न थाय तेटला सारू एकाकी वनमां रहेतो हतो, तेणे केटलेक दूरथी कृष्णना पगमां रहेला पद्मने झलकतुं दीठुं तथा पगने योगे करी त्यां पडेलां सुकां पानडां खरखरतां सांभळ्यां, तेथी त्यां कोई सावज बेठुं छे तेनी आंख झलके छे एम धारीने तेना उपर ताकीने बाण मुक्युं. ते बाण कृष्णने पग वच्चे वाग्युं. तेवारे श्रीकृष्णे, अरे ! एवो उच्चार कर्यो. जराकुमार पोतानुं बाण शीकार उपर सचोट लाग्युं छे एम विचारी ते जोवा माटे आव्यो, तो तेणे पोताना प्रिय बांधव श्रीकृष्णने दीठा. कृष्णे पण एने ओळख्यो. घणो दीलगीर थतो जराकुमार ते वखते श्रीकृष्णप्रत्ये सविनय हाथ जोडीने कहेवा लाग्यो के; हे स्वामी ! तमने में न जाण्या ! सावजनी संज्ञाने भरूसे अजाणते में ए काम कीधुं छे. माटे म्हारो अपराध खमशो ! एम कही पगे लागीने श्रीकृष्णने खमाव्या. कृष्णे कह्युं के, तुं अहींथी चाल्योजा. केमके आ वखते जो बलभद्र आवशे तो तने मारशे. भाईनुं वचन प्रमाण करी जराकुमार त्यांथी चाली नीकळ्यो. पछी कृष्णने पोताना पगमां वागेलुं बाण खेंची कहाडतां

घणीज सहन न थई शके तेवी वेदना थई; तेथी जराकुमारने जवा दीधो ते माटे सोच करता अने तेने मारवाने उत्सुक थता कृष्णपोतानुं आउखुं संपूर्ण थवाथी दूरध्याने मरीने नर्कने विषे पधार्या. त्यारपछी बलज्ञद्र आव्या. ते कहे के, हे ज्ञाई! हुं पाणी लाव्यो छुं. उठो, जल पीउ! एम घणीवार कह्युं पण कोण उठे? तेवारे बलज्ञद्रे चिंतव्युं जे–मने पाणी लावतां बहु वार लागी तेथी बंधव बोलता नथी. एम जाणीने वली घणुंए कही कहीने बोलावे, पगे लागे, पण ते बोले नहीं. त्यारे विचार्युं जे, मूलतो ए रीसाल छे तेथी रीसने लीधे अगर घणी नींद्रा आवीछे तेथी नथी बोलता. एम करतां घणो वखत वीतीगयो. पण स्नेहने लीधे समज न पमी के आ तो शब छे. पछी ते (बलज्ञद्र) पोतानी खांध उपर कृष्नने उपाडी त्यांथी आगल चाल्या. फरतां फरतां छ मास थया त्यांसुधी खज्ञा उपर मडुं फेरव्युं. पण मुक्युं नहीं. अहीं कोई एवी शंका करे के, मडुं बगड्युं नहीं होय? तेने जणाववानुं के, एवा उत्तम (शलाका) पुरुषनुं शरीर छ मास सुधी बगमतुं नथी. बलज्ञद्र पोताना ज्ञाई श्रीकृष्णनुं सब खज्ञे लेई फरे छे, तेनो संस्कार करता नथी, एम जाणीने तेने समजाववाने वास्ते देवताए मनुष्यरूपे घाणी मांमीने तेमां वेलु पीलवा मांमी. ते जोई बलज्ञद्रे तेने पुछ्युं जे, तमे वेलु केम पीलो छो? तल तो पीलता जाएया छे, केमके तेमांथी तेल नीकले छे. परंतु वेलुमांथी शुं नीकलवानुं छे? के तमे ते पीलवा बेठा छो? मनुष्यरूप देवताए कह्युं के, तेल नीकलशे तेल! बलज्ञद्र कहे जे, एमांथी तो धूल नीकलशे! वली एवुं ते क्यांई साज्ञल्युं छे, के वेलुमांथी तेल नीकले? अमथो खाली प्रयास शुं करवाने करोछो? तमे कोई वमा (महा) मूर्ख दीसो छो! जे देखी पेखीने कोई धूलने पीलतुं हशे? देवता बोल्यो

जे–मूर्ख ते तुं के अमे ? जे तुं ब ब महीना थया ए माणसना मरूदाने फेरवे बे. ते जो जीवतो थशे तो एमांथी तेल पण नीकलशे. ते माटे पीलीए बीये. बलजद्र तेने मूर्खना शीरदार बो, एम कही त्यांथी आगल चाल्या. देवताए ए रस्तामां एक पत्थरनी शीला उपर पोयणी–कमल वाववा मांड्युं. बलजद्रे ते देखीने पुब्युं के, तमे आ शुं करो बो ? देवताए कह्युं के, पोयणीकमल वावीये बीये. बलजद्र बोल्या के, अरे ! तमे पण पेला तेलीनी माफक मूर्ख जणाउ बो ! शुं कांइ पत्थर उपर पोयणी उगी जाणीबे ? एतो म्होटां सरोवर, के ज्यां जल जर्यां होय त्यां निपजे. देवताए कह्युं के, आपण बेहुमांहे कोईक तो मूर्ख हशे ? कोण जाणे जे ते तुं के हुं. बलजद्र कहे के, तुजथी ते कोण वधारे मूर्ख हशे ? जुउ नवांधुज आ पारखुं ! देवताए कह्युं के, तुज समान हुं तो बीजा कोईने मूर्ख देखतो नथी; केमके आ ब ब मास थयां तुं खन्ने उपाडीने मरूडुं फेरवे बे ! ते जो जीवतुं थाय, तो ए पत्थर उपर पोयणी केम न उगे ? एवुं सांजलीने बलजद्रजी विचारवा लाग्या के, आ शुं खरी वात कहे बे ? ए वखते अवध पण पूरी थई एटले शरीर पण वगडतुं जाएथुं तेथी कृष्ण मरी गयाबे एम बलजद्रनी खात्री थई. पबी देवताए कृष्णनुं शरीर खीरसमुद्रमां वहेवराव्युं. बलजद्र ते उपरथी मोह बांडीने चारित्र लेई आत्मार्थ साधवा लाग्या. एवी रीते उत्तम पुरूष प्रीत पाले. चारित्र लीधा पबीनी बलजद्रजीनी केटलीक कथा आ पुस्तकमां अगाउ आवी गयेली बे त्यांथी जाणी लेवी, अने तेथी पण विशेष जाणवाना जीज्ञासुए अन्य ग्रंथोथी जाणी लेवी. अहीं तो मैत्रीजावनो जावार्थ हतो तेटलोज मात्र जणाव्यो बे. २१

॥ अथ कुव्यसन विषे ॥

नलिन मलिन शोभा सांझथी जेम थाए, इह कुवसननथी त्यूं संपदा कीर्ति जाए ॥ कुविसन तिण हेते सर्वथा दूर कीजे, जनम सफल कीजे कीर्त्ति कांता वरीजे २२

भावार्थः– कमलवन, के, जे दहाडे शोभावंत दीसे छे पण ते (कमल) सांझनी वेलाये झांखां थाय छे, तेम माठा व्यसनथी प्राणीनी संपदा (पैसा टका) कीर्ति (जस) ते पण जाय, ते माटे हे प्राणीयो ! कुव्यसन छांडो. अने जनम जे अवतार तेने सफल करीने कीर्त्तिरुपी स्त्रीने वरो, एटले जस प्रतिष्ठा मेलवो. (वली मोक्षनां सुख प्रत्ये पामो). २२

॥ अथ द्युत विषे ॥ द्रुतविलंबित छंद ॥

सुगुरु देव जिहां नवि लेखवे, धन विनास हुए जिण खेलवे ॥ भव भवे भमवूं जिण उवटें, कहिनि कोण रमें तिण जूवटे ॥ २३ ॥

भावार्थः– जुवटाना व्यसनीने एटले जुगारीने शुद्ध देव, शुद्ध गुरु अने शुद्ध धर्म, ए त्रणे तत्व न गमे; अर्थात् ते (जुगारी) सन्मार्गथी वेगलो होय, वली जुगार रमवाथी धननो नाश थाय अने जेथीकरी भवोभव भमवुं पडे, माटे हे भाई ! तुं कहेने ! के एवा जुवटे कयो पुरुष रमे ? अर्थात् डाह्यो प्राणी होय ते तो जुवटे न रमे. जुओ, जुवटुं रमवाथी नलराजा वधुं राज्य हारी गया अने दमयंती जेवी सती स्त्रीने लेई वनवास जवुं पड्युं, वली पांच पांडव सीता जेवी महासतीने पण राज्य उपरांत कौरवो साथे जुवटे रमवाथी हार्या, सीताने पोतानी सन्मुख कौरवे करेलो पराभव सहन करवो पड्यो, राज्यलक्ष्मी

खोई बेठा, अने तेर वर्ष सुधी वनवासनी पीडा जोगववी पडी. जुवटुं रमवुं ए महा हानीकारक छे तेथी तेनो त्याग करवो. वली जेणे ए जुवटुं मेहेल्युं अर्थात् जुवटुं रमवानो त्याग कर्यो ते पुण्यसारकुमारनी पेठे सुखीया थया. तेनो संबंध कहीये छीये.२३

॥जुवटुंरमवानो त्याग करवाथी सुखीथनार पुण्यसारकुमारनी कथा॥

जरत क्षेत्रमध्ये गोपाल नामे नगरमां धने करी धनद सरखो तथा सर्व लोकने मानवा योग्य तेमज जेने राजादि प्रधान पुरुष पुछीने कामकाज करे छे एवो पुरंदर नामनो शेठ रहेतो हतो. तेने शीलगुणे करी शोजायमान पुन्यसीरी नामे जार्या हती. पण पुत्र परिवार कोइ न होवाथी शेठ शेठाणी घणां चिंतातुर रहेतां हतां. एक वार तेमनां सगां संबंधीओए मलीने कह्युं के, तमे गोत्रदेवीने आराधो. ए तमारी इछा पुरी पाडशे. शेठे तेमनुं कहेवुं मान्य करीने कुलदेवीनुं आराधन करवा मांड्युं. तेनी पूजा जक्ति विशेष प्रकारे करवा लाग्या. एम जक्ति करतां करतां एक दीवस तुष्टमान थइ थकी कुलदेवी प्रत्यक्ष थइने बोली के, माग माग, जे जोईये ते माग, महारुं वचन छे. शेठे पुत्रनो वर माग्यो. देवीए कह्युं, तथास्तु. अर्थात् मागवा प्रमाणे तहारे पुत्र थशे. एम कहीने देवी अदृश्य थइ. पछी कोइक पुन्यवंत जीव पुण्यसीरीनी कुखे गर्जपणे आवीने उपन्यो. तेना प्रजावथी पुण्यसीरीए रुडुं स्वप्न दीठुं. ते वात शेठाणीए शेठने कही. शेठे जणाव्युं के, आपणे घणो रुडो पुत्र थशे. त्रीजे मासे शेठाणीने साहामीवत्सल, संघपूजा, जिनजक्ति ईत्यादिक साते क्षेत्रे वित्त वावरीये एवा उत्तम डोहला उपन्या. ते सर्वे शेठे पूर्या. एम करतां नव मसवाडा पूर्ण थये पुत्र प्रसव्यो.साविने घणो उछव महोत्सव करी पुत्रनुं नामा-

* " कीर्त्ति " ने बदले बीजी प्रतमां " मुक्ति " छे.

जिधान 'पुएयसार' स्थाप्युं. अनुक्रमे वृद्धिपामतां जणवा योग्य उम्मरे निशालगरणानो उंबव करी अध्यापक पासे जणवा मुक्यो. तेणे सर्व शास्त्र शीखी पुरुषनी बोहोतेरे कलानो संपूर्ण अज्यास कर्यो.

हवे ए गोपाल नगरमां रत्नसार नामे शेठ वसे ले. तेने 'रत्नवती' नामे पुत्री ले. तेने पण एज अध्यापकनी निशाले जणवा मुकेली हती. त्यां ते पण चोंप राखीने जणती हती. एक वखत तेने अने पुएयसारने जणतां जणतां विवाद थयो. मांहोमांहे हुंकारे तूंकारे आव्या. बीजा निशालीयाए वार्या पण कोइनुं कहेवुं न मान्युं. त्यारे पुन्यसार बोल्यो जे, "हे रत्नवती! तुं टक टक शुं करे ले? जो, हुं तोज खरो, के तुजने परणीने दासी करी राखुं! अने म्हारूं नाम पुन्यसार पण त्यारेज खरूं! ते वचन सांजलीने रत्नवती बोली, जे—" तुज सरखा कंगालने हुं नही वरुं! तुज सरीखा तो म्हारे पोताने घेर पाणीना जरनारा ले. माटे जो हुं परणीश तो कोइक पुन्यवंत पुरूषने वरीश. पण तुज सरीखा अजागीयाने नहीं परणुं. ए वातनी तुं खातरजमा राखजे." पुन्यसारे ते वखत कह्युं के, परणीश तो हुं ज परणीश! तुंए पण ए वातनी खातरजमे राखजे. पली ते अध्यापके ते बन्नेने बोलतां बंध करी एकेकने जुदा कर्यां. त्यारपली ते बे जण हसे नही, बोले पण नही, साथे जणे, पण एक बीजाना सामुं सरखुं पण न जूए.

पली पुन्यसार पोताने घेर आव्यो. त्यां पण आमण दूमण थयो थको कोइ साथे बोले नही, वात नही तेम विचार पण नही, मनमां फक्त एज विचारे ले जे, ए रत्नवतीने हुं क्यारे परणुं! एनो एज विचार तेना चित्तमांथी खसतो नथी. वली रत्नवतीए कहेलां वचनना रुंकनो जाटको तेने अंगुठेथी ते माथा

सुधी लागेलो ते परण्या सिवाय रूझाय तेम नहोतो. पण परहस्ते विधात्राने हाथ ए वात होवाथी ते गमगीनीमां पडी एकांतमां गयो. एवामां तेना पिता पुरंदर शेठ घरे आव्या. जमवानी वेला थई एटले पिताये पुत्रने जोवराव्यो. ते मालुम न पड्यो एटले पोते तेने खोलवा लाग्या. तेने खोलतां खोलतां एकांत स्थानके अलायधी जगामां कोइने मालम न पडे त्यां तूटीशी ढोलणी उपर सूतो दीठो. एटले ढंढोलीने उठाडी कह्युं के चालो, जमवानी वेला थई छे माटे भोजन करवा बेसीये. पुण्यसारे कह्युं के, पिताजी ! तमे जमो, हुं तो हमणां नहीं जमुं. पिताये पुछ्युं जे, शा माटे ? पुत्रे जणाव्युं जे, " में म्हारा मनथी एवी प्रतिज्ञा करी छे जे, रत्नवती कन्याने परण्या विना जमवुं नही, माटे नही जमुं. प्रतिज्ञा पूर्ण थया विना केम जमाय ? आ म्हारो पंड पडी जाय तो बहेतर ! पण प्रतिज्ञा पूर्ण थये ज जमीश. " ते सांभली शेठ बोल्या जे, हे पुत्र ! हमणां तो जमवानो समय छे, माटे जमो. वखत थये तमे कहेशो तेनी साथे पाणीग्रहण करावीशुं. चालो-उठो, आपणे जमीये. पुत्र कहे जे, परणुं त्यारेज जमुं. शेठ कहे के, हमणां ए वातनो हठ न करो. तुं कहीश शुं अने अमे परणावशुं शुं ? तने परणाववानो तो अमने घणो मनोरथ छे. पुन्यसार कहे के, ते तो छेज. पण रत्नवतीने परण्या विना हुं जल अन्न लेवानो नथी. छेवट पिताए कह्युं जे, हमणां तो तुं जमीले, पछी हुं जइने ए कामनी तजवीज करीश. एवुं सांभली पुन्यसार जमवाने उठ्यो. पिता पुत्र जमी उठ्या. पछी पुन्यसारे पिताने कह्युं जे, हवे तमे जाओ. पुरंदर शेठ परिवार लेइने रत्नसारने घेर गया. रत्नसार उठीने सामा आव्या. आदर सत्कार सहित आसन बेसण आपीने पुछ्युं जे, स्वामी ! केम पधारवा कृपा क-

रीठे ? जे कारज होय ते कहो ? पुरंदर शेठे कीधुं के, अमारो पुत्र अने तमारी पुत्रीनो विवाह मेलवो तो रूडुं. रत्नसारे हा कही. ते वखत रत्नावली पासे बेठी हती तेणीये ते वात सांजली तेथी त्रटकीने बोली जे, ए पुन्यसारने हुं नहिं परणुं. बीजाने परणवानी हा, पण एनी साथे ना. अथवा परण्या विना रहुं. पण सर्वथा प्रकारे करी एने तो हुं नही परणुं. कन्यानुं बोलवुं सांजलीने पुरंदर शेठ बोल्या जे, ए पुत्री अत्यारथी एम करेछे तो आगल ए शो उघाड करशे ? रत्नसार शेठे तेमने कह्युं के, शेठजी ! आप घरे पधारो. ए बालीका जोली छे, कांई समजती नथी, माटे एनां कहेण मनमां न लावशो ! अर्थात् एना बोल्या सामुं न जोशो. हुं ए पुत्रीने समजावी हा जणावुं छुं. एम दीलासो देई शेठने शेरी सुधी वोलावी आव्या. पुरंदर शेठे घेर आवी त्यां बनेली सघली हकीकत पुत्रने कही संजलावी. पुन्यसार पोताना मनमां समज्यो के, ए मने परणशे नही. माटे हवे तो एने परणी शकाय एवो कांईक उपाय करवो जोईये. पछी तेणे पोताना बापने कुलदेवीनुं आराधन करवाथी तेणीये प्रसन्न थई पुत्र आप्यो हतो एवुं लोक वाक्ये सांजलेलुं होवाथी विचार्युं जे, हुं ए मातानो आपेलो दीकरो छुं, माटे माता पुत्रनी सार करशे. तेथी तेनुं आराधन करूं तो म्हारूं कार्य निःसंदेह सिद्ध थशे. एम धारीने धूप दीपादिकनी सामग्री मेलवीने तेणे देवीनुं आराधन कर्युं. देवीए प्रत्यक्ष थई पुछ्युं के, हे पुत्र ! शुं कहे छे ? मने केम आराधी छे ? पुन्यसारे जणाव्युं जे, हे माता ! तमे मुजप्रत्ये रत्नवतीने परणावो. देवीए कह्युं के, जा, तुं एने परणीश. पुन्यसार कहे के, जोज्यो मा, वचनमां खामी न पडे ! देवीए कह्युं के, जा, ए कन्या में तुजने आपी. ते वचन लेई पुन्यसार उठ्यो. पाछो

मन देईने जणवानो उद्यम मांड्यो. त्यारपछी तेने जुगारीनी सा-
बत थई. एक वखत राजाए पुरंदर शेठने लाख द्रव्यनुं घराणुं
सोंपीने कह्युं के तमारे त्यां आ अनामत राखी मुकजो. ज्यारे अ-
मारे जरूर हशे त्यारे मगावी लेईशुं. शेठे ते घराणुं पूर्ण चोकसीथी
अलायधुं मुक्युं. पुन्यसारे ते मुकतां दीठुं. पछी छुपी रीते घराणुं
काढी लेई ते जुवटे रम्यो. तेमां बधुं हार्यो. त्यारपछी केटलेक
दीवसे राजाए शेठ पासे घराणुं माग्युं. शेठ ते लेवा सारू घेर
आव्या. जोयुं तो एक वालनी वींटी जेटलुं पण न दीठुं. एटले
पुत्रने पुछ्युं जे, तमे आ ठेकाणेथी आभूषण लीधां छे? ए
घराणुं तो राजानुं छे. माटे साचे साचुं कहो? पुन्यसारे उत्तर
वाल्यो जे, हा, में लीधुं छे. शेठे कह्युं के, जाउ, घराणुं लेईने
घेर आवजो. एम कही पुन्यसारने तेना पिताए समीसांजनी वे-
लाये घर थकी बाहिर काढी मुक्यो. आमण डुमणो थयो थको
ते घरथी नीकली जागोले आव्यो. तेणे विचार्युं जे हवे हुं रा-
त्रिने विषे क्यां जाउं? एम चिंतवीने ते एक वडना कोटरमां
पेठो. शेठाणीए रात्रि पडी पण पुत्रने न दीठो तेथी शेठने
पुछ्युं जे पुन्यसार क्यां गयो छे? शेठे कह्युं के, में राजानुं घ-
राणुं लेई गया माटे तेने सीखामण वलवा वास्ते घर थकी काढी
मुक्यो छे. शेठाणी बोली जे, आ रात्रिनी वेलाये पुत्रने काढी
मुकीने तमे घरमां नचिंत बेठा छो, ए शुं? जाउ, एने ज्यां
होय त्यांथी घेर तेडी लावो. स्त्रीनुं वचन सांभली पुन्यसारने
जोवा सारू शेठ घर थकी नीकल्या. बधु नगर जोई वळ्या पण
क्यांई न दीठो. रात्रिना चारे पहोर एमना एम फर्या पण पत्तो
न लाग्यो; त्यारे शेठे विचार्युं जे, उघडते दरवाजे रखेने ए
क्यांई जतो न रहे! एवुं चिंतवीने प्रभातमां नगरना बाहार
आवी तेने जोवा लाग्या. हवे पुन्यसार जे वडना कोटरमां पेठो

હતો તે વરુના ઉપર બે સ્ત્રીઓ આવીને બેઠી. તેમાંની એકે બીજીને કહ્યું કે, હે બહેન ! ચાલો, આપણે આજ કાંઇ તમાસો જોવા જઈયે. બીજીયે કહ્યું કે, ક્યાં જઈશું ? પ્રથમનીએ કીધું કે, “ અહીંથી ચારસેં કોસ ઉપર વલ્લભીપુર નામે નગર છે. ત્યાં ધનપ્રવર નામનો શેઠ વસે છે. તેને સાત પુત્રીઓ છે. તે પરણાવવા યોગ્ય ઉમ્મરની થવાથી તેઓને માટે વરની ચિંતા કરતાં શેઠે લંબોદરનું આરાધન કર્યું. તે દેવતાયે પ્રત્યક્ષ થઈને કહ્યું છે કે, અમુક દીવસે પહોર રાત્રિ જતાં આ નગરના દરવાજામાં બે સ્ત્રીઓની પાછળ એક પુરૂષ આવશે, તે ત્હારી પુત્રીયોને યોગ્ય વર છે. તેને તું ત્હારી કન્યાઓ પરણાવજે. તે સારૂ વિવાહની સર્વ સામગ્રી તૈયાર કર. દેવતાના કહેવા પ્રમાણે શેઠે મ્હોટો મંડપ રચી વિવાહનો આદર માંડ્યો છે. આથીકરીને એટલે વરનું કાંઈ ગામ ઠેકાણું નથી તેમ છતાં શેઠે વિવાહનો સમારંભ કર્યો છે તેથી તે નગરમધ્યે તમાસો થઈ રહ્યો છે. દેવતાએ બતાવેલો દીવસ આજ છે. માટે ત્યાં શું થાય છે તે જોવા સારુ આપણે આ ઝાડને મંત્રવડે મંત્રીને ઉડાડી ત્યાં જઈયે તો ઠીક ! એમ હું ધારું છું.” બીજી સ્ત્રીએ એ વાતને અનુમોદન આપવાથી વડના ઝાડને મંત્ર્યું. એટલે તે આકાશે ઉડ્યું. પુન્યસાર એ ઝાડના કોટરમાં રહ્યો થકો ચિંતવે છે કે, જો અહીંથી પડું તો મ્હારી શી વલે થાય? હવે તે ઝાડ સાયતવારમાં વલ્લભીપુરને પરિસરે આવીને ઉતર્યું. તે બે સ્ત્રીયો ઝાડ ઉપરથી ઉતરીને ચાલીઓ. તેની કેડે કોટરમાંથી નીકલીને પુન્યસાર પણ ચાલ્યો. દરવાજા સમીપ શેઠના સુભટ રાહ જોઈ બેઠા હતા તેમણે દેવતાના જણાવ્યા પ્રમાણે બે સ્ત્રીઓની પાછલ દરવાજામાં પેસતા પુન્યસારને દીઠો. તેઓ તેને સન્માની શેઠની પાસે તેડી ગયા. શેઠે ઘણો આદર દીધો. પુન્યસાર વિચાર કરવા લાગ્યો જે, મ્હારે અને એમને શું ? જે મુ-

जने एटलो आदर करे छे. शेठे कह्युं के, महारी सात पुत्री- उने परणो. पुन्यसार ते सांजलीने मनमां खुशाल थयो. शेठे तेने जलां वस्त्र तथा उत्तम आजूषण पहेराव्यां. वरघोडो चढ्यो. साते कन्याउनां पाणीग्रहण कर्यां. करमोचन वेलाये शेठे घणुं धन आप्युं. पछी सुवा सारु सात मजलानो आवास आप्यो. सातमे माल स्त्रीउ सहित पुन्यसार गया. त्यां कला विकलानी वात, बहिर्लापिका अंतर्लापिका, काव्य, चतुर संगीत सरस वचन चतुराईनी वात स्त्रीउ करे छे, पण पुन्यसारने ते कांई गमतुं नथी. कारण के, आ वखत तेना मनमां एवो विचार उत्पन्न थयो छे के, में राजानुं आजूषण बगाड्युं छे अर्थात् रा- जानुं घराणुं जुगारमां हुं हारी आव्यो छुं; तेथी रखेने ! राजा महारा बापने मारुं (शिक्षा) करे. वली जाड उपर आवेली बे स्त्रीउ जाती रहेशे तो हुं शुं करीश ? एवुं आहट दोहट चिंतवे छे. स्त्रीउ वारंवार बोलावे पण बोले नही. चिंताग्रस्त थई, सून्य मुन्य बेसी रह्यो छे. तेवारे स्त्रीउए पुछ्युं जे, शुं स्वामी ! आपने कांई जूख लागी छे ? तेणे ना कही. त्यारे शुं छे ? केम बोलता नथी ? एम स्त्रीए सवाल कर्यो. एटले तेणे जणाव्युं जे, देहशंका टालवी छे. तत्काल सातमी गुणसुंदरी नामे स्त्री घणी चतुर हती ते जारीमां जल लेईने तेनी साथे थई. उठतां उठतां पुन्यसारे विचार कर्यो के, हुं आ स्त्रीउने मुकी जईश, ने तेउ महारुं नाम नीशान जाणती नथी; तेथी एमनी शी गति थशे ? माटे कांईक जणावुं तो ठीक. एम धारीने खडीना कटका वडे जावार्थ जणाववा माटे जारवटे लखतो थको नीचे उतर्यो. तेमां लख्युं जे- यतः ॥ किहां गोवालय वलही, किहां लंबोदर देव; आव्यो वेटो वहि वसण, गयो सत्ते परणेव. १॥ पछी बाहिरली जूमीकाये आवीने साथे आवेली स्त्री प्रत्ये कह्युं जे, तुं वेगली

रहे. स्त्री तेना विश्वासे वेगली जोती ऊभी रही. पुन्यसार तेनी नजर चुकावी जेम बनी तेम झडपथी वडना झाड पासे आवी तेना कोटरमां पेठो. त्यारपछी नगरचर्चा जोई पेली बे स्त्रीउ आवीने झाड ऊपर बेठी. एटले ते ऊड्युं. क्षणेकवारमां ते गोपालपुरे आवीने जे स्थानके पूर्वे हतुं त्यां रह्युं. पेली बे स्त्रीउ झाड ऊपरथी ऊतरीने पोताने घेर गईयो. पछी पुन्यसारे कोटरमांथी नीकलीने नगर भणी हींडवा मांड्युं. एटलामां तेनी शोध करवा आवेला तेना पिता मल्या. ते हर्षवंत थया थका पोताना पुत्रने घेर तेडी लाव्या. पछी सघली वात तेणे पुछी. पुन्यसारे जुगारी पासेथी राजानुं घराणुं लावी आप्युं. शेठे ते राजाने पाछुं सोंप्युं.

हवे वल्लभीपुरमां वेगली ऊभी रहेली गुणसुंदरी देहशंका टालवा गयेला पतिने घणी वार थई पण आव्या नहीं तेथी चारे बाजु निहाली निहालीने जोवा लागी. पण किहांये दीठा नहीं. तेथी सातमे माल पाछी आवीने पोतानी सकल बहेनोने जणाव्युं. ते सांभलीने सर्वे चिंतामां पडीयो. अने बोली के, अरे भूंडी ! तुं तो महा डाही छे, तेम छतां तने छेतरी ! ए शुं ? एम विचार करतां ज्यारे प्रभात थयो त्यारे भारवटे लखेलो श्लोक तेमना जोवामां आव्यो. ते वांची जोतां मालम पड्युं के, " ए व्यसनी छे अने परणीने गोपाल पूरे गयो. " पछी ते स्त्रीउना पितादिके ए वात जाणी. गुणसुंदरीए तेना पिताने कह्युं के, मने नरनो वेष आपो. हुं म्हारा भर्तारने खोली काढुं. तेना पिता धनप्रवर शेठे घणो साथ मेलवी सजाई करी मालनां गाडां, पोठी तथा ऊंट भरी आपी पुरुषवेशे पोतानी पुत्री गुणसुंदरीने तेना पतिनी शोध करवा सारु वीदाय कीधी. तेणे पोतानुं ' गुणसुंदर ' नाम राख्युं. ते केटलेक दीवसे गोपालपुरने परिसरे आवी ऊतर्यां. पछी राज्य योग्य भेटणुं

लेईने ते राजाने मळ्यो. राजाए तेनो सारो सत्कार करी उत-रवाने माटे आवास प्रमुख आप्या. त्यां रही सुखरुप व्यापार करवा मांड्यो. तेने घेर घणा लोक माल लेवा माटे आववा लाग्या. तेमां पुन्यसार पण आवतो हतो. अणसारे तेने ओल-खवाथी पुरती तपास करी तेथी गुणसुंदर (स्त्री)नी खात्री थई के तेने परणनार पति एज छे. पछी तेनी साथे प्रीति बांधी. एटले ते निरंतर आववा लाग्यो. दीवसे दीवसे गुणसुंदरनी ख्याती घणी थई. रत्नवतीये ए वात जाणी तेथी तेणीये पो-ताना पिताने कह्युं के, हुं गुणसुंदरने परणीश. अवरने नही परणुं. पुत्रीनी प्रतिज्ञा सांभली तेनो पिता रत्नसार शेठ पोताना परिवार साथे गुणसुंदर पासे आव्या, अने पोतानी रत्नवती कन्यानुं तेनीसाथे पाणीग्रहण करवानी ईच्छा जणावी. गुणसुंदर विचारमां पडी गयो, पण ना कहेतां न पुरव्युं. त्यारे महारी वले ते एनी वले, एम विचारीने हा कही, रत्नवती साथे पाणीग्रहण कर्युं. पुन्यसारे ए वात जाणी कुलदेवी पासे जईने विनती करी कह्युं जे, देवताओनां जे वचन ते पण खोटां पड्यां! देवी कहे जे अमारां वचन खोटां न थाय ! पुन्यसारे कीधुं के, ए परस्त्री थई एटले महारे शा कामनी ? ए महारे खप नावे. देवी कहे–घणुं बोल्युं ते शा कामनुं ? जा, ए में तुजने आपी. ए सांभली पुन्यसार देवी पासेथी उठीने पोताना कार्यमां खबड-दार थयो, अर्थात् काम काजे वलग्यो. ते हमेशां गुणसुंदर पासे आवतो जतो तेथी, अने एक बीजाना स्वभाव मलता आववाथी, तेमने नखमांसनी परे प्रीति थई. एक बीजा वगर घडी पण चेन पडतुं नहीं. परंतु पति पत्निपणानो पडदो खुल्लो थयो न-होतो. एकदा गुणसुंदरीए विचार्युं जे,–" निःसंदेह ए महारो स्वामी छे, तेम छतां दुःख शा सारू भोगववुं ? वली हुं, जो मने

छ मासनी अंदर भरतार न मळे तो अग्निमां प्रवेश करवानी प्र-
तिज्ञा करी आवी हुं. ते अवध पण पुरी थवा आवी छे, माटे
हवे तो पतिने प्रकट करशो." पछी तेणे काष्टनी चिता खड-
कावी तेमां पोते बळी मरवा तैयार थई. बधा नगरमां वात वि-
स्तारी के, गुणसुंदर सार्थवाह बळी मरे छे. राजा, प्रधान, न-
गरशेठ पुरंदरशेठ, रत्नसार शेठ, पुण्यसार शेठ विगेरेए पण
ए वात सांभळी. ते सर्वे एकठा थई मांहोमांहे विचार करवा
लाग्या के, शुं हशे? ए सार्थवाह बळी मरवा केम तत्पर थयो
छे? पण तेनो भेद समजाया नहीं. राजाए विचार्युं के—म्हारा
नगरने अने मने खामी लागशे के—फलाणा राजाना फलाणा
नगरमां फलाणो व्यवहारीयो बळी मुओ. वळी गुणसुंदर जेवा
पुरुषने माथे एवी शी आपदा आवी हशे के ते बळी मुओ.
एवी वात थतां स्वर्चीन राज्यनी खामी कहेवाशे. माटे तेम न
थवा देवुं. एम धारीने राजा पोते गुणसुंदर पासे आव्यो. तेने घणुं
घणुं पुछ्युं पण कांई जवाब न दीधो. तेवारे कोइएक पुरुषे कह्युं
के, एने पुण्यसार साथे घणी मित्राई छे. माटे तेनी पासे कहे-
वरावो. ए तेनुं कहेवुं मानशे. पछी राजाए पुन्यसारने कह्युं के,
ए तमारो मित्र शा माटे मरे छे? तमे तेने केम वारता नथी? कहेता
नथी? तेनुं शुं कारण? राजानां वचन सांभळी पुन्यसारे गुणसुंदर
पासे जइने पुछ्युं के—हे मित्र! यौवन वयमां तमे मरण पाम-
वाने साहसीकपणुं धरो छो ते शा माटे? शा कारणे एम क-
रवुं पडे छे? तेनुं जे कारण होय ते मुजप्रत्ये कहो? लोकीकमां
पण कह्युं छे के, ॥ यतः ॥ प्रीत तिहां पडदो नही, पडदो
तिहां शी प्रीत; प्रीत वचे पडदो करे, एह वडी विपरीत. १ ॥
एवुं सांभळी गुणसुंदर नीसासो नाखी बोल्यो के—हे मित्र! तुज-
प्रत्ये हुं शुं कहुं? जो कोई म्हारा दुःखनो जाण (जाणनार)

होय तो तेना मुख आगळ वात कहीये ते प्रमाण. पुन्यसारे कह्युं के, तमारे जे दुःख होय ते अमने कहो. कह्या विना शी खबर पडे कोईने कोईना मननी? गुणसुंदरे कह्युं के—जारवटे श्लोक तमे लख्यो तो खरो? पुन्यसारे जणाव्युं जे—ए वात तो खरी. पछी तेणे बधी वातनो जेद कह्यो. ते सांजळी. पुन्यसारे पोताना घर थकी स्त्रीनो वेष मगावी आप्यो. सघळी वातनी खबर पडी तेथी राजादिक सर्वे विस्मय पाम्या अने खुशी थया. तेवारे रत्नसार शेठे राजाने विनती करी जे, हवे महारी पुत्रीनी शी वल्हे. राजाए जणाव्युं के, ए पण पुन्यसारनी स्त्री थई. एवो न्याय थवाथी रत्नवती पण पुन्यसारनी जार्या थई. पुन्यसारे तेने सन्मानीने घणो मान मर्तबो वधार्यो. तेउ पूर्वनी वार्त्ता जाणे जूली गयां होय तेम लेश मात्र पण संजारता नहोता. पछी गुणसुंदरीने पति प्राप्त थयानी वार्त्ता वल्लजीपुरे गई. त्यां रहेली तेनी उण बहेनो पुन्यसारने त्यां आवी. ते मळी आठे स्त्रीउनी साथे दोगंदक देवतानी परें पुन्यसार सुख जोगवे ढे. आखा नगरमां तेमज आसपासना मुलकमां पुन्यसारनो जस घणो विस्तारवंत थयो. एवे अवसरे चार ज्ञानना धरणहार शीलंधराचार्य आवीने ए नगरना उद्यानने विषे समोसर्या. वनपालके वधामणी कही. तेने राजाए घणुं द्रव्य आपीने खुशी कर्यो. पछी सर्व परिवार लेई राजा गुरुने वांदवा आव्यो. राजा, पुरंदर शेठ, पुण्यसार आदि सर्वे विधिपूर्वक गुरुने वांदीने यथोचित स्थानके बेठा. गुरुए धर्मदेशना दीधी. तेमां एम जणाव्युं जे—"यतः॥ अपारे संसारे, कथमपीसमासाद्यनृजवं॥ नधर्मंयत् कुर्यात्, विफलजन्म निगमयतिर्वं॥१॥ देशना सांजळीने पुरंदरशेठे गुरु महाराजने प्रश्युं जे—स्वामी! पुन्यसारने पामतां एवडी विमासण केम थई? गुरु कहे के—

" દેવાણુ પીયાઉ ! એ પુન્યસાર પૂર્વે ભવે ચારિત્ર પાલતાં કાયાની ગુપ્તિ સાહસિકપણે પાલી શક્યા નહી. સાત પ્રવચન માતા સુખે પાલવાથી આ ભવે સાત સ્ત્રીઉ સુખરૂપ પામ્યા. અને આઠમી સ્ત્રી મલતાં એવડી વાર લાગી; તેનું કારણ એક આઠમી કાયગુપ્તિ સંબંધી જાણવું. " ગુરુમુખે પુન્યસારના પાછલા ભવની હકીકત સાંભલી વૈરાગ્યવંત થયા થકા પુરંદર શેઠે ચારિત્ર ગ્રહણ કર્યું. તે શુદ્ધ મુનીનો ધર્મ આરાધી સ્વર્ગ પ્રત્યે પધાર્યા. પુણ્યસાર નગરશેઠ થયા. તે પણ ન્યાય ધર્મ સમ્યક્ પ્રકારે પાલી પુત્રને ઘરનો ભાર આપી આઠ સ્ત્રીઉંની સાથે સંયમ આરાધી દેવલોક પામ્યા. આ પુન્યસાર શેઠની કથાથી સાર માત્ર એ ગ્રહણ કરવાનો છે જે, પ્રથમ તે જુવટીયા થયા તેથી ચોરી જેવો મ્હોટો ગુન્હો કર્યો. રાજાનું ઘરાણું લીધું તે હારી બેઠા. પિતાએ ઘરમાંથી કહાડી મુક્યા. સંતાઈ પેસવું પડ્યું, અને પોતાને લીધે પિતાની અવદશા થશે એવો મનમાં ભય ઉત્પન્ન થવાથી પ્રથમ સમાગમે સ્ત્રીઉ સાથે એક શબ્દ પણ ઉચ્ચાર કરી શક્યા નહી. વલી પરણેત સ્ત્રીઉંને મુકીને નાશી આવવું પડ્યું. એ વિગેરે દુઃખો ફક્ત જુગાર રમવાથીજ ઉત્પન્ન થયાં. અને જ્યારે એ વ્યસન છોડ્યું અર્થાત્ જુગાર રમવો બંધ કર્યો ત્યારે સુખી થયા. યશ કીર્ત્તિ વધી અને છેવટે આત્મ હિતાર્થે સંયમ પાલીને દેવગતિનાં સુખ પામ્યા. માટે કોઈએ જુગાર રમવો નહીં. એ સાત વ્યસન મધ્યેનું પહેલું વ્યસન નિષેધ કરવાનો અધિકાર કહ્યો. २३

॥ અથ માંસ ભક્ષણ તથા ચોરી વિષે ॥ ઉપજાતિ છંદ ॥

॥ જે માંસ લુબ્ધા નર તે ન હોયે, તે રાક્ષસા માનુષ રૂપ સોહે ॥ જે લોકમાં નર્ગ નીવાસ ઓરી, નિવારીયે તે પર દ્રવ્ય ચોરી ॥ २४ ॥

ज्ञावार्थः–जे मनुष्य मांसना लालची थाय ते मानवी नही पण माणसरुपे राक्षस जाणवा, वली तेवा (मांस ज्ञक्षण करनारा) मनुष्यने लोकमां नर्कना वसनारा कहीये, अर्थात नर्कवासी जेवा तेमने जाणवा, माटे मांसनुं व्यसन टालवुं अने परद्रव्य पण न लेवुं. एटले चोरी न करवी. (मांसना ज्ञक्षकने मने तो ते सोंघुं छे पण जे प्राणीनो वध करी मांस ज्ञखे अर्थात् खाय तेने एटले ते प्राणीने मने तो मोंघुं छे. पोत पोताना जीव सौने वाहाला छे. माटे मांस ज्ञक्षणना त्याग करवो. ते उपर दृष्टांत कहे छे.)२४

॥ मांस मोंघुं छे ए सिद्ध करनार अज्ञयकुमारनो प्रबंध ॥

मगध देशमां राजगृही नगरीनेविषे श्रेणीकराजा राज्य करता हता. तेमने अज्ञयकुमार नामे प्रधान हतो. एकदा राजसज्ञा मलीने बेठी छे त्यां वात विचार करतां मांसना लालची हता ते बोल्या जे, “ आजकाल मांस सोंघुं मळे छे. ” अज्ञयकुमारे ते सांज्ञली पोताना मनमां विचार कर्यो के, जेने मारीने ते मांस ज्ञक्षण करता हशे तेने मने तो मोंघुं छे; माटे आ जे उमरावो मांस सोंघुं कहे छे तेमने प्रतिबोध देवो योग्य छे. एम धारी ते वखते मौन रह्या. थोडीवारे दरबार विसर्ज्यो. राजा महेलमां गया. उमरावो पोतपोताने घेर गया. सांज पडी एटले अज्ञयकुमार, जे उमरावे दरबारमां मांसनी वात कहाडी हती तेने घेर गया. तेणे आदर दीधो अने बोल्यो जे, हे महाराज ! केम पधार्या ? घणी कृपा करी, जे कारज होय ते कहो. अज्ञयकुमारे कह्युं जे– हे ज्ञाइ ! राजाने शरीरे अकस्मात् रोग उत्पन्न थयो छे अने त्यां वैद्य आव्या छे. तेणे कह्युं के– कालजानुं सवाटांक मांस आवे तो करार थाय. तमे कहेता हता जे मांस सोंघुं छे, माटे हुं ते लेवा सारु तमारी पासे आव्यो छुं. तमे राजाना मानीता छो, माटे ते आपो. उमराव विचारमां

पडी गयो. पछी बोल्यो जे, महाराज ! ए काम केम थाय ? कहो तो द्रव्य आपुं. ते द्रव्य आपीने बीजा पासेथी ल्यो. अजयकुमारे कह्युं के, मांसनुं काम छे. वली ते तमारा कहेवा प्रमाणे सोंघुं छे तो आपवामां शी हानी छे ? उमराव लाचारी करी बोल्यो के, साहेब ! लाख बे लाख द्रव्य ल्यो, पण मांस तो बीजानुं लेवा महेरबानी करो. अजयकुमार तेनी पासेथी द्रव्य लेईने तेनी वातनो हाजीयो पुरनार बीजा उमरावने त्यां गया. तेनी पासे सवा टांक मांस माग्युं. तेणे पण मांस आपवानी ना कहीने द्रव्य आप्युं. तेनुं द्रव्य लइने वली त्रीजा पासे गया. तेणे पण द्रव्य आप्युं. एम जे जे उमरावादि मांस सोंघुं मलवानुं कहेता हता तेउने त्यां आखी रात्रि सुधीमां फर्या. कोईये पण मांस आप्युं नही. लाचारी जणावी सघलाए द्रव्य आप्युं. एम लाखो गमे द्रव्य जेगुं करीने प्रजाते अजयकुमार दरबारमां आव्या. सघला सामंत उमरावो आवी राजाने कुशल खेम पुछवा लाग्या. राजा विस्मय थया. एमणे अजयकुमार सामुं जोयुं. अजयकुमार बे हाथ जोडी बोल्यो जे,– महाराज ! गई काले राजसजामां आपना उमरावो कहेता हता जे, “ आज काल मांस सोंघुं मले छे. ” तेनी खात्री करवा माटे गई रात्रे मांस लेवाने अर्थे हुं गयो हतो. सघला सामंत उमरावे मुजने द्रव्य आप्युं, पण कोईए तमने सुख करवा माटे फक्त कालजानुं सवा टांक मांस माग्युं ते पण न आप्युं. माटे कहो महाराज ! “ ए ते मांस सोंघुं थयुं के मोंघुं थयुं ? जो सोंघुं होय तो सवा टांक माटे कोई लाख बे लाख द्रव्य आपे ? ” अजयकुमारनां एवां वचन सांजली त्यां आवेला सर्वे सामंत उमरावो नीचुं घाली रह्या. पण कोई कांई प्रत्युत्तर देई शक्या नही. सघला वचमां बंधाणा अर्थात् सांकडे आव्या;

तेणेकरी नीचुं जोई रह्या पण ऊंचुं जोई न शक्या ! पछी सघलाए मांस खावानां पञ्चखाण कर्यां. ते माटे मांस वस्तु ए सर्व जीवने वाह्हाली छे. केमके, सर्व जीव जीववुं वांछे छे. पण कोई मरवुं न वांछे. माटे मांसनो सर्वथा प्रकारे त्याग करवो. ए बीजुं व्यसन तजवुं. २४

हवे तेनो वली पाछो उपनय कही देखाडे छे जे, जुर्ड–वली जे जीव मांसना लालची छे ते जीव महामहा दुःखी थाय छे अने मरीने नर्कें जाय छे. ते कोण गया ? तो जुर्ड–कालिकसुरीआनी पेठे घणा गया छे.

॥मांसनी लालचथी नर्कें जनार कालिकसुरीउतथा तेनो त्याग करी॥
॥ धर्म आराधन करनार तेना पुत्र सुलसनी कथा ॥

राजगृही नगरीने विषे कालिकसुरीउ कसाई रहेतो हतो. ते मांसनी लालचे करी नित्ये पांचसें भैंसा (पाडा) नो वध करतो हतो. तेनो आखो जन्मारो एम वध करतां करतां गयो. ज्यारे तेने कालधर्मनो समय आव्यो अर्थात् तेनुं मर्ण नजीक आव्युं त्यारे ते महा महा दुःख पामवा लाग्यो. तेनो पुत्र सुलस पोताना बापना सुखने वास्ते जे जे उपाय करे तथा जे जे वस्तुथी तेने समाधि थाय ते ते वस्तु तेना वपरास माटे लावे ते ते सघलाथी सुख थवाने बदले तेने पापना उदयथी घणुं दुःख थतुं जाय. तेवारे सुलस अभयकुमार प्रधान पासे आव्यो, अने पोताना पिताने सुखने वास्ते जे जे कारण करीये छीये ते ते दुःखरूप थाय छे; पतुं शुं कारण हशे ? ते माटे आप कहो ते करूं, एम पुछ्युं. अभयकुमारे विचार्युं जे, ए जीव महा पापना जोग थकी नियमा नर्कगामी छे. माटे एने सुंआली सुखसैय्या न जोईये, शीतल पाणी तथा बावनाचंदन प्रमुखनां विलेपन पण एने न जोईये. जेम खर, उंष्ट्र, अज, वायस, सु-

अर विगेरेने धूंमी वस्तुनो चाह होय तेम एने पण एवां कारण जोईये ! एथी ए शाता पामशे. एम मतिकल्पनानी बुद्धिएकरी तेना पुत्रप्रत्ये अजयकुमारे कह्युं जे,–हे सुलस ! जमीन उपर कांटा पाथरीने ते उपर तह्यारा बापने सुवाड. तेथी तेना जीवने सुख उप जशे. वली टाढा पाणीने बदले तुं तेने तडतडतुंपाणी पाजे. अने एना शरीर उपर विष्टानुं विलेपन करो. ते सांजलीने घेर आवी सुलसे सर्व अजयकुमारना कह्या प्रमाणे करणी करी. एथी कालिकसुरीआने शाता थई. तेवारे ते कहेवा लाग्यो जे, हे दीकरा ! एटला दीवस एवी सुंहाली सेज क्यां घाली मुकी हती ? वली तें आज मने आवुं शीतल पाणी पायुं तथा विलेपन पण घणुंज रूडुं कर्युं. एम ते माठाने सारूं मानतो आयुना क्षयथी मरीने सातमी नर्के गयो.

तेनां लोकीक कारज कर्यां पछी सर्व तेनां सगां संबंधी मली सुलसनी पासे आवीने कहेवा लाग्या के, हे सुलस ! ते तह्यारा बापनुं काम तुं ले. ए सर्व कुटुंबनी वृत्ति तुं हवे चलाव. सुलस बोल्यो जे–हुं लेउं तो खरो ! पण में मह्यारा बापनी अवस्था दीठी छे, तेथीकरी मह्याराथी तो ए काम न लेवाय. सघलां सगांए कह्युं के, तह्यारे जे पाप आवशे ते अमे सर्व कुटुंब वहेंची लेईशुं. तेवारे नजीकमां फरसी पडी हती ते लेईने सुलसे पोताना पग उपर नाखी. एटले वेदना उपनी. सुलस कहे जे, अरे जाईयो ! अरे जाईयो ! अरे बाई ! अरे बाई ! अरे बहेन ! आ अत्यंत महा मुजने दुख अने वेदना जे थाय छे ते मुजथी खमी नथी जाती. माटे धूंमो ! तमे थोडीथोडीये पण वहेंची ल्यो, तो ते तेटली वेदना तो मुजने उछी थाय ! संबंधी बोल्या जे, तें तह्यारे हाथे करी जेम पेट चोलीने शूल पेदा करे तेम वेदना पेदा (उत्नी) करी. ते पछी तुं अमने कहे छे जे हवे

तमे वेदना ल्यो. ते अम थकी केम लीधी जाय ? सुलस कहे
जे, – वेदना तुमथी लीधी नथी जाती त्यारे तमे पाप ते शी
प्रकारे करी वहेंची लेशो ? जो तमाराथी आ आटली वेदना न
लेवाय तो तमे पापना संविभागीया केम थाओ ? ते माटे आ
भवे अने परभवे सुख अने दुःख ते पोते (पोतानो) आत्माज
भोगवे. सुख दुखनो वेत्ता ते एहज जीव छे. माटे जे जेवां
कर्म करे ते तेवां ते प्राणी भोगवे. ए वात सांभलीने सगां वि-
चारवा लाग्यां के ए कहे छे ते पण खरुं छे. शाथी जे, ए कहे छे
जे तमे आटला कुटुंब परिवार मल्यां थका पण तमाराथी ज्यारे
कांइ लेवातुं नथी त्यारे मर्ण पाम्या पछी कोई कोईने एकठो न
थाय, त्यां ए वहेंची लेवाने कोण आवे ? जेम पंखी सांज वेलाये
एकठां थाय अने प्रभाते सर्व उभीने दीसोदीसे जता रहे, तेम
आपणो मेलो पण एमज जाणवो. जेम ते पंखी पाछां एकठां
न मले तेम, आपणा कुटुंबनो पण मेलो फरी न मले. सुलसे
उपर प्रमाणे सर्व स्वरूप कह्युं, ते तेनां सर्व सगां सांभलीने
एवा निश्चय उपर आव्यां के, ए सर्वथा प्रकारे करी पाप नहीं
करे, केमके ए धर्म पाम्यो छे. त्यारपछी सुलस अभयकुमार
पासे गयो. तेमने पुछीने धर्म प्रत्ये पाम्यो. पछी ते दृढ मने करी
धर्माराधन करवा लाग्यो. आयु क्षय थये मर्ण पामीने धर्मना
प्रभावथी ते (सुलस) देवता थयो. अहीं कहेवानुं प्रयोजन
ए छे जे, मांसनो लालची थयो ते कालकसुरिओ सातमी नर्के गयो
अने सुलस के जेणे मांसनां पच्चखाण कर्यां ते देवलोके गयो. ए
बीजुं व्यसन जाणवुं. हवे परद्रव्य न लेवुं ते उपर दृष्टांत कहे छे.

॥ त्रीजा चोरीना व्यसन उपर मंडीक चोरनो प्रबंध ॥

वेना नदीना तटने विषे मसाण भूमीकाए मंडीक नामे चोर
भुपु–पाताल घर बांधीने रह्यो हतो. तेने एक बहेन हती. ते

बंने सलाह संपथी रहेतां हतां. मंडीके पोताना घरमां एक कुवो बनाव्यो हतो. ते ज्यारे चोरी करीने माणसनी पासे माल उपडावी लावतो त्यारे तेनी बहेन ते आवनार पुरुषने पग धोवाने बहाने कुवा उपर लइ जइ तेमां ढोली पाडती हती. पछी ते कुआमांथी नीकली न शके एवुं तेणे करी मुक्युं हतुं. मंडीक हमेशां राजदरबारनी पोले पगे पाटो बांधीने तुनवाने काजे बेसतो. ते लोकोनां वस्त्र तुनी आपवाने लेतो, अने तुनीने तेने घेर आपवा जतो. त्यां तेने घेर दृष्टचर्या जोइ आवी लाग मले ते घरमांथी चोरी करतो हतो. एम करतां करतां घणो वखत वही गयो. आखुं नगर तेणे लुटी लीधुं. लोकोए तेमज कोटवालादिए घणी तपास करी पण ते पकडायो नही. छेवट सर्व पुरजन भेगा थइने ए नगरना राजा मूलदेव पासे फरिआदे गया. फरिआद सांभलीने राजाए चोरने पकडवा माटे बीडुं फेरव्युं. ते कोइए न लीधुं त्यारे राजाए पोते बीडुं झड्युं. निरंतर चोरने पकडवा माटे राजा संका परतां सर्व स्थले फरवा लाग्यो. नवा नवा वेष बदलीने राजा रात्रि दीवस चोरनी शोध करतो हतो. एक वखत सामान्य वेष धरी रात्रे तापसने आश्रमे आवी खड्ग संताडीने राजा सुतो हतो. त्यां मजुरने माटे मंडीक चोर आव्यो. तेणे सामान्य वेषे सुतेला राजाने जगाड्यो. मजुरी परठीने चोरी लावेलो माल तेनी पासे उपडावी तेने लेइ पोताना पाताल घरमां आव्यो. माल तेनी पासेथी लेइने मंडीके पोतानी बहेनने बोलावी कह्युं के, तमे एना पग धुओ. बहेन एने कुआ कांठे बेसाडी पग धोवा लागी. पगनां तलांए हाथ फरसतां ते तेने घणा सुकमाल जणाया. तेना मनमां आव्युं जे, आ महारो भाइ हमेश मजुर लावे छे तेना पगमां अने आ पुरुषना पगमां तो घणो फेर जणाय छे. माटे एने मारवो नही. एवुं राजानी पुन्याइये

करी ते चोरनी बहेनना मनमां आव्युं. तेवारे तेणीये समस्यामां ज-
णाव्युं जे, तहाराथी नसाय तेम नाश. ते समजीने राजा नाठो.
एटले चोरनी बहेन पोकार पाडती उठी. हे नाई! हे नाई! जार-
वाह हतो ते नाठो. पछी मंडीके केडे धाउ, धाउ, झालो, झालो,
पकडो, पकडो, एम पोकार पाडी तेनी पुंठ पकडी. राजा झपा-
टाबंध दोडीने पोताना आवासे आवी सुतो. चोरे पाछल दो-
डतां आवी राजद्वार आगल पत्थरनो पुरुषाकारे थांजो हतो ते
भ्रान्तिये करी छेद्यो अने जाएयुं जे में नाठो ते पुरुषने हएयो.
एम विचारी चोर पोताने ठामे आव्यो. पछी प्रन्नाते मंडीक
हमेशनी माफक पगे पाटो बांधीने राजपोले बेसी तुनवा लाग्यो.
मूलराजाए पोतानो चाकर मोकली तेने तेडाव्यो. तेथी ते च-
मक्यो! पछी राजा पासे आव्यो. राजाए तेने पोतानी पासे बे-
साड्यो. विश्वास पमाड्यो, पछी कह्युं जे – तहारी बहेनने म-
हारी साथे परणाव. चोरे पोतानी बहेनने परणावी. पछी स्त्री
नर्तारनी रंग वार्त्तामां राजाए स्त्रीने पुछीने मंडीकनुं सघलुं धन
लीधुं. पछी कांई न दीठुं अर्थात् कांई न रह्युं त्यारे मंडीक चो-
रने राजाए कदर्थना पमाडीने कालधर्म पमाड्यो. ते मरीने
नर्कें गयो. ए वातथी सार ए ग्रहण करवानो छे के, मंडीक
घणो वखत चोरी करी हजारनुं धन लूटी लाव्यो पण ते तेना
जोग पड्युं नही. मरजी नही छतां बहेनने परणाववी पडी. ए-
कलो थयो. आखरे सघलुं नेगुं करी राखेलुं धन गयुं अने वीटं-
बना पामी मरीने नर्कावास दुःखनी परंपरा पाम्यो. तेना जी-
वने उद्धारनो दीवस नाव्यो. एम जाणीने अरे नव्य प्राणीयो!
ए चोरीनुं व्यसन छांडो, जेथी मोक्षनां सुख पामो. ए त्रीजुं
चोरीनुं व्यसन जाणवुं. २४

॥ अथ मद्य विषे ॥ जुयंगप्रयात छंद ॥

सुरापानथी चित्त संभ्रांत थाये, गळे लाज गंभीरता शील जाये ॥ जिहां ज्ञान विज्ञान सूझे न बूझे, ईशू मद्य जाणी न पीजे न दीजे ॥ १५ ॥

जावार्थः— मदिरा पीवाथी जीव परवश थाय छे, लाज घटे छे तथा गंजीरता अने शील पण जाय छे, वळी जेणे करी ज्ञान के विज्ञान कांई सुजतुं नथी अने समजातुं नथी, एवो मदिरा जाणीने ते पीवो नही, तेमज कोईने पावो पण नही. १५.

॥ मदिरानुं व्यसन सेवनार जीतशत्रु राजानो प्रबंध ॥

वसंत नगरनो जीतशत्रु राजा तथा तेनी सुकमालीका राणी निरंतर मद्यपान करे छे. बन्ने स्त्री जर्तार मद्यमां मस्त थई रहे छे. राज्यनी पण चिंता करता नथी. एवुं जाणीने तेना पुत्र तथा प्रधाने विचार्युं जे, व्यसन विलुब्धो आ राजा आपणा कामथी गयो. तेथी तेउए राजाराणीने एक दहाडो चंद्रहास्य मदिरा पाईने परवश करी सैय्या उपर सुवाडीने तेमां खरची मुकी ते (सैय्या) मनुष्य पासे उपडावी एक अटवीमां मुकावी. त्रीजे दीवसे ज्यारे मदिरानी छाक उतरी त्यारे तेमणे आंख उघाडीने जोयुं तो जंगल जूमीका अने स्वापदादि घणां जीव तेमना जोवामां आव्यां. एटले जयज्रांत थकां उठ्यां. पछी पोतानी सैय्या संजालतां थकां तेमां जोयुं तो संबल दीठामां आव्युं तेथी तेउ घणोज हर्ष पाम्यां. राजा विचारवा लाग्यो जे, मद्यपानथी मने दूर कर्यो, हुं दुखीयो थयो. पण जलुं थज्यो ए प्रधाननुं अने पुत्रनुं, जे मुजने मार्यो नहीं. माटे हवे महारे ए (मद्यपाननुं) व्यसन न सेववुं. एवो एटले मद्यना व्यसननो मन साथे परित्याग करी राजा राणी सहित त्यांथी चाली नीकळ्यो. रस्तामां राणीने तरस

लागी. तेणीए कह्युं जे-स्वामी! पाणी विना म्हारो जीव जाय छे. राजाए पाणी माटे घणी खोळ करी पण क्हांये न मळ्युं. त्यारे तेणे अलगो जई पांदडांनो दडीयो करी तेमां पोतानी जांग कापीने लोही वडे ते दडीयो भरी स्त्री पासे आवीने कह्युं जे, आ पाणी लाव्यो छुं, एना उपर घणां पांदडां पडेलां छे माटे ए जोवानी जरुर नथी. तुं आंख मीचीने पीजा. स्त्रीए ते पीधुं. वळी आगळ जतां स्त्रीने भूख लागी; एटले तेणे राजा पासे खावानुं माग्युं. राजाए पोतानी जांग कापीने तेनां न्हानां खंड करी करीने मांस आप्युं. ते राणीए भक्षण कर्युं. आगळ जतां कंचनपुर नगरे आव्या. त्यां घर भाडे लेईने तेओ रह्यां. राजाए विचार्युं जे खातां थकां तो कुआ पण खाली थाय. तेथी ते हाटवाडामां (चौटामां) हाट मांडी व्यापार करवा लाग्यो. राणीए कह्युं के, घरमां मने एकलां गमतुं नथी. राजाए विचार्युं जे, ए स्त्री कहेछे ते पण खरुं छे. केमके, ए घणी दासीओ साथे (एकठी) रहेली छे. तेथी एने एकलां रहेवुं गोठे नही ए वास्तविक छे. पछी तेणे स्त्रीने कह्युं के, तहारी पासे रहेवाने योग्य माणस खोळी लावी राखीशुं. एवामां एक वखत तेना हाट पासे वेसीने एक पांगळो गायन करतो हतो. तेनो स्वर सारो हतो. राजाए तेने कह्युं जे-हे पांगु! तुं म्हारा घरनेविषे स्त्री छे तेनी पासे रही तेने तहारुं गायन संभळावजे तथा तेनी साथे वात चीत करी तेनुं मन रंजन करजे अने त्यां वेसी रहेजे. अमे तहारुं उदर भरण करीशुं. वळी वस्त्रादिक पण आपीशुं. ते पंगुने पण एटलुंज जोईतुं हतुं, तेथी तेणे तेने त्यां रहेवाने हा भणी. एटले तेने ते पोताने घेर तेडी लाव्यो; अने स्त्रीने कह्युं के, तहारी पासे रहेवा माटे आ पंगुने लाव्यो छुं. तेनी साथे वार्तालाप करी तथा तेनुं गायन सांभळी सुखरुप दीवस निर्गमन करज्यो. हवे ते पंगु

निरंतर त्यां रहे छे. राणीने गीत ज्ञान गाईने संभलावे छे. वात विचार करे छे. राजा आखो दहाडो पोताना व्यापारार्थें हाटे (डुकाने) रहे छे. पंगु अने राणी सिवाय त्रीजुं कोई घरमां न होवाथी ते बेनो एक बीजा उपर राग वधतो गयो. राणी पंगु साथे लुब्ध थई. तेनी साथे घणोज स्नेहराग बन्यो. तेना खरे मोही थकी कहे जे–हे वल्लभ! हे प्रीय! तुं मुजने भोगव्य. एवुं वचन स्त्रीए विषयनी लालचे पंगुप्रत्ये कह्युं. ते सांभलीने पंगु स्त्रीप्रत्ये कहेवा लाग्यो जे–तहारा भर्तारथी हुं बिहु छुं. तेवारे स्त्री बोली जे–तेमनी तुं चिंता न करीश. पछी तेनी साथे विषयसुख भोगवतां केटलाक दीवस वित्या. एहवे ते नगरे गंगानदीनो उछव आव्यो. त्यां घणा लोकनां वृंद मळ्यां छे. राजा राणी पण ते उछवस्थानके आव्यां. राणीए राजाप्रत्ये कह्युं के, ज्यां कोई न देखे त्यां सर्व लोकथी अलगा आपणे जईये तो सारुं. राजा सरलपणे तेनुं कहेवुं मान्य करी स्त्रीने साथे लेई घणी वेगली भूमीकाये गया. त्यां चिहुंदिशे जोतां कोई दीठामां ना आव्युं एटले स्त्रीए पोताना भर्तार (राजा)-ने द्रहमां नाख्यो. राजाने तरतां आवडतुं होवाथी ते कोईक तटनेविषे तरीने बाहार नीकळ्यो. तेवा समये ए नगरनो अ-पुत्रीयो राजा मर्ण पाम्यो हतो. तेथी प्रधानादि पंचदीव्य मेलवी वाजित्र वागते थके फरता फरता नगर बाहिर ज्यां ते राजा छे त्यां आव्या. हाथणीए राजा उपर कलस ढाल्यो. घोडे पण मंगलीकना हेषारव शब्दना शुकन आप्या. सेवके माथे छत्र धर्युं. चामर विंझावा लाग्या. पछी हाथणीए पोतानी सुंढे करी मस्तक उपर बेसार्यो. त्यांथी नगरमां आवी सिंहासन उपर बेसार्यो. ओछव कर्यो. ते राजानुं 'पुन्याढ्य' नाम स्थाप्युं. त्यां ते राज्यविलास भोगवे छे.

पेली स्त्री (राणी) राजाने द्रहमां नाखीने घरे आवी लोकोने कहेवा लागी के, कोण जाणे जे म्हारो स्वामी क्यां गयो? गंगातटे उछवमां अमे बन्ने गयां हतां. त्यां मने मुकीने कांईक कौतुक जोवा ते गया, त्यांथी पाछा आव्याज नहीं. में तेमनो घणो तपास कर्यो अने कराव्यो पण मने मळ्या नहीं; तेथी थाकीने आखरे हुं घेर आवी. म्हारा उपर कृपा करी, कोई म्हारा स्वामीनो पत्तो मेलवी आपशे तेनो उपकार मानवा साथे सारी बक्षीस आपी तेनुं मन हुं राजी करीश. आ प्रमाणे लोकोने कही दीलगीरी देखाडती ते घरमां गई. पछी पंगुने छुपी रीते जणाव्युं जे में आ प्रकार करीने काशल काढी छे. हवे आपणने कोईनी बीक नथी. एम कही मन मानती मोज मारवा लागी. बन्ने जण सुखे भोग भोगवे छे. खाय छे, पीए छे. एम करतां करतां जे द्रव्य हतुं ते खुटाड्युं. किसीए वस्तु मात्र न रही. एटले बन्ने जण विचारवा लाग्यां जे हवे आपणे शुं करीशुं? पांगलो बोल्यो जे– मुजमांहे गायानी सामर्थाई छे, पण पग नथी. तेवारे राणी शुकमालीका बोली जे–हुं तुजने खन्ने बेसारीने फेरवीश. पछी पांगलाने खन्ने बेसाडीने शुकमालिका नगरमां फरवा (भीक्षावृत्ति करवा) नीकली. पांगलो खन्ने बेठो बेठो गाय छे. ते सांभळीने आखा नगरनां लोकोनां वृंद जोवा माटे मळ्यां. केटलाक लोक पांगलाना स्वरथी मोह पामी तेनी पुंठे पुंठे फरवा लाग्या. केटलाक पुरुष स्त्रीना रुप उपर मोह्या थका तेनी पाछल पाछल फरे छे. केटलाक एम कहे छे जे, आ पांगलो, अने एने आवी अद्भुत कन्या न जोईये? एम जे जेना चितमां आवे ते कहे छे. पछी लोको आपेछे तेमां तेउ भरण पोषण करवा लाग्यां. एवी रीते दररोज पांगलाने खन्धा उपर उपाडी ते स्त्रीने त्रवटे, चोवटे, चाचरे फरतां फरतां घणा दीवस थया–पछी वली नगरने बा-

हार पछी गामडे पण फरवा मांड्युं. "पांगलो गाय, आंधलो दले ने कुतरुं खाय." एवुं देखीने लोक जोवा मले. वली लोक स्त्रीनी प्रशंसा करे जे पांगला भर्तारने तो एहज सेवे. एम प्रशंसा थतां थतां तेनुं "पतिव्रता"नाम पड्युं. त्यारपछी थोडे थोडे दूर गामडांमां फरतां फरतां तेओ पुन्याढ्य राजाना मुलकमां आव्यां. गाम गाम तेनो जस विस्तार पाम्यो. ते वात दरबार सुधी गई. एक सेवके पुन्याढ्य राजाने कह्युं के – "महाराज! एक स्त्री महा रुपवंत छे, तेनो भर्त्तार पांगलो छे, तोपण ते तेनी घणा रुडा प्रकारे चाकरी करे छे. पोताना खभा उपर बेसारी फेरवे छे. पांगलो गायन घणुं सारुं करे छे. लोकमां ते स्त्रीनी पतीव्रता रुपे ख्याति फेलाई छे. ए बन्ने फरतां फरतां अहीं आवेलां छे" राजाए ते सांभलीने पोताना मनमां तोल बांध्युं जे, मूल तो आपणावाली आशामी अने पंगु पण तेज हशे! होय ते खरुं! जोईये! कोण छे? पछी राजाए सेवक साथे ते बन्नेने तेडाव्यां. तेओ खुशी थयां जे आपणने जोई तथा पंगुनो स्वर सांभलीने राजा जरुर नीवाजशे. पछी ते बन्ने जण दरबारमां आव्यां. वेगलां उभां रह्यां. तेमणे राजाना तेजे करी तेने ओलख्यो नहीं. पण राजाए तो तेओने ओलख्यां. राजा बोल्यो जे– ॥ यतः ॥ बाह्वो रुधीरमापीतं, जंघोतं मांसमुरुजं ॥ भागीरथ्यां पतिक्षीप्त, साधूसाधूपतीव्रते ॥ १ ॥ ते श्लोक सांभलीने समजी ते स्त्री वीलखी थई. पछी राजाए ते स्त्री अने पंगु बन्नेने पोताना देश बाहार कर्यां, देशवटो दीधो. राजाने ते स्त्रीनां एवां माठां लक्षण देखी संसार उपर वैराग्य उपन्यो. आ संसारने असार जाणी राजाए चारित्र लीधुं. पोताना आत्मानुं कारज समारीने सुखीयो थयो. ते क्यारे सुखीयो थयो? ज्यारे एणे मदीरा छांडी त्यारे ते सुखने पाम्यो. एम जाणीने बीजा प्राणीए पण ए मदीरानुं व्यसन टालवुं. मदी-

रानुं व्यसन महा मार्तुं जाणवुं. वली एहज उपर बीजो वृत्तांत कहे छे.

॥ मदीराना व्यसनथी द्वारीका नगरीनो दाह थया विषे प्रबंध ॥

एकदा श्रीकृष्णे श्री नेमीनाथजीनी देशना सांजळ्या पछी एवुं पुछ्युं जे–स्वामी ! ए द्वारीका नगरीनो विनाश क्यारे थवानो छे ? जगवाने कह्युं के–"तह्मारा पुत्र साम्ब अने प्रद्युम्न मद्यपान करी द्वीपायन तापसने संतापशे. तेणे करी तापस नीयाणुं करीने द्वारीकानो दाह करशे." एवुं सांजली श्रीकृष्णे मदीरानां जांम मात्र उपडावी वनमां मुकाव्यां. नगरमध्ये पडहो वजडावी सर्वने मदीरापान करवानी मना करी. थोडोक समय गया पछी साम्ब अने प्रद्युम्न कुमारादि रमतां रमतां ते वनमां आव्या. त्यां तेमने मद्यनो गंध आव्यो. एटले ते पीवानी होंस थई. त्यां आवेला सर्वे जादवे ते मद्य पीधो. सर्वे पीने छक्या. मदोन्मत थया. त्यां नजीकमां द्वीपायनरुषी तप तपतो हतो. तेने देखीने तेउं संतापवा लाग्या. वली तेने कुट्यो. बीजा कोईए जेम तेम समजावीने तापसने मुकाव्यो. पछी ते तापसे क्रोधवंत थईने नीयाणुं बांध्युं. ते मरीने अग्निकुमार देवता थयो. पछी ते पूर्वजवनुं वैर संजारी द्वारीकाने दाह देवा तत्पर थयो. परंतु द्वारीका नगरी मध्ये तेनी बीके करी लोकोए घर घरनेविषे आंबीलनो तप करवा मांड्यो छे. ते तपना प्रजाव थकी बार वर्ष सुधी ते देवतानुं कांईये न चाल्युं. बार वर्षे कोईने पण तप करवानुं मन न थयुं. अर्थात् नगर मध्ये कोईए आंबील न कर्युं. जेम सुजुम चक्रवर्तीनुं चरमरत्न समकाले मुकी देवानुं देवतानुं मन थयुं ने ते मुकी दीधुं; तेम अहीं पण समकाले सर्वेए तप करवो मुकीदीधो. ते वखते ते देवताए समय उलखीने द्वारीका नगरी उपर अग्नि वुकुर्व्यो. तेना प्रजावथी द्वारीका नगरी प्रज्वलीत थई. पण

तेणे एटलुं विशेष कर्युं जे-जेउ दीक्षा लेईने नीकळ्या तेउने जीवता मुक्या. साधु तथा श्रीकृष्ण अने बलजद्रजी सिवाय बीजा सर्वे लोकने तथा आखा नगरनां मकानादि सघली वस्तुने वाळी जस्म करी दीधी. ए शा कारणथी थयुं ? तो के-मदीराना व्यसनथी थयुं. केमके मदीरा पीवाथी जीव परवश थाय छे. तेनाथी सहेजमां पण अकार्य बनी जाय छे. गमे तेवो डाह्यो होय, पण ए नीच वस्तु (मदीरा) ना संसर्गेकरी नीच माणस कहेवाय. गमे तेवो उत्तम होय, पण ते मध्यम कहेवाय. माटे ए मध्यम वस्तु जे मदीरा तेनुं व्यसन तजवुं. ए तजे थकेज जीव सुखीयो थाय; माटे मद्यपान न करवुं. ए चोथुं मदीरानुं व्यसन कह्युं. २५

॥ अथ वेस्या गमन व्यसन विषे ॥

॥ कहो कुण वेस्या तणो अंग सेवे, जिणे अर्थनी लाजनी हाणि होवे ॥ जिणे कोश सिंही गुफाये निवासी, ठल्यो साधुनेपालग्यो कंबलासी ॥ २६ ॥

जावार्थः—अरे जाई ! कहो, के जे गणिकाथकी अर्थ परिग्रह अने कुलनी लाज मर्यादा जाय एवी वेश्याना अंगनुं सेवन कोण करे ? जे प्राणी मूर्ख होय ते गणीकानुं गमन करे. जुउ, कोश्या(वेश्या)नी संगते थूलिजद्रजीना सिंह गुफावासी गुरुजाई चोमासाना कालमां विषयनी लालचे करी वेश्याना वचनथी कांबल लेवानी आशाये नेपाल देशमां गया. तेनो संबंध लखीये छीये. २६

॥ विषयनी लालचे वेश्यानां वचनथी कांबल लेवाने ॥

॥ नेपाल देशमां जनार सिंहगुफावासी साधुनो प्रबंध ॥

पाटलीपुर नगरना पति नंदराजाना प्रधान सकडालना पुत्र स्थुलिजद्र कोशा नामनी वेश्याने त्यां बार वर्ष सुधी रह्या. तेने

साडा बार क्रोड द्रव्य खवराव्युं. एवा अवसरने विषे एक वररुची ब्राह्मणना योगे सकडाल मंत्रीनुं मरण निपज्युं; त्यारे नंदराजाए प्रधानपदवी आपवा माटे गणिकाने त्यांथी स्थुलिभद्रने तेडाव्या. गणिकाए त्यां जवा माटे ना पाडी. तेने समजावीने नंदराजाने मळी तरत पाछा आववानो कोल आपी स्थुलिभद्र राजा पासे जवा नीकळ्या. रस्तामां तेमने तेडवा आवनार पोताना भाई सरैयाथी पिताना मरणनो सघलो संबंध तेमणे जाणी लीधो. राजा पासे आवी विनय सहित पोताने तेडवानुं कारण पुछ्युं. राजाए तेमना पितानी प्रधान पदवी लेवा कह्युं. स्थुलिभद्र आलोची आववानुं जणावी त्यांथी अशोक वनमां आव्या. त्यां संसारनी असारता चिंतवी समतत्व विचारीने तेमणे स्वहस्ते मस्तकनो लोच कर्यो. अने रत्नकंबल जे पोतानी पासे हतुं तेनो उघो करी राजसभामां आवी धर्मलाभ दीधो. त्यांथी संभुतीविजयाचार्यनी पासे आवी दीक्षा लीधी.

वर्षाऋतु आवतां चोमासु रहेवा माटे संभुतीविजयाचार्ये पोताना चार चेलामांथी स्थुलिभद्रजीने ते जे कोशा वेश्याने त्यां रहेला हता तेनेज त्यां चारमास रही संयमाराधन करवानी आज्ञा आपी. बीजा एक चेलाने सिंहनी गुफाए चारमासना उपवास करी रहेवानी आज्ञा आपी. त्रीजा शिष्यने कूवाना भारवट* उपर चतुर्मास रहेवानी आज्ञा आपी. अने चोथा शिष्यने सर्पना बील उपर चार मास रहेवानी आज्ञा आपी. चारे शिष्य गुरुआज्ञानुसार गया. स्थुलिभद्रजी राजाने त्यां जईने आववानुं कही गया हता त्यारथी वेश्या तेमनी राह जोई रही हती. ते ज्यारे चोमासा उपर स्थुलिभद्रजी तेने घेर आव्या त्यारे घ-

* कुआना मों उपर वच्चो वच्च एक लाकडु नांखवामां आवे छे तेने कूवानो भारवट कहेवाय छे.

भोज हर्ष पामी अने सत्कार सहित तेमने रहेवा माटे चित्र-शाला आपी. वली स्थुलिभद्रजीनो साधु वेष जोई ते मुकवा माटे घणुं समजाव्युं. घणा हाव भाव कर्या. भोग विलास माटे प्रार्थना करी. स्थुलिभद्रजी पोताथी साडा त्रण हाथ अलगी एटले दूर रहीने दील चाहे ते (चेन चालादि) करवानुं वेश्या पासे कबुल करावी चोमासु रह्या. वेश्याए खटरस भोजन कं-राव्यां, बत्रीसबद्ध नाटक कर्या, वली कामराग उत्पन्न थाय तेवी औषधीउ पण भोजनने विषे आपवामां वेश्याए मणा राखी नहीं. परंतु मेरु पर्वतनी परे निश्चल चित्तवाला, के जेणे कामदेवनुं मूल सील संयमरुपी कुहाडे करी छेदी नाख्युं छे एवा स्थुलिभद्रजी लेशमात्र रुग्या नही. चित्रशालाने विषे आलेखेलां चोरासी भोगासन हतां ते उपर लेश पण लक्ष दीधुं नही. वली पूर्वे जे रंगभोगनी शालानेवीषे विषयसुख भोग-वेलां छे तेज रंगशाला छे अने तेनी तेज वेश्या छे, तेमज ते पोताना उपर पूर्ण रागवती छे तोपण तेने निर्भ्रंछी; अर्थात् तेना सामुं सरखुं पण जोयुं नही; एटलुंज नही परंतु एवा दृढ चित्तवाला सीयल सुरंगी साधु श्रीस्थुलिभद्रजीए संसारनी असारता तथा तेनुं स्वरूप बतावीने ए कोशा वेश्याने प्रतिबोध पमाडी श्रावकनां बार व्रत उचराव्यां. शुद्ध श्रावीका करी.

चोमासु उतरे स्थुलिभद्रजी वेश्यानी आज्ञा मागी गुरु स-मीप आव्या. गुरुए सामा जई त्रण वार दुक्कर दुक्कर, दुक्कर-कार कही बोलाव्या. एटलामां सिंहगुफावासी चार मासना उपवासी बीजा शिष्य आव्या, तेमने गुरुए एकज वार दुक्कर-कार कह्यो. तेमज कूआना भारवट उपर चतुर्मास रहेला शिष्य आव्या, तेमने पण एक वार गुरुए दुक्करकार कही बोलाव्या. वली तेवीज रीते सर्पना बील उपर रहेला चोमासी शिष्य

आव्या, तेमने पण गुरुए एकज वार डुक्करकार कहीने बोलाव्या. ए चारे गुरुजाई एकठा थया. तेमां सिंहगुफावासी साधुना मनमां खेद उपन्यो. के, जुर्ड ! हजी मूल स्वजाव तो नथी मुक्यो एवो जे सकडालमंत्रीश्वरनो बेटो स्थुलिजद्र दीले (शरीरे) रातो मातो छे, तेम छतां तेने गुरुए त्रणवार डुक्कर डुक्कर डुक्करकार कहीने बोलाव्यो ! गुरुए तेना मननो आशय (जाव) जाणीने कह्युं के, हे महानुजाव ! तमारे खेद करवानुं कांई कारण नथी. में जे कह्युं छे, ते योग्यज कह्युं छे. तमे त्रणे जणे जे काम कर्युं छे ते काम एकला ए स्थुलिजद्रे कर्युं छे. सांजलो– १, कूआनो जारवट तद्रुप तो चित्रशाली जाणवी. केमके जे जे दिशाए जूए ते ते दिशाए चोरासी जोगासनने जोवां तेम छतां पण ते देखीने चल्या नही. माटे ए तो कूआनो जारवट जाणवो. २, दृष्टिविषरुप ते साप एटले गणिकानी जे नजर ते साप सरखी जाणवी. तेना पण गंज्या न गया. माटे ए सर्पनो बील जाणवो. अने ३, सिंह ते खटरस सरस आहार कर्या अने ते जीरव्या, माटे सिंहगुफा समजवी. ते माटे त्रणे जणानुं काम एकला स्थुलिजद्रे कर्युं तेथी एने अमे त्रण वार डुक्कर डुक्कर डुक्करकार कह्या. ए रीते त्रणे शिष्यने समजाववा सारु गुरुए कहीने जणाव्युं के, तमे ए उपर खेद न करो. तो पण सिंहगुफावासी साधुने स्थुलिजद्रजी उपर खेद आव्यो जे, एमां ते शुं डुक्कर छे? एवुं तो ल्योने अमे पण ते गणिकानी जे बहेन उपकोशा छे तेने घेर चोमासुं करीशुं. आ प्रमाणे वात थया पछी कार्तिक अने फाल्गुन चोमासु वितता आषाढ चोमासु आव्युं त्यारे ए सिंहगुफावासी साधुए गुरुनी पासे वेश्याने त्यां चोमासु जवानी आज्ञा मागी. गुरु अणबोल्या रह्या. हा के ना, कांई पण गुरुए कह्युं नही. एटले फरी

गुरुने पुछ्या विना ए सिंहगुफावासी साधु उपकोशाने घेर जवा नीकळ्या. ते वखत ए गोखमां बेठी हती. तेणे साधुने आवता देखीने एना चहेरा उपरथी अनुमान कर्युं के, स्थुलिभद्रनी होड्य करीने आव्या दीसे छे. माटे हुं पण त्यारेज खरी के एनी परीक्षा जोउं ! साधुए तेने मंदिरे आवी घरना बारणा आगल गाढे स्वरे धर्मलाभ कह्यो. उपकोश्या कहे- अहीं धर्मलाभ श्यो ? इहां तो अर्थलाभ होय तो आवो. एवुं वचन सांभळीने साधुए ते गणिकाना सामुं जायुं. तेनुं मुख निहालतांज तेनुं चित्त डामाडोल थयुं अने बोल्यो जे- तमारे शो अर्थलाभ जोईये ? उपकोशा कहे के, रत्नकंबल जोइये. ते वस्तु क्यां मलशे ? एवुं साधुए पुछतां गणिकाये जणाव्युं जे-ते तो नेपाल देशमां मले छे. त्यांनो राजा सवालाख द्रव्यनुं एक अमुलीक रत्नकंबल तमारा जेवो वेषवालो जे भीक्षु जाय तेने आपे छे. तमारे पण ए वस्तुनो भाव होय अने विषयसुख भोगववानी वांछा होय तो त्यां जईने ते लेई आवो. एवुं सांभळीने साधु चोमासु छतां पण नेपाल देशे गया. राजा पासे जईने आशीर्वाद देई वधाव्या. राजाये पोताना नियम प्रमाणे साधुने सवालक्षनुं रत्नकंबल आप्युं. ते लेईने पाछो वळ्यो. मार्गे आवतां चोरपल्ली आवी. तेमां चोर हमेशां छुपाई रहेता हता. तेओए एक पालेला सूडानुं पांजरुं झाडे लटकावी राख्युं हतुं. ते सूडो, जे कोई ए मार्गे थई माल अथवा रोकड द्रव्य लेईने जतुं होय तेना परिणाम सहित बोलीने पालमां संताई रहेला चोरोने जाण करे छे जे, आटलो द्रव्य जाय छे. ते सांभळीने चोर लुटवाने तत्पर थई लोकोनो माल पडावी लेता हता. साधु ए मार्गे नीकळ्या. एटले सूडो बोल्यो के-धाउ धाउ रे भाईयो ! सवालक्षनो माल लेईने जाय छे. ते सांभळीने छुपाई बेठेला चोरे आवीने साधु-

पासेथी रत्नकंबल पडावी लीधुं. रत्नकंबल विना वेश्याने त्यां जई शुं मोहोडुं देखाडुं ? माटे फरी लेई आवुं. एम विचारीने साधु त्यांथी पाछो वली नेपाल देशना राजा पासे जई आशीष वचन देई उभो रह्यो. राजाये तेने ओलख्यो. बीजी वार आववानुं कारण पुछ्युं. मुनीए लुटी लीधानी हकीकत निवेदन करी. राजाये रत्न-कंबल वांसनी लाकडीमां घाली आप्युं. ते लेई पाछो चोरपल्ली नजीक आव्यो; एटले सूडाए लक्षद्रव्य जाय छे! लक्षद्रव्य जाय छे! एवी बूम मारी. चोरे आवीने साधुने पकड्या, पण तेनी पासे कांई दीठामां आव्युं नही. तेथी कह्युं जे–"अमारो ए सूडो कदीए जूठो नथी पड्यो, अने ए आज जुठो पडे छे. माटे तमारी पासे जे कांई होय ते अमे तमने बक्षीये छीये. अमारुं आ वचन छे. माटे साचुं बोलो, के तमारी पासे शुं छे ? अने ते क्यां छे ? " साधुए चोरना बोलवा उपर विश्वास आणीने कह्युं जे–आ वांसनी लाकडीमां छे. चोरे ते जोयुं. चोरे एवी रीते सूडानुं वचन प्रमाण करावी साधुने ते लेई जवानी रजा आपी. त्यांथी चाली चोमासाना अंते साधु गणिकाने घेर आव्या. गणिकाए पुछ्युं के, लेई आव्या ? साधु कहे, हा, लाव्यो. गणिका कहे, लावो. साधुए तेणीने रत्नकंबल आप्युं. पछी गणिकाए स्नान करी पोतानुं आखुं शरीर ते रत्नकंबल वडे लूसीने खालनी कुंडीमां नाख्युं. ते देखीने पोताना घरनी स्त्रीने जेम ठबको द्ये, तेम ते गणिकाने ठबको देतां साधु बोल्या के–अरे रांड ! फट्य रे अभागिणी ? ए तें शुं कर्युं ? हुं महा महा दुःखी थई कचरो कादव खुंदतो बे वार नेपाल गयो, त्यारेज ए लावी शक्यो हुं. अने तें तो दील लूसीने अशुची स्थानकमां फेंकी दीधुं. एथी वली वधारे मूर्ख ते कोण हशे ? खचीत तुं अभागिणीज दीसे छे. गणिका साधुनां वचन सांभलीने बोली के, अभागिणी ते हुं?

के अज्ञागियो ते तुं ? जे तुं स्थुलिभद्रजीनी होड करवाने आव्यो हतो, ते तहारी होड क्यां गई ? क्यां सिंह अने क्यां सीआल? माटे भूंडा ! तुं मूर्ख थई एनी तफोवड (सरखाई) करवा आव्यो छे. पण ते कोठ नही, जे वाए पडे. वली तहारी नजरे तो ए रत्नकंबल लाख द्रव्यनुं आव्युं. पण पंच महाव्रत तद्रूप जे चिंतामणी रत्न ते तें कचरामांहे नाखी दीधुं. आ चोमासाना चार मासमध्ये समुर्छिम जीवनी हिंसा करी. वली छ काय जीव विराधी तें पापनुं पोटलुं बाध्युं. हवे अज्ञागिणी ते हुं ? के अज्ञागियो ते तुं ? एवां पाप करवावडेकरी तहाराथी अधिक अज्ञागियो ते कोण हशे ? महारा धारवा प्रमाणे तो तुज समान बीजो कोई अज्ञागियो हशेज नहीं ! उपकोशाना एवां वचन सांजलीने साधु प्रतिबोध पाम्या. पछी तेमणे स्थुलिज्रद्रनी पासे आवी अपराध खमावी फरीथी चरित्रव्रत आराध्यां. आ कथाथी सार ए ग्रहण करवानो छे जे–वेश्यानो संग करवानी अजिलाषा थई तेथी सिंहगुफावासी साधु चिंतामणी रत्न सरखां पांच महाव्रतने छोडी चोमासाना कालमां नेपाल के जे घणो दूर देश छे त्यां छ काय जीवनी विराधना करता कचरो कादव खुंदता गया, दुःखी थया, वली लुटाया. फरी दुःख वेठी गया. जीक्षा मागी लाव्या, तथापि वेश्याए निर्ज्रछना करी. माटे वेश्यानो संग करवानी पण अजिलाषा मात्र डाह्या पुरुषे करवी नहीं. तो वली वेश्या गमन तो करवुंज नहीं; एमां ते शुं समजवानुं अने शुं समजाववानुं छे ? गणिकाना संगे प्राणी खूआर थाय अने वेश्यानो त्याग करवाथी स्थुलिज्रद्रनी पेठे सुखी थाय. माटे गणिकानो संग न करवो. ए पांचमुं वेश्या गमन व्यसन कह्युं. २६

॥ अथ खेटक (आहेडा) व्यसन विषे ॥ छंद ॥

मृगयाने तज जीव घात जे, सघले जीव दया सदा

भजे ॥ मृगयाथी दुख जे लह्यां नवां, हरि रामादि नरेंद्र जे हवा ॥ २७ ॥

भावार्थः– जीवनो घात करनार जे मृगया एटले शीकार (आहेडी कर्म) छे तेने तुं तजी दे, अने सर्व स्थले हमेशां जीवना उपर दया भाव लाव, अर्थात् जीवदया कर. मृगया कहेतां आहेडाना व्यसनथी केई जीव हरी राम वीगरे राजानी पेठे महा दुखीया थया. अने मृगया करवानो निषेध एटले त्याग करवाथी संजतिराज जेवा सुखीया थया. माटे खेटक व्यसन निवारवुं ॥२७॥ आ संजतिराजानो संबंध श्री उत्तराध्ययन सूत्रना अढारमाअध्ययनने विषे छे त्यांथी विशेष वार्त्ता जाणवाना जीज्ञासुए जोई लेवी. अहीं तो आहेडा व्यसन संबंधे लेश मात्र लखीये छये.

॥ आहेडा व्यसन निवारक संजति राजानो प्रबंध ॥

संजति नामे राजाने आहेडानुं (शीकार करवानुं) घणुं व्यसन हतुं. ते हमेशां आहेडे जतो हतो. एक वखत ते मृगया माटे गयो. तेने देखी मृगलां वनना गवरमां नाठां. तेमांथी एक मृगलो नासीने त्यां आगल गर्द्दभादिनामे मुनी काउसग्गध्याने उभा हता तेमना चरण वच्चे पेठो. एवामां राजाये बाण नाख्युं, ते मुनी पासे जई पड्युं. राजा दोडीने त्यां आव्यो, तो साधु दीठा. तेथी मुनी श्राप देशे एवो भय पामीने ते मुनीने नमस्कार करी तेणे कह्युं के, महाराज ! अभय दान आपो. हुं जेवो तेवो (साधारण) नथी. संजति नामे नगरनो राजा छुं. म्हारा पाछल घणा प्रवर्त्ते छे. मुनीये कह्युं जे–तने तह्मारो जीव वह्मालो छे, तेम सौने जाणजे. माटे तुं पण अभयदान आप. तने पण ए वाते अभय छे. एवुं सांभलीने राजाये छ कायने अभयदान आप्युं, अने चारित्र लेई विहार कर्यो. मार्गे

જતાં બીજા ક્ષત્રીય સાધુ મળ્યા. સંજતિ રાજરુષીયે પુછ્યું જે, તમો કોણ? ક્ષત્રીય સાધુ બોલ્યા જે, તમે એમ ન જાણશો કે, શાસનમાં તમે અમેજ થયા છીયે. પૂર્વે કેઈ કેઙ મહા પુરુષ થયા છે. તે ઉપર ભરત ચક્રવર્ત્તિ, સનતકુમાર, શાંતિનાથ, કુંથુનાથ, અરનાથ, દશાર્ણભદ્ર વિગેરે ઘણાના સંબંધ કહી દેખાડ્યા. તે સાંભળીને સંજતિ સાધુ દ્દઢ થયા. સંયમ આરાધી મુક્તીપદ પ્રત્યે પામ્યા. સંજતિ રાજાયે આહેડાનું વ્યસન મુક્યું તો પરમપદ મેળવ્યું. માટે આહેડાનું વ્યસન તજવું. એ છઠું આહેડાનું વ્યસન કહ્યું. ૨૭

॥ અથ પરસ્ત્રી સંગ વિષે ॥ ચોપાઈ છંદ ॥

સ્વર્ગ સૌખ્યભણિ જો મન આશા, છંડે તો પરનારિ વિલાસા ॥ જેણ એણ નિજ જન્મ દુઃખએ, સર્વથા ન પરલોક સુખએ ॥ ૨૮ ॥

ભાવાર્થઃ– જો સ્વર્ગનાં સુખની મનમાં આશા હોય તો પરનારિના વિલાસને છાંડો; જેણે કરીને એટલે પરસ્ત્રીના સંગે કરીને (પ્રાણી) આ જન્મને વિષે દુઃખ પામે, અને વળી નિશ્ચે કરીને પરલોકમાં સુખ ન મળે. ૨૮

તે કોની પરે? તો કે– પરસ્ત્રીનો અર્થી જે રાવણ તે સીતાનું હરણ કરી લાવ્યો તેથી તેનાં દસ મસ્તક રણનેવિષે રડવડ્યાં. રાજ્ય ખોયું અને મરીને ચોથી નર્કે ગયો. એ સાતમું વ્યસન કહ્યું.

॥ અથ એ વિષયોનાં ઉદાહરણો॥ શાર્દૂલવિક્રીડિત છંદ ॥

જૂવા ખેલણ પાંડવા વન ભમ્યા, મદ્યે વળી દ્વારિકા॥

---

* " છંડે તો પરનારિ વિલાસા " એ ચરણને બદલે બીજી પ્રતમાં " છોડતો અપરનારિ તુ વિલાસા " અને + સર્વથા ન પરલોક સુખએ " એ ચરણને બદલે બીજી પ્રતમાં " સર્વલોક વિરુયાં તજે સુખ જે " એવાં ચરણ છે.

मांसे श्रेणिक नारकी डुख लह्यां,बांध्या नरे+ चोरिका॥
आखेट दशरत्थपुत्र विरही, केवन्न वेश्या घरे ॥ लं-
कास्वामि परत्रिया रस रमे, जे ए तजे ते तरे ॥ २९॥

भावार्थः- जूवटुं रम्याथी पांचे पांडवोने वननेविषे बार वर्ष सुधी भ्रमण करवुं पड्युं, मदिरापान कर्याथी द्वारिका नगरीनो मनुष्यो समेत दाह थयो; मांस भक्षण थकी श्रेणिकराजा नर्कनां डुःख प्रत्ये पाम्यो, चोरीना व्यसन थकी रोहिणी चोर पकडायो; आहेडाना व्यसने करी दशरथ राजाना पुत्र जे रामचंद्रजी ते सीताना वियोग प्रत्ये पाम्या, वेश्याना व्यसन थकी केवन्नो साधन रहित डुखीयो थयो; अने परस्त्रीना रसनो लीधो रावण नर्क गति पाम्यो, एवी रीते साते व्यसने करी ए प्राणी डुख प्रत्ये पाम्या, माटे ए व्यसनने जे छांडे ते तरे;अर्थात् ए साते व्यसन तज्या थकी संसारसमुद्र तरीये.२९

॥ अथ कीर्त्ति विषे ॥ मालिनी छंद ॥

दिशिदिशि पसरंती चंद्रमा ज्योति जैसी, श्रवण सुणत लागे जाण मीठी सुधासी ॥ निशिदिन जन गाये रामराजिंद जेवी, इंणि कलि बहु पुण्ये पामियें कीर्त्ति एवी३०

भावार्थः- दीशोदिशे एटले सर्व दिशाए चंद्रमाना जेवी उजली तेजस्वी, अने सांभलतां कानने विषे अमृत सरखी मीठी लागे, तथा रातदिवस मनुष्यो रामचंद्रजीना जेवी गाय एटले बोले, एवी कीर्त्ति आ कलिकालने विषे घणा पुन्येकरीने पामीये. ३० तेवी कीर्त्ति भीमोसा वणिक अने तेनी स्त्रीनी थई तेनी कथा नीचे प्रमाणे छेः-

+ 'नरे' ने बदले बीजी प्रतमां 'नर्के' शब्द छे.

॥ कीर्त्ति मेलवनार भीमोसा वणिक अने तेनी स्त्रीनो प्रबंध ॥

भीमोसा नामे वणिक घणुं दान पुन्य करे छे. भाट भोजक विगरे जे कोई जाचे तेने मों माग्युं आपे छे. एम करतां केटलेक दीवसे त्यां एक चारण आव्यो. सेवके तेने कह्युं के, शेठ तो उघराणी गया छे. ते सांभलीने चारण दीलगीर थयो. पण मनमां विचार्युं जे, भोज तो खरो! जे एना घरनी स्त्री केवी छे? एम चिंतवी भीमोसाने नामे आशिर्वाद देतो देतो आवीने आंगणामां उभो रह्यो. स्त्रीए तेने आसन आपी बेसाड्यो. घोडीने खाण दाण आप्युं. पछी तेने सुंदर रीते जमाडीने शेठाणीए कह्युं जे, शेठ तो घरे नथी. सीखंतो शेठ घरे आवशे त्यारे आपशे. अने हमणां तो हुं तमने पाननुं बीडुं आपुं ते तमे ल्यो. चारण बोल्यो जे, माता लक्ष्मी! एमज हो. एटले आपनी मरजी माफक आपो. शेठाणीये पोताना काननी त्रोटी पानना बीडामां मुकीने ते गढवीने आप्युं. चारण ते लेईने आशीष देतो सीख मागी त्यांथी चाली नीकल्यो. पण पानना बीडामां घणो भार लाग्यो तेथी ते उकेलीने जोयुं तो अंधारे अजवालुं थयुं. अर्थात् अमूल्य काननी त्रोटी तेणे दीठी. तेथी पाछो फरी आशीष देतो देतो शेठाणी पासे आव्यो. अने बोल्यो जे—॥ गाहो ॥ जे पण सुवन्नह रयण कीचुन्नह, मांहे मेल्यो फोफल वन्नह ॥ अवरराय जो माग्युं सोलह, तोहि न पोंहोंचे जिम तंबोलह ॥ १ ॥ एवुं कही चारणे प्रतीत कीधी जे, भीमोसा विना कोई आगल हाथ न मांडवो. एवा उत्तम जीवनी कीर्त्ति अने जस विस्तार पामे छे. माटे सर्व प्राणीये पोतानी कीर्त्ति विस्तार पामे एवुं कार्य करवुं. ३०

॥ अथ प्रधान विषे ॥

॥ सकल व्यसन वारे स्वामिसूं भक्तिधारे, स्वपर-
हित वधारे राज्यना काज सारे ॥ अनय नय विचारे
क्षुद्रता दूर वारे, निजसुत जिम धारे राज्य लक्ष्मी वधारे.३१

भावार्थः-प्रधान केवो होय ? तो के-जे सघलां व्यसनथी वेगलो रहे तथा पोताना स्वामी (राजा) नी भक्ति करे, वली पोतानुं तेमज परनुं हित वधारे अर्थात् जेम बन्नेनुं परस्पर हित वधे एवुं कार्य करे अने राज्यनुं जे काम होय ते साधीले, अन्याय करतां विचारे, अर्थात् अन्याय न करे, अने क्षुद्रताने दूर वारे एटले खोटुं काम करवाथी वेगलो रहे, अने पोताना पुत्रना जेम धारीने राज्यलक्ष्मीनो वधारो करे. अर्थात् पिता जेम रात दीवस व्यापारादिक करी पोताना पुत्रने लक्ष्मीनो वधारो करी आपे छे तेम प्रधान अहोनिश राजकाजमां सावधान रही राज्य-लक्ष्मीनो वधारो करी आपे. वली जे पारकुं ध्यान पोताना चित्तमां धारीने प्रजानुं रखोपुं करे तेने प्रधान कहीये. ३१ ॥ एवा कोण थया ? तो के-अभय कुमारादिक थया छे ते अत्रे जाणवा माटे अभयकुमारनो संक्षिप्त प्रबंध लखीये छीये.

॥ प्रधान पद उपर अभयकुमार मंत्रीनो प्रबंध ॥

राजगृहि नगरने विषे राजकर्त्ता प्रसेनजित राजाए पोताना सो बेटामांथी राज्य करवाने योग्य कोण छे? तेनी परिक्षा करी श्रेणिकने योग्य जाणीने तेनी कोई ईर्ष्या करी तेने पराभव न करे माटे तेने देशवटो देई पोताना राज्यनी हद बाहार रहेवानो हुकम कर्यो. श्रेणिक पितानी आज्ञा मस्तके चढावी राजगृहीथी नीकली केटलेक दीवसे सोईगाममां आवी धनावह नामे श्रेष्ठिना हाट आगल बेठो. एवामां धनावह शेठे आ-

वीने दुकानमांथी कचरो काढी नाखवा मांड्यो. ते जोईने श्रेणिके विचार्युं जे—ए शुं करे छे ? आते कांई एने घेलछा थई छे के शुं ? जे आ "तेजमतुरी" सरखी वस्तु काढी नाखे छे. पछी तेणे शेठने ते काढी नाखतो वार्यो. अर्थात् तेजमतुरी रखावी. धनावह शेठ तेने योग्य पुरूष जाणीने पोताने मोहोले तेडी गया. 'गोपालक' एवुं नाम धारण करी श्रेणिक धनावह शेठने त्यां रह्या. केटलोक वखत गया पछी शेठे श्रेणिकने पोतानी पुत्री परणावी. ते त्यां सुखरूप रहे छे अने शेठनी दुकाननो वहिवट चलावे छे. त्यारपछी केटलेक समये एक वणजारो वसाणांनी सवा लाख पोठी लेईने ते गामे आव्यो. तेने तेजमतुरीनो खप हतो. तेनी खोल करावी पण आखा नगरमां ते जडी नही. पछी वणजारो भेटणुं लेई राजा पासे गयो. प्रणाम करी बेठा पछी राजाये तेने सुखवार्त्ता पुछी. क्यांथी आव्या ? कोण देश ? कोण नगर ? शुं नाम अने शुं काम ? एवुं राजाये कह्युं. ते सांभळी वणजारे सर्वे हकीकत कही अने तेजमतुरी जोईये छीये एम जणाव्युं. राजाये ते माटे गाममां पडहो फेरव्यो. पण कोईना हाटमां ते न होवाथी कोईये ते पडहो छव्यो नही. छेवट श्रेणिकना कहेवाथी धनावह शेठे पडहो छव्यो. वणजारा पासेथी सघलां वसाणां लेई तेने साटे श्रेणिके धनावह शेठनी दुकानमांथी ते शेठ जे प्रथम कचरो जाणी काढी नाखतो हतो ते तेजमतुरी आपी. शेठ घणो खुसी थयो. वणजारो गामो गाम पोठी लेईने फरनारो हतो तेथी तेणे गोपालक नाम धारण करी रहेलो प्रसेनजित राजानो पुत्र श्रेणिक छे, एम तेने ज्यारे ते पोताना पिताने त्यां हतो त्यारे जोयेलो तेथी अणसारे ओळख्यो. तेजमतुरी लेई वणजारो त्यांथी चाली नीकळ्यो. ते केटलेक दहाडे राजगृह नगरनेविषे गयो.

त्यां प्रसेनजित राजा पोताना पुत्र श्रेणिकनी शोधमां पडेलो दीठो. वणजारे राजाने श्रेणिकना समाचार कह्या.

अहीं सोईगाममां वणजाराना गया पछी धनावहशेठनी पुत्री श्रेणिकनी स्त्री गर्भवती हती तेने "अभयदान देवानो डोहोलो उत्पन्न थयो. राजाने केटलुंक भेटणुं आपी तेनी साह्यताये करी श्रेणिके पोतानी स्त्रीनो डोहोलो पूर्ण कर्यो. त्यारपछी प्रसेनजित राजाए सोईगाममां श्रेणिक उपर पोतानी वृद्धावस्थाथवाथीताकीदेआववाने हलकारो मोकल्याथी ते पोतानी गर्भवतीस्त्रीने त्यां (तेना बापने घेर) मुकीने तेना वस्त्रने छेडे "मगधदेशने विषे राजगृह नगरनो वासी छुं" एवुं लखीने पिता पासे आव्यो. प्रसेनजितराजाये श्रेणिकने राज्याभिषेक करी पोतानी गादीए बेसार्यो. त्यां ते राज्यलीला भोगवे छे. पण तेने स्त्री विना सघलो संसार सूनो भासे छे. श्रेणिकना गया पछी तेनी स्त्रीने पूर्ण मासे पुत्र प्रसव्यो. डोहोलानुसारे तेनुं नाम अभयकुमार पाड्युं. तेना मातामहे तेने भणाव्यो. ज्यारे ते बार वर्षनो थयो त्यारे तेणे पोतानी माताने पुछ्युं के, म्हारा पितानुं नाम शुं छे ? अने ते आटला वर्षथी क्यां गया छे ? में तो तेमनुं मों सरखुं पण जोयुं नथी. माटे ते तुं मने बताव. माताए तेना पितानी सघली वात कही. ते सांभलीने मातामहनी आज्ञा लेई पोतानी माताने तेडीने ते (अभयकुमार) राजगृह नगरे आव्यो. आ वखत पोताना राज्यने परिपूर्ण योग्य प्रधान राखवा सारु श्रेणिक राजाये तेनी परीक्षा करवा माटे एक खाली (पाणी विनाना) कूआमां मुद्रिका नाखीने बधा नगरमां कहेवराव्युं हतुं के, जे कोई कूआमध्ये मुद्रिका पडीछे ते कूआने कांठे रही तेमांथी कहाढीने पहेरे तेने प्रधानपदवी आपवामां आवशे. एवुं सांभलीने ते मुद्रिका काढवा सारु केई केई बुद्धि-

वान आवी गया. पण कोई कूआमांथी मुद्रिका काढी शक्युं नही. ए वात देश परदेश विस्तरी. तेथी घणा विद्वान आववा-लाग्या. हवे अभयकुमार पोतानी माताने उद्यानमां मुकी नग-रचर्चा जोवाने अर्थे आव्यो. त्यां तेणे कूआने कांठे मलेला लोकोनुं टोलुं दीठुं. अभयकुमार त्यां आव्यो. त्यां आवेला सर्व विद्वान कूआमां पडेली मुद्रिका नीचुं मुख करीने नीहाली नी-हालीने पाछा फर्या, पण कोईनी बुद्धि कांठे उभा रहीने केम कहाढी शकाय ए विषे पोहोंची नहीं तेथी विलखा थई पाछा फरवा लाग्या. बुद्धिनिधान अभयकुमारे कूळ जोयो. पछी सेवकने बोलावी कूआमध्ये पडेली मुद्रिका उपर छाणनो पोदलो नखाव्यो. तेना उपर ताप (देवता) नखाव्यो. ते तापना जोगथी छाण सुकायुं. त्यारपछी ते कूआमां कांठ सुधी पाणी भराव्युं. सुकाएला छाणनो पोदलो ते पाणी उपर तरतो कांठ आगल आव्यो. ते लेईने तेमां चोटी गयेली मुद्रिका कहाढीने अभयकुमारे पोताना हस्तमां पहेरी राजा श्रेणिकने नमस्कार कर्यो. राजाए तेनुं नाम ठाम पुछ्युं. अभयकुमारे सकल वृत्तांत मांडीने (मू-लथी) कह्यो. राजाये घणा सत्कार साथे पोतानी स्त्रीने बो-लावी लेई अभयकुमारने प्रधानवटी आपी. ते राज्यनो कारभार सुखे समाधे चलावे छे. राजा पण पोतानी राणीयो सहित सुख वैभव भोगवे छे. अभयकुमार महा बुद्धि निधान सर्व का-मकाज करवामां महा कुशल होवाथी राजाने कोई पण वातनी फीकर रही नथी. राज्यनो सघलो भार अभयकुमार प्रधान पोताने मस्तके लेई चलावे छे. प्रजाने कोई पण प्रकारनी पीडा उपजती नथी. राजा तथा प्रजाने एकसरखो सुखरुप वहिवट चलावनार अभयकुमार जेवो प्रधान कोई थयो नथी अने थशे नही; एवी तेनी दिसोदिस ख्याति फेलाई गई छे.

एवा अवसरने विषे राजगृही नगरना उद्यानमां वीर भगवान आवीने समोसर्या. देवे समोवसरण रच्युं. ते उपर बेसी प्रभु देशना दे छे. वनपालके प्रभु पधार्यानी वधामणी आपवाथी अभयकुमार सहित सपरिवारे श्रेणिक राजा वांदवाने गया. प्रभुनी देशना सांभलीने अभयकुमारना मनमां वैराग्यनी वासना थई आवी. तेथी तेणे चारित्र लेवानी आज्ञा मागी. राजाये कह्युं, के हुं ज्यारे तने 'जा' कहुं त्यारे तुं जाजे. त्यारपछी वली केटलेक दीवसे फरीने श्री वीरप्रभु चौद सहस्र मुनिना परिवारे समोसर्या. तेमध्येथी एक साधु नदीने कांठे काउसग्ग करी उभा रह्या छे. महा महीनानी घणी सख्त टाढ पडे छे. एवामां रात्रिने समये चेलणाराणीनो हाथ सोरू बाहार रही गयेलो; ते राणीए जागी उठीने जोयो तो टाढे करी ठरी गयेलो जणायो. ए वेला पोते ते दीवसे श्री वीरप्रभुने वांदीने पाछा वल्यां त्यारे नदीकांठे साधुने दीठा हता ते याद आव्या तेथी मुखोच्चार कर्यो के " पेलो आ समयने विषे शुं करतो हशे ? " राजाने आ वचन सांभली तेनी (चेलणाराणी) उपर द्वेष उपन्यो जे–ए स्त्री कोईक अन्य पुरुष साथे व्यभिचार सेवती दीसे छे. माटे तेने ते आ समये सांभरी आव्यो लागे छे. ए सिवाय बीजुं कांई कारण समजातुं नथी. एम आहट दोहट करतां राजाये बाकी रहेली तमाम रात्रि गमावी. प्रभाते अभयकुमारने बोलावी कह्युं जे–तुं जईने अंतेउर प्रजालजे. अभयकुमारे विचार्युं जे राजाये हरकोई पण आवेशने लीधे अंतेउर प्रजालवानुं कह्युं लागे छे. खरुं कारण कांई जणातुं नथी. परंतु हुकम पालवो अने महोटी हानी न थाय एम करवुं योग्य दीसे छे. पछी अंतेउरे आवी सर्व राणीओने बाहार काढीने ते (अंतेउर) प्रजलाव्युं. अभयकुमारने हुकम आपीने श्रेणिकराजा श्रीवीर परमात्माने वांदवा गया. त्यां प्रभुने वांदी यथा योग्य

स्थानके बेसी प्रभुने पुछ्युं जे स्वामी ! म्हारी स्त्रीयो सती छे के असती छे ? वीरभगवाने जणाव्युं जे–हे श्रेणिक ! ए चेडाराजानी साते पुत्रीयो महासती सीलवंती छे. ते सांभलतां तरतज प्रभुने वंदना करी अभयकुमारने आपेलो हुकम रद करवा माटे उतावला नगरमध्ये आव्या. अभयकुमार हुकम बजावीने आवतां तेमने सामा मल्या. राजाये कह्युं के, “ पेलुं करशो मां. ” अभयकुमार कहे जे–हे राजाजी ! तमारी आज्ञानो लोपी केम थाऊं ! एवुं सांभली राजा क्रोधवंत थई रीस चढावी बोल्या जे–“अंतेउर प्रजालीने मुख देखाडतां लाजतोए नथी ? माटे हुं कहुं छुं, ‘ जा ’ त्हारुं मों लईने. राजाये आवुं वचन कह्युं त्यारे अभयकुमारने पूर्वेलुं वचन याद आव्युं; तेथी तेमणे महा आनंदीत थई राजाने प्रणाम करी कह्युं जे–हे तातजी ! एटलीज वाट जोतो हतो, जे क्यारे पिताजी आज्ञा आपे. ते वाट जोतां जोतां आज तमारी आज्ञा मली. आज म्हारो मनोर्थ फल्यो. एम कहीने पिताने प्रणाम करी आज्ञा पामी जतां जतां जणाव्युं जे, अमारी माताउने कल्याण छे. कुशल छे. ए वातनो धोखो न गणशो. ते सांभली राजाये अभयकुमारने रहेवा माटे घणुंए कह्युं; पण पाखरेला सिंहने वकार्यो होय ते जेम झाल्यो न रहे तेम ते रह्या नही. पछी श्री वीरप्रभु पासे जईने अभयकुमारे चारित्र ग्रहण करी आत्मसाधन कर्युं. अंत समये शुभ परिणामना योगथी पांचमा अनुत्तर विमाने उपन्या. त्यांथी चवीने माहाविदेहे मोक्षपद पामशे. प्रधानपदने योग्य एवा पुरुष जाणवा. ३१

॥ अथ कलाविषे ॥

चतुर कर कलानो संग्रहो सौख्यकारी, इण गुण
जिण लाधी लोण संपत्ति सारी ॥ त्रिपुर विजय कर्त्ता
जे कलाने प्रसंगे, हिमकर मनरंगे ले धर्यो उत्तमांगे ॥ ३२

भावार्थः—हे चतुर प्राणी! सुखकारी एवो कलानो संग्रह कर, (अथवा चतुराई करी कलानो संग्रह करे ते प्राणी सकल संपदानो जोक्ता थाय), ए गुणथी एटले कलानो संग्रह करवाथी द्रोणाचार्यने सारी संपत्ति मली, वली सहदेवे उत्तमांग एटले मस्तकने विषे हिम कहेतां ताढ तेनो कर्त्ता जे पाणी तेने कह्युं त्यां धरी राख्युं तेथी एटले ते कलाने प्रसंगे त्रिपुरनो जय कर्यो. आ संबंध मिथ्यात्वना ग्रंथथी जाणवो. ३१

॥ कलावान द्रोणाचार्य तथा अर्जुन अने जिल्लनो प्रबंध ॥

द्रोणाचार्ये अर्जुनने बाणावलीनी संपूर्ण कला सीखवी. पछी अर्जुने पोतानी बराबर कोईने पण ते कला न सीखववा माटे गुरू पासे आखडी करावी. थोमोक वखत गया पछी एक जिल्ल द्रोणाचार्य पासे बाणावलीनी कला सीखवा आव्यो. द्रोणाचार्ये ते सीखववानी ना पडी. तेथी जिल्ले पर्वतमां द्रोणाचार्यनी माटीनी मुर्त्ति स्थापीने फूल प्रमुखथी सेवा करी तेनी आगल बे हाथ जोमी नमन करीने कह्युं के, तमे मने बाणावलीनी कला सीखवो. तमारा प्रसादथी ते मने सिद्ध थशे. एम कही धनुष्य बाण लेईने आंबलीना जाडतले जई ते कला साधवा लाग्यो. एम दररोज द्रोणाचार्यनी मुर्त्तिने फूल चढावी नमस्कार करी कला साधतां साधतां छठे महीने ते संपूर्ण कला सीख्यो. आंबलीनां जेटलां पानडां हतां ते सर्वे विंध्यां. एवामां एकदा समये अर्जुन एज आंबलीनी तले थईने जतो हतो. ते आंबली सामुं उंचुं जोयुं तो तेणे आंबलीनुं एके पानडुं साजुं (आखुं) न दीठुं. तेथी द्रोणाचार्ये आ कला सीखवी हशे एवुं अर्जुन विचारवा लाग्यो. एटलामां तो पेलो जिल्ल त्यां आगल आव्यो. तेने अर्जुने पुछ्युं जे—केनी साहाय्य अने कोण उस्ताद ? ए विद्याना गुरू कोण ? जिल्ले कह्युं के—म्हारा द्रो-

णाचार्य गुरूना साहाय्यथी अने तेना प्रभावथीः पछी ते भि-ल्लने पोतानी साथे तेडी लावीने अर्जुने द्रोणाचार्यनी पासे आ-वीने कह्युं के, आ भिल्लने तमे कला सीखवी ? द्रोणाचार्य कहे के, अमे तो ए भिल्लने जाणता नथी अने ओलखता पण नथी. ए कोण अने अमे कोण ? नथी जाणता जे ए क्यां रहे छे. ते सांभली अर्जुने भिल्लने कह्युं के, तुं साचे साचुं बोल, जे ए कला क्यांथी सीख्यो ? भिल्ल बोल्यो जे द्रोणाचार्यथीः एटले अर्जुने द्रोणाचार्यने कह्युं के, जोयुं ! आ शुं कहे छे ? तमारूं नाम ल्ये छे. पछी भिल्लने उद्देशी द्रोणाचार्ये कह्युं के–अरे भुंडा ! खोटुं शुं बोलेछे ? भिल्ल बोल्यो जे–आवो, हुं तमने द्रोणाचार्य देखाडुं. पछी ते भिल्ल बन्ने जणने पर्वतमां ज्यां माटीनी मूर्ति बनावी मुकी हती त्यां तेडी गयो. अने कह्युं के, जुओ, आ रह्या द्रोणाचार्य. ते जोई बन्नेए (द्रोणाचार्य अने अर्जुने) विचार्युं जे एणे खरे भावे करी साक्षात् एज स्वरुप छे एम जाणी भक्ति करी तेथी ते फलीभूत थई. एने साचीभक्ति फली. विद्या पाम्यो. कहो के, एमां द्रोणाचार्य शुं करे ? एतो पोताना अंतःकरणना भावथी एवी भक्तिए करी फल पाम्यो. एवी धारणा करीने तेओ पोताने स्थानके गया. सुखीया थया. माटे साचा भावथी कला सीखे तेने सर्व संपत्ती आवी मले छे. ३१

॥ अथ मूर्खता विषे ॥

वचन रस न भेदे मूर्ख वार्त्ता न वेदे, तस कुवचन खेदे तेहने सीख जे दे ॥ नृपशिर रज नाखी जेण मूर्खे व-हीने, हित कहत हणीज्यूं वानरे सुग्रहीने ॥ ३२ ॥

भावार्थः–जे प्राणी मूर्ख छे ते चतुराईनां वचनमां न भेदे, अर्थात् वचननो रहस्य समजे नही तथा सारी वातमां ध्यान

आपे नही, वली तेने जली सीखामण देतां थकां ते भूंडी लागे; ते कोनी परे ? तो के– जे मूर्ख हतो तेणे राजाने माथे धूल नाखी, वली सुग्रीए वांदराने तेना हितनो जलो उपदेश दीधो त्यारे तेणे ते सुग्रीने मारी. मूर्ख होय ते एवां काम करे छे. ३३ ते उपर एक मूर्ख वणिकपुत्रनो दृष्टांत कहे छे.

॥ मूर्ख वणिकपुत्रनो प्रबंध ॥

कोइएक वणिकपुत्र जन्मथी मूर्ख हतो. ते कोईनुं कहेवुं मानतो नही. वली ते सार असार कांई समजतो नहोतो. कोई वखत मनमां आवे तो कहेला वचनने वलगी रहेतो. एकवार तेनी माए कह्युं के, दीकरा ! ज्यां जईये त्यां सोरवकोर करता जईये. केमके कोई जेम तेम बेवुं उठ्युं होय ते चेते. आ वात ध्यानमां राखी ते एक वनमां पारधी घणा वनचरने घेरी बुपाई बेठा हता त्यां सोरवकोर करतो करतो आव्यो. तेनो घोंघाट सांजलीने घेराएला जीव सघला नाशी गया. पारधीए ते मूर्खने जाली कुव्यो. आजीजी करी बुव्यो त्यारे पारधीए तेने कह्युं जे घेला ! ज्यां जईये त्यां ठानामाना ठपी (बुपाइ) रहीये. ए वात मनमां धारी त्यांथी एक सरोवर पासे जई ठपी रह्यो. त्यां एक धोबी धोतो हतो तेनां लुगडां कोईक चोर नित्यप्रत्ये लेई जतो हतो. धोबी तेनी तपास करतो हतो, पण चोर हाथ आवतो नहोतो. तेणे आज आ मूर्खने ठपी रहेलो दीठो. तेथी हमेशां एज लुगडां लेई जतो हशे एम धारीने तेने कुव्यो. कालावाला करी तेनी पासेथी बुव्या, त्यारे तेणे कह्युं के, ठपी रहीये नही. पण ‘ सुधंजवतु सुधंजवतु ’ कहीये. ए बोल ध्यानमां राखी आगल चालतां एक गामनी जोगोले आव्यो. ते वखते करसणी लोको पहेल वहेलाज हलोतरा करवाने काजे मुहूर्त माटे जताहता. त्यां ते बोल्यो जे, ‘सुधंजवतु सुधंजवतु.’

ते वचन सांभलीने करसणीलोकोए तेने मार्यो. जेम तेम तेमनी पासेथी छुटी नीकल्यो त्यारे तेमणे सीखव्युं के, "बहुभवतु, बहुभवतु" एम बोलीये. वली तेज मार्गे आगल जतां गाममांथी मरूडुं लेईने केटलाक पुरुषो आवता हता. तेमने देखीने बोल्यो जे, "बहुभवतु बहुभवतु." आवा शब्दो सांभली ससानीआए तेने खूब मार्यो. बोलवा चालवानी ढब उपरथी ज्यारे ते मूर्ख मालम पड्यो त्यारे तेने "एवुं म भवतुं, एवुं म भवतु" बोलवानुं सीखवीने जवा दीधो. त्यांथी वली आगल चालतां नगरमां कोईक वणिकने घेर विवाहनां धवल मंगलनां गीत गवाय छे त्यां थइ नीकल्यो. एटले 'एवुं म भवतु, एवुं म भवतु" बोल्यो. ते सांभलतांवेंतज वाणीयाउए मलीने तेने मार्यो. मूर्ख मालम पड्यो एटले "आवुं हमेश भवतु, आवुं हमेश भवतु" एवुं बोलवानुं बतावी तेने जवा दीधो. पछी ते मूर्खो रस्ते चालतां चालतां पण 'आवुं हमेश भवतु आवुं हमेश भवतु' एम बोलतो बोलतो अथडातो अथडातो राज्यद्वारे आवी उभो रह्यो. आ वेला कोई कार्य प्रसंगे राजा राणीने मांहोमांहे विवाद थतो हतो. तेमणे मूर्खना बोल सांभल्या. तेथी नित्यप्रते तमारे एवुं चालजो एटले हमेशां तमे विवाद कर्या करजो, एवो परमार्थ समजीने राजाए तेने पकडी मंगावी मराव्यो. पछी मूर्ख मालम पडतां राणीए तेने "छानामाना उभा रहीये," एवी सीखामण आपी दया आववाथी तेने पोतानी पासे राख्यो. पछी एक दीवस राजा राज्यसभामां बेठा हता, एवामां राज्य महेलमां आग लागी. राजाने खबर करवा माटे मूर्खने मोकल्यो. ते राज्यसभामां आवीने छानोमानो उभो रह्यो. राजाए मूर्खने दीठो. तेने पोतानी पासे तेड्यो. एटले छेक नजीकमां जई कानमां कह्युं जे—घरमां आग लाग-

वाथी ते प्रजले छे. राजाए कह्युं के, अरे मूर्ख! छानोमानो त्यारनो उभो शुं थई रह्यो हतो? सोर पाडीनेज कहेने, जे घर बले छे. तेना उपर धूल नाखवी हतीने! "ज्यां धूमाडो देखीये त्यां धूल नाखीये." एवी सीखामण देई राजाए घेर आवीने आग होलवी नखावी. हवे एकदा समये राजानी राणी स्नान मज्जन करीने पोताना माथानी वेणीने धूपे धूपती हती. मूर्खे तेनी धूणी देखीने धूलनी पोठ्य भरी लावी राणीना मस्तक उपर नाखी. आ बनावथी राजाए तेने काढी मुक्यो. माटे एवुं मूर्खपणुं कांई कामनुं नही. कोई पण हकीकत सांजलवामां आवे अगर कोई कहे तेनो परमार्थ समजीने दरेक काम करवुं. परमार्थ समज्या विना कार्य करवुं, अगर बोलवुं, के कहेवुं, ए मूर्खाईनुं लक्षण छे. तेथी महा हानी पोहोंचे छे माटे एवीरीते मूर्ख बनवुं नही. ३३

॥ मूर्खता उपर वांदरो अने सुग्रीनो दृष्टांत ॥

वनमां रहेनारो एक वांदरो टाढने लीधे ध्रुजतो हतो. तेने देखीने सुग्री, के.जेणे पोताने रहेवा माटे गुंथीने एवो मालो बांध्यो हतो के, गमे तेवो वर्षाद वर्षे तोपण तेमां बींदु मात्र न पडे; तेमां बेठी थकी वांदराने उद्देशी बोली जे–॥ दो हत्था दो पाउंरा, दो लोयण दो कन्न; थरथर कंपे देहडी, कर घर राखवा तन्न. ॥१॥ वली ते (सुग्री) बोली जे–श्लोक ॥ द्वौहस्तौद्वौ पादौच,दृश्यते पुरूषाकृति॥गृहंकर्त्तुंनशक्तोपि,समर्थो गृहभंजने॥१॥ रे रे! वानर मूर्खोपी, गृहंकिंनकरिष्यति ॥ १ ॥ ते वचन सांजली, ए रांडे मुजने मूर्ख कह्यो, एम विचारी वांदराए रीस चढावीने उछली (कुदको मारी) सुग्रीनो मालो चुंथी नाख्यो. सुग्री बीचारी नासवा लागी. एटले वांदरो बोल्यो जे,– सुचिमुखी दू-

राचारी, रे रे ! पंमित वादनी ॥ असमर्थो गृहारंभे, समर्थो गृ॰ हभंजने ॥ १ ॥ रांड कहे ठे के, घर करवाने तो समर्थ नथी, तो तुं लेती जा. एम कही वांदराए सुग्रीनुं घर (मालो) भागी नाख्युं. मूर्खने सारूं कहे तोपण ते तेने भुंडुं भजे. माटे कह्युं ठे जे ॥ उपदेशो न दातव्यो, जादृशेतादृशेनरे ॥ पश्यवां वानरमूर्खेण, सुग्रही नीगृहीकृतं ॥ १ ॥ एटले जेवा तेवाने उपदेश देवो नही, जेवी रीते मूर्ख एवा वानर पशुए सुग्रीने घर विनानी करी. माटे मूर्खने उपदेश न लागे. उलटो वांदरानी पेठे ते अवगुणनो करणहार थाय. ए दृष्टांत मूर्ख उपर जाणवो. ३३

॥ अथ लज्जा विषे ॥

॥ निज वचन निवाहे वाजिज्यूं[1] वाजि चाले, व्रत नय कुलरीते मातज्यूं लाजपाले ॥ सकल गुण सुहावे ला- जथी भावदेवे, व्रत नियम भर्यो[2] जे भाइ लज्जा प्रभावे॥३४

भावार्थः—पोतानुं जे वचन एटले बोलवुं तेने निर्वाहे अर्थात् पोतानो बोल पाले अने वाजि एटले घोडानी परे सुपंथे चाले वली कुलनी मर्यादा मुजब व्रत नीयम करे अने मातानी परे लाज पाले; कोनी पेठे ? तो के—भावदेवे लज्जाने लीधे पोताना भाई भवदेवनी साथे दीक्षा लेई सकल गुण सुहावे कहेतां सर्व गुण दीपाव्या. अर्थात् व्रत नियमादि पाव्या एम लज्जाये करी काम सिद्ध थाय ठे. माटे लज्जा राखवी. ३४

लज्जाये करी दिक्षा लेनार भावदेव तथा तेना भाई भवदेवनो प्रबंध.

सुग्रीव नामना ग्रामने विषे भवदेव अने भावदेव नामे बे भाइ

---

१ बीजी प्रतमां " वाजिज्यूं वाजि चाले " ने बदले " लाज ग्युं राज वाले " एवा शब्दो ठे. तेनो अर्थ एवो थाय ठे के, लाज ए गयेलुं राज पाठुं मेलवी आपे. अने २" भर्यो " शब्दने ठेकाणे " लह्यो " शब्द ठे.

हता. तेमां नवदेवे दीक्षा लीधी हती. ते नवदेव विचरतां विचरता एकदा एज सुग्रीवग्रामे आव्या. त्यां वहोरवा गया तो पोताना नाइनो विवाह मंकाएलो दीठो. नवदेव साधुने आव्या देखी नावदेव नाइ सामो आव्यो. तेणे वोहोराव्युं तेथी नार घणो थयो. एटले ते उपाडी लेवाने नावदेवे विनती करवाथी नवदेव साधुए पोताना नाइने पातरां आप्यां. ते बन्ने नाइ ज्यां वनखंडमां बीजा साधु रह्या हता त्यां आव्या. तेमने जोइ साधु सामा आव्या अने बोल्या जे–सावाश वे नाईने! जे पोताना नाइने पण प्रतिबोधीने लाव्या. ते वचन नावदेवे सांजळ्युं. तेथी तेणे विचार्युं जे, रखेने! महारा नाइनुं महात्म घटे. रखेने नाइनुं वचन खोटुं पडे. एम धारी ते वचन प्रतिबोध समान जाणी नावदेवे दीक्षा लीधी. साधु थया. नवदेव चारित्र पाली आयु क्षय थये देवता थया. त्यारे नावदेवे विचार्युं जे–नाइनी लज्जाये करी घेर जवातुं नहोतुं, ते तो मरण पाम्यो. माटे घरे नव परणीत स्त्रीने मुकीने आव्यो छुं ते वाट जोती हशे तेथी घेर जाउं, अने स्त्रीने मळुं. चारित्र छोडीने नावदेव पाछो पोताने घेर जवा माटे नगर पासे प्रासाद वे त्यां आवीने बेठो. एवामां तेनी स्त्री नागीला त्यां आवी. तेणीये अंगीत आकारे पोताना नर्त्तार-ने ओलख्यो. पछी तेनुं चित्त संभ्रांत जाणी प्रतिबोध देईने ते स्त्रीए तेने संयममां स्थिर कर्यो. ए नावदेव ते जंबुस्वामीनो जीव जाणवो. एणे लज्जाये करी दीक्षा लीधी, अने आखरे स्त्रीना वचनथी स्थिर थई पोतानो आत्मार्थ साध्यो. माटे लज्जा राखवी.३४

॥ शालिनी छंद ॥

एवा जे जे रुयडा नाव राजे, एणे विश्वे अर्थथी तेह

ગજે ॥ એવું જાણીને સાર એ સૌખ્ય કેરો, ભલો ધીર તે અર્થ અર્જે ભલેરો ॥ ३५ ॥

ભાવાર્થઃ– એવા જે જે રુડા ભાવ રાજે કહેતાં દેખાય–શોભા પામે, તે સર્વે આ જગતમાં અર્થ એટલે પરિગ્રહ (લક્ષ્મી) સંપત્તિથી થાય છે; માટે હે પ્રાણી ! સુખનો સાર એટલે એ અર્થથી સકલ સુખ થાય છે એવું જાણીને ભલો ધીર હોય તે અર્થ જોડે, અર્થાત્ ધીરવીર પ્રાણી અર્થ જોડે છે. અને અર્થ જોડે તેને ભલો ધીરવીર કહેવાય. માટે અર્થ ઉપાર્જવો. વલી અર્થ એટલે સંપત્તિ – લક્ષ્મી વિના રામચંદ્રજીને પંથીયે પારધી કહ્યા તેમ કહેવાય. માટે અર્થ એ મ્હોટી વાત છે. ३५.

॥ લક્ષ્મી વિનાના દેખી પંથીએ રામચંદ્રને પારધી કહ્યાનો પ્રબંધ ॥

રામચંદ્રને રાજ્યાસને બેસરવાને અવસરે વનવાસનો હુકમ થયો. ત્યારે આજ્ઞા માગીને રામચંદ્રજી પોતાની પત્ની સીતા તથા બાંધવ લક્ષ્મણને સાથે લેઈ ત્રણે જણા નીકલ્યા. વાટે જતાં એક પંથીએ તેમને દીઠા. તેણે બીજા પંથીને પુછ્યું જે એ કોણ હશે ? ત્યારે એક પંથી બોલ્યો જે–કોઈ પારધી હશે. એવું વચન રામચંદ્રજીએ સાંભલ્યું. તેવારે બોલ્યા જે– " લખમણ લખમી બાહિરા, નર લહૂ આદિસંત ॥ તુઝ સરીસા ધણુહર ધરે, પંથી પારધી ભણંત ॥ १ ॥ લક્ષ્મીવિના નર એમ શોભા પામતો નથી. માટે અર્થ ઉપાર્જન કરવો. ३५.

ઇતિ શ્રી સૂક્તમુક્તાવલ્યાં અર્થવર્ગો દ્વિતીયઃ

સહ ભાષાન્તર સમાપ્તઃ ॥

॥ अथ कामवर्ग प्रारंभः ॥

॥ उपजाति छंदः ॥

ग्राह्याः कियंतः किल कामवर्गे, कामार्जनादि (पाठां तरे-कामो नृनार्यो) गुणदोषभाजो ॥ सुलक्षणौ-योग वियोग युक्तैः, समातृपितृप्रमुखाः प्रसंगाः ॥ १ ॥

भावार्थः--काम एटले कंदर्प ते महा दूर्जय छे, ते जीतवो जगत्ने विषे महादूर्लभ छे, ते कामे ग्रश्या छे. ते कोने ? तो के-हरि हरादिक देव, ते सरखाने पण ए कामे विषयने विषे वश्य करवाथी ते परवश्य पड्या जीव महा दुखी थाय छे. १ श्लोक-केचित्प्रचंड गजराज वधे पिदक्षा, कंदर्पदर्प दलने विरला मनुष्या ॥ श्री थुलीभद्र मुनीराज शील उवंगे, व्रताधीराज धरतोब्धरंगे ॥ १ ॥ अर्थ-केईक पुरुष वलवंत हाथीना वधने विषे डाह्या छे, पण कंदर्प दलवाने मनुष्य ते तो कोई वीरला होय; ए थूलीभद्र मुनीराज जेवा जाणवा, के जेमणे उमंग आणीने सील पाल्युं अने उछरंग सहित व्रत अंगीकार कर्या. ॥ १ ॥ वली कामना वश्ये करी नंदीखेण बार वर्ष सुधी गणिकाने घेर रह्या, विषय सुख भोगवी पाछा संयमने विषे थीर थया. काम जीतवो ए महादूर्लभ छे. जे प्राणीये कामने वश्य कर्यो अर्थात् काम जील्यो तेनुं सर्व कार्य सफल थाय छे. कामथी ग्रशाया अने वली ते कामने वश्य करी आत्मसाधन करनार नंदीखेण मुनीनो दृष्टांत उपयोगी होवाथी ते अहीं बतावे छे.

॥ कामथी ग्रशाइ गणिकाने त्यां रहेनार अने वली तेनो त्याग ॥ करी संयमाराधन करनार नंदीखेण मुनीनो प्रबंध ॥

मगध देशने विषे श्रेणिक राजा राज्य करता हता. तेमने

नंदीखेण नामे पुत्र हतो तेने उत्तम कुलवंतनी पांचसें पुत्रीओ परणावी हती. तेउनी साथे विषय सुख जोगवे छे. देवतानी परे विलास करे छे. एवामां मगध देशनी राजधानी राजगृही नगरीना उद्याननेविषे गुणशील नामा चैत्य छे त्यां श्रीमहावीर प्रज्ञु पधार्या. त्यां जुवनपति १, व्यंतर २, ज्योतषी ३, अने वैमानीक ४, ए चार नीकायना देवताये समोवसरण नीपजाव्युं. ते जूंईथी अढी गाउ उंचुं अने तेना उपर चढवाने चारे दिशाये हाथ हाथने छेटे वीस वीस हजार पगथीयां बनाव्यां. ते समोवसरणमां पूर्व दिशे सिंहासनना उपर " नमो तीथस्स " कहीने श्री वीर जगवान विराजे छे, अने बीजी त्रण दिशाये प्रज्ञुजीना स्वरूप सरखुं प्रतिबिंब करीने व्यंतर देवता स्थापन करे छे. एम तादृश चिहूं मुखे करी श्री प्रज्ञुजी देशना प्रकाशे छे. ए चारे दान, शीयल, तप अने जावनारूप मुक्तिमार्गना चारे दरवाजा वखाण्या छे. वनपालके श्री वीर प्रज्ञु समोसर्यानी वधामणी श्रेणीक राजाने दीधी. हर्षवंत थई राजाये वधामणीमां तेने घणुंज धन आप्युं. प्रज्ञुनुं आगमन सांजली राजाना उठ क्रोम रोमकूंप उज्ञां थयां. हर्षोत्कर्षे करी प्रीतिदान आपीनें नंदीखेण पुत्र तथा अजयकुमार प्रधान प्रमुखने संघाते लेई श्रेणीक राजा प्रज्ञुने वांदवा गया. छेटेथी समोवसरण देखतां राजाये खड्ग १, छत्र २, चामर ३, उपानह ४, अने मुकुट ५, ए पांच राज्यचिन्ह अलगां मुक्यां. पछी समोवसरणमां आवी प्रज्ञुजीने त्रण प्रदक्षणा देई वांदी, एक हजारने आठ काव्ये स्तवी उचित स्थानके बेठा. सर्व परखदा पण बेठी छे. श्रीवीर प्रज्ञुजीए धर्मदेशना प्रकाशी. ते नंदीखेणने परगमी. पछी प्रज्ञुने वांदी घेर आवीने मातपितादिक तथा स्त्रीयोनी आज्ञा लेई नंदीखेण श्रीवीर जगवान पासे चारित्र लेवा आव्या. आ वखते

आकाश वाणी थई जे, हे नंदीखेण ! तहारे नोगकर्म वाकी ठे, माटे ते नोगव्या पठी चारित्र लेजे. एवुं सांजल्या ठतां पण नोगकर्म मुजने शुं करशे ? एम विचारी नंदीखेणे दीक्षा लीधी. (त्यारपठीनो विशेष अधिकार आ पुस्तकमां अगाउ लब्धिना विषयमां नंदीखेणनाज प्रबंधमां लखाई गयो ठे त्यांथी जोई लेवो. तोपण अहीं आ विषयनो नावार्थ समजवा माटे टुंक लखवामां आव्यो ठे.) पठी अजाणतां गणिकाने त्यां वहोरवा गया. नोगावलीना उदयथी बार वर्ष तेने त्यां रह्या. पठी तेनो त्याग करी संयम आराधी आत्महित साध्युं. एवा साहसिक पुरूषने पण काम कंदर्पे एकवार पाडी दीधा तो सामान्य मनुष्यनो शो आशरो ? माटे तेथी अलगा रहेवुं. १

॥ अथ काम विषे ॥

कंदर्प पंचानन तेज आगे, कुरंग जेवा जगजीव लागे* ॥ स्त्रीशस्त्र लेई जग जे वदीता, जेएण+ देवा जनवृंद जीता ॥ ॥ १ ॥

नावार्थः—कंदर्प जे विषय ते पंचानन सिंह समान जाणवो. (जेम सिंहने पांच आनन कहेतां मुख ठे, एटले चार हाथ अने एक मुख ए पांच जणवां.) तेना एटले सिंहना तेज आगल जेम हरण लागे ठे, तेम कामना तेज आगल संसारी जीवने जाणवा; अर्थात् सिंहथी जेम हरण दबाई जायठे तेम संसारी प्राणी कामथी दबाई जाय ठे एटले तेने वश्य थईजायठे. ए कंदर्पनुं शस्त्र स्त्री ठे तेणे देवता जेवाने तेमज मनुष्यना वृंदने पण जीत्यां, परंतु ए स्त्रीशस्त्र प्रत्ये कोई रीते

* बीजी प्रतमां ' लागे ' ने बदले ' जागे, ' तथा + ' जेएण ' ने बदले ' तिएण ' शब्द छे.

कांई न चाल्युं. ए तो जे बलीया थया तेमणेज स्त्रीरूपीया पासने जीत्यो, कायरनो कांई आशरो नही; अर्थात् आत्मा बलीयो न करे ते कंदर्पना स्त्रीरूपी शस्त्रने जीती शकतो नथी. एतो शूरवीरनुं काम छे. १

॥ मालिनी छंद

मनमथ जगमांहे दुर्जयी जे अद्यापी, त्रिभुवन सुर-
राजी जासशस्त्रे सतापी ॥ जलज विधि उपासे वा-
र्द्धिजा विष्णु सेवे, हर हिम गिरिजाने जेण अर्धांग देवे ॥ ३

भावार्थः—मनमथ एटले कंदर्प जे जगत्मां हजु सुधी दुर्जयी कहेतां जीताएलो नथी अर्थात् काम जीती शकाय तेवो नथी, केमके त्रण भुवनमां सुरनी जे श्रेणी तेने पण ए कंदर्पदेवना शस्त्रे संताप्या छे; कोनी परे ? तो के—विधि जे विधाता ते मज श्रीकृष्णे समुद्रनी उपासना करी अने महादेवे अर्द्धांगने विषे पारवती नारी राखी. ३

॥ शार्दूलविक्रीडित छंद ॥

भिल्लीभाव छंट्यो महेश उमया, जे काम रागे करी ॥
पुत्री देखि चल्यो चतुर्मुख हरी, आहेरिका आदरी ॥
इंद्रे गोतमनी त्रिया विलसिने, संभोग ते ठेलव्या ॥
कामे एम महंत देव जग जे, ते भोलव्या रोलव्या ॥ ४॥

भावार्थः—महेश एटले महादेवने उमयाए भीलडी थईने छल्या, अर्थात् भीलडी देखीने कामना वश थया थका महादेव चली गया, चतुर्मुख कहेतां ब्रह्मा पोतानी पुत्रीनुं रूप देखीने चल्या, अने श्रीकृष्ण आहिरणी एटले भरवाडणने देखीने चल्या,

* 'छल्यो' शब्दनी जगोए बीजी प्रतमां 'चल्यो.' शब्द छे. ए बेनो भावार्थ उपर दर्शाव्यो छे.

वली इंद्रे गौतमनी नार्याने देखी (तेना उपर मोह पामी) तेनी साथे संजोग कर्यो, एम कामे (कुचेष्टाये) जगतने विषे एवा म्होटा देव जेवाने पण जोलव्या अने रोलव्या एटले जोलवीने रोली नाख्या. ४

॥ जीलडीने देखी विषयनी प्रार्थना करनार महादेवनो प्रबंध ॥

एक वखत महादेव तपश्चर्या करवा माटे वनमां गया हता. तेमना सीलनी परीक्षा करवा सारू तेमनी अर्द्धांगना पारवती जीलडीनो स्वांग पहेरी ते वनमां गई. तेणीने महादेवे दीठी. तेनुं रूप जोई तथा तेना कटाक्ष बाणे अने हाव जावे करी महादेव मोहपासमां पड्या. तेनी पासे विषयनी प्रार्थना करी. जीलडीए कह्युं जे–हे शीवजी ! जो तमे एक हाथ मस्तके अने एक हाथ पछवाडे मुकीने नाचो तो हुं तमारी साथे काम सेवुं. चित चलित थया थका महादेवे जीलडीनुं एवुं वचन पण मान्य कर्युं. तपश्चर्या तपश्चर्याने ठेकाणे रही. एम कंदर्पे महादेव जेवाने पण जोलवी रोली नाख्या तो बीजा साधारण मनुष्यनो तो तेना आगल शो आशरो ? माटे कामने जीतवो ए महा कठिन छे. तेने जीते एज खरो शूरवीर समजवो, अने तेज पोताना आत्माने तारी शके छे. ४

॥ कंदर्पना उन्माद विषे ॥ मालिनी छंद ॥

नल नृप दवदंती देखि चारित्र चाले, अरहन रहनेमी
ते तपस्या विटाले ॥ चरम जिन मुनी जे चिल्लणारूप
मोहे, मयण रस व्यथाना एह उन्माद सोहे ॥ ५ ॥

जावार्थः–चारित्र लीधा पछी नल राजानुं चित्त दमयंती साधवीने देखी चलायमान थयुं, श्रीनेमीनाथना जाई रथनेमी काउसग्ग ध्याने रहेला ते राजीमतीनुं वस्त्र रहित अंग जोईने ध्या-

नथी चुक्या, वली वीर भगवानना एक मुनी श्रेणीकराजानी स्त्री चिल्लणानुं रूप देखीने व्यामोह पाम्या, एटले ए गुण जेने उपजे ते सघला अर्थात् स्त्रीने देखीने चित्त चलित थाय ते सघलो ए कामनी पीडाना रसनो उन्माद जाणवो. ५

॥दमयंती साधवीने देखी नल राजर्षिनुं चित्त चलित थयानो प्रबंध॥

नैषध नामा नगरने विषे नैषधराजा राज्य करता हता. तेमने नल अने कुबेर नामे बे पुत्र हता. नैषधराजाये वैराग पामी नलने राज्यगादीये अने कुबेरने यौवराज्यपदे स्थापीने चारित्र लीधुं. पछी नलराजाने कुबेर भाईये जुवटे रमाडी राज्य लीधुं. नलराजा पोतानी पत्नि दमयंतीने साथे लेई वनवासे गया. रस्तामां तेनो त्याग करी एकला चाली नीकल्या. कुबडुं रूप थयुं. दमयंतीने शीर खोटी चोरी चढी. फरी स्वयंवरे गया. दमयंतीनो मेलाप थयो. अनुक्रमे वनवास भोगवी आवी फरीने पोतानुं राज्य पाम्या. ते राज्यसुख भोगवीने वैराग पामी नलराजा तथा दमयंतीये चारित्र लीधुं. चारित्र पालतां थकां एकदा समये दमयंती साधवीने देखी नलराजर्षिनुं चित्त चलायमान थयुं. दमयंती उपर राग उपन्यो. पण दमयंती साधवीये तेमने प्रतिबोधीने ठेकाणे आण्या. अर्थात् चारित्रमां स्थिर कर्या. ५

॥ राजिमतीने वस्त्र रहित देखी काउसग्ग ध्यानथी चूकी काम ॥
॥ सेववानी प्रार्थना करनार रथनेमीनो प्रबंध ॥

श्रीनेमीनाथ भगवानना भाई रथनेमीये नेमी प्रभुनी देशना सांभली प्रतिबोध पामीने दीक्षा लीधी. पछी ते पर्वतमांहे काउसग्ग ध्याने रहे छे. एकदा श्री नेमीनाथने वांदी मार्गे पाछा आवतां पर्वत उपर वर्षाद वरश्यो तेथी राजिमतीनां

* नलराजानो कथा संबंध घणो छे पण अहीं कंदर्प संबंधमां लेशमात्र जाणवा योग्य लख्यो छे. विस्तार कथा तेमना चरित्रादिक ग्रंथोथी जाणी लेवी.

वस्त्र भींजाणा. ते सुकववा सारु साधवी गुफामांहे गयां. त्यां वस्त्र उतारी सुकव्यां. तेवारे वस्त्र रहित राजिमतिनां अंगोपांग रूप अवयव देखीने रहनेमी काउसग्ग थकी कामे विह्वल थया. जे ध्यान हतुं ते तो विसरी गयुं. अशुभध्यानने विषे तेमनो आत्मा मग्न थयो. ते विषयरुप मदिरानी छाकमां चढ्यो थको मुखथकी काम सेववानी प्रार्थना करवा लाग्यो. वली तेणे कह्युं के, अरे राजिमती! आवुं तहारुं अद्भुत रुप छतां तुं तहारो नकामो जन्म अफल करे छे. अकस्मात् आवां वचन सांभली राजिमतीये पोतानां अंगोपांग गोपव्यां. पछी रथनेमीने स्वानादिकनां केटलांक दृष्टांत देई छेवटे कह्युं के, अहो अंगधकुलना जात थकी शुं निपट थईने बोलतां लाजतो पण नथी? अर्थात् अंगधकुल जातिनो सर्प वम्युं विष जीव जतां सुधी फरी चूसतो नथी तेम छतां तुं उत्तम कुलमां उत्पन्न थयेलो संसार रुपी विष अर्थात् विषयरुपी वमेला विषनी वांछना करतां तुं केम लाजतो एटले शरमातो नथी.? सतीना मुखथी एवां वचन सांभली रथनेमी मनने विषे विचारवा लाग्यो जे– आवी यौवन मदमाती स्त्रीए पण पोतानो परिणाम लगार मात्र न रुगाव्यो; तो मुजने धिःक्कार हो? जे भाईनी भार्या, तेनो में अभिलाष कीधो. एम प्रतिबोध पामी श्रीनेमीश्वर भगवान पासे जई प्रायश्चित्त लेई फरी चारित्र ग्रहण करीने ते आराधन करी सद्गति पाम्या. एवा वीर पुरुषने पण ए कामदेवे चलाव्या तो बीजानो शो आशरो.? माटे तेनाथी दूर रहेवुं. तेना पासमां न पडवुं, ए मनुष्य भवनुं सार्थक छे, अने तेवाज नर अक्षय सुखने सुखरुप मेलवे छे. ६

वीर भगवानना साधु चेलणा राणीने जोई चलित थया हता तेनो संबंध ग्रंथांतरे जाणी लेवो.

॥ अथ गुणदोषोद्भावन विषे ॥ रथोद्धता छंद ॥

उत्तमा पण नरा *न संज्ञवे, मध्यमा तिम न योषिता
हुवे ॥ एह उत्तमिक मध्यमी पणो, बेहुमांहि गुण
दोषनो गिणो ॥ ६ ॥

ज्ञावार्थः– उत्तम ते जे पोताने गुणे शोज्ञे, मध्यम ते बापने नामे करी जे उलखाय; ए बेमां एटले एक जे पोताने प्राक्रमे करी उलखाय अने बीजो जे बापना नामथी उलखाय तेमां जेम घणो अंतर छे तेम उत्तम मध्यमनो पण एमज अंतर जाणवो. एटले जे मनुष्यमां जेवो गुण अथवा दोष होय तेवी रीते ते उलखाय. ६

॥ अथ पुरुष गुण विषे ॥ शार्दूलविक्रीडित छंद ॥

जे नित्ये गुण वृंद ले परतणा, दोषां जे न दाखवे ॥
जे विश्वे उपगारीने उपगरे, वाणी सुधा जे लवे ॥
पूरा पूनिम चंद जेम सुगुणा, जे धीर मेरु समा ॥
जेह गंज्ञीर सायर जिस्या, ते मानवा उत्तमा ॥ ७ ॥

ज्ञावार्थः– जे पुरुष हमेशां पारकाना गुणना समूह ग्रहण करे, अर्थात् परनो थोडो थोडो पण गुण होय ते ले अने अवगुण होय ते ढांके, जगत्‌ने विषे जे उपकार करे अने बीजानो उपकार माने तथा अमृत समान मीठी वाणी बोले; जे उत्तम होय तेना मुखमांथी अशुज्ञ वासना न नीकले, वली उत्तम केवा होय ? तो के, सोल कलाये संपूर्ण चंद्रमा सरखा सारा गुणवान तथा मेरु पर्वत कदापि चलाव्यो चले नही एवा एटले मेरु सरखा धैर्यवान होय, वली समुद्र जेवा गंज्ञीर होय, अ-

* 'न संज्ञवे' ने बदले बीजी प्रतमां 'स संज्ञवे' एवो पाठ छे.

थात् हजारो नदीउंनुं पाणी समुद्रमां मलवा छतां पण ते पोतानी मर्यादा मुकी छलकाई जतो नथी तेम सत्पुरुष कोई पण वाते छलकाई जाय नही-गंजीरता मुके नही, तेवा मनुष्यने उत्तम जाणवा. ७ ॥

परनो थोडो पण गुण ग्रहण करी अवगुण ढांकनार श्रीकृष्णनोप्रबंध.

सौधर्म ईंद्र एक वखत पोतानी सजामां बेठा थका वखाण कर्युं के मृत्युलोकमां आ समयने विषे श्रीकृष्ण जेवो गुणग्राहि कोई नथी. ते वातने असद्दहतो एक मिथ्यात्वी देवता तेनी परिक्षा जोवा सारू मृत्युलोकमां आव्यो. आ वखत श्रीकृष्णजी. रयवारीथी पाछा फरी पोताना नगर जणी आवता हता. तेमना मार्गने विषे देवताये एक डुर्गंधमय सडेलो, के जेमां कोम गमे कीरा तरवरी रह्या छे एवो कुतरो विकुर्वीने मुक्यो. तेनी डुर्गंधे करी हाथी घोडा सर्वे रस्तामां थंज्या, मनुष्यो नासिकाये वस्त्र देई उजा रह्या. परंतु कोई मनुष्य के पशु मात्र ए मार्गे जवाने शक्तिमान न थया, एटली वधी डूर्गंध उछलती हती. सर्व स्वारीने टटस्थ स्थंजी रहेली जोई श्रीकृष्णे तेनुं कारण पुछवाथी सेवके कह्युं जे-महाराज ! मार्ग वच्चे एक सड्यो कोह्यो कुतरो पड्यो छे तेनी डूर्गंधता अतिशे उछले छे. तेणेकरी कोई आगल जई शकतो नथी. ते सांजलीने पोते हाथी हलकारी आगल आवीने हेठि दृष्टीये करी विलोकीने कहेवा लाग्या जे-अरे जाईयो ! एनो गुण तमे केम लेता नथी ? सेवक कहे जे-स्वामी ! एमांहेशो गुण छे ? श्रीकृष्णे कह्युं जे, जुउने ! तेना दांतनी श्रेणि केवी छे ? जाणे हीरानी अथवा मुक्ताफलनी पंक्ति ज होयनी ! एनाथी पण उजली केवी ते सुंदर दीपेछे ? श्रीकृष्णे कुतरानो कोई पण अवगुण जोयो प्रकाश्यो नही. परंतु तेनामां जे कांई थोडो पण वखाणवा योग्य गुण हतो ते कही

દેખાડ્યો. ગુણગ્રાહક તે કદી પણ દોષ જોતા નથી, એ તો ગુ-
ણજ પ્રગટ કરે છે. પછી દેવતા પ્રગટ થઈ શ્રીકૃષ્ણને પગે લાગી
ઈંદ્ર પાસે ગયો. ત્યાં તેણે શ્રીકૃષ્ણજીનો જેવો ગુણ હતો તેવોજ
વર્ણન કર્યો. માટે ઉત્તમ પુરૂષે ગુણગ્રાહી થવું. ૭

॥ અનુષ્ટુપ છંદ ॥

જે રુપ સૌભાગ્ય સંપન્નાઃ, સત્વાદિગુણ શોભનાઃ ॥
તે લોકે વિરલા ધીરાઃ, શ્રીરામ સદૃશા નરાઃ ॥ ૮ ॥

ભાવાર્થઃ— રુપ અને સૌભાગ્યે કરી સંપૂર્ણ તથા પ્રાક્રમાદિ
ગુણે કરી શોભા પામનારા એવા ધીર પુરુષ આ લોકને વિષે
થોડા હોય; તે કોની પરે ? તો કે—શ્રી રામચંદ્રના જેવા ઉત્તમ
પુરુષ થોડા હોય, ઘણા ન હોય. ૮

॥ અથ પુરુષ દોષ વિષે ॥ શાર્દૂલવિક્રીડિત છંદ ॥

લંકાસામિ હરંતિ રામ તજિ જે, શીતાતણી એકલી ॥
સ્ત્રીવેચી હરિચંદ પાંડવ નૃપે, કૃષ્ણા ન રાખી સકી ॥
રાત્રે છાંડિ નિજ પ્રિયા નલ નૃપે, એ દોષ મોટા ભણી॥
જોવો ઉત્તમ માંહિ દોષ ગણના, કા વાત બીજા તણી ॥ ૯ ॥

ભાવાર્થઃ—લંકાના સ્વામી પ્રતિવાસુદેવ રાવણે રામચંદ્રની શિ-
લવંત સ્ત્રી સીતાનું હરણ કર્યું, તેથી રાવણે રાજ્ય અને જીવ, એ
બન્ને ખોયાં. વલી હરીશ્ચંદ્ર રાજાયે પોતાની સ્ત્રીને વેચી અને ડું-
બને ઘરે પાણી વહ્યું, વલી જુઓ—પાંડવ જેવા ડાહ્યા પુરૂષ પોતાની સતી
સ્ત્રી દ્રોપદીને જુગારમાં હાર્યા, કૃષ્ણ જેવા ભાઈ પણ તેને રાખી શક્યા
નહી, અને નલરાજા દમયંતી સરખી સ્ત્રીને વનમાં એકલી મુકીને
રાત્રે નાસી ગયા. તો જુઓ એવા મહાન ઉત્તમ રાજાઓમાં પણ એવા
ઉપર જણાવ્યા મુજબ દોષ પડ્યા તો સામાન્યની શી વાત કરવી. ૯

॥ अथ स्त्रीना गुण विषे ॥ उपजाति छंद ॥

सुसीख आले प्रिय चित्त चाले, जे शील पाले गृह* चिंत टाले ॥ दानादि जेणे गृहधर्म होई, ते गेहि नित्ये घर लक्ष्मि सोई ॥ १० ॥

भावार्थः– जे स्त्री भली होय ते पोताना भर्तारने रुडी रीतनी सीखामण आपे अने तेना मननी इच्छा पूर्वक चाले, तथा शुद्ध सीलनो गुण पाले अने गृहस्थधर्म पालतां घरनी चिंता टाले, अर्थात् कोई जातनुं दुषण लगाडे नही, वली दानादिके करी गृहस्थनो धर्म साचवे, एवी स्त्री ते लक्ष्मी कहीये, अर्थात् एवी भली स्त्री होय ए घरमां लक्ष्मीनो वासो छे एम जाणवुं.१०

॥ अथ स्त्रीना दोष विषे ॥ उपजाति छंद ॥

भर्त्ता हण्यो जे पति मारकायें, नाख्यो नदिमां शुक मालिकायें ॥ सुदर्शन श्रेष्टि सुशील राख्यो, ते आल देई अभयाय दाख्यो ॥ ११ ॥

भावार्थः– जे स्त्रीये पोतानो भर्त्तार हण्यो, शुकमालिकाये पोताना पति जितशत्रु राजाने गंगा नदीमां नाख्यो (ए संबंध पूर्वे आवी गयो छे तेथी अहीं पण एमज जाणवो); वली सुदर्शन शेठे शील गुण राख्यो तेने अभयाराणीए कलंक चढाव्युं ११

॥ सुदर्शन शेठने अभयाराणीए कलंक चढाव्या संबंधी प्रबंध ॥

पाडलीपुर नगरमां सुदर्शन नामे शेठ रहेता हता. ते महा रुपवान हता. ए नगरना राजानी अभयानामा राणी तेने जोइ मोह पाम्याथी तेणीए पोतानी मनोवृति तृप्त करवा माटे कुंड कावित्रुं करी सुदर्शन शेठने पोताने महेले बोलावी मगाव्या.

* "गृह चिंत टाले" ने बदले बीजी प्रतमां "गृही दोष टाले" एवा शब्दो छे.

घणा हाव भाव सहित तेने अभयाराणीए पोतानी साथे भोग भोगववानी प्रार्थना करी. सांकडे आवेल होवाथी पोतानुं सील साचववा माटे सुदर्शन शेठे " हुं पुरुषातनमां नथी " एम जणाव्युं. तेथी अभयाए शेठने काढी मुक्या. पछी केटलेक दीवसे ए नगरनी बाहार म्होटो मेलो हतो. त्यां जवा सारु सुदर्शन शेठना देवकुमार सरखा छ पुत्र राज्यमहेलने रस्ते थई जता हता, तेमने अभया राणीए दीठा. ते वखत प्रधाननी स्त्री तथा कपीला दासी त्यां हाजर हतां. तेमने राणीए आ कोना पुत्र छे ? एम पुछवाथी कपीला दासीए जणाव्युं जे " ए छए पुत्र सुदर्शन शेठना छे ". अभयाए कह्युं के, ए तो पुरुषातनमां नथी, तेम छतां एने पुत्र केवा ? कपीला बोली जे, एणे तुजने छेतरी. पछी कपट कला केलवी अभया तथा कपीलाए मली शेठने खोटुं कलंक चढाव्युं, जे राणीनी लाज लुटवाने अर्थे सुदर्शन शेठ महेलमां आव्यो हतो. तेने महा मुश्केलीए काढ्यो. एवुं राजाने भाभवाथी तेणे कोपायमान थई सुदर्शन शेठने शूलीए चढाव्यो. शेठना शीलना प्रभावथी शासनदेवीए तत्काल आवीने शूली मिटावी सोनानुं सिंहासन कर्युं. सर्व नगरजनोने तथा राजाने ए वातनी खबर थई. पछी सुदर्शन शेठने हाथी उपर बेसारी म्होटा आडंबर उछव सहित वाजते गाजते नगरमां तेमी लाव्या. सुदर्शन शेठना शीलनो महिमा घणो विस्तार पाम्यो. अभया भोंठी पडीगइ. राजाए तेने दूर करी. माटे भूमिने विषे एवुं कृत्य करनारी दुष्ट स्त्रीउ जाणवी. ११.

॥ वसंततिलका छंद ॥

मार्यो प्रदेशि सुरिकांति विषयावळीए, राजा यशोधर

हण्यो नंयनावलीए ॥ डुःखी कर्यो स्वसुर नूपुर पंमि-
ताए, दोषी त्रिया इम जाणी इण दोषताए ॥ १२ ॥

जावार्थः—विषयने वश थके सुरीकांता नामे स्त्रीए पोताना पति प्रदेशी राजाने विष देई मार्यो, वली नयनावली (घनावली) नामे राणीए पण विषय वासनाये करी पोताना जर्त्तार यशोधर राजाने गले फांसो देई मार्यो; एक नूपुर पंडिता सोनारणे पोतानुं डुश्चरित्र बुपाववा माटे जर्त्तारने जोलवी ससराने डुःखी कर्यो, ते माटे एवा दोषोए करी स्त्रीउने दोषीत कही बे. अर्थात एवा डुष्कृत्यथी स्त्रीउने दोषीत जाणवी. १२

॥ यशोधर राजाने मारनार नयनावलीनो प्रबंध ॥

यशोधर राजाने नयनावली नामे राणी हती. ते स्त्री पोताना जर्त्तार साथे सुखे विलास जोगवतां बतां राजाना सुणेर बाहिर चरवादारथी लुब्ध थई तेनी साथे विषयसुख जोगवती हती. एम करतां केटलाक दीवस गया पठी एकदा नयनावली राजाने निद्रावश थयेलो जोई चरवादारनी पासे गई. ते वखत एक वणीक पुत्र, के जेने चोरी करवानुं व्यसन पड्युं हतुं ते रात्रे नगरमां चोरी करवा नीकलेलो हतो. परंतु कोई स्थले तेनो लाग फावेलो नही तेथी आ नयनावली जे मार्गेथी गई हती ते मार्गे थइ ते राजमहेलमां आवी राजानी सैय्या तले पेठो. दीवानी ज्योत जगजगी रही हती. राजा निद्रामां हतो. पठी नयनावली चरवादार साथे विषय सेवीने सैय्याए आवी. एटले राजा जागी उठ्यो. तेणे स्त्रीने पुब्युं के क्यां गई हती ? स्त्रीए जणाव्युं जे, लघुबाधा टाली आवी. फरी राजा उंघी गयो. स्त्रीए पोताना मनमां विचार कर्यो के, महारां चरित्र राजाए जाण्यां. ए अत्यारे बोल्यो नथी पण प्रजाते खरा-

+ " नयनावलीए " एने बदले बीजी प्रतमां " घनावलीए " एवो पाठ बे.

खरी करशे. माटे ते पहेलांज हुं एनो घाट घमी नांखुं तो ज्ञावठ जाय अने मनमानती मोज मराय. एवुं चिंतवी निद्रा-वश थयेला पोताना पति (राजा) ने गले फांसो देइ तेना प्राण लीधा. पठी सोर बकोर पामी उठी रोवा ककलवा लागी. ते सांजली सर्वे चोकीदार त्यां आव्या. शुं ठे ? एम पुठवाथी तेणीये कह्युं जे, अकस्मात् चूंक आववाथी राजाजी मर्ण पाम्या. हाय हवे हुं शुं करुं ? वीगेरे घणा विलाप करी ठाती कुटी स्त्री चरित्रवडे लोकोने पोतानुं निर्दोषपणुं जणाव्युं. प्रधानादि राजपुरुषो तथा नगरजनोए मली राजाने संस्कार कीधो. पेलो जे वणीक पुत्र चोर सैय्या तले हतो तेणे स्त्रीनुं अघोर कर्म जोयुं हतुं तेने जय अने लालच देइ काढी मुक्यो. माटे स्त्रीनो विश्वास न राखवो. स्त्रीमां एवा अनेक अवगुण होवाथी तेने दुष्ट जाणवी.

॥ ससरानी लाज पाडी फजेत करनार ॥

॥ नुपुर पंमिता सोनारणनो प्रबंध ॥

राजगृही नगरीने विषे एक जर्जर सोनार रहेतो हतो. तेणे पोताना एक दीकराने परणाव्यो. तेनी स्त्री घणीज व्यजिचा-रणी ठे. एक वखत रात्रे तेनो जर्त्तार घरमां उंघ्यो हतो. त्यारे तेणीये पोताना जार पुरुषने बोलावी घरनी वामीमां अवल (घणो रुडो) पलंग बीठावी तेनी साथे विषयनी वार्त्ता करी. पठी ते बेहु जणां निद्रावंत थयां. आ वेला पेलो जर्जर सोनार जागतो हतो. तेणे आवुं असमंजस देखी त्यां आवीने हलुये-सेक कल वल करी वहुना पगथकी नेउर काढी लीधुं. ते गुप्त मुकीने पाठो पोतानी सैय्याये आवि सुतो. पठी सातेके सोनारण जागी. पगने विषे जुए तो नेउर न दीठुं. तेणीए विचार्युं जे, ए सस-रानुं काम ! अहीं बीजुं कोइ नथी. पणे कांइक महारुं चरित्र जा-

एयुं. तेथी एणेज महारुं नेउर लीधुं जणाय छे! एना सिवाय वीजानुं ए काम नथीज! माटे हवे हुं स्त्रीचरित्र करुं तोज महारी आवरु रहे. एम विचार करी पेला जार पुरुपने कलवकल करी वारीयेथी काढी मूकी पोते पतिनी पासे आवी सुइ रही. थोडीक वार पछी भर्त्तारने जगाडी वाडीमध्ये तेडी गइ.त्यां जारपुरुषने पलंगे वन्ने सुतां.भर्त्तार उंघालुउ हतो तेथी ते तत्काल उंघ्यो. एटले स्त्रीचरित्र करी तेणी बुम पाडती उठी के,हे स्वामी! जुओ! जुओ! आ तमारो वाप, अहीं आपणा लज्याना स्थानके आवी आ महारा कावा पगनुं नेउर लेई नासी गयो. भर्त्तार झवकीने आकल वीकल थयो थको उठ्यो अने पितानी पथारी पासे जइ तेने कुट्यो. वली कहेवा लाग्यो के, अरे पापीष्ट! तुं त्यां आवेज केम ? डोसाए कह्युं के, तुं तो नहोतो. बीजो पुरुष हतो. छोकरो कहे के, हुं हतो. बीजो कोण होय ? आ कोलाहल थवाथी पाडोसीओ जागी उठ्या. तेओ त्यां आव्यां अने सर्वे हकीकत सांभली डोसाने ठपको देवा लाग्यां. सौए तेने घेहेलामां गण्यो. डोसो मनमां विचारवा लाग्यो जे, महारी खरी वात छतां वधाए महारो दोष काढ्यो. आ ते शुं कहेवाय ? ए चिंताये करीने डोसानी निद्रा गई. भूख पण गया जेवी थइ. पछी प्रभाते उठीने स्त्रीए पोतानां पीहरीयांने तेडाव्यां. दातण पण कर्युं नहीं. पीहरीयां आव्यां एटले गदगद रोती थकी तेमने रात्रिनी वात कही. ते सर्वे डोसाने वढवा लाग्यां जे, अमारी पुत्रीने तुं कलंक केम आपे छे ? पछी ते स्त्री कहे के हुं तो सौना देखतां धीरज (धीज) करीश. लोको कहे जे, तुं शी धीरज करीश ? स्त्री वोली जे, आपणा नगरनी वाडीमध्ये साचवाइ भवानीनी मूर्त्ति छे, ते साच जूठनी परिक्षा तत्काल देखाडशे. ते सांभली सौ लोके ठीक! बहु सारुं! एम कहीने जणाव्युं

जे, जो साची हशे तो वाडीमध्ये भवानीनी ऊभी मूर्त्ति छे तेना पग वचे सूंसरी नीकली जशे अने जूठी हशे तो भराइ रहेशे. एवो निश्चय कर्यो.

हवे स्त्रीए मनमां विचार करी पोताना जीवन प्राण जार पुरुषने कोईक कन्हे कहेवराव्युं के, सौ लोक जोवाने अर्थे मले एटले तेनी भीडमां तुं घेहेलो थईने मुजने आवी वलगजे. एटले देवी आगल हुं धीरज करीश. आवो प्रपंच साधीने ते धीरज करवाने तैयार थइ. घरवालाए तेणीने घणीए ना कही. त्यारे ते कहेवा लागी के, महारे ए कर्या विना छूटको नथी, केमके खोटो पण लोकापवाद हुं सहन करी शकुं तेम नथी. तमेज विचार करीने जुओ! जे पहेलां पण उत्तम स्त्रीओने माथे जुठां जुठां आल आव्यां छे त्यारे तेणीओए पण लोकापवाद दूर करवा माटे धीरज करेला छे. तेथी महारे पण कर्या विना छुटको नथी. माटे हुं तो करीश. पछी सर्व सगां संबंधीने तेडीने ते चौटामां आवी. लोकोनी ठठ ते जोवाने जामी गई छे. एटले एनो यार संकेत प्रमाणे घेहेलो थइ आवीने तेणी (स्त्री) ने गले वलगी पड्यो. लोकोए तेने छोडावी हांकी काढ्यो. पोतानुं धार्युं थवाथी मनमां महा हर्ष पामती ते वाडीमध्ये देवी पासे आवी. पगे लागीने सघलां लोकना सांभलतां ते एम कहेवा लागी जे, हे माता! आ महारे ससरे महारा उपर जुठुं आल चढाव्युं छे; पण ते लोको शुं जाणे जे खरूं छे के खोटुं? तेनी धीरज (खात्री) करवा सारू हुं आवी छुं. ते माटे जेवुं हशे तेवुं तहारा मों आगल कहुं छुं. जे मार्गे आवतां एक घेहेलो अने परण्यो; ए बे विना मुजने कोई अड्यो होय तो हे माताजी मने दाबज्यो." एवुं सांभली देवी तो विचारमां पडी. एटले ते स्त्री मातानी मूर्त्तिना पग वचे थइने नीकली गई. लोकोए ते-

णीने साची सांची कही. डोसो तो मानभंग थयो घेर आव्यो. पण तेनी ऊंघ गई. थोडेक दीवसे श्रेणिक राजाये सांभळ्युं के, मानभंग थयेलो जर्जर सोनी रात्र दहाडो जागृतनो जागृत रहे छे. बीलकुल ऊंघतोज नथी. तेथी तेने तेडावीने राजाए भंडार उपर चोकी करवा सारू राख्यो. ते महेले महेले भंडारनी चोकी करे छे. एकदा समये एक महेलमां राणीनुं दूश्चरित्र तेना दे-खवामां आव्युं. डोसो विचारवा लाग्यो जे, " सर्वनुं भरण पो-षण अने संभाळ करनार महा प्रतापी राजाज जेनो पति छे, ते-नीज राणी ज्यारे महावत साथे भोग भोगवे त्यारे सोनीनी जे स्त्री ते तो शा लेखामां ? एटले ते कोण मात्र ? ते कोण गणतिमां ? अर्थात् सोनीनी स्त्री परपुरुष भोगवे तेमां नवाई जेवुं मने तो राजानी राणीनुं करतव्य जोई कांईज लागतुंनथी. " एम विचार करतां करतां ते वात विसारे पडी, एटले ते डोसाने छ महीने ऊंघ आवी गई. ते केवी आवी के, जेम मुनीराज मोक्षपद सा-धवाने काजे पांच निद्राने तजे तेम ए सोनी डोसे पोतानी व-हुनुं अकार्य देखी निद्रा परिहरी हती, तेज कार्य पाछुं राजाना आवासमध्ये देखीने ते डोसाने ऊंघ आवी. ते जाणे एणे रा-णीने माटे छ महीनानो अभिग्रह न धार्यो होय ! ते अभिग्रह पूरो थयो जाणी आहट दोहट भांगीने ते निचिंतपणे सुतो. अर्थात् छ महीनानी सामटी ऊंघ करतो होयनी ! एम लसल-साट घोरवा लाग्यो. पछी मोडी रात्रिये नगरचर्चा जोतो जातो राजा डोसानी पासे आव्यो, तो तेने ऊंघतो दीठो. राजा पाछो गयो. बीजे दीवसे राजाए प्रधानने कह्युं जे,—सोनी डोसो बी-लकुल ऊंघतो नथी एवुं तमे कहेता हता पण रात्रे हुं तेनी पासे गयो त्यारे ते ऊंघतो हतो; ते हजुसुधी जुठ ऊठ्यो नथी. तेनुं का-रण शुं ? पछी राजा तथा प्रधाने डोसो ऊंघतो हतो त्यां आ-

थीने तेने जगाडवा मांड्यो अने कह्युं के, हे डोसा ! तुं आज अत्यारसुधी दोढ पोहोर दीवस चढ्यो तो पण उठतो केम नथी ? तोहे पण ते जाग्यो नही. पछी तेने घणो घणो धूणाव्यो (ढंढोळ्यो) त्यारे ते जाग्यो. तेने पुछ्युं जे, आज आम केम आवडी उंघमां घेराई गयो ? डोसो बोल्यो जे-तमने ते शुं कहुं ? कांई कहेवा जेवुं नथी ! पछी वारंवार बलात्कारे करी पुछवाथी डोसाए जणाव्युं जे, " हे राजाजी ! आज रात्रिने समये तमारो हाथी गोख तले आव्यो, राणीने सुंढे करीने लीधी, त्यां तेनी साथे महावते भोग भोगव्यो, पाछी वली हाथीये सुंढवडे उपाडीने गोखमां मुकी. " एवुं कारण देखीने में मनमां विचार्युं जे, राजाउना घरमां आवा घोटाला छे, तो हुं सोनी ते शा हीसाबमां ? ए धारणा धारतां धारतां मने आज केटलेक दीवसे फीकर (सोच) मटवाथी निश्चिंतपणे उंघ आवी; तेणे करीने हे राजाजी ! करारे करीने उंघ काढी.

ते वात सांभलीने राजाए ते राणी, महावत अने हाथी, ए त्रणने वैभारगिरि पर्वत उपर चढावीने ढोली पाडवानो सेवकोने आदेश (हुकम) आप्यो. ते सांभलीने नगरना महाजन लोकोए राजा पासे आवी विनती करी के, महाराज ! एमां हाथीनो शो वांक ? ते तो तमे तमारा दिलथकी विचारी जुउ ? ए तो तिर्यंच छे. एने आपणे जेम सिखवीये तेम ते सिखे. माटे एनो वांक नथी. राजाए महाजननी वात मन उपर लेइने हाथीनो गुन्हो माफ कर्यो. हाथीने पर्वत उपरथी हेठो उतारवानुं कह्युं. ते वखते महावते राजाने कह्युं जे, अमे बेहुने अभयदान आपो तो हाथीने हेठो उतारुं. राजाए त्रणेने अभयदान आप्युं. पर्वत परथी त्रणे उतर्यां. हाथीने पाछो आलान बालान स्थानके बांध्यो. महावत तथा राणीने काढी मुक्यां (देशपारकर्यां). तेउ

त्यांथी चाली नीकळ्यां. रात्रि पडतां एक देहेरुं आव्युं तेमां तेओ सुतां. महावत उंघी गयो. तेवामां त्यां चोर आव्या. ते चोरना नायकने देरासां तापणी करतां थुंकतां थकां स्त्रीए दीठो. तेना रुप उपर मोही थकी ते तेने कहेवा लागी के, हुं तो तमारी साथे आवीश. पछी महावत शा कामनो छे? एम विचारी राणीए चोर पासे तेने हणाव्यो. ते महावत मरीने व्यंतरो थयो. स्त्रीने शृंगार सजेली जोइ चोर मनमां विचारवा लाग्यो जे, आ स्त्रीए आगल रहीने पुरुष प्रत्ये हणाव्यो. ते कोण जाणे एनो भर्त्तार हशे अथवा कोइ जार पुरुष हशे? बेमांथी गमे ते हो. पण ए एनी थइ नही, ने मुजथी लुब्ध थइ, तो ए महारो शो उघाड करशे? ए स्त्रीथी आपण कांई नफो न पामीये! शा-माटे जे एनी वले ते आपणी पण एक वखत एज वले समजवी. आवुं धारीने चोरे स्त्री प्रत्ये कह्युं जे, आ आपणा रस्ता आगल नदी आवे छे तेमां घणुं पाणी छे माटे जे कांइ तहारी पासे होय ते मने आप, के ते हुं पेले पार मुकी आवीने तने तेडी जइश. (मनने विषे एम कहे जे लेइने हुं हींडतो थइश. त-हारुं महारे कांई काम नथी.) पछी ते स्त्रीए वस्त्राभरण प्रमुख जे तेनी पासे हतुं ते बधुं चोरने स्वाधीन कर्युं. एटले ते लेइने चोर चाल्यो गयो. स्त्री तेनी वाट जोतीने जोती रही. एवामां महावत के जे व्यंतरो थयो छे तेणे एक सीयाल अने तेना मुख आगल एक मछ विकुर्व्यो. जळ माटे मछ उपर सीयाल ताके छे. एटलामां तो आकाशमांथी एक गीध पंखी आवीने झपट मारी मछने लेइ गयो. सीयाल त्यां जोताने जोतो रह्यो. एटले पेली स्त्री (राणी) ए हसीने कह्युं के, अरे मूंरा! सीयाल, तुं तो चूक्यो तो. ते सांभली राणी प्रत्ये उत्तर वा-ळतां सीयाले कह्युं के, हुं तो एकथी चूक्यो, पण तुं तो त्रणथी

चूकी, ते तो विचार! जंबुकनां मुखथी एवुं वचन सांभली राणी बोली के, तुं तिर्यंचपणे ए केम जाणे ? पछी सीयाले राणी प्रत्ये सर्व संबंध मांडीने कह्यो. तेथी बोध पामीने राणीये विषयवासना तजी दीधी. तेणेकरी पछी ते सुखणी थइ. तेम बीजी स्त्रीये पण विषयने छांडवो. ए नेपूर पंडितानो दृष्टांत कह्यो. जुओ नारीओनां एवां एवां चरित्र छे. १२

॥ अथ सुलक्षणी स्त्री विषे ॥ शार्दूलविक्रीडित छंद ॥

॥ रुडी रुपवती सुशील सुगुणी, लावण्य अंगे लसे ॥
॥ लज्जालु प्रियवादिनी प्रियतणे, चित्ते सदा जे वसे ॥
॥ लीला यौवन† उल्लसे उरवसी, जाणे नृलोके वसी ॥
॥ एवी पुण्यतणे पसाय लहिये, रामा रमा सारसी ॥१३॥

भावार्थः- रुडी एटले सारी रुपवंत, भला शीलगुणे करी सहित, सद्गुणी, लावण्य गुणेकरी जेनुं अंग शोभी रह्युं छे एवी, लज्यावंत, मीठाबोली, भर्त्तारना चित्त केडे चालनारी, अर्थात् पोताना पतिनी अनुजाइ (मरजी) मुजब वर्त्तनारी, अने हमेशां भर्त्तारना मनमां वास करे एवी, वली लीलाए करी उल्लसायमान थता यौवनवाली, जाणे देवलोकमां वसनारी उर्वशी देवांगनाज होयनी शुं! एवी लक्ष्मी सरखी स्त्री पुन्यने जोगे करी पामीये. एवा गुणवाली होय तेने सुलक्षणी स्त्री जाणवी. १३

॥ अथ उत्तम सुलक्षणी स्त्रीनां थोडां नाम ॥ उपजाति छंद ॥

सीता सुभद्रा नलराय राणी, जे द्रौपदी शीलवती वखाणी ॥ जे एहवी सीलगुणे सराणी*, सुलक्षणा ते जगमांही जाणी ॥ १४ ॥

---

† "यौवन" ने बदले बीजी प्रतमां "लावण्य" शब्द छे. * "सराणी" ने बदले "समाणी" शब्द छे.

जावार्थः– रामचंद्रनी स्त्री सीता, के जेने दस मस्तकवाला रावणे अपहरीने लंकामां लेइ जइ ठ मास राखी पण सीयल खड्युं नही अने खेरना अंगारा जरेली खाइमां पडतां तुरत ते तेना-सीलना प्रजावथी पाणी थइ गयुं, लोकापवाद टाड्यो, ए म-हासती सीता; सुजद्रा सती के जेणे काचे तांतणे चालणी वां-धीने कुआमांथी जल काढीने चंपानगरीनी पोलो (दरवाजा) उघाडी पोतानुं सतीपणुं सिद्ध करी आप्युं; नलराजानी स्त्री दमयंती, के जेने अटवीमां एकली मुकी पति चाल्यो गयो, घणुं दुःख पड्युं, कष्टमां आवी पड्या ठतां पण सीयलथी न चली अर्थात् पोतानुं सीयल साचव्युं; वली पांडवनी स्त्री द्रौपदी, के जेनां चीर जरसजामां दुर्योधने खेंचाव्यां, ते तेना सीयलना प्र-जाव थकी पूराणां; वली शीलवतीए पण पोतानुं शील राख्युं. एवी जे जे स्त्रीउं शीलगुणे करी वखणाएलीउ ठे तेने(तेना जेवीने) जगत्मां सुलक्षणी एटले उत्तम जला गुण लक्षणवाली जाणवी. १४

॥ अथ खेरना धगधगता अंगारा जरेली खाइ ॥

॥ सीताना सीलगुणे पाणी थयानो प्रबंध ॥

सीतानुं हरण करीने रावण तेने लंकामां लेई गयो. त्यां तेना मकानमां ते ठ मास सुधी रह्यां. तेना पति रामचंद्रजी रावण साथे युद्ध करी तेने मारी सीताने पोताने घेर लाव्या. ते अंतेउरमां रहे ठे. त्यां तेमने बीजी सोक्ये पुछ्युं जे, हे बहेन ! ते रावणनुं रूप केवुं हतुं ? सीताए जणाव्युं जे, में तेना सामुं उंचुंए जोयुं नथी, तो हुं तेना रूपनी वात शी जाणुं ? हुं तो महारा अने एना पग सामुं जोई रहेती हती. एवुं वचन सांजलीने सोक्ये पाटलो लावी ते उपर जीकालो (ढेखालानो जीणो चालेलो जूको) पाथरी तेनी आगल मुक्यो. ते उपर सीताए रावणना पग आलेख्या. ते पाटलो एमनो एम हाथो हाथ सोक्ये आघो

लेई तेना उपर फूल मुकीने रामचंद्रजीने देखाड्यो; अने कह्युं के, जुओ–तमे तो कहोछोने ! जे म्हारी सीता जेवी कोईये गुणवंती नथी. पण एतो नित्ये आवी रीते रावणनां पगलां आलेखी आलेखीने पूजे छे ! ते सांभळी तथा रावणनां पगलां जोईने रामचंद्रजीने शंका उपनी. वळी एकदा रामचंद्रजी पोते रात्रे नष्टचर्याये नगरमां नीकळ्या हता. बारे बारे (घेरे घेर) जोता जायछे अने त्यां जो कांई वात थती होय तो ते सांभळता जायछे. ते फरता फरता घांचीना महोल्लामां आव्या. एवामां कोई एक घांचण कामने अर्थे बाहार गई हती, तेने घणी वेला थइ गया छतां ते घेर नहीं आव्याथी तेनो धणी घांची घर भीडीने बेठो हतो. त्यारपछी घांचण आवी. तेणीए पोताना स्वामीने घांटो पाडी कह्युं जे, बार उघाडो. बारणां केम दीधां छे ? घांचीए कह्युं जे, " तुं क्यां गई हती ? तने आवडी (आटली बधी) वार केम थइ ? ते मने कहे. तुं त्हारा मनमां एम जाणती हशे जे भर्त्तार मने शुं करनार छे ? पण ते हुं नहीं ! ते तो रामचंद्रजी एम करे. हुं कांई तेनी पेठे मूर्ख नथी, जे तुजने संग्रहुं. एतो छ मास लगी जे सीता रावणने घेर रही तेने देखी पेखीने एज रामचंद्रजी संग्रहे ! हमणां बाहार पडी रहे ! वाहाणुं वासे एटले तेनी तजवीज करीने पछी हुं तने घरमां पेसवा देईश. " घांचीनां आ सघलां वचनो रामचंद्रजीए सांभळ्यां, अने घेर आव्या.

पछी सीतानुं सतीत्व जोवा सारू अने लोकापवाद दूर करवा माटे रामचंद्रजीए त्रणसें गज लांबी पोहोली खाई खोदावीने तेमां खेरना धगधगता अंगारा भरावी तेमध्ये सीताने खुल्ले पगे चाली जवाने कह्युं. आ धीरज करवा माटे सीताजी पोताना लव अने अंकुश नामना बे पुत्रने साथे लेई खाई पासे आव्यां. लो-

कोनी म्होटी मेदनी (टोळांटोळां) चारे बाजु जोवासारू मळी छे. आकाशने विषे देवताओ पण पोतपोताना विमानमां बेसी जोवा आव्या छे. ते वखत सीताजी मुख थकी बोल्यां जे- ॥ यतः ॥ "मनसी वचसी काए जागरे स्वप्न मार्गे, जदी मम पतीभावो राघवादन्यपुंसी ॥ तदपी दहसरिरं मामकं पावकत्वं, सुकृत विकृत भाजां तुंही लोकेत्र साक्षी ॥ १ ॥ अर्थः-मने, वचने अने कायाए करी जांगतां अथवा उंघतां स्वप्नने विषे पण रामचंद्रजी विना जो में अन्य पुरूषने चिंतव्यो होय तो, हे आग देवता! तुं मुजने बाळीने भस्म करजे. एटले राख करजे." एवुं कहीने सीताजी खाईमां पेठां एटले तत्काल (तेज वखते, तेना सीलना प्रभावे करी अग्नि टळीने पाणीना प्रवाह थया. तेमां नाहीने नीतरते चीरे सीताजी नीकळ्यां. लोके अने देवताए जय जय शब्द करीने वधाव्यां. फूलनी वृष्टी थइ. आ प्रमाणे लोकापवाद दूर करीने सीताजी वैराग्यवंत थया थकां चारित्र लेवा उत्सुक थयां. रामचंद्रजीए घरमां रहेवामाटे घणुंए कह्युं. पण न रह्यां. पछी रामचंद्रजीने बन्ने पुत्र भळावी (सोंपी भलामण करीने) सीताजीए जयभूषण मुनीपासे जइ चारित्र लीधुं. सुप्रभा साध्वीना संगाडामां रह्यां. समाधीपणे संयम आराधीने ते बारमे देवलोके बावीस सागरोपमने आउखे इंद्रपणे उपन्यां. त्यांथी चवी महाविदेह क्षेत्रे मनुष्यपणुं पामीने चारित्र पाळी मोक्षपद पामशे. एवी उत्तम सुलक्षणी स्त्री पुन्ये पामीये. १४

॥ अथ (संयोगीनी यथा) संयोग विषे ॥ माळिनी छंद ॥

प्रियसखि प्रिययोगे उल्लसे नेत्र रंगे, हसित मुख शशीज्युं सर्व रोमांच अंगे ॥ कुच इक मुझ वैरी नम्रता जे न दाखे, प्रिय मिळण समे जे अंतरो तेह राखे ॥ १५ ॥

भावार्थः– जे स्त्रीनां नेत्र भर्त्तारने देखी आनंदे सहित उल्लासायमान थाय अने जेनुं चंद्रना जेवुं हसतुं मुख होय अने जेनां अंगने विषे सर्व रोमराजी (रुवाडां) उभां थयां होय, एवी स्त्री कहे (जाणे) छे जे हे प्रियसखी ! एक कुच म्हारां वैरी छे, के जे नम्रता बतावता नथी अने भर्त्तारने मळवानी वखते ते अंतरो राखे छे. अर्थात् वचमां आडा आवे छे. (अंतरो देखाडे छे.) १५.

॥ अथ (वियोगीनी यथा) वियोग विषे ॥

दिन वरस समाणे रैणि कल्पांत जाणे, हिम कर कदली जे तेह झाला प्रमाणे ॥ रसिक कर शशि जे सूरस्यो सोई लागे, प्रिय विरह प्रियाने दुःख स्यां ते न जागे ॥ १६ ॥

भावार्थः– पतिथी विरहणी स्त्रीने दीवस वर्ष बराबर अने रात्रि कल्पांत सरखी जणाय छे, अने हिम कर एटले ताढक करनार जे कदली वन, ते तो झाला एटले सळगता जाज्वल्यमान अग्नि सरखुं लागे छे; वळी आनंदने आपनारो चंद्र ते सूर्य समान तापकारी लागे छे. अर्थात् क्रोध उपजावनारो थइ पडे छे. माटे पतिथी वियोग पामेली (विरहणी) स्त्रीने शुं शुं न थाय ? अर्थात् सर्व दुःखकारी थइ पडे. १६

॥ अथ माता विषे ॥ इंद्रवज्रा छंद ॥

जे मातनो बोल कदा न लोपे, ते विश्वमां सूरज जेम ओपे ॥ ज्यां धर्म चर्या बहुधा परीखी, त्यां मातपूजा सहुमां सरीखी ॥ १७ ॥

बीजी प्रतमां ‡ " कर " ने बदले " रज " अने " रशिक कर शशि " ने बदले " शशिरसिकरसो " एवा शब्द छे.

भावार्थः– जे उत्तम मनुष्य होय ते पोतानी माता (मा) नुं वचन लगार मात्र कोइ पण दीवस न लोपे एटले उल्लंघन न करे, (माताना कहेवा प्रमाणे सर्व कार्य करे) ते मनुष्य जगतने विषे सूर्य समान दीपे एटले सर्व स्थले उलखाय– तेनी यश कीर्त्ति गवाय; विशेषे करीने वली ज्यां धर्म चर्या अर्थात् धर्म नाम मनाय छे त्यां सर्व जगोए (शास्त्रमां) मातानी पूजा एक सरखी वर्णवेली छे. अर्थात् सर्व दर्शनवालाए मातानी सेवा करवानुं कहेलुं छे. १७

जे मात मोहें जिन एम कीधो, गर्भे वसंतां व्रत नेम लीधो॥ जे मात भद्रा वयणे प्रबुद्धो, शीला तपंते अरहन्न सिद्धो॥ १८॥

भावार्थः– माताना मोहे करीने गर्भमां रह्या थकां वीर जिनवरे एवो नियम लीधो एटले निश्चय कर्यो जे मावित्र जीवतां होय त्यां सुधी म्हारे व्रत एटले चारित्र न लेवुं; भद्रा माताना पुत्र अरहन्नके माताना कहेवाथी धखधखती शीला उपर अणसण कर्युं अने मोक्ष पाम्यो. १८

॥ माताना कहेवाथी शीला उपर अणसण ॥
॥ करनार अरहन्नकनो प्रबंध ॥

तगरपुरी नगरीमां दत्त नामे शेठ रहेतो हतो. तेने भद्रा नामनी भार्या अने अरहन्नक नामनो पुत्र हतो. एकदा गुरु पासे देशना सांभलीने शेठे, पत्नि तथा पुत्र सहित दीक्षा लीधी. चोखुं चारित्र पालवा लाग्या. परंतु दत्त साधुने पुत्र उपर घणो मोह होवाथी तेने बेसाडी मुकता हता. आहार पाणी पण पोते पुरू पाडता हता. मूलगो बाहार काढता नहीं. ताढे

छांयडे राखता हता. एम करतां केटलेक दीवसे दत्त मुनी(पिता)-ये काल कर्यो. अने साधवी (माता) नो आएयो आहार तो कल्पे नही. तेथी अरहन्नक मुनी दुखीया थया. वोहोरवानी वेला थइ त्यारे बीजा साधुए पात्रां करीने अरहन्नकने कह्युं के वोहोरवा सारू चालो. अरहन्नक तेमनी साथे गया. बीजा साधु आगल चालता हता ते आगल (दूर) नीकली गया. अरह-न्नक पछवाडे रही गया. तेमने तडको लागवाथी माखणनी परे उगल्या. एवामां मार्गनेविषे एक म्होटुं मंदिर आव्युं तेनी नीचे छांयडे आवी उभा रह्या. ते वेलाये एक विरहणी स्त्री गोखमां वेठी हती. तेणी रूपे करी काम कंदर्प जेवा आ अरहन्नक मुनीने जोई मोहित थइ तेथी तेमने तेडवा सारू दासी मोकली. तेनी साथे ते घरमां गया. एटले स्त्रीए कह्युं के, आ कंचनवर्णि काया शा सारू बालो छो ? अहीं सुखरूप रहो. स्त्रीनुं कहेण मानीने ते त्यां रह्या. पण उग्यो आथम्यो न जाणे. अर्थात् घरमां ताढे छांयडे रहेछे.

हवे पेला वोहोरवा गयेला जे साधु आगल नीकली गया हता ते वोहोरीने उपाश्रये आव्या. त्यहा साधवीए तेमने पुछ्युं जे महारो पुत्र क्यां ? साधुए कह्युं जे, महारे पछवाडे तो हतो, पण पछी ते क्यां गयो तेनी मने खबर न रही. ए सांभली साधवी मातानी गाहली चली गइ. ए अरहन्नक अरहन्नक करती आखा नगरमां फरवा लागी. केटलाक लोको अने बालको कौतुक जेवुं देखी तेनी पुंठे पडवा लाग्या. एम फरतां फरतां जे मंदिरमां अरहन्नक हतो तेना गोख तले घणा लोकना वृंदे परवरी थकी आवी. अरहन्नके माताने दीठी. महारा वियोगे एम घेहेली थईने फरे छे एम जाणी तरत ते गोखथी उतरी माताने पगे लाग्यो. एटले मानुं मन पाछुं ठेकाणे आव्युं. माता बोली—हे

पुत्र ! तुजने ए वधु वरवी न घटे. ए चारित्र चिंतामणी रत्न समान छे. माटे हे. पुत्र! तुजने हुं शुं कहुं ? ते सांजली पुत्र बोल्यो जे–हे माता ! निरंतर परिसहनी फोज साथे वढवुं, ए महाराथी न थाय (बनी शके एवुं नथी), अने तुं कहे तो आ शील्ला पमी छे तेना उपर हुं अणसण करुं. माताए कह्युं जे– हे पुत्र ! ए वातनी महारे हा छे. पछी अरहन्नके मातानी आज्ञा मस्तके चढावी एटले प्रमाण करीने धख धखती शील्ला उपर अणसण कर्युं. तेना प्रजावथी ते काल करी सुरपदवी पाम्या. माटे एवा पुत्रने पण धन्यछे अने माताने पण धन्यछे ! जुउ – पुत्र उपर वहालपण हतुं तेथी तेने दूर्गतिए जतां रोकीने सन्मार्गे चढावी सुखी कर्यो. १ए

॥ अथ पिता विषे ॥

जे बाल जावे सुतने रमाडे, विद्या जणावे सरसुं जमाडे ॥ ते तातनो प्रत्युपकार एही, जे तेहनी जक्ति हिये वहेही ॥ १ए ॥

जावार्थः– जे पिता पुत्रने न्हानपणे रमाडे, केडे तेडे, उत्तम सार वस्तु खवरावे, वली विद्यानो अज्यास करावे; ते तातनो प्रत्युपकार एटले पिताए करेला तेवा उपकारनो बदलो तो हृदयनेविषे तेनी जक्ति करवाने तत्पर थई रहे–पितानी जक्ति करे त्यारे तेनो गुण उंसीगल थाय, अपितु न थाय. ॥ १ए ॥

॥ मालिनी छंद ॥

निषध सगर राया जे हरीचंद्र चंदा, तिम दशरथ राया जे प्रसन्ना मुनिंदा ॥ मनक जनक जे ते पुत्रने मोह जाख्या, स्वसुत हित करीने तेहना काज साख्या. ॥२०॥

जावार्थः– निषध राजाने, सगर चक्रवर्त्तिने, हरीचंद्रने, चं-

डुने, तेमज वली दशरथ राजाने, अने प्रसन्नचंद्रने, पुत्र उपर मोह घणो हतो; वली मनकना पिता सिय्यंज्ञव सुरी ब्राह्मणने पण पुत्र उपर घणोज मोह हतो, तेमणे पोताना पुत्रनुं हित चिंतवीने तेमनां काम सुधार्यां ठे. १०

॥ सगर चक्रवर्त्ति अने तेमना साठ हजार पुत्रनो प्रबंध ॥

सगर चक्रवर्त्तिने साठ हजार पुत्र हता. तेउए अष्टापद तीर्थना रखोपा माटे खाई खोदवा मांकी. ते वखत तेमने ज्वलनप्रज्ञ नागदेवताये कह्युं के, महारा ज्ञुवनमां रजना अंबार पडे ठे, माटे हवे ए कामथी निवर्त्तो. ते सांजलीने ते वेलाये तेउ उसर्या. अर्थात् नागदेवताना कहेवाथी तेउए ते काम बंध राख्युं. पठी केटलेक दीवसे तेउनो विचार एवो थयो के, खोदाएली खाई कोइक काले बुराई जवानो संज्ञव ठे, माटे ते खाईमां जल जरीये तो आगल कोई तीर्थनी आशातना न करे. एवुं धारी खाईमां पाणी वाल्युं. वली कोईक प्रकारना फीटण काले ते साठे हजार पुत्रनी मती एक थवाथी तेउए दंमरत्ने करी साढीबासठ जोजननो गंगानो प्रवाह आएयो. तेणे करी केईक मुलक तणावा मांड्या. एवी रीते पाणीना प्रवाहे खाई पूरी अर्थात् पाणीथी ठलोठल खाई जराणी एटले ते (पाणीना प्रवाह) ज्वलनप्रज्ञ नागदेवताना ज्ञुवन मांहे पडवा लाग्या. तेथी ते देवताए कषायने वश थया थका मनने विषे विचार्युं जे, पूर्वे में एमने वार्या हता. तेम ठतां वार्युं न कर्युं. अर्थात् महारुं कहेवुं मान्युं नही अने पोतानुं धार्युं कर्युं. माटे हवे एमने जीवता न मुकुं. एवुं धारी क्रोधातुर थई त्यां आवीने तेणे तेउना सामुं जोई दृष्टिविष वीकुर्वि. तेने योगे करी साठ हजारना समु-

+ आ नीशानवालोउनी कथाउ ग्रंथांतरथी जाणी लेवी. ग्रंथगौरवताना कारणे अहीं लखी नथी.

दायने वाली जस्म कर्या. ते सर्वेनो राखनो ढगलो थयो. पछी ते राजपुत्रोनी साथे आवेला बत्रीस हजार राजा अने प्रधाने रात्रिने विषे विचार्युं जे,अहीं तो आ कारण (आवो योग) बन्युं, तो हवे आपणे महाराजा (सगर चक्रवर्त्ति) पासे जईने शो जवाब देईशुं ? ते एम कहेशे जे अमारा सघला पुत्रने मर्ण पमाड्या अने तमे केम जीवता आव्या ? एवो सोच करता करता तेउ सर्वे सेना सहित त्यांथी नीकलीने नगर थकी अलगा आवीने उतर्या. ए वेलाये सौधर्म इंद्र ब्राह्मणने रुपे ए नगरना चौटामां एक बालकनुं रुप वीकुर्विने तेने पोताना खंधोले नाखी रुदन करतो अने मुखथी 'आ महारा एकनाएक (फक्त एकज छे ते) पुत्रने सर्प रूसवाथी ते मर्ण पाम्यो छे' एवुं कहेतो कहेतो आव्यो. लोको तेने क्यां ? कई वेलाये अने केवी रीते करड्यो ? एम पुछवा लाग्या. तेउने कहे जे अरे भाईयो ! महारे तो ए म्होटुं दुःख छे, तमे वारंवार शुं मने पुछो छो ? तुम थकी कांई उगरे एवुं छे ? लोक कहे जे, तुं रो मां, चक्रवर्त्ति पासे जा. केम जे तेमनी सभामध्ये साठ हजार वैद्य छे. गमे ते उपाय करशे. पछी ते (ब्राह्मण रुपे बनेलो इंद्र) दरबारनी पासे आवी रोवा लाग्यो. चक्रवर्त्तिए तेने तेडावीने पुछवाथी तेणे दुखनी वात कही. चक्रवर्त्तिये वैद्यने बोलाव्या, अने कह्युं जे, तमे महारो मुसारो खाउ छो, माटे ए ब्राह्मणना बालकने जीवाडो. वैद्यो हवे शो उपाय करवो? एवा विचारमां पडी गया. केमके मर्ण पामेलो बालक जीवाडी शकायज केम ? पछी तर्क बुद्धि वापरी तेउए कह्युं के, महाराज ! जेना घरनो कोई न मुउ होय तेना चूलानी राख आवे तो हमणां जीवे. चक्रवर्त्तिये तेवी राख सारु सघले तपास करावी पण ए जोग तो न मल्यो. एटले त्यांथी उठी तेणे पोतानी मा पासे आवीने राख

मागी. मा कहे जे तमारो बाप मुउ छे. चक्रवर्त्तिये विचार्युं जे ए वात पण खरी. पछी सजामां आवी ब्राह्मणने सिखामण देवा मांमी, जे जावी आगल सर्वे निरुपाय छे. कोई पण प्रकारे मर्ण पामेलो जीवतो नथी,तो एनो सोच करवाथी शुं वले? फोकट कर्मबंधन थाय छे. माटे हवे एनो शोक तजी, रूता रहो. एवो प्रतिबोध पमामी चक्रवर्त्तिये ब्राह्मणने छानो राख्यो. तेने ब्राह्मणे कह्युं जे, महाराज! जेवुं कहो छो तेवुं पालज्यो. "तमारा साठ हजार पुत्र अष्टापदे बली मुआ." ते सांजली चक्रवर्त्ति मुर्छागत थया. शीतल उपचार करवाथी सज्ज थया एटले विलाप करवा लाग्या. तेवारे इंद्र (पेलो ब्राह्मण) मूलरुपे थई सिखामण देई चक्रवर्त्तिने छाना राखी देवलोक प्रत्ये पाछा गया. पछी चक्रवर्त्तिए पोताना पुत्र जह्नुनो पुत्र जगीरथ घेर हतो तेने सर्व सैन्य सोंप्युं. ए पुत्रमोहनो अधिकार कह्यो. ४०

॥ अथ सिय्यंजव सूरी अने तेमना पुत्र मनकनो प्रबंध ॥

श्री महावीर स्वामीना पाटे श्री सुधर्मा स्वामी थया. तेमना पाटे श्री जंबुस्वामी अने तेमना पाटे श्री प्रजवा स्वामी थया. तेमणे पोताना पाट योग्य शासनमां कोई न देखवाथी यज्ञ करता सिय्यंजव ब्राह्मणने योग्य जाणी तेमने प्रतीबोधवा माटे बे साधुने मोकली कहेवराव्युं जे– "अहोकष्टं महोकष्टं तत्वं न ज्ञायते." साधुनां आवां वचन सांजली सिय्यंजवे पुछ्युं जे तमे शुं कहो छो? साधु बोल्या जे, बीजुं तो अमने कांई कह्युं नथी. पछी यज्ञस्थंज उपाड्यो. ते तले जोयुं तो श्रीजिनेश्वर जगवाननो बिंब दीठो; तेथी प्रतिबोध पामी घरे स्त्रीने गर्जवती मुकी सिय्यंजवे चारित्र लीधुं. निरतिचारे चारित्र पाले छे. आचार विचार सिख्या. अनुक्रमे आचार्यपद पाम्या. घरे मुकी

आवेली गर्भवती स्त्रीए नव मसवाडे पुत्र जएयो. तेनुं "मनक" नाम स्थाप्युं. लोको कहेवा लाग्या जे आज ए बालकनो बाप घरे होय तो घणो उत्सव करे. अनुक्रमे ते पुत्र म्होटो थयो. तेणे पोतानी माने पुछवाथी तेणीए तेना बाप संबंधी सर्व वीना कही. ते सांभलीने मानी आज्ञा मागी जे नगरें सिय्यंभव सूरी हता त्यां ते तेमनेज थंडीले जतां पगे लाग्यो. आचार्ये आगम उपयोगे (ज्ञाने करी) ओलख्यो. पुछ्युं जे तुं कोण छे? तेणे पोतानी वात जणावी. आचार्ये कह्युं जे – तुं कोईने बतावे (कहे) नही तो कहीये. मनके कह्युं जे, हुं नही कहुं. आचार्य बोल्या जे, तुं पुत्र अने हुं पिता, बन्ने मल्या. पछी तेने उपाश्रये तेडी गया. आगम उपयोगे तेनुं थोडुं आयुष्य जाणीने सूरी महाराजे विचार्युं जे एटला (थोडा) वखतमां एनाथी बधुं भणाय नही. माटे एने उद्धरवा सारु सवारमां करवा मांडी सांजे दश वैकालिक सूत्र दश अध्ययननुं रची पूरुं कर्युं. मनक ते छ महीने पूरुं भएया. आउखुं पूरुं थवाथी काल कर्यो. श्रावके अग्निसंस्कार कर्यो. पछी उपाश्रये आव्या. श्लोक कहेतां गुरु सूरी महाराजनी आंखे आंसु आव्यां. संघे पुछ्युं–हे स्वामी! तुम सरखा चौद पूर्वधारीने आ मोह शो ? गुरु बोल्या जे–हे महानुभाव ! अमारे पुत्रने संबंधे करी एह साथे स्नेह हतो. साधुओए ते सांभल्युं, तेथी कहेवा लाग्या जे– स्वामी, जो अमे पहेलां जाण्युं होत तो एमनी पासे मल मात्रा परठवा देवाकृत नही. गुरु बोल्या जे– ए साधुनुं वैयावच्च विनय न करत तो एनो अर्थ केम सरत! जूओ एवा महापुरुषने पण पुत्रनो मोह सांभर्यो, तो बीजा छद्मस्थ जीवने सांभरे तेमां तो शुं आश्चर्य! माटे मोहने तजवो. ए मोह तजेज सुख थाय. पितानो प्यार पुत्र उपर केवो होय छे, ए आ प्रबंधथी जाणी लेवुं. १०

॥ अथ पुत्र विषे ॥ स्वागता छंद ॥

माय ताय पद पंकज सेवा, जे करे तस सुपुत्र क-
हेवा ॥ जेह कीर्त्ति कुळलाज वधारे, सूर्य जेम जगिं
तेज सधारे ॥ २१ ॥

नावार्थः– जे पुत्र सुविनित होय ते नित्ये माता पिताना पगने पूजे, अने कुलनी लाज तथा कीर्त्ति (सुजस) वधारे, वली जगतने विषे सूर्यनी परे तप तेज सुधारे एटले दीपावे. एवा होय तेने सुपुत्र कहीये. २१.

॥ अथ सुपुत्र कोण थया ते विषे ॥ शालीनी छंद ॥

गंगापुत्रे विश्वमां कीर्त्ति रोपी, आज्ञा जेणे तात
केरी न लोपी ॥ ते धन्या जे अंजनापुत्र जेवा, जेणे
कीधी जानकी नाथ सेवा ॥ २२ ॥

नावार्थः– गंगाना पुत्र गांगेये (नीष्मपिताए) पोताना पितानी आज्ञा उत्थापि नही, विश्व एटले संसारमां पोतानी कीर्त्ति रोपी– वधारी, वली अंजनाना पुत्र हनुमंत के जेणे जानकी नाथ एटले सीताना स्वामी रामचंद्रजीनी सेवा करी, ज्यारे रावणे सीताने अपहर्यां त्यारे हनुमंते लंकानगरी प्रजाली, रामचंद्रजीना दूत थया. एवा हनुमान कुमार मुक्तिगामी जाणवा. एवा सुविनित पुत्र पूर्ण पुन्याईये पामीये. अने तेवाज सुपुत्रने धन्य छे. (अंजना अने हनुमंत तथा तेना पितानो विशेष वृत्तांत आ पुस्तकना ७० मा पृष्टने विषे सज्जनता उपर अंजनाना प्रबंधमां आवी गयो छे त्यांथी जाणी लेवो.) २२

॥ गंगाना सुपुत्र गांगेय कुमारनो प्रबंध ॥

शांतनुराजानी गंगा नामे स्त्रीनो गांगेयकुमार नामनो पुत्र हतो. एक वखत शांतनुराजा वनक्रीडा करवाने गंगानदीने कांठे आव्या. त्यां एक माछीनुं वाहाण हतुं. तेमां एक वडा माछीनी रत्नवती नामे पुत्री हती. तेने राजाए दीठी. तेना रुप उपर ते मोह पाम्यो. पछी घेर आववाने पाछो फरी आगल चाले छे तथापि मन त्यां वलगी रह्युं हतुं. जेम तेम पराणे घरे आवीने राजाए मंत्रीने बोलावी कह्युं जे– गंगा कांठे रहेला वाहाणवाला माछीनी कन्यानुं मागु करो. मंत्रीए माछी पासे जई तेनी कन्या मागी. माछीए कह्युं जे– ए कन्या आपुं तो खरो ! पण गंगानो पुत्र बलवान छे माटे म्हारी पुत्री दुखणी थाय. जो ए राजा म्हारी पुत्रीना पुत्रने राज्य आपवा कबुल थाय तो हुं ए कन्या आपुं. नहिंतर न देउं. ते वात मंत्रीए राजाने कही. राजा ते सांभली खेद पाम्यो जे, गंगापुत्रने ए वात केम थाय ? एम मनमां उदासी पाम्यो. गांगेये राजाने उदासी चहेरे बेठेला जोया तेथी पुछ्युं जे, हे पिताजी ! आज उद्वेग चित्त केम छो ? पिताए सर्व वात कही. ते सांभली गांगेय बोल्या जे, हे तात ! एमां शुं दुक्कर छे. ए राज्य एना पुत्रने आपजो. म्हारे तो राज्यनो खप नथी. पुत्रे आ प्रमाणे कह्युं, परंतु पिताने प्रतित न आवी. तेवारे गांगेय कुमारे पिताने प्रतित उपजाववाने सारु पोताने हाथे लिंग छेद्युं. सर्व लोक आ बनाव जोई आश्चर्य चकित थया. पछी माछीए शांतनु राजाने कन्या दीधी. तेने बे पुत्र थया. तेमने राज्य आप्युं. ते जगत्मां जसवाद पाम्या. आवा आज्ञांकित सुविनित सुपुत्र पूर्ण भाग्योदयेज प्राप्त थाय छे. अने एवाज पिताना मननी धारणा परिपूर्ण करनार जगतने विषे खरेखरा सुपुत्र कहेवाय छे. ११

॥ तोटक छंद ॥

इम काम विलास उल्लास तए, रसरीति हदे अनु-
भावतए ॥ जिमचंदन अंग विलेप तए, हिय होय
सदा सुख संपतए ॥ २३ ॥

भावार्थः– एम कामनो विलास उल्लासे करी हृदयने विषे रसरीतिए करी अनुभव्यो कहेतां आचर्यो प्राणीने केवो थाय ? तो के– जेम अंगने विषे चंदननुं विलेपन करवाथी टाढक उपजे छे तेम प्राणीने एनाथी (कामविलासथी) सुख संपत्ति थाय.

इति श्री सूक्त मुक्तावल्यां काम वर्गस्तृतीयः
सह भाषान्तर समाप्तः ॥

॥ अथ मोक्षवर्ग प्रारंभः ॥

॥ उपजाति छंद ॥

ग्राह्याः कियंतः किल मोक्षवर्गे, कर्मक्षयासंयम भा-
वनाद्याः ॥ विवेकनिर्वेद निज प्रबोधा, इत्येवमेते
प्रवर प्रसंगाः ॥ १ ॥

भावार्थः– मोक्षमार्गे शुं ग्राह्य छे ? तो के– पहेली तो क्षमा, पछी संयम पालवुं, वली भावना, विवेक गुण, सद् अने असद्‌नो विवरो करवो, वली विवेक एटले आ करवा योग्य काम छे अने आ न करवानुं छे एवुं जाणपणुं, निर्वेद एटले संसार उपर खेद उपजे, इत्येव कहेतां ए आदि मोक्षनां कारण जाणवां. ॥१॥

॥ अथ मोक्षार्थ विषे ॥ मालिनी छंद ॥

इह भव सुख हेते के प्रवर्ते भलेरा, परभव सुखहेते
जे प्रवर्ते अनेरा ॥ अवर अरथ छंडी मुक्ति पंथा अ-
राधे, परम पुरुष सोई जेह मोक्षार्थ साधे ॥ २ ॥

भावार्थः– आ भवना सुखना वांछक जीव तो घणा छे, अने केटलाएक परभवना सुखना वांछक एवा जीव पण घणा छे; परंतु उत्तम कोण ? तो के– सघलाये अर्थ छांडीने मोक्षना अर्थने साधे, ते उत्तम पुरुष जाणवा. जे आ लोकने वांछता नथी, तेमज परलोकने पण वांछता नथी, ए बेनी इछा तजीने मोक्ष मार्गे प्रवर्त्या ते उत्तम डाह्या (जंबूस्वामी जेवा) जाणवा. २

तजिय भरत केरी जेण छे खंड भूमी, शिव पथ जिण
साध्यो सोलमे सांति सामी ॥ गजसुनि सुप्रसिद्धा जेम
प्रत्येक बुद्धा, अवर अर्थ छंडी धन्य ते मोक्ष लुद्धा ॥३॥

बीजी प्रतमां १ " किल " ने बदले " पथ " अने २ " द्याः " ने बदले " याः "शब्द छे.

ज्ञावार्थः– आ ज्ञरत क्षेत्र मध्येनी ठ खंरू पृथ्वी ठोमीने जेणे मोक्षमार्ग साध्यो एवा सोलमा तीर्थंकर श्रीशांतिनाथ ज्ञगवान तथा गजसुकमाल अने प्रत्येकबुद्ध जे जगतने विषे सुप्रसिद्ध अर्थात् घणा जाणीता ठे तेउ बीजा अर्थ ठंडी कहेतां तजीने मोक्षमार्गने विषे लुब्ध थया एटले मोक्ष मार्ग साध्यो, तेउने धन्य जाणवा. ॥ ३ ॥

॥ अथ कर्म विषे ॥

करम नृपति कोपे डुःख आपे घणेरा, नरय तिरय केरा जन्म जन्मे अनेरा ॥ शुज्ञ परिणति होवे जीवने कर्म तेवे, सुरनरपति केरी संपदा सोइ देवे ॥ ४ ॥

ज्ञावार्थः– कर्मरूप राजा कोपे तेवारे ए जीवने डुःखनी परंपरा प्रत्ये आपे, शां डुःख आपे ? तो के– नर्कनां अने तिर्यंचना ज्ञवो ज्ञवने विषे जूदां जूदां घणां जे डुःख कहेवाय ठे, ते ए जीव पामे; अने एज जीव ज्यारे शुज्ञ परिणते परणमे एटले जीवनी शुज्ञ परिणति थाय त्यारे ते देवपणानी तथा मनुष्यपणानी (इंद्र अगर राजाउना जेवी) संपदा प्रत्ये पामे. अर्थात् कर्मरुप राजा ज्यारे रीजे त्यारे सुख संपती आपे ठे. ४

करम शशि कलंकी कर्म ज्ञिक्षू पिनाकी, करम बलि नरेंडा प्रार्थना विष्णुराकी ॥ करम वश विधाता इंद्र सूर्यादि होई, सबल करम सोई कर्म जेवो न कोई ॥ ५ ॥

ज्ञावार्थः– कर्म ते प्रधान तद्रूप मुख्य ठे, कर्मे करी शशि जे चंद्रमा तेमां पण कलंक ठे, वली कर्मे करी पिनाकी ज्ञीखारीपणुं पाम्यो, अने कर्मे करी रांकपणे विष्णुए बलिराजानी प्रार्थना करी; (वली आ चरणनो बीजो एवो ज्ञावार्थ पण नीकले

बीजी प्रतमां १ " देवे " ने बदले " पावे " शब्द ठे.

बे के– कर्मे करी जीखारीपणुं पामे, कर्मे करी पिनाकी कहेतां देवतापणुं पामे, वली कर्मे करी बलवंतपणुं पामे, नरेंद्रा कहेतां राजापणुंपामे, विष्णुपणुं पामे, अने रांकपणुं पण पामे) वली कर्मना वश थकी एटले कर्मने योगे करी विधात्रापणुं पामे, इंद्रपणुं पामे, सूर्यादिपणुं पामे, ए एटलो बधो कर्मनो सबल जोरो जाणवो, एटले ए कर्म समान कोइ बलवंत नथी. ॥ ५ ॥

॥ अथ क्षमा विषे ॥

डुरित जर निवारे जे क्षमा कर्म वारे, सकल सुखं सुधारे पुन्य लक्ष्मी वधारे ॥ श्रुत सकल आराधे जे क्षमा मोक्ष साधे, जिण निज गुण वाधे ते क्षमा कां न साधे ॥ ६ ॥

जावार्थः– डुरित कहेतां माठां जे कर्म तेना समुहने टाले एवी जे क्षमा ते कर्मने वारे कहेतां रोके, वली ते सकल एटले समस्त – सघलां सुख सुधारी आपे अने पुन्यरुप लक्ष्मी वधारे; वली श्रुतज्ञान प्रत्ये आराधे अने मोक्ष मार्गने साधे अने जे निज एटले पोताना गुण अर्थात् आत्माना गुण जे ज्ञान, दर्शन अने चारित्र तेने वधारे, एवी जे क्षमा तेने हे जाई ! तुं केम साधतो नथी ? अर्थात् तुं क्षमागुण केम धारण करतो नथी ? ए क्षमागुणवडेज सर्व कार्यनी सिद्धि थाय बे, माटे क्षमा गुण आदर. ॥ ६ ॥

॥ क्षमागुण आदरनार विषे ॥

सुगति लहि खिमाए (क्षमायां) खंध सुरीस सीसा, सुगति दृढ प्रहारी कुरगडु मुनीसा ॥ गज मुनिस खिमाए मूक्ति पंथा आराधे, तिम सुगति खिमाए साधु मैतार्य साधे ॥ ७ ॥

१ बीजी प्रतमां " सुख सुधारे " ने बदले " तप सधारे " बे.

भावार्थः— खंधक सूरीना पांचसें शिष्य क्षमागुणे करी मुक्ति पद पाम्या, अने खंधक सूरी पोते क्षमा नहीं धरवाथी दुःखनी परंपरा पाम्या, वली दृढप्रहारी अने कूरगडु मुनीओ पण क्षमागुणे करी केवलज्ञान पामी मोक्षप्रत्ये पाम्या; तेमज गजसुकमाल अने मेतार्य मुनिवर क्षमा गुणे करी अंतगड केवली थई सिवसुख पाम्या. (गजसुकमाल मुनिवरनो प्रबंध आ पुस्तकमां प्रथम आवी गयो छे त्यांथी जाणीलेवो अने खंधकसूरी तथा तेमना शिष्य, दृढप्रहारी, कूरगडु अने मेतार्य मुनीना प्रबंध जाणवा योग्य अहीं लख्या छे) ३

॥ अथ क्षमागुणे करी मोक्षपद पामनार खंधकसूरिना पांचसें शिष्य अने क्षमा नहीं धरवाथी दुःखनी परंपरा पामनार खंधकसूरीनो प्रबंध ॥

कांतिपुर नगरना जितशत्रु राजाने खंधककुमार नामे पुत्र अने पुरंदरयशा नामे पुत्री हतां. ते कन्या दंडक राजाने परणावी हती. एकदा ते दंडकराजानो नास्तिकवादी पालक नामे प्रधान कोई कार्य प्रसंगे जितशत्रु राजा पासे आव्यो. ते वखते खंधककुमार राज्यसभामां बेठा हता. त्यां धर्म चर्चा चालतां नास्तिकवादी पालक प्रधानने खंधककुमारे हराव्यो. ते समय तो ते मंत्रीनुं कांई न चाल्युं पण तेना मनमां ए हास्या संबंधी सल्य घणो सालतो रह्यो. पछी काम करीने ते पोताने मूलके गयो. त्यारपछी कांतिपुर नगरना उद्याननेविषे वीसमा तीर्थंकर श्री मुनीसुव्रत स्वामी समोसर्या. वनपालके जितशत्रु राजाने वधामणी दीधी. तेने घणुं द्रव्य आपी खुशी कर्यो. पछी चतुरंगी सेना अने सर्व परिवार साथे खंधककुमारने लेई जितशत्रु राजा भगवानने वांदवा आव्या. वांदीने यथोचित ठेकाणे बेठा. प्रभुना मुखनी देशना सांभली खंधककुमार प्रति-

बोध पाम्या. घेर आवीने तेमणे मात पितानी आज्ञा मागी पांचसें कुमरो संघाते चारित्र लीधुं. निरतीचारपणे चारित्र पालतां एक वखत खंधक मुनीये प्रभु पासे दंडक राजाना देश जणी विहार करवानी आज्ञा मागी. प्रभुए कह्युं जे, त्यां तने मरणांत कष्ट उपजशे. खंधके पुछ्युं के, स्वामी ! हुं आराधक छुं के विराधक छुं ? उत्तर आपतां भगवाने जणाव्युं जे, तुज टाली (तहारा विना) सघला साधु आराधक छे. हवे भवितव्यताये करी खंधक मुनी विहार करतां पांचसो मुनीनो परिवार लेई दंडक देशे आव्या. ते खबर पालक प्रधानने थई. तेणे ए (साधु) वनमां उतरशे एवी पोताना मनमां धारणा बांधीने ते मुनीउना आव्या पहेलांज त्यां केटलांक शस्त्र जमीनमां दटाव्यां. साधु एज वनमां आवी उतर्या. राजादिक तेमने वांदवा आव्या. देशना सांभली सौ पोताने घेर गया. पछी पालके दंडक राजा पासे आवीने कह्युं जे – " खंधक, मुनीनो वेष धारण करी पांचसें योद्धाने साथे लेई तमने हणवा अने तमारुं राज्य लेवाने आव्यो छे, शस्त्र पण पूरां लाव्यो छे." राजाए कह्युं के, शस्त्र क्यां छे ? पालके जणाव्युं जे, ज्यां ए उतर्या छे त्यां ते वनमां छे. राजा कहे के, जो ते मने देखाडो तो हुं मानुं. पछी पालक पापीए मुनीउ ज्यां वनमां बेठा हता त्यांथी तेउने खसेडावीने पोते जे शस्त्र भूमीमां घाल्यां हतां ते काढी राजाने देखाड्यां. ते देखीने राजानुं मन फर्युं. तेणे पालक प्रत्ये कह्युं के हवे जे तहारा मनमां आवे ते कर. राजाए अधिकार आप्यो एटले ए अजव्ये मनुष्य पीलवानो यंत्र मंगाव्यो. पेला पांचसो साधु सुधां खंधकाचार्यने बोलावी तेमां एक एकने पीलवा मांड्या. एम चारसें नवाणु मुनीउने घाणीमां पीलतां ते दरेक साधु चार आहार पचखी समाधीपणे क्षमा

भावतां अंतगम केवली थई मोक्ष प्रत्ये पाम्या. त्यांसुधी तो खंधकाचार्यने क्षमा रही. पण पछी फक्त एक न्हानो चेलो अने पोते रह्या त्यारे तेमणे पालकने कह्युं जे– हवे तुं मने प्रथम पील, पछी जेम तने फावे तेम करजे. दुष्ट पालके कह्युं जे– आगलथी (प्रथम) ए छोकराने अने पछी तने पीलीश. एवुं कठोर वचन सांभलवाथी खंधकाचार्यने क्षमा न रही. वली पूर्वे पण श्रीमुनिसुव्रतस्वामीए कहेलुं हतुं ते वचन वृथा केम थाय ? नज थाय. तेथी तेमणे (खंधकाचार्ये) नीयाणुं कर्युं जे; " ए दंडक नृपना देशनो हुं बालनार थज्यो." पालके लघुमुनीने पील्या, ते पण अंतगड केवली थई मोक्ष पाम्या अने खंधकाचार्यने पील्या ते मरीने अग्निकुमार देवता थया. एवामां एक गीध पंखी मांसनी भ्रान्तिए करी तेमनो लोहीथी खरडाएलो ओघो त्यांथी लेईने उड्यो. ते अकस्मात् दंडक राजानी राणी अने खंधकाचार्यनी संसारीपणानी बहेन पुरंदरयशाना आंगणामां पड्यो. ओघो देखी राणीए राजाने पुछ्युं जे आवडो उपसर्ग मुनीने कोणे कर्यो ? बरोबर प्रत्युतर नही मलवाथी राणीए नगरमां खबर कढावी तेथी मुनीओने पालक पापीए पील्यानुं जाणवामां आवतां ते घणुं दुख पामी अने राजाने कह्युं जे हवे तह्यारुं मुख मह्यारे जोवुं योग्य नथी. पछी वैरागवंत थई पुरंदरयशाए चारित्र लेई विहार कर्यो खंधकाचार्य जे अग्निकुमार देवता थया हता तेमणे उपयोग दीधो तेथी द्वेष जाग्यो. तेमणे दंडक राजानो बधो देश बाली दीधो. ते हजी सुधी दंडकारण नामे ओलखाय छे. त्यां किरीयातु थाय छे. समेत शिखर भणी जतां ए अरण्य आवे छे.

आ कथाथी सार ए ग्रहण करवानो छे के, खंधकाचार्यना चेला पांचसो साधुए क्षमा करी तो अक्षय सुख पाम्या अने

आचार्य पोते क्षमा न करवाथी दुःखनी परंपरा पाम्या. माटे क्षमागुण आदरवो ए श्रेयस्कर छे. ३

॥ अथ क्षमा आदरवाथी मोक्षपद पामनार दृढप्रहारीनो प्रबंध ॥

दृढप्रहारी जाते ब्राह्मणनो एक साते व्यसनमां पूरो पुत्र हतो. तेने मावित्रे घरमांथी काढी मुक्यो त्यारे ते चोरनी पाछे गयो. चोरना नायके तेने कामनो जाणी पोतानो पुत्र करी राख्यो. ते केटलोक वखत वित्या पछी पालनो स्वामी थयो. ते जातीनो काछो माठा कर्मनो करणहार हतो. तेणे घणा जीव मार्या. एकदा धाड लेई ते कुशस्थलपूर भागवा माटे गयो. नगर लुट्युं. दृढप्रहारी एक ब्राह्मणना घरमां पेठो. त्यां ते ब्राह्मणना घरमां घणे मनोरथे खीरनुं हांडलुं चूले चढाव्युं हतुं. ब्राह्मणनां छोकरां तेने वींटाई वळ्यां हतां. दृढप्रहारी हांडले वळगवा गयो. एटले ब्राह्मणी बोली जे– हांरलां अभडाव्यामां आवशे तो पछी अमारे काम नही आवे. तेवारे ते दुष्टे ब्राह्मणीने मारी. ए वेला ब्राह्मण न्हातो हतो ते बंडुक लेई धायो. तेने पण मार्यो. एवामां तेना घरमां एक गाय हती ते सींगडां मारवा आवी, एटले ते दुष्टे तेने पण मारी. ए गाय गर्भवती होवाने लीधे तेना पेटमांथी बच्चु निकली पड्युं. ते तरफडवा लाग्युं. ते देखीने दृढप्रहारीना मनमां पस्तावो थयो जे, धिःक्कार छे मुजने ! में ब्राह्मण थके घणी हिंसा करी. वली आ चार हत्या म्होटी करी. तो हवे महारो क्यांई पण छुटकबारो नथी. एवी भावनाए दृढप्रहारीए पंचमुष्टीलोच कर्यो. पछी भागोले आवी काउसग्गे रह्यो. त्यां थई जता आवता लोकोए तेने देखी आ लूटनारो छे एम तेना उपर द्वेष लावी पत्थरे, ईटाले, धूले, लाकडीए, बंडुकनी मोहरी विगेरेए तेने-

घणो पराज्ञव कर्यो. एम दोढ मास थयो. पछी लोको थाकीने सामुं जोवा न लाग्या. ते वेला काउसग्ग पारी बीजी ज्ञागोले (पोले) जईने काउसग्गे रह्या. त्यां पण ते दिसीना लोकोए एमज दोढ मास पराज्ञव कर्यो. ते पण थाकीने छेटे रह्या. एटले त्रीजी ज्ञागोले जई रह्या. त्यां लोकोए घणा घणा परिसह कर्या; ते सघला दोढ मास सुधी त्यां रहीने सहन कर्या. ते तरफना लोकोए केम मुकी, तेवारे चोथी ज्ञागोले गया. त्यां पण दोढ माससुधी एमज पराज्ञव खम्यो. एम करतां क्षमाए करी छठे महीने केवलज्ञान पाम्या. आ कथाथी सार ए ग्रहण करवानो छे जे, दृढप्रहारी जेवा चोरी, धाडपाडु अने लुटारानो धंधो करनार तेमज म्होटी गाय, ब्राह्मण, स्त्री अने बाल गर्ज्ञ विगेरेनी हत्या करनार एज ज्ञवमां क्षमा गुणे करी आठे कर्म खपावी मोक्ष सुख पाम्या. माटे क्षमा ए म्होटामां म्होटो गुणकरछे. जेथी क्षमा आदरवी.

॥ अक्ष क्षमा गुणे सिव सुख मेलवनार
कूरगडु साधुनो प्रबंध ॥

कूरगडु साधुने निरंतर गाडुउ ज्ञरी कूर (ज्ञात) जोईतो हतो. बीजा सर्व साधु तेमने कहेता हता के तपनो म्होटो लाज्ञ छे. पण तेमनाथी तप थतो नही. परंतु ते नित्ये तपीया साधुनी ज्ञावना ज्ञावता हता. एम करतां ज्यारे संवछरीनो आगलो दिवस आव्यो त्यारे सर्व साधुए तप कर्या हता, त्यां शासन देवीए आवी प्रथम कूरगडु साधुने वांद्यां. ते देखीने मास खमणवाला साधुने क्रोध उपन्यो. एमना मनमां एम आव्युं जे–" अमने मुकी ए पेट ज्ञराने केम वांदे छे? अमे मास खमणना करवावालाने प्रथम केम न वांद्या ? एवो कषाय लावी ते बोल्या जे – हे श्राविका ! तुममां विवेक कांई नथी;

जे तपीयाने मुकीने तमे नित्ये पेट जराने वांदो छो. तेवारे शासनदेवी बोल्यां जे, एमनामां घणा गुण छे. हे साधुजी! तमनें तपीयाउने एम बोलवुं घटमान (योग्य) नथी. वली कह्युं जे "काले एमने केवलज्ञान उपजवानुं छे तेथी घणा घणा जीव, सुर, असुर, किन्नर, विद्याधरादि एमने वांदवा आवशे. तेणेकरी घणीज जीडाजीड थशे, माटे मुजथी वांदी नहीं शकाय एम विचारीने एमने में आज वांद्या." ते सांजलीने साधु बोल्या जे "एमने न केम उपजे?" त्यारे तमेज कहोने जे कोने उपजशे? एम कहीने देवी त्यांथी गयां. बीजे दिवसे एटले संवछरीने दिवसे वेला थइ त्यारे कूरगरु साधु कूरनो गाडुउ वहोरीने आव्या. तेमणे सर्व साधुने निमंत्रणा करी. तेवारे जे साधु क्रोधी हतो ते आवीने ते आहारमां थुंक्यो. थुथुकार कर्यो. कूरगरुए विचार्युं जे आज लुखो आहार हतो तेमां घीरूप साधुनुं थुंक पड्युं, ए घणुं सारुं थयुं. एवी शुज जावना जावतां जावतां कूरगरुजीने केवल ज्ञान उपन्युं. देवतादिनां वृंद तेमने वांदवा आव्या. ते जोई सघला साधुए विचार्युं जे,ए एटले गई काले जे स्त्री आवी हती ते सामान्य स्त्री नही, पण कोई देवरुप खरी. पछी सर्वे साधु पोते करेला तेमना तिरस्कारनो पश्चात्ताप करता तेमने नम्या. नमतां सर्वेने केवलज्ञान उपन्युं.

आ कथाथी ए सार ग्रहण करवानो छे के समजावथी वर्त्तवुं, कोई उपर क्रोध न करवो, अने जो तपस्यादि व्रत अनुष्टान पोताथी न बनी शकतुं होय तो ते करनारनी अनुमोदना करवी अने एवी जावना जाववी तथा तपस्वी अने मुनीना कार्यने मस्तके चढावी तेमनो अवगुण न विचारतां क्षमा आदरवी. तेथी जेम कूरगरु मुनी केवली थई मोक्ष पाम्या तेम सर्वे सुखसंपत्ति मले. क्षमा ए म्होटामां म्होटी लाजदायिनी छे.माटे क्षमा आदरवी.

॥ अथ क्षमागुण वडे मेतार्य मुनीए
मोक्ष मेलव्यानो प्रबंध ॥

पहेला ज्ञवने विषे बे गोवालीया गायो चरावतां जाफतले बेठा हता. एवा अवसरने विषे त्यां थईने साधु जता हता, तेमने तरूकाने लीधे घणी धख लागी हती. गोवालीयाउंए साधुने गायनुं डुध पाई तृषा मटाडी. साधुए धर्मदेशना प्रकाशी. गोवालीयाउंने धर्म रुच्यो, तेथी तेमणे (बन्ने जणे) दीक्षा लीधी. ते बे जण चारित्र पालता थका विचरे ढे. तेमांथी एक गोवालीया साधुए डुगंढा करी जे, साधुपणामां हाथ पग धोवाय तो सारा. एवुं चिंतव्युं. पण नाह्या धोया नही, तेम खमाव्युं पण नही. हवे ते बे गोवालीया साधुए एवो संकेत कर्यो के, आपण बे देवतानी गति पाम्या पढी त्यांथी जे पहेलो चवे तेने देवगतिमां रहेला देवताए प्रतिबोध पमाडवो. ते बे साधु आयु क्षय थये कालधर्म पामीने देवता थया. त्यां सुख विलास ज्ञोगवतां थकां स्थिति पूर्ण थये एक गोवालिया साधुनो जीव के जेणे चारित्रनी डुगंढा चिंतवी हती ते चवीने राजगृह नगरने विषे मेहरने घरे मेती चंडालणीनी कुखे पुत्रपणे उपन्यो. तेनी पमोशमां एक व्यवहारीयो रहेतो हतो. तेनी स्त्रीने मृतवंढा दोष होवाथी ते मुआं (मरीगयेलां) बालकने जणती हती, ते स्त्रीने अने मेती चंडालणीने बहेनपणां हतां. एकदा ते बे जणीउ मांहोमांहे (गर्ज्ञसंबंधी) वात करती हती. ते वखते व्यवहारीयानी स्त्रीए नीसासो नाख्यो. ते जोई चंडालणी बोली जे, हे बहेन ! आ शुं ? व्यवहारणीए जणाव्युं जे, म्हारे तो ज्ञारजूत ढे, कांई एमज (फोकट) ज्ञारे मरुं बुं. ते सांज्ञली चंडालणीए कह्युं जे, चिंता शी करे ढे ! म्हारो पुत्र तुं लेजे. तहारो मुउं बालक हुं राखीश. म्हारे पुत्र घणा ढे. हुं कांईने नहीं कहुं. पण नाम

महारुं राखवुं. आ प्रमाणे बन्ने स्त्रीउंए निश्चय कर्यां पछी केटलेक दिवसे ते बन्नेने साथे (एकज दीवसे) प्रसव थयो. चंडालणीए पोताना पुत्रने छानो व्यवहारणीने सोंप्यो, ने तेनो मृत बालक पोते लीधो. एम प्रछन्नपणे ते बन्ने स्त्रीउंए पोताना बालक उलटपुलट कर्या. व्यवहारीयाए पुत्रनुं नाम "मेतार्य" स्थाप्युं. उछव कर्यो. जणवा योग उम्मर थतां तेने निशाले मुक्यो. ते सारी रीते जण्यो. बार वर्षनी उम्मर थई त्यारे आठ व्यवहारीयाए पोतानी एकेक कन्या मली आठ कन्यानो तेनी साथे विवाह कर्यो. त्यां परणाव्यानो उछव मंडाणो छे. नोबतो गडगडी रही छे. धवल मंगल गवाय छे. सर्व स्थले आनंद वर्ताई रह्यो छे. एवा समयने विषे पूर्वना संकेतीक देवताए विचार्युं जे, ए जो संसारनी मोह जालमां बंधाशे, तो पछी ते एनाथी मुकाशे नही. माटे पाणीग्रहण थया पहेलांज तेनी पासे जईने प्रतिबोधुं तो ठीक ! पछी देवताए आवीने मेतार्यने कह्युं, पण तेणे मान्युं नही. ते वेला देवता मेतार्यना शरीरमां संक्रम्यो. मेती चंडालणी रोवा लागी अने व्यवहारीयाने घेर आवी पुत्र (मेतार्य) ने पोताने घेर लेई गई. तेणीए पोताना भर्तारने कह्युं जे, ए आपणो पुत्र छे, माटे ए व्यवहारीयो क्यानो परणावे ? आ वात बधे फेलातां पेला कन्याउंना बाप आठ व्यवहारीया जांखा थया. फरी देवताए आवी मेतार्यने कह्युं जे, कां शुं थयुं ? मेतार्य बोल्यो जे, तमे ए शुं कर्युं ? देवताए जणाव्युं जे– तें महारुं कहेवुं केम न मान्युं ? मेतार्यें कह्युं जे– तमे कहेशो तेम हुं करीश. पण महारी लाज वधारी राजा श्रेणीकनी पुत्री मने परणावी आपो. हुं चारित्र लेईश. देवताए ए वातनी हा जणीने तेने एक बोकडो आपीने जणाव्युं जे, ए बोकडो रत्न हगशे. तेनो थाल भरी तहारा बाप साथे राजाने

ભેટ મોકલજે. તે વખત રાજા તેને કાર્યપ્રસંગ પુછે ત્યારે તે એવું કહે જે, તમારી પુત્રી મ્હારા પુત્રને પરણાવો. આ પ્રમાણે કહી દેવતા નિજસ્થાનકે ગયો. મેતાર્યે એ સઘલી વાતથી પોતાના બાપને વાકેફ કર્યો. હવે બીજે દીવસે રત્ન ભર્યો થાલ લેઈને મેતાર્યનો બાપ રાજા પાસે આવ્યો. સર્વ વિનય સાચવી તે રત્ન ભરેલો થાલ રાજા આગલ મુક્યો. રાજાદિક સર્વે સજ્જનોએ તે રત્ન જોયાં. રાજાએ પુછ્યું જે, તું શું કહે છે ? ચંડાલ બોલ્યો જે– મ્હારા પુત્રને તમારી પુત્રી પરણાવો. તે સાંભલી રાજાએ અભયકુમાર (પોતાના મુખ્ય મંત્રી અને પુત્ર) સામું જોયું. અભયકુમારે ચંડાલને પુછ્યું જે, ત્હારે ઘેર એવાં રત્ન ક્યાંથી ? ચંડાલે જણાવ્યું જે, મ્હારે ઘેર બોકડો લીંડીને ઠામે રત્ન બાહીર જાય (હગે) છે. અભયકુમારે કહ્યું જે, મહારાજ ! એ મનુષ્યનું કર્તવ્ય નહી. એ દેવ પ્રકાર જાણવો. જોઈયે તો ખરા ! એમ વિચારી ચંડાલને કહ્યું કે એકવાર એ બોકડો અહીં લાવો. ચંડાલે તે લેઈ આવી તેમની પાસે બાંધ્યો. ત્યાં તે બોકડે દુર્ગંધ વિષ્ટા કરી. અભયકુમારે નિર્ધાર કર્યો કે, દેવમાયા તો ખરી ! નહિંતર ચંડાલથી રાજકન્યા મગાય નહીં. તેમ છતાં એણે માગી, તો એ દુસ્તર કામ કહીયે. એમ વિચારી અભયકુમારે કહ્યું– સાંભલ રે ચંડાલ ! ત્હારા પુત્રને રાજકન્યા તો જ આપે, કે જો તું એક રાતમાં હું જણાવું એટલાં કાર્ય કરે. તે એ કેઃ– એક તો વૈભારગિરિએ પાજ બાંધે, કે જે ઉપર છોકરાં દોડતાં ચઢે; બીજું એ કે– આ રાજગૃહ નગરનો કોટ સુવર્ણમય કરે; ત્રીજું એ કે – ખીર સમુદ્રનું પાણી આણે; અને ગંગા સરસ્વતિને જલે ન્હવરાવે; તો પછી એને (ત્હારા પુત્રને) રાજકન્યા પરણાવીયે. ચંડાલ તે સાંભલીને ગયો. રાત્રે અભયકુમારના કહેવા પ્રમાણે દેવતાએ સઘલું કર્યું. ચંડાલને ન્હવરાવી ચોખ્ખો કર્યો. બીજે દિ-

वसे राजानी बेटी तथा आठ व्यवहारीयानी पुत्रीओ मली नव-कन्याओ साथे ओछव सहित मेतार्यने पाणीग्रहण कराव्युं. ते वेला देवता आवीने ऊभो रह्यो. अने कह्युं – कां हवे शुं कहे छे ? मेतार्य बोल्यो– भाई ! हुं तमने नमीने कहुं छुं के ताजो परण्यो छुं, माटे मने सुख भोगववा द्यो. देवताए बार वर्ष आप्यां. ते पण पूरां थयां. एटले देवता आव्यो. ते वखते नवे स्त्रीओ ऊठीने पगे लागी. तेओने बार वर्ष आप्यां. ते पण सुखविलासमां पूरां थयां. तेवारे वली देवता आव्यो. एटले मेतार्ये स्त्रीओ पासे आज्ञा मागीने श्रीवीर प्रभु पासे जई चारित्र लीधुं.

हवे ते मेतार्य मुनीराज जिनकल्पीपणे मास मासखमण करतां एकदा पारणाने दीवसे राजग्रह नगरे सोनीने पाडे गोचरीये आव्या. त्यां एक सोनीए सोनाना एकसो आठ जव घडीने मेल्या हता. तेने बारणे मेतार्य मुनी ऊभा रह्या. एटले सोनी ऊठीने घरमां गयो. ते वखते त्यां आवी चढेलो क्रौंच पंखी (पेला जवने) असी कणीया जाणीने गली गयो. त्यांथी ते उड्यो, पण पेटमां भार घणो थवाथी आगल वधारे जवाणुं नहीं; जेथी त्यां नजीकमां झाड हतुं तेना उपर बेठो. मेतार्य मुनीए आ सघलो बनाव त्यां ऊभां ऊभां जोयो. हवे घरमांथी सोनी आव्यो. तेणे मुकेला स्थानके जव न दीठा, तेथी साधुने पुछ्युं जे – आ स्थानके जव मुक्या हता ते क्यां गया ? तमारा आव्या पछी बीजो तो कोई आव्यो नथी. माटे तमेज लीधा छे. जेथी ते मुजने आप. ए जव तुजने नही पचे, राजा श्रेणीकना छे. माटे वारंवार कहुं छुं जे आप. ते सांभली साधुए विचार्युं जे, जो हुं पंखीनुं नाम देईश तो ए बिचाराने मारशे, माटे ते तो न कहेवुं. एवुं धारीने मुनि मौन करी रह्या. वली सोनी बोल्यो जे– लाव, लाव, अल्या मुंड ! वारंवार कहीये

छीये तेम छतां तुं केम नथी मानतो ? केम नथी सांजलतो ? आपीदे, लाव. केटली वार कहीये ! जो हवे नहीं आपे तो हुं तने मारीश. एवुं सांजलीने वली साधुए विचार्युं जे, थतां थाय ते खरुं ! पण पंखी तो उगरशे, एज लाज. परना प्राण उगारवा ए महा लाजदायी छे. पोतानो जीव परजीवने माटे खुरबान करे ए उत्तमनुं लक्षण जाणवुं. एवुं विचारीने वली ते मौनपणे रह्या. पछी सोनीने अति क्रोध चढ्यो. तेणे नीलो वाधर मुनीने माथे बांधी तडके उजा राख्या. वाधर खेंचाणो. ते वेदनाए करी मुनीनी आंखो नीकली पडी. समता जावे क्षमा सहित ते सहन करतां मेतार्य मुनी अंतगड केवली थई मोक्ष पद पाम्या. ते वेलाए त्यां एक कठीयारे माथा उपरथी काष्टनो जारो नाख्यो. तेना धबकारे करी क्रौंच पंखीए जव गल्या हता तेम पाछा वम्या. सोनी, पंखीए जव वम्या ते देखी जयज्रांत थयो थको विचारमां पड्यो के, ए राजा श्रेणिकनो जमाई अने वली साधु, तेने 'मार' शब्द कहेवा कोइ न पामे; तेम छतां में दुष्ट काम कर्युं. तो हवे साधुवेषना शरणविना उगरवानो एके आरो नथी. एम विचारी तेना घरना सर्वे माणसो साधुनो वेष पहेरीने बेठा. त्यारपछी मेतार्य मुनीने दुःख देई मार्या संबंधीनी वात राजाए जाणी. एटले सोनीने घेर धुंस आवी. अर्थात् राजपुरुषो सोनीना घरना सघला माणसोने पकडवा आव्या. तेउए त्यां आगल सघला साधु बेठेला दीठा. पछी राजा पासे जई सेवके जणाव्युं जे, महाराज ! त्यां तो सर्व साधु छे. मुनी सीवाय बीजुं कोई देखातुं नथी. ते सांजली राजा पोते त्यां आव्या. तेउ सघलाने साधुवेषे जोई बोल्या जे- अरे सोनीउ ! तमे सबल काम कर्युं. साधुना शरण विना तमे छुटत नही. ते वेष वांदीने राजा घेर आव्यो. ते सोनीउ मुनीपणुं लेई चारित्र पा-

वीने सुखी थया. ए मेतार्य मुनीनो अधिकार क्षमां उपर कह्यो. उपदेश मालामां कह्युं छे जेः– शीसा वेढेनसीरंसी, वेढए निगाया‌इं ॥ अपिणीमेअजस्स जगवउ, नियसोमणसाविपरिकुविठे ॥

आ कथाथी सार ए ग्रहण करवानो छे के चारित्रनी डुगंछा मनथी पण चिंतववाने लीधे गोवालीया साधु चंकाल कुले उपन्या. माटे कोइए कदीपण चरित्रनी कोई पण प्रकारनी डुगंछा मात्र चिंतववी नहि. वली मेतार्य मुनीए परजीवनी दया चिंतवीने पोताना प्राण जतांसुधी क्षमा धारण करी तेथी मोक्ष मेलव्युं. माटे सर्व प्राणी उपर दयाजाव लाववो अने क्षमा आदरवी. के जेथी करीने मेतार्य मुनीनी पेठे सिद्धनां सुख पण तत्काल मेलववाने जाग्यशाली थई शके छे. ॥ ७ ॥

॥ अथ संयम विषे ॥ स्वागता छंद ॥

पूर्व कर्म सवि संयम वारे, जन्म वारिनिधि पार उतारे ॥ तेह संयम न केम धरीजे, जेण मुक्ति रमणी वश कीजे ॥ ८ ॥

जावार्थः– चारित्र ते शुं कहीये ? चय जे आठ कर्म तेने रिक्त कहेतां खाली करे ते चारीत्र कहीये. ते चारित्र पूर्वे करेलां सर्व माठां कर्मने वारे, एटले माठां कर्मनो नाश करे, अने संसारसमुद्रथी पार उतारे; एवा संयम एटले चारित्रने केम न आदरीये ? अर्थात् संयम आदरवुं. केमके, ते संयमथी तो मुक्तिरूपी नारिने वश करीये एटले वरीये. ॥ ८ ॥

हवे संयम एटले जे चारित्रथी लब्धि उपजी ते अने ते वडे पंखी जनावर चतुष्पद वाघ, सिंह जेवा हिंसक प्राणी पण मांस छांकी समकित पाम्या तेवा चारित्रवंत बलदेव साधुनो दृष्टांत कहे छे.

तुंग शैल बलदेव सुहायो, जेण सिंह मृग बोध ब-
तायो ॥ तेम संयम लहीय अरायो[+], जेण पंचम
सुरालय पायो[*] ॥ ए ॥

ज्ञावार्थः– तुंग नामे पर्वत उपर बलदेव साधु रह्या, तेमणे सिंह अने मृग विगेरेने प्रतिबोधी समकीत पमाड्या; तेउणे संयम पामीने आराध्यो, जेथी करीने पांचमा देवलोकना सुखप्रत्ये पाम्या. ॥ ए ॥

॥ चारित्रनी लब्धिए करी सिंहादिक पशुने
बोध पमाकनार बलदेवमुनीनो प्रबंध ॥

कृष्णे काल कर्या पछी बलदेवजीए चारित्र लीधुं. तेउ अतिरुपाला हता. एक वखत मध्याने नगरमां गोचरीए आवतां कुआने कांठे उन्नेली स्त्रीए तेमने दीठा. तेमना रुप पर मोही थकी ते स्त्रीए ज्ञान जूलीने घडाने बदले त्यां छोकरो बेठेलो हतो तेना गलामां दोरमानो गालो घाली तेने कुआमां फांसवा मांड्यो. साधु ते जोइ बोल्या जे, ए शुं करो छो ? तेवारे स्त्रीने ज्ञान आव्युं, अने छोकराना कंठमांथी गालो काढी घमो फांस्यो. बलदेवजीए आ बनाव पोताने लीधे बन्यो एम जाणी पोताना मन साथे निश्चय कर्यो जे, " आज पछी नगरमां न आववुं. वनमां आहार मले तो लेवो. नहिंतर तपनी वृद्धि थशे." त्यारथी तेउ वननेविषे सर्वदा रहेवा लाग्या. त्यां तेमने तपशक्ते लब्धिउ उपनी. तेणे करी तेमनी देशना सांज्ञलतां मृगलां, ससलां, सूअर, वाघ, सिंह विगेरे पशुओए मांसनां पच्चखाण कर्यां. तेउ पश्वादिकने देशना देता हता. एम करतां एक दीवस काष्ट छेदक

बीजी प्रतमां + ' अरायो ' ने ठेकाणे ' आराधे ' अने * ' पायो ' ने ठेकाणे ' साध्यो ' शब्द छे.

आव्यो. तेणे जाडनी अर्ध डाली कापी तेवारे भूख्यो थयो. एटले रसोई करवा मांडी. तेनो धूआडो मृगले दीठो. मृगे मुनी आगल आवी पुंछडी हलावी. साधु पात्र पडीलेहि मृगनी केडे केडे गया. ते ज्यां सुत्रधार अध कापी डाली आगल रसोई करतो हतो त्यां आव्या. सुत्रधार उठी साधुना सामो आव्यो अने पगे लागी बोल्यो जे – स्वामी पधारो, हुं पावन थयो, कृतपुण्य थयो. मृगलो पोताना मनमां चिंतववा लाग्यो जे, हुं मानव अवतार पाम्यो होत तो लाहो लेत. धन्य माणसना अवतारने! में शुं कर्युं जे तिर्यंचपणुं पाम्यो छुं. एवी भावनाए वासीत थयो छे. एवे समये उद्दंड वायरो वायो. तेथी अधकापेली डाल त्रणे (मुनी, सूत्रधार अने मृगला) ने माथे पडी. त्रणे ते नीचे चंपाणा. तेउ मरीने पांचमे देवलोके देवता थया.

॥ अथ द्वादश भावना विषे ॥

॥ तत्र ॥ प्रथम अनित्य भावना विषे ॥ मालिनी छंद ॥

पल पल तनु जीवी वीज झात्कार जेवी, सुजन तरुण मैत्री स्वप्न जेवी गणेवी॥ अहव मगनताए मूढता कांई माचे, अथिर अरथ जाणी एणशुं कोण राचे ॥ १० ॥

भावार्थः– संसार स्वरुप केवुं छे? पले पले आउखुं घटे छे; आउखुं केवुं छे? जाणे वीजलीनो चमकार होयनी शुं! अर्थात् जेम वीजली अल्प समय मात्र देखवामां आवे तेवुं आउखुं छे; तेम स्वजन सगां संबंधीनो मित्रपणो पण तेवो स्वप्न समान जाणवो; पण चेतननी मुढताए मग्नपणे अथीरने थीर करी जाणे, एवा कारमा उपर मूर्ख होय ते राचे पण पंडित होय ते न राचे.

बीजी प्रतमां १ "पल पल"-ने बदले "घण क्षण; २ "सुजन" ने बदले "स्वजन" ३ "अहव मगनताए" ने बदले "अहमत ममताए" एवा शब्दो छे.

अर्थात् एवा वीजळीना जबकार जेवा आयुष्य अने स्वप्नवत् सगां संबंधी अने मित्रो तथा कारमा धनादिक,के जे अथीर छे, तेना उपर मूर्ख होय तेज मग्न थईने राची माची रहे, डाह्या-पंडित होय ते तेमां राचे नहीं. ॥ १० ॥

॥ अनित्य भावना– संसार स्वरुप उपर भीखारीनो दृष्टांत ॥

कोई एक कलबणने घेर दहींनुं भाजन उघाडुं रही गयेलुं हतुं. ते खातां जीव न चाल्यो, तेम नाखी देवानुं बन्युं नहीं. तेवामां एक भीखारी आव्यो. तेने बोलावीने दहींए खप्पर भराव्युं. भीखारीए खुशाल थई गाममांथी टुकडा मागीने भेला कर्या. पछी तलावनी पाले जई टुकडा साथे दहीं खाधुं. तेनो भेणो चढवाथी ते त्यांज उंघी गयो. ते भीखारी उंघमां राज्य पाम्यो. ते राज्यमां रंभा जेवी स्त्री पग चांपे छे, घणा अरजदार अरज करे छे. घणा हाथी, घणा घोडा, पार विनानुं पायदल, एम अनेक राज ऋद्धिनो धणी थईने बेठो छे. एवामां आकाशने विषे काटको थयो तेथी ते भीखारी भडकीने जाग्यो. जुए तो राज्ये नही, लक्ष्मीए नही अने स्त्री आदि कांइ पण नही. फक्त फूट्युंशुं ठीकरुं अने भागीशी लाकडी पडेली दीठी. तेम आ संसारनुं स्वरुप पण एवुं जाणवुं. ॥ १० ॥

धरणि तरु गिरिंदा देखिए भाव जेई, सुर धनुष्य परे ते भंगुरा भाव तेई ॥ इम हृदय विमासी कारमी देह [1]माया, तजिय भरतराया चित्त योगे लगाया ॥ ११ ॥

भावार्थः– जे जे वस्तु दृष्टीए देखीए, शुं देखीये ? तो के– पृथ्वी, झाड, अने पर्वत ए सर्वना भाव केवा छे? तो के– इंद्र धनुष्यना जेवा क्षणभंगुर सायतवारमां भागतां वार लागे नही एवा

१ "माया" ने बदले "गया"; एवो शब्दो बीजी प्रतमां छे.

छे; एम हृदयमां विचारीने जे कारमी देहनी माया छे तेने तजवी, कोनी परे ? तो के-जरत चक्रवर्त्तिए जेम कायानी माया मुकीने योगथी मन लगाव्युं; तेनी परे कायानी माया तजवी. ११

॥ अथ अनित्य जावना-कायानी माया तजनार जरत चक्रवर्त्तिनो प्रबंध ॥

जरत चक्रवर्त्तिने राज्य जोगवतां चक्ररत्न उपन्युं अने आदिश्वरजीने केवलज्ञान उपन्युं, ए बे वातना वधामणीया जरतराय पासे एकी वखते आव्या. एके चक्ररत्ननी अने बीजे केवल ज्ञाननी वधामणी आपी. चक्रिए बन्नेने घणुं द्रव्य आपी सन्मान्या. पछी विचार्युं जे चक्र तो आलोके समर्थ छे, परंतु तातजी ऋषजदेवजी तो आलोके अने परलोके एम उजय लोके समर्थ छे; माटे प्रथम तातजीनी जक्ति करवी. एम निर्धार करी मरुदेवा माताने हाथीए बेसारी प्रजुने वांदवा गया. मरुदेवाजीनी आंखे रुषजदेवजीना विरहे वर्ष दीवस सुधी रोइ रोईने पम्रल वल्यां हतां. एमणे देवडुंदुजिना जय जयारव शब्द सांजली पुछ्युं जे, हे जरत ! आवो मधुर वाजानो शब्द शानो वागे छे ? जरत बोल्या जे – हे माताजी ! तमे मने उलंजो देतां हतां के तुं राज्यनो लोलपी थयो थको महारा ऋषजनी खबर मंगावतो नथी, ते तमारा पुत्रनी आ संपदा जुओ. एवुं सांजलतां हर्षोत्कर्षे मरुदेवा मातानां पम्रल बेराणां (फाटीगयां). पछी माताए प्रगटपणे रत्नमय, सुवर्णमय अने रुपामय, एवा त्रण गढ तेजे जलामल देखीने विस्मय थतां विचार्युं जे, कोना बेटा ? सर्व कारमुं छे. कोई कोईनुं नथी. हुं रोई रोईने अंधमय थई. पण ए पुत्रे संदेशो मात्र कहेवराव्यो नही, तो धिक्कार छे संसारने अने ए एक पखा रागने. एवी जावना जावतां हाथी उपर बेठेलां मरुदेवी माता अंतगड केवली थई मुक्ति पद

पाम्यां. इंद्रे आवीने तेमनी कायां क्षीर समुद्रमां न्हंवरावी. पछी इंद्र महाराज भरतेसरजीने तेडी समवसरणमां आव्या. प्रभुनी देशना सांभली गतशोक थई श्रावकनां बार व्रत उचरी भरतराये पोताना नगरमां आवी चक्रनो अठाई महोत्सव कर्यो. चक्रनी पूजा थया पछी ते (चक्र) पूर्व दिशाए आकाशे चाल्युं. चक्रवर्त्तिए पूर्व दिसीने दरीये आवी लश्कर सहित मुकाम कर्यो. त्यां अठम तप करी मागध तीर्थना देवनुं ध्यान धरी रथे बेसी समुद्रना रथनी नाभि सुधी रथ राखी बाण मेहेल्युं. ते महा नामांकित बाण अरुतालीस गाउ सुधी जई सिंहासने लाग्युं. मांहेथी अग्निना कणीया खर्‍या. ते बाण देखी देवताने क्रोध उपन्यो. प्रधाने कह्युं जे, महाराज! कषायनुं काम नही. बाण जोईख्यो. जुउ तमाराथी वलीए बाण नाख्युं हशे. तेणे नाम वांच्युं. भरत चक्रि थया जाण्या. तेनो क्रोध शम्यो. सार भेटणुं लेई आवी पगे लाग्यो. देवता कहे– महाराज, एटला दीवस अनाथ हतो, हवे हुं सनाथ थयो छुं. चक्रवर्त्तिए तेने वांसे हाथ मुक्यो. देवता पाछो गयो. चक्रिए अठमनुं पारणुं कर्युं. त्यारपछी उत्तर दक्षिण तिमिश्रा गुफानां द्वार उघाडी तेने पेली दीसे त्रण खंड म्लेछना साधी बार वर्ष सुधी लडाई करी तेने जीती गंगा नदीए आव्या. त्यां हजार वर्ष सुधी रही पाछा वलतां नव निधान प्रगट थयां. तेनो उछव कर्यो. ते निधान बार योजन लांबां अने नव योजन पहोलां भूमीमांहे चाले. ते नवे निधान पेटीने आकारे चक्रवर्त्तिना घरमां बारणा आगल होय. पण कोई चक्रवर्त्तिना निधानमां पेठां नथी, अने पेससे नहीं. पण ते मूर्ता रुप छे. ए चक्रवर्त्तिने वीस हजार तो सोनाना, रुपाना, अने रत्नना आगर जाणवा. छ खंडनी साम्राज्य घणी, एवी प्रभुता कोईने नही. अरुतालीस हजार पाटण, बहोतेर हजार म्होटां नगर, वीस हजार खेडा, कर्बट, मंडप,

द्रोण प्रमूख छन्नु क्रोड गाम, चोरासी लाख हाथी, चोरासी लाख घोडा,चोरासी लाख रथ,छन्नु क्रोड पायदल, साठ हजार पंडित,दश कोडी धजाधारी, पांच लाख दीवीधरा, एक लाख बाणु हजार स्त्री परिवार, बत्रीश हजार देश, बत्रीश हजार मुगटबद्ध राजा जेने सेवे छे. एवी समृद्धि मेळवी संपदा लेई भरत चक्रवर्त्ति अयोध्याए आव्या. त्यां बार वर्ष सुधी उछव कर्यो. एवी साम्राज्य लक्ष्मी घणा काल सुधी भोगवी. एकदा आरीसा भुवनमां बेठां थकां पोतानुं अंग जुए छे. त्यां आंगुली अरूवी देखी सकल शणगार उतार्या. ते पर पुद्गली माया देखी अनित्य भावना भावतां भरत चक्रवर्त्तिने केवल ज्ञान उपन्युं. शासन देवताए ओघो मुहुपति (साधु वेष) आप्यां. राज्य छांडीने दश हजार राजा साथे नीकळ्या. भूमीतल पावन करता भव्य जीवोने प्रतिबोधी आयु पूर्ण थये मुक्ति वधु वर्या. अनित्य भावनाथे भरत चक्रवर्त्तिए पोतानुं कार्य साध्युं. तेम बीजाए पण ए अनित्य भावना भाववी, के जेथी आत्महित अवश्य थाय छे. ॥ ११ ॥

॥ अथ द्वितीय अशरण भावना विषे ॥

परम पुरुष जेवा संहर्या जे कृतांते, अवर शरण केनुं लीजिये तेह अंते ॥ प्रिय सुहृद कुटंबा पास बेठा जिकोई, मरण समय राखे जीवने ते न कोई ॥ १२ ॥

भावार्थः– परम पुरुष जे उत्तम तीर्थंकर चक्रवर्त्ति जेवाने पण कृतांते संहर्या, तो अंत समये बीजुं एवुं कोण छे के तेनुं शरण करीये; अर्थात् शरण करवा लायक तेवुं बीजुं कोई नथी; वली अंत काले माता, पिता, भाई, मित्र, सगां संबंधी जे पासे बेठां होय ते एमने एम बेठां रहे अने ते संसारी जीव हीरूतो थाय, अर्थात् जीव चाल्यो जाय, एमां कोईनुं कांई

चाले नही. माटे अंतकाले धर्म विना बीजुं कोई शरण नही. १२

सुर गण नर कोडी जे करे जास[1] सेवा, मरण भय न
छूटा तेह इंद्रादि[2] देवा ॥ जगत जन हरंतो एम जाणी
अनाथी, व्रत ग्रहिय विछूटो जेह संसारमांथी[3] ॥ १३ ॥

भावार्थः– देवतानां वृंद अने मानवीनां वृंद (क्रोडो माणस) पण एवानी (जेनी) सेवा करे, (तेवा) इंद्रादिक देवता जेवा पण मरण भयथी छूट्या नही; एवो जगतजीवने हणतो फरतो मरणभय जाणी अनाथी मुनि संसार मुकी पंच महाव्रत ग्रहण करीने संसार समुद्रथी तर्या. ॥ १३ ॥

॥ अथ अशरण भावना– धर्मनुं शरण
करनार अनाथी मुनीनो प्रबंध ॥

कोसंबी नगरीना राजानो पुत्र भर योवनमां रोगे पीडातो हतो. राजाए घणा वैद्य तेडाव्या. ओसड उपाय घणा कर्या, पण कोईथी करार न थयो. तेनी माता घणा विलाप करे, तेनी स्त्री पण भर्त्तारने दुखे दुःखणी थई फरे, तेनी बहेन पासे बेठी थकी कहे के, वीरा तहारी वेदना मने आवो. नयणे आंसु चाले, पण कोईनुं जोर न चाले. अर्थात् माता, पिता, बहेन, स्त्री आदिक सर्वे सगां संबंधीओए बनता सघला उपाय कर्या पण कोइ प्रकारे तेनो रोग मट्यो नही. सर्व वैद्ये हाथ खंखेर्या. एकदा ते राजपुत्रे विचार्युं जे धर्म विना कोई शरण कामनुं नथी. माटे धर्मनुं शरण करुं. एवुं चिंतवी रात्रे सुतो. एटले तेने शरीरे करार थयो. प्रभाते मंगलीकनां वाजां वाग्यां. परिवार सर्वे खुशी

बीजी प्रतमां १ "जास" ने बदले "तास" २ "तेह इंद्रादि" ने बदले "जे सुरेंद्रादि" ३ "विछूटो जेह संसारमांथी" ने बदले "तरंतो जेह संसार साथी" एवा शब्दो छे.

थयो. एहवे अनाथीजी (राजपुत्र) पंचमुष्टी लोच करी नी-
कल्या. मातपितादि परिवारे घरमां रहेवाने घणुं कह्युं. त्यारे ते-
मणे कह्युं के, हे मात पितादि ! मुज अनाथीने नाथ ते धर्म
छे. माटे ते धर्मनुं शरण में आदर्युं. त्यांथी नीकलीने विहार करतां
ते एक जाड नीचें आवीने वेठाछे. एवामां श्रेणीक राजा वीर प्रभुने
वांदवा जता हता तेमणे मार्गें आवतां जाड तले अनाथी मुनीने
दीठा. तेथी हाथी उपरथी उतरी त्रण प्रदक्षिणा देइ वांदीने ते-
मनी सन्मुख वेसी पुछ्युं के, तमे काचीवये केम नीकल्या ? जूक्त
जोगी थइ संसारनो लाहो लेइ पछी अंत समये दीक्षा लेज्यो.
महारुं वचन मानो. ते सांजली साधु वोल्या– हे मगध देशना
धणी ! हुं अनाथी होवाथी साधु थयो छुं. राजा श्रेणीक समज्या
जे ए वीचारो वापडो दीसे छे, एने कोई सगो संवंधी जणातो
नथी. एम जाणी वोल्या जे, हे साधुजी ! हुं तमारो नाथ छुं.
साधुए जणाव्युं जे, हे राजा ! तुंज अनाथ छे, तो महारो नाथ केम
थइश ? राजा कहे–हे मुनी ! हुं अनाथ केम ? हुं मगध देशनो राजा,
श्रेणिक महारुं नाम छे, ऋद्धिवंत छुं, तेम छतां तमे मने अनाथ केम
कहो छो ? तमने मृषावादनो दोष लागे छे. साधुए जणाव्युं
जे, एवुं नाथपणुं तो अमारे घरे पण हतुं. जुओ, सांजलो– "को-
संवी नगरीना राजानो हुं पुत्र, महारे घरे घणा हाथी, घणा
घोडा, पायदल, नारी विलास, जला संयोगादि हता. जरयोव-
नमां मुजने रोग थयो. घणा वैद्ये उपाय कर्या, पण ते न मल्यो.
वली कोईये महारी वेदना न लीधी. तेवारे मनमां वैराग्य उ-
पन्यो. आखी रात्री सुतां दुःख गयुं, अने शरीरे सुख थयुं.
प्रजाते चारित्रनुं शरण लेई नीकल्यो छुं. " मुनीनां आवां
वचन सांजली श्रेणीक राजा उज्ञो थई मुनीने नमी, खमावी,
स्वामी माफ करज्यो, में तमने दूर्वचन कह्यां ते खमज्यो. एम

कही वली वांद्या. समकीत पाम्यो. पछी त्यांथी श्री वीर परमात्मा पासे जइ तेमने वांदी दृढ समकीती थयो. अनाथी मुनी कर्म खपावी मुक्ते गया. अशरण भावनाए नीकलवाथी अनाथी मुनी अक्षय सुख पाम्या. माटे अशरण भावना भावी धर्मनुं शरणं करवुं, के जेथी कर्म क्षय थतां शीव सुख मले छे. ॥१३॥

॥ अथ तृतीय संसार भावना विषे ॥ शार्दुलविक्रीडित छंद ॥

॥ तिर्यंचादि निगोद नारकितणी, जे योनि योनी रह्यां* ॥
॥ जीवे दुःख अनेक दुर्गतितणां, कर्म प्रभावे लह्यां ॥
॥ ज्यां+ संयोग वियोग रोग बहुधा, ज्यां+ जन्म जन्मे दुखी
॥ ते संसार असार जाणी एहवो, जे ए तजे सो सुखी॥१४॥

भावार्थः— कर्मना प्रभाव थकी आ जीवे दुःख परंपरा अनंत काल सुधी भोगव्यां, तिर्यंच थयो, नारकी थयो, निगोदमां गयो, वली जे जे योनीमां गयो त्यां त्यां अनेक प्रकारनां दुर्गतिना कर्म विलासथी, संयोगथी अने वियोगथी बहुधा कहेतां घणीवार दुःख भोगव्यां, एवुं जाणीने जेणे ए संसार स्वरूपनुं ओलखाण करी संसारने असार जाणी तज्यो अने धर्म कर्यो ते सुखी थया. अर्थात् योनी योनीने विषे अनंत काल सुधी कर्मना प्रभावे करी घणां दुःख भोगव्यां एवा आ संसारने असार जाणी जे प्राणी तजशे अने धर्मनुं शरण करशे ते सुखी थशे. ॥१४॥

(इंद्रवज्राछंद) जे हीन ते उत्तम जाति जाए, जे उच्च ते मध्यम जाति थाए ॥ ज्यूं मोक्षमेतार्य मुनींद्र जाए, त्यूं मंगु सूरी पुरयक्ष थाए ॥ १५ ॥

भावार्थः— जे हीन जाति होय ते मरीने उत्तम जातिमां

बीजी प्रतमां * "रह्यां" ने ठेकाणे "सह्यां" अने "+ज्यां" ने ठेकाणे "या" शब्दो छे.

जाय, अने जे उंच होय ते मध्यमजाति थाय; जेम हीन जातिमां उत्पन्न थयेला मेतार्यमुनीवर मोक्ष गया, तेम मुंगु आचार्य नगरयक्षनो अवतार पाम्या. १५ (मेतार्य मुनीनो प्रबंध प्रथम आवी गयो छे त्यांथी जाणी लेवो)

॥ अथ मंगु आचार्यनो प्रबंध ॥

मंगु नामे आचार्य पांचसें शिष्यना गुरु, ज्ञानना दरीया, शुद्ध मुनीमार्गना पालणहार, पंच सुमति सुमता, त्रण गुप्तिए गुप्ता, एवा परिवारे परवर्या थका एकदा मथुरा नगरीये आव्या. त्यांनो घणो संघ तेमने वांदवा आव्यो. सूरी महाराजे देशना दीधी. ते सकल संघने मन भावी. संघे आग्रह करी गुरुने नगरमां आणी शुद्ध स्थानमां राख्या. संघे सेवा भक्ति युक्ति सारी करी. सरस आहार वोहोरावबा लाग्या, तेथी रस लोलपीपणुं थयुं. एटले रसगारव थयो जे अमारा जेवो सरस आहार कोईने मलतो नथी. वली पाथरणां, उढणां, झरमर, चंद्रुआ, पाट, पाटलादिनो ऋद्धिगारव थयो. अने इंद्रिजनित सुखनुं वेदवुं थयुं. ते शाता गारव कहीये. ए त्रणे गारवमां वर्त्ततां विहार पण न करे. त्यां ने त्यां तेज नगरमां रह्या. एम करतां आयु पूर्ण थतां मंगु आचार्य चवीने नगरने खाले यक्षदेवता थया. यक्षे ज्ञाने जोयुं. तेणे पूर्वभव जाण्यो, जे में संयमयोग विराध्यो तेथी देव दुर्गतिपणुं पाम्यो. तेणे वीचार्युं जे, रखेने! ते चेलाउनी गति विगडे. एवुं जाणीने तेणे साधुने स्थंमील भूमी जतां देखी पोतानी जीभ बाहार काढी साधुने देखाडवा मांडी साधुए पुछ्युं जे, हे यक्षदेवता! एम केम करो छो? यक्ष बोल्यो जे, हुं तमारो मंगू नामे आचार्य हतो ते रसेंद्रियनो लालची थयो हतो तेथी देवताउनी गतिमांहे हीन देवगतिये उपज्यो. नगरने खाले अपवित्रमां उपन्यो. माटे तमने हुं कहुं छुं जे,

रखे तमे लालचमां पडता. साधुए समजीने त्यांथी विहार कर्यो. ॥ यतः ॥ पुरनिद्धमणेयषो, मद्दूरामंगुतदेवसोनीहसो ॥ बोद्दे ईसुविहीयणं, दसूरईबद्धुतहायएणं ॥ १ ॥ वली कह्युं जे-नीगाङ्गुणघणघराउ, नकउधम्मोमएजिणरकाउ ॥ ईढिरसमाय गुरु, अतणेननयसोहीउअप्पा ॥ १ ॥ १५ ॥

॥ अथ चतुर्थ एकत्व भावना विषे ॥

पुण्ये अकेलो जिव स्वर्ग जाए, पापे अकेलो जिव नर्क जाए ॥ ए जीव जा आव करे अकेलो, ए जाणिने ते ममता मदेलो ॥ १६ ॥

भावार्थः— एक जीव पुन्याईनो धणी अहीं सुख भोगवीने देवतापणुं पामे, अने एहीज जीव अहीं पाप प्रकृतिने पण भोगवी मरीने माठी गति पामे; अर्थात् पुन्ये करी जीव एकलो स्वर्गे जाय छे अने पापे करी एकलो नर्के जाय छे. एज एटले ए जीव आठ कर्मनी जे एकसो अठावन प्रकृति छे तेनो संचय करवे करीने सुख दुःखनो भोक्ता थाय छे. माटे हे भव्य जीवो! धर्म वस्तुनी अवहेलना न करशो, धर्मने आदरज्यो. जे ए धर्मथी सकल कर्मनी उपाधी टालीने मुक्तिए जाय, ज्यां अनंत चतुष्टयी पामे. अनंत चतुष्टय ते शुं? तो के—अनंतु ज्ञान, अनंतु दर्शन, अनंतु चारित्र अने अनंतु विरज, एवा सुखप्रत्ये पामशो. ए जीव एकलो जाय छे अने एकलो आवे छे एवुं जाणीने एनो मोह मुकी द्यो. एटले उपर जणाव्या प्रमाणे धर्म आदरी मुक्ति महोलमां बीराजशो. ॥ १६ ॥

(उपजाति छंद) ए एकलो जीव कुटंब योगे, सुखी दुखी ते तस विप्रयोगे॥ स्त्री हाथ देखी वलयो अकेलो, नमी प्रबुध्धो तिणथी वहेलो ॥ १७ ॥

भावार्थः– ए सर्व कुटुंब सगां संबंधी मळ्यां छे पण चेतन एकलो तेहीज विप्रयोगे सुखी अने दुःखी थाय छे. कोनी परे? तो के– नमीराजानी परे, ते नमी राजा त्रीजा प्रत्येक बुद्ध थया, के जे स्त्रीना हाथनी वलयो कहेतां चुडीना निमीत्तथी एकला आपोआप तुरत प्रतिबोध पाम्या. ॥ १७ ॥

॥ अथ एकत्व भावना उपर नमीराजानो प्रबंध ॥

विदेही देशमां सुदर्शन पुरनो मणीरथ नामे राजा हतो. तेनो न्हानो भाई युगबाहु हतो. तेने मयणरेहा नामे उत्तम शीलगुणे सहित महा स्वरूपवान स्त्री हती. तेना उपर मणीरथ राजा मोह्यो थको दासी साथे उत्तम उत्तम सार सार वस्तु नित्ये मोकलतो हतो. ते वडेराए मोकली जाणीने तेना मान खातर मयणरेहा लेती हती. मणीरथ तेथी खुशी थतो हतो. एकदा मणीरथे दासी साथे भाणुवचन[1] कहेवराव्युं. ते सांभलीने सती बोली जे, हुं एमना भाईनी स्त्री छुं, राज्यनी खावन छुं, तेम छतां वली एमणे कहेवराव्युं जे तुने हुं घणुं मानीश. आ वडेराना मुखथी नीकळेलुं अघटीत वचन नही सांखी शकाय तेवुं छे. पण खेर! हवेथी महारे माटे तहारे कांई पण लाववुं नही. वली कहे जे के, सूर्य पूर्वदिशा मुकीने पश्चिमे उगे नही, चंद्रमामांहेथी अंगारा वर्षे नही, समुद्र मर्यादा मुके नही, तेम सती अवरने वांछे नही. आ हकीकत दासीए मणीरथराजाने कही. तेथी ते दुष्ट विषई मणीरथे पोताना मनमां विचार कर्यो जे, भाईने हणवो. एने हण्या विना ए स्त्री महारे हाथ नहीं आवे. त्यारपछी केटलेक दिवसे मयणरेहा तथा तेनो स्वामी युगबाहु बन्ने जण कारण प्रसंगे वाडीमध्ये केलघरमां गयां हतां. त्यां रात्रे सुई रह्यां. मणीरथ, के जे मयणरेहाने मेलववा माटे युगबाहुने हणवानुं विचारी रह्यो हतो ते आवो अवसर फरी

[1] अयोग्य कहेण.

फरी नहीं मळे एम चिंतवी नगरमांथी अंधारी रात्रे एकाकी नीकली वाडीए आव्यो. त्यां रहेला चोकीदाराए टोकतां मणीरथे पोतानुं नाम जणाव्युं अने कह्युं के, रात्रिने विषे केलीवनमां दोषी दूष्मननो भय जाणी आव्या छीये. सेवके धार्युं जे एमज हशे. पछी मणीरथ केळना वनमां आव्यो, तेने जोई मयणरेहा वस्त्र जेठनी लाज करी अलगी जई उभी रही. एहवे दूष्टे खड्ग काढी भाईना कंधरामां नाख्यो. अने सोर पाडी उठ्यो जे म्हारा हाथथी खड्ग पड्यो ते भाइने वाग्यो. सेवक सौ समज्या जे आतो एज गमारनुं काम! आ विना अंवर कोई एनो दूष्मन नथी. पछी सेवके तेने केळना घरमांथी बाहार काढ्यो. हवे मणीरथने वाडीनी बारीनी वाटे जातां थकां पापना जोगथकी कालो नाग डस्यो. तेथी मर्ण पामी ते नर्के गयो. नगरमां ते वात फेलाई. एटले युगबाहुनो पुत्र चंद्रजसा राजकुमार पोताना पिताने साजा करवा सारु वैद्योने तेडी वाटीकाए आव्यो. घणा उपाय कर्या. पण ते कस्याए काम नाव्या. तेथी हवे एमने धर्मनो उपाय करवो योग्य छे एम विचारी मयणरेहा भर्तारनी पासे आवी. तेणीए पोतानुं हैयुं दृढ करी पोतानो पति सांभळे तेम तेना कान आगळ मुख राखी ते सारी रीते सद्दहे तेम तेने अरिहंत, सिद्ध, साधु अने धर्म, ए चार शरण कराव्यां. व्रत पच्चख्काण कराव्यां. पंचपरमेष्टीनुं ध्यान कराव्युं. अने वळी अढार पापस्थानक वोसराव्यां. ते सर्वे युगबाहुए सांभळीने सद्दह्यां. वळी मयणरेहाए कह्युं जे—हे स्वामी! तमे कोई उपर द्वेष न करशो, शासाटे जे कोई कोईनुं संसारमांहे नथी. तमारुं कोई नथी. तेम तमे पण कोइना नथी. एवुं मनने विषे समाधीपणे वर्त्ततां आयु पूर्ण थवाथी ते युगबाहु

१ उद्देशीने पुछवाथी.

मरीने पांचमे देवलोके देवतापणे उपन्या. हवे ते मयणरेहाए विचार्युं जे, ए ज्ञर्तारनुं म्हारे माटे मरण थयुं; तेम ढतां हुं पाढी घरमां रहुं तो वली म्हारा पुत्र चंद्रजसानी पण खोटी वले थाय. एवुं विचारी मयणरेहा घेर न जतां बारोबार केलघरमांथी गर्ज्ञवंता ढतां पण एकलां चाली नीकव्यां. साथे पुन्य सखाई ढे. ते वनमां चालतां चालतां एक सरोवरनी पाले आव्यां. त्यां केलनुं वन ढे. ते स्थले पेटमां वेदना थई, अने बालक प्रसव्यो. ते पुत्रने हाथे मुद्रीका घाली तेने रत्न-कंबले वीटीने मयणरेहा सरोवरमां अंग सुश्रुषा करवा गई. त्यांथी तेणीने वनहस्तिए सूंढमां घालीने उगाली. एटले शीलना प्रज्ञावथी विद्याधरे अधर विमानमां झीली लीधी. ते-णीना रुपने मोहे करी विद्याधर कामनी प्रार्थना करवा लाग्यो. सतीए पुब्युं जे तमे क्यां जाउ ढो? विद्याधरे जणाव्युं जे, म्हारो बाप विद्याधर ढे, ते नंदीश्वर द्वीपे चारित्र पाले ढे, ते-मने वांदवा माटे हुं जाउं ढुं. ते सांज्ञली सतीए, आना योगे करी सास्वता चैत्यनी जात्रा थई शकशे माटे एतो अवश्य क-रवी योग्य ढे एम विचारीने वली कह्युं के, एक वार म्हारा पुत्रने मेलवो. विद्याधर बोल्या जे–मिथुला नगरीनो पद्मरथ-राजा घोडे अपहर्याथी ते वनमां आव्यो हतो. ते तह्मारा पु-त्रने पोताने घेर लेई गयो अने पोतानी स्त्री प्रत्ये तेने सोंप्यो ढे. ते पोताना पुत्रनी परे तेने पाले ढे. एवुं सांज्ञली मयण-रेहा हर्षवंत थई जे, ज्ञलुं, कुशल तो ढे. हवे ते विद्याधर बोल्यो जे– म्हारो कहेण मानो. तेवारे सती बोली जे– एक वार आपण नंदीश्वर द्वीपे तो जईये! पढे तमे कहेशो ते क-रीश. तमारी वात जे हशे ते हुं सांज्ञलीश. विद्याधरे मन साथे विचार कर्यो जे, हवे ए स्त्री क्यां जशे! पढी ते विमान

लेई नंदीश्वर नामे आठमो जे द्वीप छे त्यां गयो. त्यांना देरासर मध्येना सर्वे सास्वता बिंबने जुहार्यां. पछी देरासरनी बाहार साधु बेठा हता त्यां विद्याधर मुनीने वांदी यथोचित्त स्थानके बेठां. साधुए अवधीज्ञान वडे ए खोटा ईरादाथी स्त्रीने लाव्यो छे एम जाणीने एने प्रतिबोध उपजे एवी देशना प्रकाशी. ते सांजलीने विद्याधर प्रतिबोध पाम्यो. पछी मयणरेहाए पोताना पुत्रनो संबंध पुछ्यो. साधुए कह्युं के, ए तहारा पुत्र उपर पद्मरथने पूर्व ज्ञवना संबंधे करी मोह उपन्यो तेथी तेने लेई जइने स्त्रीने सोंप्यो. तेणी तेने हर्षवंत थईने पुत्रनी पेरे पाले छे. एवा अवसरने विषे मयणरेहानो पति युगबाहु मर्ण पामीने पांचमा देवलोकने विषे उत्पन्न थयो हतो तेने त्यांनी देवीए जय जय शब्दे करी वधावीने कह्युं के, तमे एवी शी पुन्याई करी के जेथी देवलोकमां उपन्या. ते सांज्ञलतां युगबाहुदेवे पूर्वज्ञव संज्ञार्यो. तेवारे मयणरेहाने नंदिसर द्वीपे दीठां. तेथी ते देवता त्यां आव्यो. प्रथम ते स्त्रीनी पासे जई तेणीने पगे लाग्यो. पछी गुरु महाराजने वांदी उचित स्थानके बेठो. ते विपरीत देखीने विद्याधरे मनमां विचार्युं जे आ शुं ? देवता तो जूले नही, तेम छतां आ जूल्यो केम ? पछी तेणे देवताने पुछ्युं जे, आम अनुचित केम कर्युं ? प्रथम गुरुने वांदवा घटे अने तमे स्त्रीने केम वांद्यां ? देवताए उत्तरमां जणाव्युं के, महारे धर्मगुरु ए छे. माटे हुं जाणीने पगे लाग्यो छुं. धर्मगुरुने तो प्रथम वांदवा योग्य छे. पछी देवताए मयणरेहाने कह्युं जे तमे मुजने जे कहो ते हुं तमने हीत करुं. स्त्रीए कह्युं जे मुजने पुत्र पासे मुको. पछी ते सती स्त्रीए साधुने नमन वंदन करीने विद्याधरनी शिख मागी. त्यारपछी देवताए तेणीने उपाडी मिथुला नगरीए लावी मुकी. देवता तेणीनी शिख मागी

देवलोक प्रत्ये गयो. मयणरेहाए साधवी पासे आवीने चारित्र लीधुं. पंच महाव्रत पाले छे. पद्मरथराजाए पुत्रनुं "नमीकुमार" नाम स्थापन कर्युं. ते नमी कुमार यौवन अवस्था पाम्यो. पद्म- रथ राजा पिताए तेने राज्याभिषेक करी गादीए वेसारी सर्व राज्यनो अधिकारी कर्यो. एकदा ते नमी राजानो पटहाथी आ- लानथंभ थकी छूटीने नाठो. ते नासतां नासतां विदेह देशमां सुदर्शन पुरे आव्यो. त्यां तेने मणीरथ राजानी गादीए मयण- रेहानो पुत्र जे चंद्रजसा वेठो हतो तेने दरवारे वांध्यो. ते खवर नमीराजाने थई. एटले त्यां दूत मोकली तेने मुखे पट- हस्तिनी हकीकत कहेवरावी ते पोताने स्वाधिन करवानुं ज- णावराव्युं. ते सांभलीने चंद्रजसाए दूतने कह्युं के- क्यां अमे तमारे त्यां लेवा आव्या हता ? माटे वीरभोग्या वसुंधरा, ए न्याय छे. एवुं वचन सांभलीने दूत त्यांथी पाछो नमीराजा पासे आव्यो. चंद्रजसा राजाए कहेलां वचन तेणे नमीराजाना मुख आगल कही संभलाव्यां. तेथी क्रोधवंत थई भृकुटी च- ढावी नमीराजा पोतानुं विकट सैन्य लेई दर्शनपुरे चढी आव्यो. चंद्रजसा तेना सामो आव्यो. वन्ने राजानां दल सामा- सामी आवीने अड्यां. युद्धनो आरंभ थयो. आ वात मयण- रेहा साधवीए जाणी तेथी विचार्युं जे युद्धमां घणां मनुष्योनो संहार थई जशे माटे जईने प्रतिवोधुं तो संग्राम न थाय. एम धारी त्यां जवा माटे गुरुणीनी आज्ञा मागी. गुरुणीए कह्युं जे तमाराथी ते केम नीपजशे ? पछी मयणरेहा साधवीए सर्व वात मांडीने गुरुणीने कही. गुरुणीए जवानी आज्ञा आपी. साधवी प्रथम नमीराजा पासे आव्यां. नमीराजाए उभा थ- ईने वांद्यां, अने कह्युं जे गुरुणीए उपकार केम कर्यो ? साधवी कहे जे- कोनाथी लडो छो ? नमी कहे- वयरीथी. साधवी

बोल्यां जे– वयरी नथी, तमारो भाई छे. पछी सघली वात मांडीने कहेवाथी समज्यो. पण मान न मुकाय ! पछी साधवी उठीने नगरमां आव्यां. त्यां तेमने सघलांए ओलख्यां. पगे लाग्यां. पछी गर्भ संबंधी हकीकत पुछतां साधवी बोल्यां जे तमो लडो छो ते. चंद्रजसाए ए वात सांभली एटले दरवाजा उघाडा मुकाव्या अने पोते तुरत उठीने भाईने मलवा चाल्यो. नमीए ते वात सांभली तेथी ते पण छुटी चाले आवी भाईने पगे लाग्यो. बन्ने भाई मल्या. सकल वात विचार करी उत्सव सहित नगर प्रवेश कर्यो. नमीराजाने राज्य आप्युं. हजार स्त्रीओ परणावी. त्यारपछी नमीराजाने दाघज्वर उपन्यो. वैद्ये बावनाचंदननो उपाय कह्यो. हजारे स्त्रीओ बावनाचंदन घसवा लागी. तेओनी चुडीओनो कोलाहल नमीराजाने सुहाय (खमाय) नही. तेथी तेमणे कीधुं के तमे गुण करो छो पण ते मने अवगुणकर्ता थाय छे. पछी सघली स्त्रीओए चुडीओ उतारी एकेक चुडी पहेरी राखीने चंदन घसवा मांड्युं. त्यारे राजाए कह्युं के, चंदन केम घसतां नथी ? स्त्रीओ बोली जे– घसीए छीए. राजाए कह्युं के जो घसो छो तो शब्द केम थतो नथी ? स्त्रीओ कहे– तमने सुहायो नही माटे एकेक वलय (चुडी) राखी बीजी उतारी नाखी छे. आ हकीकत सांभली नमीराजा चिंतववा लाग्यो के एकाकीपणामां सार दीसे छे. घणा मले घणी उपाधी छे. एवी एकत्व भावना भावतां सुतां ठतां तेमनो रोग गयो. प्रभाते मंगलीकनां वाजां वाग्यां. नमीराजाए चारित्र लीधुं. वनमां आव्या. त्यां ब्राह्मणरुपे इंद्र आव्या. घणुंए पारखुं जोयुं. शुद्ध भावना जोई ते सुधर्मदेवलोके गया. पछी नमीराजरुषी चारित्र पाली अनेक भव्य जीवोने उपकार करी

मोक्षे पधार्या. ए प्रकारे एकत्व नावनाए नमीराजा प्रतिबोध पामी परम पद पाम्या ते संबंध कह्यो. १७

॥ अथ पंचम अन्यत्व नावना विषे ॥

जो आपणो देहज ए न होई, तो अन्य क्युं आपणो मित्त कोई ॥ जे सर्व ते अन्य ईहां नणीजे, केहो तिहां हर्ष विषाद कीजे ॥ १८ ॥

नावार्थः— पोतानी काया ते पण पोतानी नही, तो अन्य वस्तु आपणी केम थाय? तेमज कुल कुटुंब आपणो केम गणाय? अने तुं कोईनो नही, तेम तहारुं पण कोई नही; जे सर्व एटले बधुं अहींआं ले ते बीजुं जुडुंज ले, तो तेमां हर्ष अने शोक शामाटे करवो जोईये. १८

देहादि जे जीवथकी अनेरां, स्यां डुःख कीजे तस नास-केरां ॥ एम जाणीने वाघीणी प्रबोधी, सुकोसले स्वाः-यतें सार कीधी ॥ १९ ॥

नावार्थः— काया अने जीव ए बन्ने जुदां, अर्थात् काया वि-गेरे जीवथी जुदां ले तेना नाशथी एटले वियोगे डुःख करवुं शुं कामनुं; एवुं जाणीने वाघणने प्रतिबोधीने सुकोसल साधुए स्वायतपणुं एटले आत्माने हित कर्युं. १९.

॥ अथ षष्ट अशुचि नावना विषे ॥

काया मेहा एह अशुचिताई, जिहां नव द्वार वहे स-दाई ॥ कस्तूरि कर्पूर सुद्रव्य सोई, ते काय संयोग म-लीन होई ॥ २० ॥

बीजी प्रतमां १ " स्वायतें " ने बदले " स्वांगन " अने २ " मेहा " ने बदले " माया " शब्द ले.

ज्ञावार्थः–ए काया महा अशुचिए ज्ञरेली डे, पुरुषने नव द्वार अने स्त्रीने द्वार बार सदाई एटले हमेशां वह्यां करे डे; ए कायानी संगते गमे तेवी कस्तुरी, उत्तम कपुर, बरास जेवी सार सार वस्तु वावरीये ते सर्वे मल रुप थाय, एवी ए अशुचिज्ञरी काया डे.२०

अशूचि देही नर नारि केरी, म राचजे ए मलमूत्र सेरी ॥ ए कारमी देह असार देखी, चतुर्थ चक्रिय पण ते उवेखी ॥ २१ ॥

ज्ञावार्थः– ए अशूचिए ज्ञरेली अपवित्र स्त्री अने पुरुषनी काया डे, वली ए मल मूत्रनी सेरी एटले अशूचीने वसवानो मोहोल्लो डे माटे तेथी तुं म राचजे एटले खुशी थईश नही; जे माह्यो मनुष्य होय ते एने विषे राचेनही. ए कारमी मल मूत्रीनी सेरी जेवी असार काया जाणीने चोथा चक्रवर्ति सनत्कुमारे तेने उवेखी अर्थात् ए कायामां कांईये माल दीठो नही तेथी तेनो मोह डोरुी चक्रि चाली नीकल्या. २१

॥ कायानी अशूचिताई जाणी तेनो मोह डोरुी चारित्र लेनार सनत्कुमार चक्रवर्त्तिनो प्रबंध ॥

चोथा चक्रवर्त्ति सनत्कुमारनुं महा मनोहर रूप हतुं. ते पाछला धर्म नामा शेठना ज्ञवने विषे शुद्ध संयम आराधी अर्थात् रुडी रीते चारीत्र पाली आयु पूर्ण थये देवतापणे उपन्या हता. त्यांनां अपार सुख ज्ञोगवी चवीने चक्रवर्त्तिपणुं पाम्या. एकदा सौधर्मेंद्रे सज्ञानी अंदर बेठा थकां चक्रवर्त्तिनुं रुप अने कांतिनां घणां वखाण कर्यां. इंद्रे कह्युं जे–आ जंबुद्वीपने विषे हालना समये सनत्कुमार चक्रिना जेवुं अवर कोईनुं पण रुप नथी. ते वात एक देवताए न सद्दही. पछी बे देवता विचार करीने त्यांथी उठ्या. ते बेहु देवता ब्राह्मणनां रुप करीने चक्र-

र्वर्त्ति पासे आव्या. ते वखते चक्रवर्त्ति न्हावा बेठा हता. खेले भरी काया हती. पोतीउं पहेर्युं हतुं. तो पण तेमने अद्भुतपणे जोई जोईने तेउए माथु धुणाव्युं, अने विचार करवा लाग्या. तेमने जोई चक्रवर्त्तिए पुछ्युं जे तमे शुं जुउ छो ? ब्राह्मणरुपे आवेला देवताए कह्युं जे– अमे महाराजनुं रुप सांभळ्युं हतुं तेवुं दीठुं. चक्रवर्त्ति बोल्या जे–हवणां शुं जुउ छो ! ज्यारे हुं मुगट, हारादि पहेरी छत्र, चामर सहित सिंहासने बेसुं त्यारे तमे महारुं रुप जोज्यो. ते सांभळीने ब्राह्मण विचार करवा लाग्या जे– म्होटा पुरुष पोतानुं वखाण न करे, तेम छतां ए करे छे ए विपरीत छे. पछी तेउ वारु महाराज ! पछी आवीशुं, एम कही त्यांथी गया. त्यार पछी स्नान करी आभुषणादि सर्व पहेरीने चक्रवर्त्ति सिंहासन उपर आवीने बेठा, ते वेळा वळी ब्राह्मण फरीने आव्या, अने चक्रवर्त्तिने जोई माथु धूणाव्युं. चक्रवर्त्तिए ते जोई ब्राह्मणने पुछ्युं जे– पहेलां पण तमे माथु धूणाव्युं हतुं अने हवणां पण तमे माथु धूणाव्युं तेनुं शुं कारण? ते तमे अमने जेवुं होय तेवुं कहो. ब्राह्मण बोल्या जे– हे महाराज! ते रुप अने आ रुपमां तो घणो तफावत पड्यो. चक्रि कहे– ते केम ? ब्राह्मणे कह्युं जे– पहेलां तमारुं शरीर अमृतपणे हतुं अने हवणां तो झेर रुप थयुं छे. चक्रि कहे–ते केम जणाय ? विप्रे कह्युं के–तमे तंबोल खाईने थुंकी जुउ, एटले एना उपर माखी बेससे ते तत्काल मर्ण पामशे. जेथी तमने खात्री थशे जे ए वात खरी. अने अमे ब्राह्मण जोसी देवता पण त्यारेज खरा, एम आपना समजवामां आवशे. अमे ए वात कही ते चळे नही. अर्थात् आघी पाछी थाय नही, खोटी पडे नही. वळी बोल्या जे, अमो देवता सत्य कहुं छुं. तमे खात्री पूर्वक मानजो के काया बगडी. ते वात सांभळीने चक्रवर्त्तिए तेमज (ब्राह्मणोए कह्युं

तेवीरीते) परीक्षा करी जोई. एटले जेम कह्युं हतुं तेमज वात मली. ते मांही एटले पान खाईने थुंकी जोतां ते उपर बेसतां तुरत माखी मुई. एवुं कारण देखीने चक्रवर्त्तिए तत्काल खट खंडनी प्रभुता ठकुराई मुकीने दीक्षा लीधी. ते केनी परे ? तो के- जेम अही कंचुकी तजी जाय तेम चक्रवर्त्ति राज्य रुद्धि तजीने नीकल्या. बत्रीस हजार राजा तथा सुनंदा स्त्री रत्नादिके घणा विलाप कर्या पण चक्रि साधुए सामु सरखुं पण न जोयुं. पछी छठे मासे सघला पाछा वल्या. ते मुनि महाराजने सातसें वर्ष सुधी म्होटा म्होटा रोग उपन्या. ते वखत देवता तेमनी प- रिक्षा करवाने कारणे वैद्य थईने साधु समीपे आव्या. तेमने जोई साधुए पुछ्युं जे- हे देवाणुपीया ! तमे कोण छो ? ते- मणे कह्युं जे- महाराज ! अमो वैद्य छुं. अने अमे अमारा मन थकी जाणुं छुं जे, तमारा शरीरमां रोग अत्यंत उत्पन्न थयो छे. ते माटे तमे कहो तो वैद्युं करीये. साधु बोल्या जे, कर्मरोग टालवानी सामर्थाई होय तो उपचार करो. देवता बोल्या जे, ते तो सामर्थाई अमारामां नथी. पछी साधुए पो- ताना चारित्रे करी पोतानी टचली आंगलीए थुंक चोपडी तेने देखाडी. ते जोतां साक्षात् कुंदन सरखी साव सुवर्णमय मालम पडी. साधुए कह्युं जे- एटली सामर्थाई अमारामां छे, पण बाह्य थकी कांई आत्माना रोग नथी मटता, ए कीधाथी शुं थाय ? ते सांभलीने देवता साधुने वांदी देवलोके गया. साधु चारित्र पाली न्याल थया. आ अशूचि काया उपर सनत् च- क्रवर्त्तिनो दृष्टांत कह्यो. तेवी रीते जे कोई कायानी माया तजशे तेनुं कार्य सिद्ध थशे. २१

॥ अथ सप्तमी आश्रव नावना विषे ॥ मालिनी छंद ॥

इह अविरति मिथ्या योग पापादि साधे, इण उण नव जीवा आश्रवे कर्म बांधे ॥ करम जनन जे ते आश्रवा कर्म रुंधे, समर समय आत्मा संवरी सो प्रबुद्धे २२

नावार्थः– अविरती १२, कषाय १६, मिथ्यात्व ५, अने योग १५, ए सर्व आश्रव द्वार कहीये, ते आश्रवे जीव कर्म बांधे; अने एज आत्मा बलीयो थाय तो आश्रवने रोके, आत्मा समतावंत थाय, तेवारे ए हित आत्मा संवरी कहीये, ए चेतन बोधी बीज पामे. २२

॥ इंद्रवज्रा छंद ॥

जे कुंडरीके व्रत नांगि दीधुं, नाईतणुं ते वलि राज्य लीधुं ॥ ते दुःख पाम्या नरके घणेरा, ते हेतु ए आश्रव दोष केरा ॥ २३ ॥

नावार्थः– कुंमरीके व्रत नांगीने नाईनुं राज्य लीधुं; ते नर्कने विषे घणां दुःख पाम्या, ए आश्रव दोषनो हेतु जाणवो, अर्थात् आश्रव दोषे करी कुंडरीक नर्कनां दुःख पाम्या. २३ ॥

॥ आश्रव दोषे करी नर्कनां दुःख पामनार कुंमरीकनो प्रबंध ॥

महाविदेह क्षेत्रने विषे पुंडरीगीणी नयरीए कुंडरीक अने पुंमरीक नामे बे नाई राज्य नोगवता हता. एवा अवसरने विषे त्यां ज्ञानी गुरु आव्या. तेमनी देशना सांनली कुंडरीक प्रतिबोध पाम्यो. घेर आवी कुंमरीके पोताना नाई पुंडरीकने पोतानो

बीजी प्रतमां १ " योग पापादि " ने बदले " जोगकोपधि " अने २ "करम जनन जे ते आश्रवा कर्म रुंधे," ने बदले "करम जनक जेने आश्रवा जे न रुंधे, " एवा शब्दो छे.

राज्य भाग आपी चारित्र लीधुं. एमणे सरस नरस आहार कर्या तेथी रोगाक्रांत काया थई. तेणे करी परिणाम भाग्या. हजार वर्ष सुधी दीक्षा पाली पण पतित थवाने लीधे ते काम नावी. संयम मुकी घरने पछवाडे अशोकवाडीमां आवी ओघो मुहपती झाडे वलगाडी गलहत्थो देई विचारे छे जे- भाई मुजने राज्य आपशे के नही आपे ! ए वखते कोई काम प्रसंगे तेनी धाव त्यां आगल आवी. तेणीए कुंडरीकने ओलख्या. तेथी पुंडरीक राजा पासे जईने तेणीए जणाव्युं जे तमारा भाई कुंडरीक जे साधु थया हता ते वाडीमां आवी आहट दोहट ध्याय छे. ते सांभलीने पुंडरीक राजा दोडीने भाई पासे आव्यो अने कारण पुछ्युं. कुंडरीके सकल मननी वात कही. ते सांभली पुंडरीके कुंडरीकने राज्य आप्युं. घेर आव्यो. पण पटावत सामंतादिक चाकर वर्ग कोईए तेने मान्यो नही. कह्युं जे, धिक्कार पडो ! जे हजार वर्ष सुधी व्रत पाली पतित थयो. माटे कोई एनी पासे जशो मां. एम सघलाए विचार करी नक्की कर्युं. कुंडरीके राज्य लेई पेट भरी आकंठ लगण खाधुं. तेथी रात्रे महा दुखीयो थयो. तेने वमन थयुं. पासे कोई आवे नही. तेथी मनमां विचारे छे जे-मुजने करार थाय तो प्रभाते प्रत्येक प्रत्येकने पुछुं, अर्थात् सर्वेनी खबर लेउं. ते एवा दुर्ध्याने मरी सातमी नर्के गयो. अपईठाण नामा नर्क पाथडे जईने तेत्रीस सागरोपमने आऊखे आश्रव द्वारने प्रभावे करी पहोंच्यो. ए लक्षणने योगे कुंडरीकनी महा माठी गति थई. माटे आश्रव द्वारने रुंधवुं. अने संवर आदरवुं ॥ २२ ॥

॥ अथ अष्टमी संवर भावना विषे ॥

जे सर्वथा आश्रवने निरुंधे, ते संवरी संवर भाव सा-

धे ॥ ते भाववंदो गुरु वज्र स्वामी, जेणे त्रिया कंचन कोरि वामी ॥ २४ ॥

ज्ञावार्थः- सर्व प्रकारे जे आश्रवने रोके अने संवरज्ञावने आदरे ते जीव सुखी, अर्थात् सुखनो ज्ञजनार थाय; एवा कोण थया ? तो के- वज्रस्वामी, के जेणे स्त्री अने कंचननी कोडी एटले क्रोड सोना महोरो रुप आश्रवनो त्याग करीने संवर ज्ञाव आदर्यो, एमने ज्ञाव सहित हे प्राणी तमो वंदो- नमस्कार करो. २४

॥ क्रोरु सोनामहोर अने रूपवती कन्यानो अनादर करी संवरना सेवणहार श्री वज्रस्वामीनो प्रबंध ॥

पाडलीपुर नगरने विषे वसनार धनावह नामना शेठनी रुकमणी नामे महा रुपवंती कन्या श्री वयर (वज्र) स्वामीनी देशना सांज्ञली, तथा तेमनुं रुप देखी मोह पामी. तेणीए घेर आवी पोताना पिताने कह्युं जे, आ ज्ञवने विषे जो परणुं तो वयर स्वामीने. नहितर अन्य पुरुषनो महारे नियम. अर्थात् वयर स्वामी विना बीजा कोई पण पुरुष साथे हुं पाणीग्रहण नहीं करुं एवुं रुकमणीए पोताना मावापने जणाव्युं. मावापे कह्युं जे, ए साधु होवाथी परणे नही. एमणे तो आश्रव द्वारनां पच्चरकाण कर्यां ढे. आ प्रमाणे घणुं घणुं कहीने समजावी, पण ते रुकमणीए मान्युं नही. वयर स्वामीनेज परणवानी हठ लेई बेठी. ढेवट धनावह शेठ कंचननी कोडी अने रुकमणी पुत्रीने लेई उपाश्रये आव्या, अने वयरस्वामीने कह्युं के, हे महाराज ! आ महारी पुत्रीने परणो, अने आ धन वावरो. एम जणावी धनावह शेठ पोतानी पुत्री तथा धन मुकीने घेर चाल्या गया. पढी ते रुकमणीए वयर स्वामीने चलाववाने

घणा उपाय कर्या. पण लोहनी परे ते गल्या नही. कदापि लोह तो गले पण आश्रव द्वारनो सर्वथा रोध करनार वयर स्वामी न चल्या. पछी शाकीनें बोध पामी रुकमणीए पोताना बापे आपेलुं कंचन कोमी धन सात क्षेत्रने विषे वावरी चारित्र लेई आत्मानुं साधन साध्युं. ए संवर भावना जाणवी. २४

वली आश्रवद्वारने विषे कुंमरीकनो जे प्रबंध कह्यो छे तेमां जणावेला तेना भाई पुंमरीके संवरद्वार आदरी सर्वार्थसिद्ध विमाननां सुख अनुभवी एकावतारीपणुं मेलव्युं तेनो टुंक प्रबंध नीचे प्रमाणे छे.

॥ अथ संवर द्वार आदरनार पुंमरीकनो प्रबंध ॥

कुंडरीके संयमथी पतित थई उघो मुहपति फाडे वलगाडी हती ते पुंमरीके त्यां आवीने कुंमरीकनी वात सांभली तेने राज्य स्वाधिन कर्युं ते वखते उघो मुहपति लेई धार्युं जे गुरु पासे जाउं तेवारे अन्न जल लेउं. पछी ते (पुंडरीक) गुरु पासे जवा माटे त्यांथी चाली नीकल्या. रस्तामां संवर भावथी अलुआणे पगे चालतां कांकरादि खुंचे अने वागे, तेने योगे करी पगमांथी लोहीनी धाराउ चाली, पण लेश मात्र संवरमां दोष लगाड्यो नही. एम चालतां चालतां त्रीजे दीवसे ते पुंडरीक साधु चवीने सर्वार्थसिद्ध विमाने तेत्रीस सागरोपमने आउखे उपन्या. माटे संवरमां माल घणो छे तेथी ते आदरवो. आ प्रबंधनो प्रथमनो संबंध कुंमरीकना प्रबंधथी मेलवी जाणी लेवो. २४

॥ अथम नवमी निर्जरा भावना विषे ॥ मालिनी छंद ॥

दुयदस तपभेदे कर्म ए निर्जराए, उतपति थिति नाशे लोक भावा भराए ॥ दुरलभ जग बोधि दुर्लभा धर्मबुद्धी, भव हरणि विभावो भावना एह शुद्धी ॥ २५ ॥

नावार्थः— निर्जरा नाव ते शुं कहीये ? जे उयदस एटले ठ प्रकारनो बाह्य अने ठ प्रकारनो अभ्यंतर एम बारे नेदे तप कर्यो, अर्थात् बार नेदे तप ते निर्जरा नावना कहीये. तपना प्रकार विषे गाथा ॥ अणसणऊणोअरिआ, वित्तिसंखेवणं रसच्चाउं ॥ कायकिलेसो सलीणयाय, बज्झोतवोहोई ॥ १ ॥ बार नेदे तप करवे करीने कर्मनी निर्जरा थाय, उतपति अने स्थिती नाश पामे अने लोक नाव जराय; वली जगत्ने विषे बोधीपणुं अने धर्मबुद्धि जे दूर्लन ठे तेनी शुद्धि करनार ए नवनो निस्तार करनारी निर्जरा नावना ठे तेने नावो. २५.

उपजाति ठंद ॥ बे निर्जरा अकाम सकाम तेही,
अकाम जे ते मरुदेवी जेही ॥ जे ज्ञानथी कर्मह नि-
र्जरीजे, दृढप्रहारी परिं ते तरीजे ॥ २६ ॥

नावार्थः— निर्जरा बे प्रकारनी ठे, एक सकाम निर्जरा अने बीजी अकाम निर्जरा, ते अकाम निर्जरा कई कहीये ? तो के— मरुदेवी मातानी परे जे ज्ञानथी कर्म निर्जर्या ते, वली दृढप्रहारी जे कर्म खपावी तरी पार पाम्या, ए निर्जरा नावना कही.२६

॥ अथ दशमी लोक नावना विषे ॥ मालिनी ठंद ॥

जिम पुरुष विलोये ए अधो लोक तेवो, तिरिय पण
विराजे थाल स्योन्नत जेवो॥ उरध मुरध जेवो लोक नालि
प्रकास्यो, तिम त्रिनुवन नानु केवली ग्यान नास्यो ॥२७॥

नावार्थः— जेम पुरुष केडे बे हाथ देई पग पहोला करी उनो रहे तेम लोकनालि जाणवी. तिरछुं वाटला आकारे कहेतां थालने आकारे ठे; उंचुं नूमि उपरे मुक्युं जे मादल ते सरुपे ठे; नीचे नुवनपति, व्यंतर अने साते नर्क अने त्रिछुं अढी द्वीप ठे; अने उंचुं बार देवलोक, नव ग्रैवेयक, पांच अनु-

त्तर, ते उपरे सिद्धशिला छे. ए बधुं कोणे प्रकाश्युं ? तो के- त्रिभुवन भानु एटले स्वर्ग, मृत्यु अने पाताल ए त्रणे जगतने विषे प्रकाश करनार सूर्य समान केवली भगवान छे, तेणे ए धर्म प्रकाश्यो एटले कह्यो छे. २७

॥ अथ एकादश बोधि अने द्वादश धर्म भावना विषे ॥ स्वागता छंद ॥

बोधि बीज लहि जेह आराधे, तेह ईलासुत परे शिव साधे ॥
धर्म भावन लही भवि भावो, राय संप्रति परेसुख पावो॥२८

भावार्थः– बोधि बीज एटले समकित पामीने जे तेने आराधे अर्थात् समकितने जे आराधे ते ईलासुत एटले एलाची कुमारनी पेरे मोक्ष मार्ग प्रत्ये पामे; वली धर्मनी भावना पामीने तेने हे भव्य लोको तमे भावो, के जेथी संप्रति राजानी पेठे सुख पामो. पाछला भीखारीना भवने विषे धर्मनी भावना भाववाथी ते संप्रतिराजा थया अने सुख पाम्या; तेम धर्मनी भावना भाववाथी हे भव्यजनो तमे सुख संपदा पामशो. माटे समकित आराधवुं अने धर्मनी भावना भाववी. ए काव्यनो परमार्थ छे. २८. (एलाचीकुमारनो प्रबंध आ पुस्तकमां प्रथम छापेलो छे त्यांथी जोवो.)

॥ अथ धर्म भावनाथी सुख संपदा पामनार संप्रति राजानो प्रबंध ॥

संप्रतिराजा पाछला भवनेविषे द्रुमक हता. ते भीख मागतो हतो. तेना मुख तथा शरीर उपर माखीउं बणबणाट करती हती. तेने कोई पोताने बारणे उभो रहेवा देतुं नही. एक दीवस मार्गे जतां गृहस्थना घरमांथी एक मुनिने वोहारी आवतां तेणे दीठा. साधु पासे तेणे खावानुं माग्युं. तेमणे कह्युं के, अ-

माराथी आपी शकाय नही. तेम छतां ते डुमक मागतो मागतो तेमनी पाछल उपाश्रय सुधी गयो. त्यां गुरु महाराज बेठा हता. तेमनी पासे याचना करी. गुरु महाराजे जणाव्युं जे साधु सिवाय बीजा कोईने अमारो आणेलो आहार आपी शकाय नही. डुमके कह्युं के एम छे तो मने साधु करो, पण खावानुं आपो. गुरु महाराजे चिकीत्सा करी योग जाणी तेने साधु बनाव्यो. पछी सरस आहार हतो ते खूब पेट तणाय त्यांसुधी तेणे खाधो, तेथी रात्रे विशुचिका थई. पछी तेनुं उंसरू वेसड करवाने भाग्यवान गृहस्थो आव्या. तेमनी सेवा चाकरी रुडे प्रकारे करवा लाग्या. तेजोई एडुमक साधुए विचार्युं जे, पहेलां पण हुंज हतो अने हवणां पण हुंज छुं. परंतु ए सर्वे शेठीआदि साधु वेषने प्रभावे सेवा करे छे. माटे वेष म्होटोछे. धन्य छे ए वेषने ! एवी धर्मनी भावना भावतां भावतां आयु पूर्ण थवाथी मरीने ते संप्रति राजा थयो.

एकदा समये संप्रति राजा गोखमां बेठो हतो. त्यां आर्य-सुहस्ती सूरिने चौटामांहे जातां संघे पूज्या मान्या तेना दीठा-मां आव्या. एवुं कारण जोई पोतानी जात संभारतां तेणे पोतानो पाछलो डुमकनो भव दीठो, अर्थात् तेने जाति स्मरण ज्ञान थवाथी पोतानो पूर्वनो डुमकनो भव सांभर्यो. एटले ते गोख थकी हेठा उतर्या. सूरि महाराजनी पासे आवी तेमने पगे लाग्या, अने सविनय बोल्या जे, स्वामी, तमे मने उलखो छो ? गुरु महाराजे कह्युं के, तमने सर्वे उलखे छे, जे तमे राजा छो. राजाए कह्युं के, स्वामी ! हुं तमारो चेलो हतो. तमने में महारा खरा गुरु जाण्या. स्वामी, तमे मने उपकारी छो. माटे हुं तमने शी भेट करुं ! आ राज्य तमारुं छे, तेनो स्वीकार करो. गुरु महाराजे ज्ञानदृष्टीए करी तेने डुमक शिष्य जाण्यो. पछी कह्युं के, तहारुं राज्य अखंड रहो. अमे ए राज्यने शुं

करीए ! तमे तमारुं राज्य पालो– जोगवो, अने धर्मनां काम करो. ते सांजली धर्ममां दृढता करी तेणे धर्मनां घणां घणां काम कर्यां. नवा जिन प्रासाद कराव्या. जीर्णोद्धार कराव्या. जिन पडिमाउ नरावी. घणी दानशालाउ मंडावी. ज्यां परमेश्वरनो धर्म नहोतो त्यां एटले अनार्य देशमां सेवकोने मोकली त्यां धर्मनो प्रचार कराव्यो. साधुने आहारादिक मली शके एटले सुधी अनार्य लोकोने सिक्षण अपाव्युं. विगेरे विगेरे साते क्षेत्रनेविषे धर्म नावनाए करी संप्रति राजाए संपदा वावरी अने उत्तम गति पाम्या. माटे धर्म नावना नाववी. ४७

॥ अथ राग विषे ॥ इंद्रवज्रा छंद ॥

रागे म राचे नव बंध जाणी, जे जाण ते राग वशे अनाणी ॥ गौरी तणे राग महेस रागी, अर्धांग देवा निजबुद्धी जागी ॥ ४ए ॥

नावार्थः–राग ते नव बंधना हेतु रूप संसारनो संबंध छे एम जाणीने तुं तेनाथी राचीश नही, जे जाण होय ते पण रागने वश थया तो तेने अज्ञानी जाणवा; जुउ रागने वश थवाथी महादेवे पारवतीने पोताना अर्धांगने विषे राख्यां, रागने लीधे कहेवातुं पण जाणपणुं चाल्युं गयुं. माटे राग एटले मोह कोइए न करवो. मोहने महा दुःखदाई जाणवो. ४ए

॥ अथ द्वेष विषे ॥

रे जीव तुं द्वेष मने न आणे, विद्वेष संसार विकार जाणे ॥ अद्वेषथी तो सुख होए जेतुं, विद्वेषथी तो दुःख होए तेतुं ॥ (पाठांतर) रे जीव विद्वेष मने म आणे,

१ संप्रतिराजाए नवा प्रासाद तथा जीर्णोद्धार मली सवा लाख देरासर कराव्यां तथा सवा क्रोड प्रतिमाउ नरावी हती.

विद्वेष संसार निदान जाणे ॥ सासू नणंदे मिलि कूड कीधूं, जूठूं सुभद्रा शिर आल दीधूं ॥ ३० ॥

भावार्थः– हे जीव ! तुं कोईना उपर मनने विषे द्वेष लावीश नही, द्वेषने संसारनो विकार एटले रोग– संसारनुं मूल जाणजे; अद्वेष एटले कोईना उपर द्वेष न होय तेने जेटलुं सुख होय तेथी उलटुं द्वेषनो जे करनारो होय तेने तेटलुं दुःख थाय. अर्थात् द्वेष न करनारने जे सुख होय ते वर्णवी न शकाय, तेम द्वेष करनारने वर्णवी न शकाय एटलुं दुःख होय. (पाठांतर)

हे जीव ! तुं कोईना उपर मनने विषे द्वेष लावीश नही, निश्चे करीने तुं द्वेषने संसारनो वधारनार – संसारनुं मूल जाणजे; जुओ, सासु अने नणंदे मलीने द्वेषने लीधे सुभद्रा सतीना उपर खोटुं आल (कलंक) चडाव्युं. पण सुभद्रा काचे तांतणे चालणी बांधीने कुवामांथी जल काढी चंपा नगरीना देवाई गयेला दरवाजा ते पाणी छांटीने उघाडी साची सती ठरी सुखी थई, अने तेना उपर द्वेष लावनार तेनी सासु तथा नणंद सर्व लोकमां जोंठी पडीने दुःखी थई. माटे कोई उपर द्वेष न करवो. ३०

यतः– रागद्वेषोयदिस्यातां । तपसाकिंप्रयोजनं ॥ तावेवयदि नस्यातां । तपसाकिंप्रयोजनं ॥ १ ॥ भावार्थः– जो राग द्वेष मांहि भर्या छे अने तप करे छे, तो ते मांरू खोटी थाय छे; अने राग द्वेष अग्याने एटले अणजाणवे जे तप करे छे ते पण मांरू महादुःखी थावुं. अर्थात् राग द्वेष करनार अने तेने नही समजनारने तप करवानुं कांई फल मलतुं नथी.

॥ अथ संतोष विषे ॥ वसंततिलका छंद ॥

संतोष तृप्त जनने सुख होय जेवुं, ते द्रव्य लुब्ध ज-

ननेसुख नाहि तेवुं ॥ संतोषवंत जनने सहु लोक सेवे,
राजेंद्र रंक सरिखा करि तेह जोवे ॥ ३१ ॥

भावार्थः– संतोष पामेला माणसने जेवुं सुख होय, तेवुं सुख द्रव्यना लालची माणसनें न होय; संतोषवंत माणसने सर्व लोकना वृंद सेवे – माने, के जे म्होटा राजा अने रंकने सरखा जाणे छे; अर्थात् संतोषवंत माणस महाराजा अने रांक ए बंनेने सम दृष्टीए जुवे छे एटले सरखा गणे छे. जे आकरा द्रव्यना लालची प्राणी छे तेने दुखीया जाणवा. यतः ॥ सुवन्नरूपसयपत्थया ॥ भवेसेहावोकेलाससमाअसंखया ॥ नरस्सलुधस्सकिंचि ॥ ईछाहूआगाससमाअनंतया ॥ १ ॥ अर्थ– जो सोनाना अने रुपाना वधा पर्वत घरे आवे तो पण लोभीयानो लोभ पूरो न थाय ॥ १ ॥ यतः ॥ तनकी तृक्षा सहेल हे, सवा सेर के सेर ॥ मनकी तृक्षा नहूं मिटे, जो घर आवे मेर ॥१॥ ते माटे संतोष ए सुखनुं मूल छे. ॥ श्लोक ॥ सर्प्पाःपिबंतिपवनंचहूर्वलास्ते ॥ सुकैस्तृणैवनगजाबलीनोभवंति ॥ कंदैफलैः मुनिवरागमयंत्यकालं ॥ संतोषएवपुरुषस्यपरंनिधानं ॥ १ ॥ ३१ ॥

॥ अथ विवेक विषे ॥ उपजाति छंद ॥

जो जेह चित्ते सुविवेक भासे, तो मोह अंधार विकार
नासे ॥ विवेक विज्ञानतणे प्रमाणे, जीवादि जे वस्तु
स्वभाव जाणे ॥ ३२ ॥

भावार्थः– जेना चितमां विवेक आवे तेनो मोहरूपी अंधकारनो विकार नाश पामे; विवेकाईए करी विज्ञान चतुराई सर्व प्रमाण थाय अने ते जीवादिक वस्तु स्वभावने पण जाणे ॥ ३२ ॥

बीजी प्रतमां १ " संतोष वृक्ष " ने बदले " संतोषवंत " छे. अने २ "तेह" ने बदले " जेह " छे.

(इंद्रवज्रा छंद)

बाळापणे संयम योग धारी, वर्षारुते काचलि जेण तारी ॥
श्रीवीरकेरो अयमत्त तेई, सुज्ञान पाम्यो सुविवेक लेई. ३३

भावार्थः- जे महापुरुष बाळकपणामां संयम योग धारी थया एटले बाल्यावस्थामां जेणे चारित्र लीधुं, अने वर्षारुते एटले चोमासामां जेणे पाणी उपर काचली तारी; ए श्रीमहावीर स्वामी भगवानना अईमत्ता नामे शिष्य उत्तम विवेकपणाए करी ईरियावही पडिकमतां " पणगदग मट्टिमकडा " ए पद भावतां केवलज्ञान पाम्या ॥ ३३ ॥ माटे विवेक ते वडी वात छे.

॥ अथ निर्वेद विषे ॥ शार्दूलविक्रिडित छंद ॥

जे बंधूजन कर्म बंधन जिसा, भोगा भुजंगा गिणे ॥
जाणंतो विषसारिखी विषयता, संसारता ते हणे ॥
जे संसारह राग हेतु जनने, संसार भावा हुवे ॥ भावो
तेह विरागवंत जनने, वैराग्यता दाखवे ॥ ३४ ॥

भावार्थः- जे प्राणी ए कुटुंबने कर्मबंध जेवा माने, अने ए संसारिक भोगने सर्प तुल्य गणे; तथा विषयने विष एटले झेर समान जाणे, ए प्राणी संसारताने हणे एटले संसारने छोडे; संसारिक रागहेतु जे लोक छे ते संसार भावने भजे, पण जे वैराग्यवंत प्राणी छे ते तो वैराग्यता बतावे. माटे तेवां वैराग्यवंत प्राणीने भावो. ३४

(वसंततिलका छंद)

निर्वेद ते प्रबल दुर्भर बंदिखाणो, जे छोडवा मनधरे बुध तेह जाणो ॥ निर्वेदथी तजिय राज विवेक कीधो, योगींद्र भर्तृहरि संयम योग लीधो ॥ ३५ ॥

बीजी प्रतमां १ " सुज्ञान " ने बदले " सुध्यान " छे.

ભાવાર્થઃ— નિર્વેદ તે સંસાર ઉપર ખેદ ઉપજે — સંસારને બં-
દિખાનારૂપ જાણે, જેમ બંદિખાનામાંથી છુટ્યો તે પાછું બંદિ-
ખાના સામું ન જુવે એવો ખેદ ઉપજે, તેમ એ સંસારને બંદીખાના
જેવો જાણીને વિવેક લાવી તેમાંથી છૂટ્યા તે કોણ? તો કે, ભ-
ર્તૃહરી રાજા, કે જેણે રાજ્યવિલાસ મુકીને યોગેંદ્ર માર્ગ લીધો,
અર્થાત્ ભર્તૃહરી રાજાએ સંયમ જોગ લીધો. ૩૫

॥ અથ નિર્વેદે કરી સંયમ લેનાર ભર્તૃહરી
રાજાનો પ્રબંધ ॥

ભર્તૃહરી રાજા રાજ્ય કરતા હતા એવા અવસરનેવિષે એક
પરદેશી વાણીયાએ આવી અમૃત ફલ ભેટ મુક્યું. રાજાએ તે ફ-
લના ગુણ પુછ્યા. તેવારે તે વ્યાપારી વાણીયાએ તેના ગુણ કહેતાં
જણાવ્યું કે— જો કોઈ ગરઢો માણસ એ ફલ ખાય તો તે નવ-
યૌવનવંત થાય. તે વાત લક્ષમાં લેઈ રાજાએ એ ફલ પોતાની રા-
ણીને ખાવા આપ્યું. એવો વિચાર કરીને કે, જો એ ફલ ખાય તો
સદા કાલ યુવાનપણે રહે, એટલે એ કીશોરી અર્થાત્ સોલ
વર્ષની નવયૌવના રહે. રાણીએ એ ફલ લેઈને વિચાર્યું જે, હું ખાઉં
તે શા કામનું! જો મ્હારો પ્રાણવલ્લભ પ્રાણજીવન જાર પુરુષ
જે મહાવત છે તે ખાય તો જ્યાં સુધી જીવીયે ત્યાં સુધી તે હ-
મેશાં યૌવનવંત રહે. પછી રાણીએ એ ફલ પોતાના જાર મહાવ-
તને આપ્યું. તેણે વિચાર કર્યો કે, એ ફલને હું ખાઈને શું કરું!
જો એ મ્હારે પ્રીતિવંત જે ગણિકા છે તે ખાય તો સદા જુવાનની
જુવાન રહે માટે તેને આપવું સારું છે. એમ ધારીને મહાવતે તે
ફલ ગણિકાને આપ્યું. ગણિકા એ ફલનો ગુણ જાણી વિચા
રવા લાગી જે, હું ખાઈને શું સારું કરનારી છું! મ્હારાથી તો
નઠારું થાય છે, અને એથી પણ વલી વિશેષ નઠારું એ ફલ ખા-
વાને લીધે નવયુવાન થવાથી થવાનો સંભવ છે, માટે એ ફલ

राजाने भेट करुं. केमके, ए जीव घणा जीवोनो पालणहार छे, माटे ए खाय तो सारुं. एम धारीने ए फल गणिकाए लावीने राजाना मों आगल भेट मुक्युं. ते फल देखी राजाए उलख्युं. पछी राणी पासे जई राजाए पुछ्युं जे, कहो राणी ! तमने जे असे फल आप्युं हतुं तेने तमे शुं कर्युं ? जे कर्युं होय ते साचुं कहो, ते तमे कोने आप्युं ? तेवारे राणीए विचार्युं जे, हवे अहींयां खोटुं बोले सिद्धि नथी. एमने कांई पगेरुं लाध्युं दीसे छे. माटे मुजने पुछ्युं. नहींतर कदापि मने न पुछे. एमने कोई भेदू मल्यो जणाय छे. माटे हवे अहींयां जूठुं नहीं चाले, तेथी साचुं कहुं. पछी मनमां करेला मनसुबा प्रमाणे राणी बोली जे, महाराज ! गुन्हो माफ करो तो कहुं. राजाए कीधुं के, गुन्हो माफ कर्यो. राणीए जणाव्युं जे, में तो महावतने आप्युं. तरतज राजाए महावतने तेडाव्यो, अने कह्युं के, रे ! राणीए आपेलुं फल तें कोने आप्युं. तेणे कह्युं के, में गणिकाने आप्युं. गणिकाने तेडावीने पुछ्युं के, तें मुजने ए फल केम आप्युं ? ते कहे जे- हुं जगत्रनो उतार ए फल खाईने शुं करुं ! एम विचारीने जगजीवनो पालणहार एवा तमो महाराजाने में ए फल आप्युं. कारण के, तमे जगतने उपकार करो छो तेथी वली विशेष उपकार चिरकाल करशो. एम विचारीने आप्युं. ए निमित्ते राजाने वैराग्यनी वासना थई. ॥ काव्य ॥ याचंतयामि सततं मयिसानुरक्ता ॥ साप्यन्नमिछतितम स्वजनोनुंसक्त ॥ असत् कृतेच परितुष्यंतिकाचदन्या ॥ धिकतांचतांचमदनां चंद्रमांचमांच ॥ १ ॥ एवुं विचारीने राजा भर्तृहरी योग लेई नीकल्या. एमनुं गायन कानफट्टा गाय छे. ते संसार उपर निर्वेद एटले खेद पामीने नीकल्या. माटे संसार ए खेद आणवा योग्य छे. तेने तजी देनारा सुखी थाय छे. ३५

॥ अथ आत्मबोध विषे ॥

जे मोहनिंद तजि (पाठांतर — जयी.) केवल्ल बोधि
देते, ते ध्यान शुद्धि हदी ज्ञावना एक चित्ते ॥ ज्यूं
निःप्रपंच निज ज्योति स्वरूप पावे, निर्बोधथी (पा-
ठांतर — निर्बेध जे) अखय मोक्ष सुखार्थ आवे.३६

ज्ञावार्थः— जे मोहनिंद्राने तजे (मोह निंद्रानो जय करे) ते केवल बोधबीज पामे, ते ध्याननी शुद्धिए करी हृदयनेविषे एक चित्ते ज्ञावना (ज्ञावे जेथी करी) ते निःप्रपंचपणे एटले प्रपंच रहितपणे ज्योतिस्वरुपीपणुं पामे, अने ए निर्बोध एटले निर्वेद ते संसार उपर खेद तेहिज अक्षय सुख जे मोक्षसुख ते प्रत्ये पामे. अर्थात् मोहरुपी निंद्रानो त्याग करवे करीने बोध बीज पामी हृदयने विषे एक चित्तथी तेनी ज्ञावना ज्ञावतां अने संसार उपर खेद थवाथी तेनो त्याग करतां मोक्षसुख मळे. ३६ ॥

(मालीनी छंद ॥)

ज्ञव विषय तणां जे चंचळा सौख्य जाणी, प्रियतम
प्रिय ज्ञोगों ज्ञंगुरा चित्त आणी ॥ करमदळ खपेई के-
वळ ज्ञान लेई, धन धन नर तेई मोक्ष साधे जिकेई३७

ज्ञावार्थः— ज्ञव एटले संसार तेना जे विषय शब्द, रुप, रस, गंध, अने फरस, एवां पांचे इंद्रिना त्रेवीस विषय अने सुख तेने चंचलपणे जाणे छे, प्रियतम प्रिय ज्ञोग ते घणाज वहालां, एवा जे ज्ञोग ते केवा ? तो के, जेने क्षणेकमां बगडतां वार न लागे एवुं चित्तमां जाणे, ते प्राणी कर्मनां दळ एटले कर्मोनो समूह खपावीने केवल ज्ञान प्रत्ये पामे, अने धन्य धन्य ए नर एटले एवा उत्तम मनुष्यने के जे मोक्ष पदने साधे. अर्थात् संसारनी असारता जाणी सुखादिकनुं चंचळपणुं चिंतवी, तथा जे ज्ञो-

र्गादि वहाला प्रिय लागे छे ते क्षणवारमां नाश पामशे – वग-डशे एवो संसार उपर निर्वेद लावीने जे मनुष्य बोधी बीज उ-पार्जि संसारनो त्याग करी संयमाराधी केवलकमला वरीने मोक्ष सुख मेलवे तेने धन्य धन्य छे.॥ ३७ ॥ इति मोक्ष वर्ग समाप्तम्

॥ हवे धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष, ए चारे वर्गनुं टुंकामां वर्णन करे छे ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम धर्म वर्ग ॥

दुर्गतीमां पडतां सर्व जंतुने, धरणीथी धरमी कह्यो तेहने ॥ संजम आदि कह्यो ते दश विध भलो, सुगुरुथी भवि धर्म ते सांभलो ॥ ३८ ॥

भावार्थः– दुर्गतिने विषे पडतां एवां जे जंतु जीवने धरण कहेतां धरे, नामने उधरे ते धर्म कह्यो, ते संयम आदे दश प्रकारनो घणो रुडो कह्यो छे, तेने हे भविप्राणी ! तमे सद्गुरुना मुखनी वाणीए करी सांभलो. ए प्रकारे जेणे धर्म सांभल्यो ते हर्ष अने संतोष पाम्या. ३८

॥ अथ धर्मना दश भेद ॥ गाथा ॥

खंति मद्दव अज्जव ॥ मुत्ति तव संजमेय बोधव्वे ॥
सच्च सोयं अकिंचणंच ॥ बंभंच जई धम्मो ॥ १ ॥

अर्थः– क्षमा १, कोमलपणुं २, सरलपणुं ३, निसंग पणुं ४, तप ५, संजम ६, जाणवो; सत्य ७, सोच ते अंतर सोच ८, निर्लोभपणुं ए, ब्रह्मचर्य धरवुं १० (ए दश प्रकारनो धर्म गुरुमुखथी सांभलीने आदरवो.) ॥ १ ॥ ए धर्म वर्ग कह्यो.

॥ अथ द्वितीय अर्थ वर्ग ॥

अरथ अरथ जेथी धर्म अर्थथी सिद्धी थावे, धरम करम सिद्धी अरथ विणुं किं न पावे ॥ सकल विभव केरो अर्थ ए सार जांणी, सपत प्रवर केरो वावरो सोख्य खाणी ॥ ३७ ॥

भावार्थः– धर्म जो कर्यो होय, सेव्यो होय, आदर्यो होय, तो अर्थ जे संपदा परिग्रह ते पामतां वार नही, ते परिग्रह विना धर्मनां काम ते एके बंध न बेसे; सकल विभव जे संपदा, तेनुं सार ते सुख निरवाण, ते अर्थनुं सारपणुं शुं छे ? तो के– प्रवर कहेतां प्रधान एवां सपत कहेतां जे सात क्षेत्र, ते कीयां ? तो के– जिनभुवन कहेतां देरासर १, प्रभुनुं बिंब २, पुस्तक ३, साधु ४, साधवी ५, श्रावक ६, श्राविका ७, ए साते क्षेत्रनेविषे वित्त वावरवुं, ए अर्थ एटले संपदा लक्ष्मी पाम्यानुं सार जाणवुं, के जे सुखनी खाणरुप छे. ३७ ॥

॥ अथ तृतीय काम वर्ग ॥

धरम अरथथी काम न वेगलो, धरम काम करे जगे ते भलो ॥ सकल जीवने सौख्य ए काम छे, परम अरथमां काम निदान छे ॥ ४० ॥

भावार्थः– धर्मथी अने अर्थथी कांई काम वेगलो नथी, धर्मनां काम करे ते प्राणीने जगतनेविषे भलो एटले रुडो जाणवो; सकल एटले बधा जगतजीवने सौख्यनुं करणहार ते काम छे, अने परम कहेतां उत्कृष्ट आकरा अर्थमां ते कामज निदान कहेतां निश्चे छे. अर्थात् धर्म करवे करीने अर्थ पाम्या पछी तेनो व्यय धर्मनां रुडां काम करवे करीनेज थाय छे. (आ जगोए काम शब्दनो अर्थ कार्यरुपे वर्णवेलो छे) ४० ॥

॥ अथ चतुर्थ मोक्ष वर्ग ॥

अथ मोक्ष वर्गे प्रवरे प्रवरो भवत्वं, येतोपदेशे विधीनां भव शंभवत्वं॥ मोक्षार्थ साधन फलं प्रवरं वदंति, संतः स्वत्तो जगति तेपि चिरंजयंति ॥ ४१ ॥

भावार्थः– हे भवी जीव ! एवो जे प्रधान मोक्षपद तेनेविषे प्रवर कहेतां प्रधान एटले मुख्यपणे थ्याउं, के जे भवनो नाश विधे करीने करे, उत्तम पुरुष तीर्थंकर प्रभुजी मोक्षार्थ साधन फल तेहीज प्रवर कहेतां मुख्य कहे छे, मोक्षना साधक एवा जे संत भला प्राणी ते श्चिरंजयति कहेतां घणा काल लगे चिरंजीवी रह्हो. ॥४१॥

॥ अथ ग्रंथ समाप्ति विषे ॥

इति धर्म अर्थ वर काम मोक्ष मार्गे, किंचित् मया प्रगटितो उपदेश लेशः॥ सन्मार्ग गामिभिनरैः रुपदेश धार्य॥ तत्व स्वरुप मिति गम्यविचारणीयं॥ ४२ ॥

भावार्थः– ए धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष वर्ग, ते किंचित् कहेतां लवलेश मात्र मया कहेतां में प्रगटपणे उपदेशरुप थोडो कह्यो छे; तेने सन्मार्गगामिभिःनर कहेतां उत्तम मार्गगामिना जाणनहार एटले रुडा मार्गने जाणवावाला– भजवावाला मनुष्योए हृदयने विषे सद्य उपाय धारीने तत्वस्वरुप तेही तेहीज एटले एज छे एवुं विचारणीयं कहेतां विचारवुं. ॥ ४२ ॥

इति श्रीसुक्तमुक्तावली मालायां चतुर्थ वर्गसभाषान्तर संपूर्णम् ॥

॥ अथ प्रशस्ति काव्य ॥ उपजाति वृत्तं ॥

इत्येवमुक्ता किल सूक्तमाला, विभूषिता वर्गचतुष्टयेन ॥
तनोतु शोभा मधिकं जनानां, कंठस्थिता मौक्तिकमालिकेव १